- मैं न जानू, कौन पराया
- मुनि ज्ञान •

- प्रथम संस्करण अगस्त 2002, 2100 प्रतिया
- मूल्य 20/-
- अर्थ सहयोगी श्री सायरचन्द जी छल्लाणी
- प्रकाशक .
  श्री अ भा साधुमार्गी जैन सघ,
  समता भवन, रामपुरिया मार्ग, बीकानेर
- मुद्रक
  अमित कम्प्यूटर्स एण्ड प्रिन्टर्स, बीकानेर
  दूरभाष : 547073

विदुषी महासती श्री अस्मिता श्री जी म.सा. के संसार पक्षीय परिवार की ओर से

सप्रेम भेंट

श्रीवाल प्रतिबोधक, आगमरहस्यज्ञाता तरुणतपस्वी श्रद्धेय आचार्य प्रवर 1008 श्री **रामलाल** जी म सा की आज्ञानुवर्तिनी मेहता कुल दीपिका, परमविदुषी श्रद्धेया महासती श्री **ललिता श्रीजी** म सा , विदुषी महासती श्री **महिमा श्रीजी** म सा , कोकिल कठीला, विदुषी महासती श्री **अनुपम श्री जी** म सा , विदुषी महासती श्री **जागृति श्रीजी** म सा , विदुषी तरुण तपस्विनी महासति श्री **शुभाश्रीजी** म सा , विद्याभिलाषिनी तरूण तपस्विनी श्री **अस्मिता श्री जी** म सा विद्याभिलाषिनी तरूण तपस्विनी श्री **आस्था श्रीजी** म सा , विद्याभिलाषिनी महासती श्री **परिज्ञाश्री जी** म सा , आदि ठाणा 8 के जयपुर चातुर्मास एव **श्रीमती कमला देवी कातेला** के एकासन के मास खमण, श्री **माणक चन्द जी कातेला** एव श्री **मनीष कातेला** के अठाई की तपस्या के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

सौजन्य से

अनोपचन्द कातेला

देशनोक-जयपुर

प्रकाशकीय

श्रमण भगवान महावीर ने चतुर्विध सघ के कुशल सचालन का उत्तरदायित्व आचार्य श्री सुधर्मा स्वामी के कधो पर रखा। सुधर्मा स्वामी ने आचार्य श्री जम्बू स्वामी एव जम्बू स्वामी ने आचार्य प्रभव स्वामी के कधो पर रखा। उसके पश्चात् से आचार्य परम्परा निरन्तर गतिमान चली आ रही है।

साधुमार्गी के इस दीर्घकालीन इतिहास मे ह्रास और विकास का क्रम चलता रहा है। यह सुखद सयोग रहा है कि ह्रास के विकट काल में भी समर्थ एव सुयोग्य आचार्यों का पावन सानिध्य इस परम्परा को प्राप्त होता रहा है।

श्रमण परम्परा में लगभग 200 वर्ष पूर्व शिथिलाचार व्यापक रूप से फैलता जा रहा था। शुद्ध साधुत्व के दर्शन दुर्लभ होते जा रहे थे। क्षेत्र, धर्म स्थल एव शिष्यो के व्यामोह में साधुता भग्न होती जा रही थी। ऐसे युग में आचार्य श्री हुक्मीचन्द जी म सा का जन्म हुआ और उन्होने दीक्षित होकर आगमिक ज्ञान और शुद्ध साधुता के बल पर साधुमार्गी परम्परा को प्राणवान बनाया।

आचार्य श्री हुक्मीचन्द म सा के बाद इस परम्परा को पश्चात्वर्ती आचार्यों ने उत्तरोत्तर आगे बढ़ाया। आज हमे परम प्रसन्नता है कि समता विभूति, समीक्षण ध्यान योगी आचार्य श्री नानेश के पट्टधर प्रशान्तमना, व्यसन मुक्ति के प्रेरक, श्री वाल प्रतिबोधक, आचार्य श्री रामलालजी म सा के सानिध्य में साधुमार्ग की वह धारा विकसित रूप मे उभर कर आ रही है।

आचार्य श्री रामेश के निर्देशन में श्री अ भा साधुमार्गी जैन सघ जिनशासन की सुरक्षा/सवर्धन के लिए कृत सकल्प है। सघ की शासन उन्नयन की विभिन्न प्रवृत्तियों में सत्साहित्य का प्रकाशन भी एक अह प्रवृत्ति है। प्रस्तुत कृति **मैं न जानूं, कौन पराया** का प्रकाशन उसी ध्येय की पूर्ति है।

प्रस्तुत कृति विद्वद्वर्य ओजस्वी व्याख्याता, सत प्रवर श्री ज्ञानमुनिजी म सा के ज्ञान का सदोह है। साधुमार्गी धर्म सघ के अष्टमाचार्य श्री नानेश के अन्तेवासी सुशिष्य श्री ज्ञानमुनिजी ने 13 वर्ष की अल्प आयु में दीक्षित होकर उत्कृष्ट ज्ञान साधना, अथक लगन एव रचना धर्मिता द्वारा अपने नाम को सार्थकता प्रदान की है। मुनि श्री विद्वान साहित्यकार और सफल प्रवचनकार है। अपनी विद्वता और वक्तृत्वकला से उन्होंने शासन की जो भव्य प्रभावना की है उससे सघ गौरवान्वित है। इतिहास, चितन स्मरण, काव्य उपन्यास, कहानी, प्रवचन आदि अनेक विधाओ और विषयो पर आपकी गद्य व पद्य मे अनेक

कृतिया प्रकाशित हो चुकी है। जो जैन-समाज मे समादृत है। प्रस्तुत कृति के लिए हम मुनि श्री के आभारी है। प्रस्तुत कृति **मैं न जानू, कौन पराया** का प्रकाशन असावरी जिला नागौर निवासी सघ/शासननिष्ठ सुश्रावक श्री सायरचन्द जी छल्लाणी के अर्थ सौजन्य से हो रहा है। साहित्य के प्रकाशनार्थ प्रदत्त अर्थ सह्योग हेतु सघ हार्दिक साधुवाद एव आभार ज्ञापित करता है। प्रकाशन प्रक्रिया मे सहयोग हेतु श्री उदय नागोरी धन्यवाद के पात्र हैं। पूरा विश्वास है मुनि श्री की कृति मे सन्निहित सदेश आत्मसात कर पाठक अतरावलोकन करने मे समर्थ होगे और जीवन को सम्यक् दिशा मे अग्रसर करेगे।

निवेदक

शान्तिलाल सांड

सयोजक

साहित्य प्रकाशन समिति

श्री अ भा सा जैन सघ, समता भवन, बीकानेर

अर्थ सहयोगी परिचय

विद्वद्वर्य, ओजस्वी व्याख्याता श्रद्धेय श्री ज्ञानमुनि जी म सा की प्रस्तुत .कृति **मैं न जानूं, कौन पराया** का प्रकाशन सघ/शासननिष्ठ, सेवाभावी सुश्रावक श्री सायरचन्दजी छल्लाणी के अर्थ सौजन्य से हुआ है। मूलत ग्राम असावरी जिला नागौर निवासी श्रीमान झूमरमलजी छल्लाणी के आत्मज श्री सायरमलजी को सरलता, सेवा व समर्पणा के सस्कार विरासत मे मिले, जिन्हे आपने वृद्धिगत रखा और समाज मे अपनी पृथक् पहचान बनाई। आपके पितृश्री विगत तीन दशक से नित्य सामायिक, स्वाध्याय एव त्यागमय जीवन व्यतीत कर रहे हैं। आप दोनो समय सामायिक की साधना करते हैं तथा लगभग 25 वर्षो से चौविहार का पालन करते है। ईमानदार, सादगीपूर्ण जीवन, सरल/सहज व्यवहार, सत्य के प्रति समर्पित जैसे गुणो से युक्त व्यक्तित्व है आपका।

श्री सायरचन्द जी व इनके अनुज द्वय-श्री कैलाश चन्दजी एव श्री सुमेरचन्दजी ने कक्षा 5 से 11 तक जैन हॉस्टल, भोपालगढ मे रहकर जैन विद्यालय मे अध्ययन किया एव तदनन्तर जैन दिवाकर होस्टल, ब्यावर से बी कॉम किया। सन् 1978 मे इन्होने मामाजी व ननिहाल वालो के साथ निर्यात (Export) का व्यवसाय किया और अथक परिश्रम, प्रतिभा व लगन से अनवरत सफलताए अर्जित की। विगत 25 वर्षों मे इन्होने 60-70 बार विदेश यात्रा की। अमेरिका, इटली, फ्रास, जर्मनी, स्पेन, डेनमार्क, U K आदि देशो मे प्रामाणिकता व विश्वसनीयता की छाप छोड़कर आपने जैन समाज, राजस्थान व भारत को गौरवान्वित किया है।

सन् 1985 मे तीनों भाइयो ने सयुक्त रूप से Jewellery (जवाहरात) व Handicrafts (हस्तकला) का व्यापार प्रारभ किया। जवाहरात में दिल्ली राज्य का अवार्ड (Award) मिला व दो बार अखिल भारतीय स्तर का (1993 व 1999) Jewel का अवार्ड मिला।

1994 मे आपका श्री ज्ञानमुनिजी म सा से एव तदनन्तर पूज्य गुरुदेव आचार्य प्रवर श्री नानालालजी म सा से सम्पर्क होना जीवन में महत्वपूर्ण मोड़ सिद्ध हुआ। तभी से आप नियमित सामायिक, स्वाध्याय करते है और भक्तामर का पारायण भी। अब प्रतिक्रमण भी सीख लिया है। आपने उत्तराध्ययन सूत्र, दशवैकालिक सूत्र, स्थानाग सूत्र सहित जैन धर्म का मौलिक इतिहास (चार भाग) जवाहर किरणावली आदि का स्वाध्याय/अध्ययन कर लिया है। विगत

चातुर्मास मे श्रावक के बारह व्रतो को भी अगीकृत किया है। उल्लेखनीय है कि आपने एक बाल्टी से नहाना, पुष्प नहीं तोड़ना या उपयोग में न लेना, इत्र आदि के त्याग-प्रत्याख्यान किये हुए हैं, जो स्तुत्य व अनुकरणीय है।

आपकी धर्मपत्नी पुष्पाजी भी नियमित सामायिक की आराधना करती है व प्रतिक्रमण, पुच्छिसुण आदि कठस्थ कर लिये हैं।

आपका परिवार दिल्ली मे पधारे हुए सत-सतिया जी म सा आदि की सेवा से बराबर लाभान्वित होता है और धर्म-लाभ से वचित नहीं रहता। स्वाध्याय के प्रति विशेष रुचि व साधु-सतो, महासतियाजी म सा के स्वास्थ्य सबधी कार्य में छल्लाणी परिवार का सदैव योगदान रहता है, जो श्लाघनीय है।

विश्वास है सद्-साहित्य के प्रकाशन हेतु आपका सह्योग भविष्य मे भी मिलता रहेगा।

उदय नागोरी
सदस्य
साहित्य प्रकाशन समिति

अनुक्रमणिका

1

मैं ना जानूं, कौन पराया

प्रज्ञाशील उपासको ! जिन्दगी के शाश्वत इतिहास को बताने वाला एक महत्त्वपूर्ण उदाहरण शास्त्रों में आता है कि एक सत भिक्षा के लिये घर-घर मे जा रहे थे। जाते-जाते एक ऐसे घर मे पहुचे, जिसमे यह नियम था कि इस दिन अमुक महिला रसोई बनायेगी। दूसरे दिन दूसरी महिला, इस प्रकार उस घर की व्यवस्था बनी हुई थी। उसी व्यवस्था के अनुसार, भोजन बनाया जाता था। प्रत्येक गृहिणी यह चाहती थी कि वह स्वादिष्ट रुचिकर भोजन बनाए। इस होड मे नित नये पकवान एव व्यजन बनाये जाते थे। सभी यही चाहती थी कि उसके हाथ से बढिया से बढिया भोजन बने और घर के सभी सदस्य उसकी प्रशसा करे। उस दिन जिस महिला ने भोजन बनाया। उसमें तुम्बे की सब्जी बनायी। बढिया मसाले डाले, फिर उसे चखा तो पता चला कि यह तो एकदम कडवी सब्जी है। इसे खायेंगे तब पारिवारिक जन क्या कहेंगे ? कहेंगे कैसी फूहड महिला है। अभी तक सब्जी बनानी नहीं आती। अत पहले चख लिया सो अच्छा हुआ। अब इसकी जगह दूसरी सब्जी शीघ्र बना दू इस सब्जी को इधर-उधर रख दू फिर बाहर डाल दूगी। किन्तु डालने जैसी जगह नहीं दिख रही थी। सभी आ जा रहे थे। सयोगवश उसी समय सत आ गये। उस महिला ने सोचा-चलो इनके पात्र मे डाल दू। इससे बढिया ओर क्या होगा ? पातरा खोलते ही उदात्त भावो का प्रदर्शन करते हुए मनुहार करके महाराज के बस-बस करते सारी सब्जी डाल दी। उसे लेकर वे गुरुजी के पास आये। गुरुजी ने चखी तो लगा भयकर कडवी है। वे बोले- यह खाने योग्य बिलकुल नहीं है इसको खाने से व्यक्ति मर भी सकता है। अत तुम इसे ले जाओ और जहा एकान्त स्थान हो, निरवद्य भूमि हो, वहा इसको परठ देना।

मुनि उस पात्र को लेकर जगल में एकात स्थान मे पहुचे। गुरुजी के आदेश-निर्देशानुसार निरवद्य स्थान भी देखा। उस निरवद्य स्थान पर पहले एक बूद डाली, डालते ही वहा उसकी गध से कीडिया आने लगी। उस गध से उन चीटियो का प्राणान्त होने लगा, ऐसा देखकर वह शिष्य विचार करने लगा कि गुरुदेव ने तो कहा है कि निरवद्य स्थान पर परठना। वह स्थान कहा है ? चिन्तन करने लगा। उसे लगा कि सबसे ज्यादा निरवद्य स्थान यह शरीर है उस करुणासागर साधक ने सभी जीवो को अपनी आत्मा के समान मानकर वह सारी सब्जी खुद ने खाली। घोर वेदना होने लगी। भयकर असाता वेदनीय कर्मो का उदय हो गया उस असह्य वेदना को वे शात भाव से समाधि पूर्वक सहने लगे। आत्म स्वरूप मे निमग्न हो गये। देहातीत अवस्था को प्राप्त हो गये उन्हीं क्षणो मे बैठे-बैठे प्राणात हो गया। वे उस समताभाव से कहा पहुचे ? देवलोकों को लाघते-2 वे सर्वार्थ सिद्ध विमान मे पहुच गये। इधर गुरुजी इतजार कर रहे थे। दो घटे हो गये पर शिष्य नहीं आया तो गुरुजी ने अपने निर्मल ज्ञान से मालूम किया तो पता लगा कि उसने तो कडवा तुम्बा खाकर अपना कारज सिद्ध कर लिया। सर्वार्थ सिद्ध विमान मे चले गये। गुरुजी का सीना खुशी से फूल गया। इसने मेरी बात कैसी मानी, स्वीकार की। मैंने निरवद्य स्थान हेतु कहा। उसने इस निरवद्य स्थान हेतु अपने प्राणो की आहुति दे दी, क्योंकि वे आत्मन प्रतिकूलानि परेषा न समाचरेत की दृष्टि ही नहीं व्यवहार करने वाले थे अत यही सोचा कि जैसी मेरी आत्मा है वैसी ही अन्य प्राणियों की आत्मा है। वे सव्व भूयप्प भूयस्स, सम्म भूयाइ पासओ के आदर्श थे। इस किस्म के थे कि "मैं ना जानू, कौन पराया"

यदि कीडियों की हिसा होती है, पशुओं की हिसा होती है तो वह हिसा भी मेरी है। इस आदर्श को दुनिया के सामने रखा और बताया कि तुम्हें सुख से, शान्ति से जीना है तो यह समझना होगा कि पराया कोई है ही नहीं। तुम गुस्सा कर रहे हो, परन्तु किस पर ? जब कोई पराया है ही नहीं तो फिर गुस्सा करके स्वय की हानि क्यो कर रहे हो ? अन्य आत्माओ के साथ अभेद सबध जोड लो। कनेक्शन सही होगा, तभी लाइट जलेगी। आप चाहें कि पडौसी के घर में प्रकाश न जावे। इसलिए आप पडौसी के घर जाने वाली लाइन को काट देंगे। तो क्या आपके घर की लाइटे चल सकेगी ? क्या आपको प्रकाश मिल सकेगा ? अगर आपको प्रकाश चाहिये तो पडौसी के लाइन को भी दुरस्त रखना होगा। पानी की लाइन पडौसी के यहा जा रही

है उसे आप काट देगे। तो क्या आपके यहा पानी आ सकेगा। नहीं । जैसे लाइट और पानी हेतु लाइन की सुरक्षा जरूरी है वैसे ही आप स्वय सुख चाहते हैं तो दूसरो के सुख की सुरक्षा भी करनी होगी। औरों को तो जाने दीजिये। एक ही परिवार की छत के नीचे रहने वाले भाई–भाई एक दूसरे के सुख की सुरक्षा करे। सास बहू के सुख का ध्यान रखे। दिवरानी–जेठानी के सुख की कामना करे। अगर किसी ने भी किसी के सुख को ठुकराने की कोशिश की तो वह भी दुखी हो जायगा। एक के साथ किया गया दुर्व्यवहार, रखा गया दुर्भाव या दुश्मनी अन्य सभी को खराब कर देगी।

एक बार श्री कृष्ण वासुदेव पर एक देव प्रसन्न हो गया और उस देव ने प्रसन्न होकर एक भेरी दी। उस भेरी की यह विशेषता थी कि जो भी बीमार व्यक्ति उस भेरी की आवाज सुन लेता, वह स्वस्थ हो जाता। श्री कृष्ण उस भेरी को हर छह माह के बाद बजाते थे। जिस दिन भेरी बजाते उससे पहले ही दूर–दूर से काफी रोग पीडित लोग एकत्र हो जाते। भेरी की आवाज सुनकर वे स्वस्थ हो जाते। एक बार एक धनाढ्य सेठ का पुत्र बीमार हो गया। उस सेठ को मालूम पडा कि भेरी तो छह महीने बाद बजती है। पर इतना इतजार कौन करे ? उस सेठ ने पता लगाया कि वह भेरी किस कर्मचारी के पास है। सेठ उस कर्मचारी के पास पहुचकर कहने लगा कि मैं तुम्हे 100 मोहरे दूगा। तू मेरे पुत्र को भेरी की आवाज सुना दे। परन्तु कर्मचारी ने साफ मना कर दिया। फिर भी सेठ कहने लगा। भेरी की आवाज तेजी से निकलती है। इसलिए तुम नहीं सुनाना चाहते हो। तो एक काम करो मैं तुम्हें 1000 स्वर्ण मोहरे देता हू। तुम मुझे भेरी का एक छोटा सा टुकडा काटकर दे दो। 1000 स्वर्ण मोहरों की बात सुनते ही उस कर्मचारी के मन मे आया कि इस बात को कोई जान नहीं पायेगा। मुद्रा के लोभ में उसने सेठजी की बात स्वीकार कर ली और 1000 स्वर्ण मुद्राए लेकर भेरी का एक छोटा सा टुकडा काटकर सेठजी को चुपचाप दे दिया। और भेरी के वैसा ही नकली टुकडा चतुराई के साथ लगाकर फिट कर दिया। सेठजी ने उस टुकडे को पीसकर पुत्र को पानी के साथ दवा की भाति पिला दिया। वह लडका उस चूर्ण को लेते ही स्वस्थ हो गया। गाव के लोगों को आश्चर्य हुआ कि लडका एकदम सख्त बीमार था। इतना जल्दी कैसे ठीक हो गया। अभी कोई भेरी तो नहीं बजती है। सो ठीक हो जाय ? सेठ जी ने हसते हुए कहा यही तो हमारा कमाल है कि भेरी बजने से पहले ही हमारा काम हो जाता है। इससे लोग समझ गये कि इसने जरूर कर्मचारी को घूस दी है। अन्यथा यह काम

दुष्कर था। इस सभावना से इन्कार भी नही किया जा सकता अत अन्य श्रेष्ठी वर्ग भी जब कभी बीमारी की समस्या से घिरते तो वे उस कर्मचारी के पास लुके छिपे रूप पहुच जाते और कोई 10000 स्वर्ण मोहरे उसको दे रहा है। तो कोई 50000 स्वर्ण मोहरे दे रहा है। कोई एक लाख स्वर्ण-मोहरे देकर भेरी का टुकडा ले जा रहा है। इस प्रकार टुकडा कटते-कटते भेरी का असली स्वरूप समाप्त होने लगा और उसके स्थान पर नकली टुकडे जुड-जुडकर नकली रूप असलियत के रूप मे अवशेष रह गया। 6 महीने बाद जब श्री कृष्ण भेरी बजाने आये जब भेरी नहीं बजी तो वे असमजस मे पड गये। विचारने लगे क्या हुआ क्यो नहीं बज रही है। वे उस भेरी को अच्छी तरह से देखने लगे तब पता चला कि भेरी मे तो टुकडे-टुकडे जुडे हैं। श्रीकृष्ण ने उस कर्मचारी को बुलाया उससे पूछा तो वह भय से कापने लगा उसकी धृष्टता भरे दु साहस के कारण उसे तुरत मौत की सजा सुना दी।

आज इन्सान क्या कर रहा है यदि किसी को छोटी सी बात के लिए भी झूठ बोलना पडे तो वह बोल जाता है, चोरी करनी पडे, 5 रुपये के लिये बेइमानी करनी पडे तो कर लेता है। छोटी-छोटी बातो मे अपनी प्रतिष्ठा खराब कर लेता है। इस प्रकार इस जीवन रुपी भेरी मे व्यक्ति अन्याय अनीति अत्यचार, झूठ, चोरी, छल प्रपच करके टुकडे जोडता जा रहा है। उस व्यक्ति का तो एक जन्म ही बिगडा। पर आप अपने जीवन में स्वार्थ, मोह, ममता जोडते चले गये तो कितने जन्म बिगड जायेगे क्या कभी इस बात का विचार किया ? करे भी कैसे इस ओर आपका ध्यान ही नहीं है ? न ही इस रूप में इन बातों को समझ रहे हैं न ही ले रहे हैं। लेकिन भगवान महावीर कहते हैं कि तुम अपना अस्तित्व सही बनालो। इन दूषित भावनाओं का त्याग कर दो छोड दो। वीर प्रभु के समवसरण में जन्मजात दुश्मनी रखने वाले शेर और बकरी भी एक साथ एक ही स्थान पर भी शान्ति से बैठते थे। क्योंकि भगवान महावीर की अहिंसा, मैत्री और समत्व भाव की ऊर्जा एव इनके वायुमण्डल का इतना जबरदस्त प्रभाव रहता था कि वे वहा अपने जन्मजात वैर भाव को भूल जाते। विस्मरण हो जाता। शत्रुता के भाव ही जागृत नहीं हो पाते। इतना सशक्त उनके शुद्धभावों का आभामण्डल रहता था। यदि आपके प्रति कोई शत्रुता रखे तो आप भी उसके प्रति शाति रखे। आप उसके प्रति शुभ चिन्तन करे, मगल भावना रखने का अभ्यास कर ले तो वह भी आप से प्रेम करने लग जायेगा।

स्थान-स्थान पर जैन स्थानक बने हैं। इनके नाम के नीचे लिखा रहता है-" परस्परोपग्रहो जीवानाम" इस सूत्र का रहस्य हम समझते ही नहीं

है। इसके भावो को छूते ही नही है यह सूत्र सस्कृत मे हैं। इसका अर्थ नहीं समझ पाए, बस उस चिह्न को देख लेते हैं। इसमे विश्व शाति का सदेश छिपा है यह शाति का प्रतीक है। परस्पर सहयोग करने का निर्देश रहा हुआ है। एक–दूसरे की सुरक्षा का ख्याल रखने से स्वत ही सुख–शाति का सचार होने लगता है। हमारे शरीर मे रही इन्द्रिया भी एक दूसरे का कितना सहयोग करती है। पैर मे काटा चुभ जाय तो मस्तक को तुरत सूचना पहुच जाती है। आख उस स्थान को देखती है, हाथ काटे को निकालने का कार्य करता है। खाना मुह से खाया जाता है पर उसका हिस्सा सभी इन्द्रियो को मिलता है इसीलिये तो शरीर मे पुष्टि आती है। एक किडनी फेल हो जाती है तो दूसरी किडनी विशेष काम करना शुरू कर देती है। एक हाथ के काम में दूसरा हाथ सहयोग देता है। एक पैर के साथ दूसरा पैर सहयोग देता है तभी व्यक्ति चल सकता है। इस प्रकार एक दूसरे के साथ सहयोग देने पर ही शरीर की स्थिति सही चल सकती है। वैसे ही हम दूसरो की आत्मा को सहयोग करना सीखे दूसरे की आत्मा के साथ जुडना सीखे। जैसे हम शरीर को चलाते हैं, वैसे ही हमे परिवार समाज के चलाने के लिए एक दूसरे के साथ जुडना होगा। जोडना होगा। एक–दूसरे के साथ जुडेगे तब ही शाति से जी सकेगे।

आज के मानव ने परस्पर मे सहयोग करना तो बद कर दिया है किन्तु परस्पर विग्रह (परस्पर विग्रहो जीवानाम्) करना, भेद डालना प्रारभ कर दिया है। सेठ के चारो बेटे अलग–अलग रहना चाहते हैं। सास, बहू को सहयोग नहीं देती। देवरानी–जेठानी को सहयोग नहीं देती बल्कि सहयोग करने वाले को दूर हटाती है। अपनी ओर खींचती है। इस प्रकार विग्रह करते हुए चाहती है कि हम ही शाति प्राप्त करें अन्य को नहीं मिलनी चाहिये। एक बार ब्रह्माजी ने सभी देवताओ को भोज पर बुलाया। सभी पगत में बैठ गये। सुन्दर बाजोटो पर थालिया लगी हुई थीं। ब्रह्म माया होने से जिसको जो मिठाई आदि खाद्य पदार्थ अच्छा लगता है। वह उसकी थाली मे मौजूद रहता। सभी खुश थे। खाने के लिए अपना हाथ आगे बढाने लगे। लेकिन हाथ कडक हो गये। हाथ मुह की ओर मुडता ही नहीं है। सोचा हाथ बादी के कारण ऐंठ गया। अत हाथ सख्त हो गया है। पडौसी की ओर नजर पहुची तो उसका भी वही हाल है। समझ गये कि यह ब्रह्मा जी की माया है। अब समस्या के समाधान का विचार किया तो ध्यान में आया कि हाथ नहीं मुड रहा है पर अगुलिया तो मुड ही रही है। अत अगुलिया व अगूठे के साथ जुडकर थाली से खाद्य सामग्री उठा करके सामने वाले के मुह मे दे सकते हैं। ऐसा सोचकर

उन्होंने अपनी–अपनी थाली में से मिठाई आदि उठा–उठा करके एक दूसरे के मुह में डालने लगे। सभी को इस प्रकार खाने व खिलाने में बडा मजा आने लगा। आनद से खा रहे थे। हमेशा से भी ज्यादा पेट भर गया। लाखो देवता खा गए पर कुछ देवता अडे रहे कि वे दूसरो के मुख में भोजन न देकर थाली छोड उठ गए और ब्रह्माजी के लिये कहने लगे कि ये हमारी मजाक उडा रहे हैं, हमारा अपमान कर रहे हैं। वे ब्रह्माजी के पास पहुचे। ब्रह्माजी ने उनसे पूछा क्या आपने भोजन कर लिया। उन सबने कहा– नहीं किया आपने हाथ ऐंठा करके हमारी मजाक उडाई। भोज के लिए बुला भी लिया और अपमान भी किया। ब्रह्माजी ने कहा–मैंने न अपमान किया न हाथ ऐठाया है तभी भोजन करने वाले बोले– हमने भोजन नहीं किया है, इतने मे दूसरे देवता भी वहा आ पहुचे। ब्रह्माजी ने उनसे भी पूछा– कि तुमने भोजन कर लिया क्या ? तो उन्होने कहा– हा ! हमने आज आराम से भोजन खाया, बडा मजा आया पेट भरके भोजन खाया है। तब ब्रह्माजी ने कहा– जो दूसरों को खिलाना जानता है, वह देव है। जो स्वय ही खाते हैं, अन्य को नहीं खिलाते हैं, वे दानव हैं। क्या आप खिलाते हैं पहले दूसरों को। पहले के लोग जगल मे जाते, बाहर जाते तो साथ में रोटिया ले जाते थे। कुत्ते, गाय आदि को खिलाकर आते। फिर कुल्ला करते थे पर आज दिशा के लिए जाने की जरूरत नहीं शौचालय कमरे से अटेच हैं। आज गाय बाधने को जगह नहीं है। पर गाडी रखने को गेरेज हैं। आज मानव एक–दूसरे का सहयोग नहीं करता। सिर्फ अपना स्वार्थ पूरा करने मे लगा रहता है ऐसी स्थिति में फिर कहीं न कहीं गाडी एक्सीडेट होगी और उस स्वार्थ का परिणाम भोगना पडेगा। आज पति–पत्नी आपस में लडते रहते हैं। तो क्या वे अपना उद्धार करेंगे और क्या परिवार, समाज, राष्ट्र का उद्धार करेंगे।

पति कहता है – पत्नी नहीं मानती। पत्नी कहती है पति ध्यान नहीं देता। पर ऐसा करने से काम नहीं चलेगा। परस्पर मे समन्वय बिठा करके चलना होगा। एक युवक को गुस्सा बहुत आता था। उसकी शादी का समय आया तब उसने विज्ञापन जारी किया कि जो भी लडकी मेरे साथ शादी करे वह मेरे इशारे पर जब तक काम करती रहेगी, तब तक तो ठीक है। यदि उसने मेरे इशारे के अनुसार सकेत के अनुरूप काम नहीं किया तो मैं उसे पीट सकता हू। अब आप ही बताओ कि ऐसा विज्ञापन पढकर कौन उसके साथ अपनी लडकी की शादी करेगा। अपनी प्यारी बिटिया को जानबूझकर कौन खड्डे में डालेगा। एक लड़की ने भी उस विज्ञापन को पढा, सोचा कि यह

लडका भी कैसा है जो अपने दुर्गुण का विज्ञापन कर रहा है। इससे स्पष्ट है कि उसमें इस कमी के साथ विशेषता भी रही होगी। आज लडकी के चश्मा लग रहा है तो लेन्स लगा लेते हैं ताकि पता नहीं चले। बीमारिया छिपाते हैं। भगवान ने कहा है कि– "कन्नालिए गोगलिए, भोमालिए"। अर्थात् कन्या के लिए झूठ नहीं बोलना। पर आज कन्या के लिए झूठ बोल रहे हैं। लडकियो को दुखी कर रहे हैं। उस लडकी ने अपने माता–पिता से स्पष्ट कह दिया कि मुझे इस लडके के साथ ही शादी करना है। माता–पिता में उसे खूब समझाया परतु लडकी ने भी अपने माता–पिता को समझाया कि जो अपना दुर्गुण प्रकट कर सकता है, उनमे अनेक सद्गुण जरूर होते हैं और वैसे मैं स्वय ध्यान रखूगी। पति परमेश्वर का रूप होता है। अत हर इशारे को वैसे भी मानना ही है। आप किसी तरह की चिता मत करो मेरा सबध इसी लडके के साथ कर दीजिए।

माता–पिता को अपनी लडकी पर पूरा भरोसा था कि इसकी सोच एकदम सही है। इसलिए उन्होंने उससे सबध करना तय कर लिया। कुछ समय बाद इसकी शादी हो गयी। लडकी खूब सावधानी रखती। पति के इशारे पर चलती। पति के मानस–स्वभाव को समझकर हर कार्य में प्रवृत्त होती थी। अत दो वर्ष में झगडे का अवसर ही नहीं आया। एक सन्तान भी हो गयी। किन्तु युवक ने सोचा झगडा हो नहीं रहा है। अब क्या करें ? झगडा हुये बिना तो मजा नहीं आता। अगर नाराज हो जाय तो पत्नी को वापस मनाने मे मजा आयेगा उसने सोचा कि मैं किसी तरह इसे छेडू। उसने प्लान बनाया और कहा आज आलू के जितने भी आइटम बन सके उतने बनाना। जो मागू वही आना चाहिये। अगर नहीं आया तो ठीक नहीं रहेगा। पत्नी ने कहा–ठीक है। उसने सारी तैयारी चालू कर दी, हर तरह के आइटम तैयार किये। कचौरी, समोसा, आलू का हलवा, टिकिया, बाटी, पूडी आदि। शाम को युवक घर आया। पति के बैठने के लिए सुन्दर तैयारी थी। टेबल पर थाली रखी। युवक जो मागे वही हाजिर। पत्नी पूछ रही थी और क्या हाजिर करू ?

आज आलू घर–घर मे बडे शोक से खाया जा रहा है। किन्तु उन्हें मालूम है या नहीं आलू में कितने जीव होते हैं। एक सूई की नोक पर आये उतने आलू में अनत जीव होते हैं। सूई के अग्रभाव पर समाये उतने कद–मूल में असख्याता श्रेणिया होती हैं। एक–एक श्रेणी में असख्याता प्रतर होते हैं। एक–एक प्रतर से असख्याता गोले हैं। एक–एक गोले में असख्याता शरीर

हैं। एक–2 शरीर मे अनन्त जीव हैं। इधर उस युवक की पत्नी पूछ ही रही है–ओर क्या दू। उस युवक को गुस्सा आया, कि यह तो जीत रही है, मैं हार रहा हू। उसने सोचा इससे कुछ न कुछ ऐसी वस्तु मागू जिससे इसको थोडा विचार करना पड जाये। युवक ने कहा और क्या–2 देऊ–2 क्या कह रही हैं अब ओर क्या देगी पोटी दे। पत्नी ने कहा–वह भी तैयार है। पति के घर आने से पहले–2 बच्चे ने लेटरिंग कर दी थी। बच्चे को साफ करके लेटरिंग उठाने वाली ही थी कि पतिदेव आ गये। अत उसके मान सम्मान में लग गयी। पति को खराब न लगे इसलिये उसने उसके ऊपर एक कटोरी ढक दी थी। उसने हाथ जोड कर नम्र भाव से कहा यह लीजिये पोटी। पति को भी खूब आश्चर्य हुआ। जिस पत्नी को इतना बडा समर्पण है वहा शान्ति क्यों नहीं रहेगी ? उसने भी सदा के लिए झगडा नहीं करने की प्रतिज्ञा ग्रहण कर ली।

अगर आप भी अपनी सतान को अच्छा रखना चाहते हैं तो पहले एक–दूसरे के प्रति समर्पित रहना सीखिए। एक बार एक बच्चे ने मम्मी से पूछा– रेडियो और टी वी में क्या अन्तर है, उसकी मम्मी ने बताया कि जब तक पापा–मम्मी कमरे में लडते रहे तब तक रेडियो। बाहर आने पर टी वी चालू हो जाता है। यह है आज की स्थिति। जरा आप अपने आप मे समन्वय बनाये रखने की कोशिश करें। पत्नी के लिए एक शब्द आता है– अर्धांगिनी– इसका मतलब है आधा अग। जैसे–दो पैर, दो हाथ, दो किडनी, दो आखें एक दूसरे का सहयोग करते हैं। वैसे ही पति–पत्नी का भी आपस में परस्पर सहयोग होना चाहिये। पति–पत्नी दोनो अकडकर रहेगे तो एक–दूसरे के प्रति सहयोग नहीं रहेगा उसके न रहने से शाति नहीं रह सकेगी घर मे त्रैसठ के आक की तरह परस्पर स्नेह सौहार्द्र सामजस्य बना रहता है तभी तक घर मे शाति रह सकती है। यदि एक दूसरे का एक दूसरे के प्रति दु ख दर्द मे सहयोग बनता है, दूसरो के सुख के लिए अपने सुख का बलिदान कर देते हैं तो उसका विस्तार स्वत हो जाता है। दोब्रीवे एक सेठ का लडका था। लडका जब पढ–लिखकर होशियार हो गया तब पिताजी ने उसे परदेश जाकर धनोपार्जन करने की आज्ञा दी। दोब्रीवे ने पिता की आज्ञा मानी। पिता ने जहाज में माल भरवा दिया। दोब्रीवे परदेश के लिये रवाना हो गया। रास्ते में एक तुर्की जहाज मिला। उस जहाज में से मनुष्यों के करुण क्रन्दन की आवाजे आ रही थी। दोब्रीवे को दु खद आश्चर्य हुआ कि इस में से रोने–चीखने की आवाजें क्यो आ रही हैं ? उससे रहा नहीं गया। दोब्रीवे ने तुर्की जहाज के कप्तान से पूछा कि तुम्हारे जहाज मे से यात्रियो के रोने की

आवाज क्यों आ रही है ? क्या वे भूखे हैं ? बीमार हैं ? तुर्की कप्तान ने कहा– नहीं ! ये न भूखे हैं और न ही बीमार हैं पर ये सारे कैदी हैं ? हम इन्हे गुलाम बनाकर लाए हैं। बेचने ले जा रहे हैं। दोब्रीवे ने कहा–अच्छा ! ऐसी बात है तो अपन जहाज का आपस में सौदा कर लेते हैं। तुर्की कप्तान ने दोब्रीवे के जहाज में झाककर देखा तो बहुत माल दिखाई दिया। बेशकीमती सामान देखकर तुर्की कप्तान के मुह में पानी आ गया। जहाज बदलने को तैयार हो गया। जहाजे बदली हो गयी। दोब्रीवे ने पास वाले बन्दरगाह पर पहुचकर सभी कैदियो को मुक्त कर दिया अपने–अपने स्थान पर सुरक्षित पहुचाने की व्यवस्था भी कर दी। अत मे एक सुन्दर कन्या व एक बुढिया बची। उन दोनों को भी यथास्थान पहुचाना चाह रहा था। किन्तु उनका देश बहुत दूर होने से और वहा का रास्ता मालूम न होने से पहुचा न सका। उस लड़की ने बताया कि मैं रूस के बादशाह की पुत्री हू। यह बुढिया मेरी दादी है। मेरा देश बहुत दूर होने से घर लौटना मुश्किल है। अत यही पर रहकर मेहनत मजदूरी करके अपना काम चलाऊगी। दोब्रीवे ने उन दोनो को अपने साथ रखा। राजकुमारी, दोब्रीवे के रूप गुण और व्यवहार से आकर्षित होती जा रही थी। अत उसने दोब्रीवे को अपने साथ शादी करने हेतु निवेदन किया। दोनों की शादी हो गयी। राजकुमारी ने अपने हाथ की अगूठी दोब्रीवे की अगुली मे पहना दी। दोब्रीवे अपनी जहाज, राजकुमारी और बुढिया के साथ अपने देश पहुचा। बन्दरगाह पर पिताजी प्रतीक्षा कर रहे थे। दोब्रीवे ने पिताजी से सारी बात कह दी। किन्तु पिताजी बहुत नाराज हुये। कुछ दिनों बाद पिताजी ने सोचा कि– बेटा अब पहले जैसी गलती थोडे ही करेगा। अत बेटे को पुन जहाज मे माल भरवाकर परदेश के लिये विदा किया। दोब्रीवे एक बन्दरगाह पर पहुचा। उसने देखा कि सिपाही कुछ गरीबो को जबरन कैद कर रहे हैं। उन गरीबो के बच्चे बिलख–बिलख कर रो रहे हैं। दोब्रीवे ने वहा पर रहने वाले अन्य लोगों से पूछताछ की तो मालूम पडा कि इन को राज्य का टेक्स नहीं चुकाने के अपराध मे कैद किया जा रहा है। ऐसा सुनते ही दयालु दोब्रीवे ने अपने जहाज का सारा माल बेचकर उस सपत्ति से उन गरीबो का सारा टेक्स चुका दिया उन गरीबो को छुडा लिया। दोब्रीवे पुन घर लौटा। पिताजी को सारा वृत्तान्त सुनाया तो पिताजी आग बबूला हो गये। उन्होंने अपने घर से दोब्रीवे, उसकी पत्नी तथा बुढिया को निकाल दिया। नगर के लोगो ने सेठ को बहुत समझाया। तब कहीं जाकर पुन घर में उन तीनो को जगह दी तथा साथ ही कड़ी चेतावनी दी कि अब ऐसा नहीं होना चाहिये। दोब्रीवे को तीसरी

बार फिर धनोपार्जन हेतु जहाज मे माल भरवाकर परदेश भेजा। दोब्रीवे इस बार जिस बन्दरगाह पर उतरा वहा पर दो पुरुष बादशाही पोशाक पहने मिले। वे दोनों उस दोब्रीवे को ध्यान से देख रहे थे। एक ने दोब्रीवे से कहा कि तुम्हारे हाथ ही अगूठी जानी पहचानी लग रही है। मेरी लडकी भी ऐसी ही अगूठी पहनती थी। आपको यह अगूठी कहा से मिली है। दोब्रीवे ने उन दोनों को सारा वृत्तात कहा। तब वह भाई बहुत खुश होता हुआ बोला कि–मैं रूस का बादशाह व आपका ससुर हू। आप सपरिवार यहा पधारिये। मैं आपको रूस का आधा राज्य दे दूगा। रास्ता बताने हेतु मैं अपने मत्री को आपके साथ भेजता हू। दोब्रीवे पुन कुछ समय बाद देश की ओर लोटा तो मत्री दोब्रीवे के साथ उसके नगर पहुचा। इस बार दोब्रीवे के पिता ने रूस के आधा राज्य वाली बात सुनी तो बहुत खुश हुये। सेठ सपरिवार रूस के लिए जहाज में रवाना हुआ मत्री के दिल मे दोब्रीवे के प्रति ईर्ष्या पैदा हो गयी कि यह दोब्रीवे कहा से कहा तक पहुच रहा है। ईर्ष्या के कारण उस मत्री ने रास्ते चलते जहाज से दोब्रीवे को समुद्र मे धक्का दे दिया। दोब्रीवे पूरी शक्ति के साथ तैरने लगा। पुण्यवानी से समुद्री लहरो ने उसे समुद्री किनारे पहुचा दिया। तीन दिन वह वहा जैसे तैसे रहा। चौथे दिन एक मछुआरा नौका लिये निकल रहा था दोब्रीवे ने उस मछुआरे से सारी बात कही। तब उस मछुआरे ने कहा कि मैं तुम्हे रूस तक तभी पहुचाऊगा जब तुम मिलने वाली सपत्ति का आधा हिस्सा मुझे देने का वादा करो। दोब्रीवे ने वादा स्वीकार कर लिया। दोब्रीवे रूस पहुचा। राजमहल मे पहुचकर बादशाह से मिला। बादशाह की प्रसन्नता का पार नहीं रहा। पिछला सारा वृत्तात सुनाकर बादशाह से प्रार्थना की कि आप मत्री को माफ कर दे। इस उदारता से बादशाह ओर खुश हुआ। और अपना सारा राज्य दोब्रीवे को सौंपकर बादशाह प्रभु भक्ति में लग गया। जिस दिन दोब्रीवे ने महोत्सव के साथ राजमुकुट पहना। उसी दिन वह बूढा मछुआरा आया उसने दोब्रीवे को वादे की बात याद दिलायी। दोब्रीवे ने उस मछुआरे का स्वागत किया और कहा कि राज्य का नक्शा देखकर अपना आधा–आधा राज्य बाट लेते हैं। खजाना भी आधा आधा बाट लेते हैं। बूढा बहुत प्रसन्न हुआ और दोब्रीवे की पीठ ठोकते हुए कहा शाबास बेटे ! तुम इसी तरह दयालु, दानी व वचन के पक्के बने रहो। तुम मानव की आकृति मे देव हो। असली धर्मात्मा हो आदि कहता हुआ बिना कुछ लिये ही वहा से चला गया। दोब्रीवे का न्याय नीति पूर्वक आनद से राज्य चलता रहा। इस घटना ने यह सिद्ध कर दिया कि

जिसने दूसरों की रक्षा की हो, उसे सब कुछ मिलेगा। किन्तु आज तो बेईमानी, झूठ, हिसा, चोरी आदि से लेना चाह रहे हैं। भगवान महावीर को चडकोशिक ने डक मारा उसके बदले में उन्होंने क्या दिया ? बोध दिया अगर ऐसा करोगे तो अवश्य सामने वाला भी सुधर जायेगा।

आजकल धनवान भी दु खी हैं क्योकि वे अपने सुख के लिये दूसरो का नुकसान करने तैयार रहते हैं। अपनी सुख–सुविधा के लिए दूसरो के सुखो को लूट रहे हैं। अपने पानी लाइट के लिए दूसरो की लाइट काट रहे हैं तो फिर वे स्वय भी दु खी होगे या नहीं। अगर किसी के घर को आग लग जाये तो सबसे पहले सूचना कौन करेगा–पडौसी। इसका मतलब यह नहीं कि उसकी आप के प्रति हमदर्दी है। अपितु वह अपनी सुरक्षा के लिए फोन करता है कि आग बढ गयी तो मेरे घर का क्या होगा ? पडौसी के दु ख दर्द की हमने परवाह नही की तो वह बरबादी कभी न कभी हमारे लिए भी खतरा उत्पन्न कर देगी। सास–बहू भाई–भाई की बरबादी हमे खराब कर देगी। अत हम समन्वय करना सीखें। यदि हमने आग को हवा देना सीखा तो वह आग आपको जला देगी। आप भी शाति से नहीं रह सकेगे। अगर आपने वर्तमान में दूसरो का सहयोग नहीं किया तो यह भव, परभव सभी बेकार हो जायेगे।

एक बार बादशाह ने बीरबल से कहा कि तुम मेरे समक्ष चार व्यक्ति ऐसे लाकर खडे करो। 1 जो यहा है वहा नही 2 यहा तो नहीं, पर वहा है। 3 यहा भी है, वहा भी है। 4 यहा भी नही व वहा भी नहीं। बादशाह की इन चारों बातो को सुनकर बुद्धिमान बीरबल तुरत वहा से निकला नगर मे जाकर एक वेश्या, एक साधु, एक सेठ तथा एक भिखारी को वह लेकर आया बादशाह के समक्ष उपस्थित किया। बीरबल ने बादशाह को एक–एक का परिचय देना प्रारभ किया। 1 नगर वधू वेश्या के पास इस भव मे सपत्ति, महल आदि की कमी नहीं है पर परभव मे इसके लिये कुछ भी नहीं है। 2 कचन कामिनी के त्यागी साधु के पास इस भव मे खाने को भी कुछ नहीं रहता किन्तु परभव में उनके लिए सब कुछ है क्योकि इनकी गति देवताओं की है। 3 तीसरा व्यक्ति सेठ है जो दानवीर है उसके पास वर्तमान में भी बहुत कुछ है और दीन हीन गरीबो की सेवा मे वैभव का सदुपयोग करता है। धर्म ध्यान त्याग तप करना है। अत परलोक उसका देव का होने से वहा भी उसके लिए सब कुछ है। 4 चौथा व्यक्ति भिखारी है जिसके पास वर्तमान में भी कुछ नहीं है और अगले जन्म के लिए कुछ भी नहीं करने से उसे अगले भव मे भी कुछ नहीं मिलने वाला है। इस जीवन को नैतिकता–मानवता आदि

की साधना में जोडना होगा। दया, उपासना, पौषध, सामायिक आदि साधनाओ मे लगना होगा। अगर ऐश्वर्य के नशे में झूमते रहे। सुखोपभोग में डूबे रहे। मौज मस्ती मे जीवन को खोते रहे तो नगर वधू की तरह भले ही यहा अपने आप को सुखी समझ लो अपने को सब कुछ मान लो पर बरबाद हो जाओगे और अगर भिखारी की तरह से कंजूस बने रहे और त्याग तप में भी जीवन नहीं लगाया तब भी बरबाद हो जाओगे। आप इसे भूल मत जाना कि कौन पराया है ? सभी आत्माए समान हैं। जैसी आपकी आकाक्षा रहती है वैसी ही आकाक्षा उसे भी रहती है। आप अपने लिए सब सुख सुविधाए चाहते हैं तो वह भी चाहता है। स्वरूप की दृष्टि से मूल चाह की दृष्टि से कोई भिन्नता आप मे और उनमे नही है। अत आप अपने जीवन मे उपलब्ध वस्तुओं का विनिमय करते हुए अपने वर्तमान जीवन के साथ भविष्य को उज्ज्वल एव प्रकाशमय बनाने की चेष्टा करेगे तो आपका जीवन सफल एव सार्थक बन सकेगा समवत आप अपने इस लोक और परलोक को सफल बनाने मे यथाशक्ति प्रयत्नशील रहेगे इसी भावना एव आशा के साथ अपने विषय को विराम दे रहा हू।



2

मैं कहां से आया हूं, कहां जाऊंगा

मैं कौन हू, कहा से आया हू और कहा जाऊगा ? यह एक ज्वलन्त प्रश्न हर भव्य–आत्मा के मन में सदियों से उठता रहा है। इसका उत्तर जिन्हें प्राप्त हुआ वे तो पारगामी बन गए और जिनके लिए अनुत्तरित रहा वे आज भी इस ससार–अर्णव (समुद्र) में इधर से उधर अगाध जल प्रवाह के थपेडे खा रहे हैं। उनमें से हम भी एक हैं।

यद्यपि इन प्रश्नो की खोज करने में हमने कई जिन्दगिया खपा दी है तथापि हताश–निराश होने वाली बात नहीं है हमें फिर से इस प्रश्न की नये सिरे से खोज करनी होगी। कहते हैं किसी समय महान् वैज्ञानिक एडिसन अपनी प्रयोगशाला मे एक नया प्रयोग कर रहे थे। अपनी सहायता के लिए एक नवयुवक वैज्ञानिक को भी रख रखा था। जिसकी उम्र मात्र सत्रह–अठारह वर्ष की रही होगी। एडिसन जैसे महान् वैज्ञानिक का सपर्क पाकर पहले तो वह नवयुवक बडे उत्साह–लगन से काम करता रहा। लेकिन जैसे–जैसे समय बीतता गया प्रयोग में सफलता जब नहीं मिल रही थी, तब उसके मन में उकताह सी आने लगी। उसे यह लगने लगा। अब इस प्रयोग को छोड देना चाहिये। लेकिन एडिसन के सामने कहने का साहस नहीं था। इधर एडिसन उसी अगाध धैर्य के साथ नित नये प्रयोग करते जा रहे थे। जब बहुत सारे प्रयोग करने पर एक लम्बे समय तक भी सफलता नहीं मिली तो उससे रहा नहीं गया, एक दिन साहस करके उसने एडिसन पर अपना हतोत्साह व्यक्त कर दिया।

युवक की इस हरकत पर एडिसन ने आख उठाकर कहा– काम करो। युवक बोला – बस ! इस काम के लिए मुझे माफ करे। 3 महीने हो गए

लगातार प्रयोग करते हुए एक भी सफल नहीं हुआ। सब प्रयोग व्यर्थ गए।

तब एडिसन ने जो जवाब दिया, वह हर क्षेत्र मे निराश व्यक्तियो के लिए समझने वाला है। वे बोले– युवक ! सफलता के इतने नजदीक आकर बद कर दे ? युवक आश्चर्य से बोला– सफल कहा ? हम तो सफलता से आज भी उतने ही दूर हैं। जितने तीन महीने पहले थे।

एडिसन बोले– लगता है तुम्हे सही गणित नहीं आती। इतने रास्ते हमने देख़ लिए जो बेकार हो गए। इससे साफ है कि अब बेकार रास्ते कम हो गए। अगर तीन सौ रास्ते हैं। उसमें दो सौ बेकार हो गए तो अब देखने वाले 100 ही बचे हैं ना। आज नहीं तो कल, कल नहीं तो परसो हम सफलता के रास्ते मे निरतर आगे बढते जा रहे हैं। तुम कैसे नवयुवक हो जो सफलता के पास आकर हार मान रहे हो। एडिसन के इन वाक्यो ने उस युवक मे फिर से जोश भर दिया।

हमारा भी आध्यात्मिक जगत् मे यह हाल बना हुआ है। हम भी भवों–भवो से खोज कर रहे हैं कि "मैं कौन हू " लेकिन वह लगातार अनुत्तरित ही चल रहा है कोई बात नहीं। हमने 200 रास्ते नहीं बल्कि 84 लाख रास्ते रूप योनिया पार करते–करते यह मानव जीवन प्राप्त कर लिया है। किनारे आ गए हैं। सफलता नजदीक है। अब तो इसकी ख़ोज करके ही रहना है। साहस के साथ हमारा सकल्प मजबूत बने। नेपोलियन ने अल्पास–पर्वत को पार करते हुए यह नहीं सोचा कि पहले कई महारथी इसे पार नहीं कर सके तो मैं भी नहीं कर पाऊगा। बल्कि वह हताश व्यक्तियों की बात सुनकर उसे पार करने मे दुगुना उत्साहित हो उठा। हमे भी गिरने वालो से भी शिक्षा पाना है ओर पारगामियो से भी शक्ति पाना है। निराशा–हताशा को तो अपने पास फटकने ही न दे।

यद्यपि मैं कौन हू यह प्रश्न बडा जटिल है। सहस्राब्दियो से अनेकानेक लोगो ने विभिन्न रूपो में इस पर अन्वेषण किया है। कोई कहता है मैं शरीर हू, मैं धन हू, मैं आत्मा हू, मैं जीव हू या मैं अमुक लिगी हू, अमुक व्यक्ति हू आदि विभिन्न रूपो मे अनुसधानात्मक बाते उभर कर सामने आती रही हैं। पर हकीकत मे देखा जाय तो मैं, ऐसा–वैसा कुछ नही हू। मैं तो केवल मैं ही हू। निपट मैं, अकेला मैं। जिसमे दो हो ही नहीं सकते। जहा दो है वहा मैं और तू है। वहा फिर मैं कैसा। मैं को समझने के लिए हमे इस द्विरूपता को छोडना होगा।

मैं, मतलब मैं, और कुछ नहीं। भगवान महावीर ने "एगे आया" का सूत्र देकर यह स्पष्ट कर दिया कि बस अकेली आत्मा दो नहीं। जहा दो हैं वहा, अधूरापन है। जहा दो है, वहा सघर्ष है, द्वन्द है, अशान्ति है। केवल मैं ही हू।

दर्पण अलग होकर भी उसमे देखने वाला व्यक्ति दर्पण को न देखकर अपने को देख रहा होता है। वैसे ही दुनिया को देखने वाला व्यक्ति भी अगर "मैं" मे है तो वह वहा पर भी मैं को ही देख रहा है। वहा तू कुछ है ही नहीं। तू नही तो कुछ झगडा है ही नहीं। जो कुछ भी है वह मैं तुम का झगडा है। भगवान महावीर ने सगम जैसे घोर निकृष्टता पर उतर आए देव को भी तू के रूप में नहीं देखा, उसमे भी मैं ही देखा। वह भी मैं हू। यही कारण था कि सगम देव द्वारा छ मास तक घोर कष्ट देने के बावजूद भी प्रभु उसका हित ही सोच रहे हैं। क्योकि वहा तू कोई है ही नही। धर्म रूचि अणगार ने चींटियो की रक्षा के लिए कडवा तुम्बा नहीं पिया। बल्कि वे तो अपनी रक्षा के लिए ही कडवा तुम्बा पी रहे थे। वे चींटियो की नहीं अपनी रक्षा चाहते हैं। क्योंकि वे चींटियो को भी अपने से अलग नही समझते, वह भी मैं ही हू। जब व्यक्ति एगे आया के सूत्र का इस प्रकार से विस्तार कर देता है तो उसके सारे द्वन्द, सघर्ष, हिसा, ईर्ष्या, द्वेष, राग सब कुछ विलीन हो जाते हैं। बस आत्मा के तल पर एक ही तथ्य रह जाता है कि मैं हू। मैं मैं हू।

जब तक तू तू, मैं मैं करते रहेगे तब तक हम ऊपर की परिधि में ही भटकते रहेंगे। परिधि के केन्द्र पर पहुचने के लिए हमे इससे ऊपर उठना होगा। पारिवारिक जीवन मे भी एक छत्त के नीचे रहकर भी यदि तू तू मैं मैं करते रहे तो वहा भी शान्ति नहीं रह सकती। तू मैं को समाप्त करना होगा। तू तू नहीं वह मैं हू। फिर उसके हित, आपके हित बन जाएगे। उसके अहित आपके अहित होगे। वैसी स्थिति मे दुख द्वन्द आ ही नहीं सकता।

मैं ऐसे दो भाईयो को जानता हू। जिनके पास करोडो अरबो का धन है। धन कमाने मे उनकी पुण्यवानी खूब काम करती है। लोहे मे भी हाथ डाले तो सोना बन जाता है। पर माता-पिता के रहने तक तो दोनों एक थे। क्योकि केन्द्र जो एक है। उनके स्वर्गस्थ होते ही केन्द्र टूट गया। इगो टकरा गया। वह कहता है मैं अलग तुम अलग। छोटा बोला- इतनी सपत्ति होते हुए भी मैं तुम्हारे अधीन नहीं रह सकता। मैं तुम अलग-अलग रहेंगे। आखिर सघर्ष बढने लगा। इसी बीच बडे भाई का अच्छे सतों से सपर्क हो गया। उसे तू मैं की दीवार तोड़ने के लिए कहा। परिधि नहीं केन्द्र समझाया। वह समझ गया। घर गया और अपने छोटे भाई को स्टाम्प पर लिखकर दे दिया। मैं

कुछ नहीं, सब कुछ तुम हो। मेरा कुछ नहीं, सब कुछ तुम्हारा है। यह धन दौलत सब तुम्हारे हैं। मैं भी कुछ नहीं बस तुम ही हो। मैं भी तुम में हू।

यह सुनते ही और स्टाम्प पर लिखा देखते ही तो छोटा भाई भी दिल से बदल गया। वह भी कहता है। जहा ऐसा भाई हो, वहा मैं कुछ हू ही नहीं। मुझे कुछ नहीं चाहिये। बस वह भाई चाहिये। मैं सब कुछ वहीं हू जो भाई है। झगडा खत्म। दोनों परिधियो से हटकर केन्द्र तक जो पहुच गए थे। यह व्यवहारिक तौर पर केन्द्र पर पहुचने की एक कला है। जहा कहीं भी द्वन्द खत्म होकर शाति आ सकती है तो हमें आन्तरिक तल पर यह बात समझनी होगी। समझनी ही नहीं, आत्मसात् करनी होगी। हम, मैं को किसी दौलत, परिवार, मकान या रिश्ते नाते के साथ न जोडे। वे सब पलटने वाले हैं। वे मैं के साथ जुडने वाले नहीं हैं। अनमेचिग। अनमेज्ड कर दिया तो खतरनाक रूप ही उभरता है ब्लड-ग्रुप मिलाए बिना रक्त चढा दिया तो वह मरीज की जान ले सकता है। यही हाल इन बाहरी जड तत्त्वो के साथ आत्मा का है। जड तत्त्व अनमेच्ड है। जब तक उनकी जड तत्त्वों की आत्मा के साथ मेचिग कराते रहेंगे। तब तक सघर्ष पनपते रहेंगे। हमे आज नहीं कल इन रास्तों को बद करना होगा। जो रास्ते एडिसन के शब्दों में व्यर्थ हो गए हैं। जिन पर हम एक बार नहीं अन्नती बार जा चुके हैं। वैसी स्थिति में अब उन रास्ते पर जाने की आवश्यकता नहीं रह गई है। मत घबराइये हमारा किनारा आ चुका है। अब यदि उस युवक की तरह हताश हो गए तो सफलता चरण नहीं चूमेगी। सफलता पाने के लिए हमे, अपने "मैं" को जगाना है। बाहर से नही भीतर से। बाहर के प्रयास, केवल भीतर को जगाने के लिए हैं। बिना भीतर को जगाए काम हो ही नहीं सकता। बाहर की ए बी सी डी भीतर की ए बी सी डी को जगाने के लिए हैं। अगर वह न जगे तो बाहर से भरी गई ए बी सी डी बच्चे के दिमाग मे नहीं रह सकती। बहुत बार ऐसा होती भी है अत हमे बाहरी ज्ञान, विज्ञान एव सारे आदर्शो को भीतर मे जगाने के लिए लगाना है। अन्तत हमें यह नॉलेज – "मैं" मैं हू। जागृति करना है। तभी तरगें समाप्त होगी। द्वन्द्व समाप्त होगे। इच्छाए नि शेष होगी।

भगवान महावीर ने सही माने में मैं को जगाया था। यही कारण था कि उन्हें अपनी मा त्रिशला भी त्रिशला नहीं, वे ही दिखने लगने लगे। त्रिशला का कष्ट भी उनका न होकर वर्धमान का हो गया। वे एक हो गए। परिणाम-स्वरूप हिलना-डुलना बद कर दिया। वे त्रिशला के देह से एक नहीं थे। अपितु उनकी आत्मा से एक थे। कष्ट के लिए एक थे। यह एकात्म

दृष्टिकोण भगवान महावीर का गर्भ से लेकर निर्वाण तक की जीवन यात्रा मे स्पष्ट रूप से परिभाषित होता है। वे जहा भी गए, जिन्होने, चाहे उन्हे सुख दिया हो या दु ख। अनुकूल हो या प्रतिकूल। रागी हो या द्वेषी। पर उनकी मैं की धारा उन सबके लिए भी एकात्म भाव के रूप में प्रवाहित होती रही। कर्मों की गदगी साफ होती रही और एक दिन, मैं का विराट स्वरूप पूरे लोक में विस्तीर्ण हो गया। वे सब कुछ पा गए कृत–कृत्य हो गए।

आध्यात्मिक गहराइयो मे उतारने वाला "मैं" व्यवहारिक समस्याओं का भी पहले समाधान करता है। जिन्दगी में होने वाले हानि–लाभ, उत्थान–पतन के बीच यह समझने की आवश्यकता है कि मेरा है वह जाता नहीं, जो जाता है वह मेरा नहीं।

ये विचार भी किसी हद तक व्यक्ति को सतुष्ट करने वाले होते हैं। निश्चय में तो यह शाश्वत सत्य है कि जितनी वस्तुए इन्सान ऊपर से एकत्रित करता है उन्हे जाने के पहले यही छोडकर ही जाना होता है। इसमें परमप्रिय समझा जाने वाला शरीर भी है। वह भी यहीं रह जाना है। मानसिक स्थिति को समतोल बनाए रखने के लिए यह प्रखर चिन्तन व्यक्ति को मानसिक स्तर पर निश्चिन्त बनाए रखता है। यही चिन्तन आगे से आगे बढता हुआ चरमोत्कर्ष में परमरूपता पा जाता है।

"मैं" को समझने के लिए सतत चिन्तन एव स्वाध्याय की अपेक्षा है।

भगवान महावीर ने आचाराग सूत्र में भव्यात्माओं को सबोधित करते हुए कहा है– "सपेहए अप्पग मप्पएण" हे भव्य आत्मन् ! तू अपनी आत्मा से अपने को ही देख दुनिया मे भी दुनिया को नहीं, अपने को देख। सब जगह जब स्वय को देखेगा तो द्वन्द समाप्त हो जाएगे। यदि तुम्हें लडने की इच्छा भी हो जाय तो दूसरे से न लडकर अपने से लडो। जैसा कि प्रभु कहते हैं–

अप्पाणमेव जुज्झाहि कि ते जुज्झेण बज्झओ।

हे आत्मन ! अपने आप से युद्ध कर, अन्य किसी से युद्ध करने मे कोई लाभ नहीं है। क्योकि जो दूसरों से युद्ध करने वाला है, वह कभी नहीं जीतता। बल्कि जीतकर भी पराजित हो जाता है। अत युद्ध अपने ही कुविचारो से किया जाय, उन्हें सशोधित कर स्वच्छ बनाया जाय।

प्रभु ने कहा है–

अप्पाणमेव मप्पाण जइत्ता सुह मेहए।

अपने आप से, अपने आपको जीतने वाला सच्चे सुख को पा जाता है। इसलिए अपने आपको पहचानना जरूरी है। कौन हू मैं। मैं तन नहीं, धन नहीं, मन नही, दौलत नहीं, परिवार नहीं, जड नहीं मैं केवल मैं हू। इसके अलावा कुछ नहीं यह स्वरूप भीतर मे उभरना चाहिये। तब वही "मैं" स्वरूप बडा होते–होते विराट लोकरूपता को पा लेता है।

मैं कौन हू, पर कुछ समीक्षा करने के बाद इस पर विशेष कुछ मथन करने के लिए कहा से आया हू, कहा जाऊगा आदि पर विचारणा करने के लिए सर्वप्रथम वीतराग देव प्रभु महावीर की वाणी आचाराग सूत्र के प्रारभिक सूत्रो पर मन्थन कर लेना भी आवश्यक है।

इह मेगेसि णो सण्णा भवइ, तजहा– पुरत्थिमाओ वा दिसाओ आगओ अहमसि दाहिणाओ वा दिसाओ आगओ अहमसि पच्चत्थिमाओ वा दिसाओ वा आगओ अहमसि, उत्तराओ वा दिसाओ आगओ अहमसि, उड्ढाओ वा दिसाओ आगओ– अहमसि ? अहो वा दिसाओ आगओ अहमसि। अण्णरीओ वा दिसाओ अणु दिसाओ वा आगओ अहमसि ? एवमेगेसि णोणाय भवइ। अत्थि मे आया उववाइए णत्थि मे आया उववाइए के अह आसि ? के वाइओ दूओ चुओ इह पेच्चा भविस्सामि ?

से ज पुण जाणेज्जा सह समइयाए परवागरणेण अण्णेसि अतिए वा सोच्चा तजहा– पुरत्थिमाओ वा दिसाओ आगओ अहमसि–जाव अण्णयरीओ दिसाओ अणुदिसाओ वा आगओ अहमसि।

एवमेगेसि ज णाय भवइ– अत्थिमे आया उववाइए जो इमाओ दिसाओ अणुदिसाओ वा अणुसचरइ

"सोहं"

सव्वाओ दिसाओ–अणु दिसाओ जो आगओ अणुसचरइ

"सोहं"

से आयावाई–लोयावाई कम्मावाइ–किरियावाई।।

अकरिस्स चाह कारवेसु चाऽह करओ यावि समुणन्ने भविस्सामि। एयापकति

अर्थ

भगवान का यह कथन अर्द्ध मागधी भाषा में हुआ है। इसका तात्पर्य यह है कि इस दुनिया मे बहुत सी आत्माए ऐसी हैं जिन्हे इस बात का भान नहीं है कि मैं पूर्व दिशा से, दक्षिण दिशा से, पश्चिम से, उत्तर से ऊची नीची

या किसी विदिशा से आ रहा हू या अनुदिशा से आ रहा हू।

फिर बहुत से प्राणियो के मन में ऐसी जिज्ञासा भी उठती है कि मेरी आत्मा पुनर्जन्म पाने वाली है या नहीं ? मैं पहले कौन था ? और यहा से मरने के बाद परभव जन्मान्तर मे क्या होना है ? अर्थात् आगे कहा जाऊगा ? इसका उसे यथार्थ ज्ञान नहीं होता।

किसी–किसी को ऐसा ज्ञान हो सकता है। उस हो सकने मे सहयोगी तीन कारण होते हैं–जाति स्मरण ज्ञान से, या फिर ज्ञानी तीर्थकर या केवली महापुरुषों के कहने से या उपदेश द्वारा यथार्थ तत्त्व सुनने से बहुत से जीवों को ऐसा भी ज्ञान होता है कि मेरी आत्मा पुनर्जन्म को पाने वाली है। जो अमुक दिशा से आई है।

वह मै हू

इस प्रकार जिसे ज्ञान हो जाता है, वह आत्मवादी, लोकवादी, कर्मवादी, क्रियावादी बन जाता है।

इस प्रकार मैंने किया, करता हू, करूगा। इस प्रकार करने, कराने और अनुमोदन करने के त्रिकाल की दृष्टि से तीन भेद होकर नौ भेद हो जाते हैं। जिन्हे मन–वचन–काय से सयुक्त करने पर 9 X 3 =27 भेद बन जाते हैं।

वीतराग देव ने लोकोत्तर ज्ञान में अनन्तानन्त आत्माओं को अवभासित कर दुनिया को यथार्थ स्वरूप समझाने हेतु निर्देश दिये हैं।

सर्वप्रथम यह जानना तो बहुत मुश्किल है कि "मैं" कौन हू। जब तक इस बात का यथार्थ ज्ञान न हो जाय तब तक उसे करणीय अकरणीय का भी सही बोध नही हो सकता। दार्शनिक गेटे, एक बार शाम को बगीचे मे घूम रहे थे। वे अपने चिन्तन में मस्त घूमते ही रहे। घूमते ही रहे। समय गुजरता गया। कई आए और चले गए। पर गेटे वैसे ही घूम रहे हैं। रात्रि के 12 बजने को आए। बगीचा खाली हो गया। पर वह साया अभी भी घूम रहा है। जिन्हें कोई भान नहीं। बगीचे का रक्षक चकराया, घबराया, बोला कौन है ? पर कोई आवाज नहीं। वही चक्रमण यों ही चलना। आखिर चौकीदार घबराकर जोर से चिल्लाया रुक जाओ। नहीं तो गोली मार दूगा। इस बीच गेटे की गति धीमी पडी वे रुके तो चौकीदार फिर बोला– कौन हो तुम ? दार्शनिक ने अपनी ही भाषा मे जवाब दिया कि इसे ही तो जानने का प्रयास कर रहा हू कि कौन हू मैं ? यह बात अभी तक नहीं जान पाया हू।

चौकीदार सोचने लगा–लगता है कि कोई पागल है। यह बात सही भी है कि किसी पागल को समझदार आदमी कभी भी सही नहीं लगता। वह उसे अपनी थ्योरी से अलग ही नजर आता है। वह तो पागल ही मानेगा उसे। आज भी जिसने मैं को नहीं पहचाना या "मैं" को विकृतरूप में पहचाना वह कभी भी "मैं" को जानने वाले को सही मानेगा ही नहीं। क्योंकि उसके नाप मे वह आ ही नहीं सकता। दुनिया में ज्यादातर लोग "मैं" के स्वरूप को जानते नहीं है। विकृत "मैं" तो अह को बढ़ाने वाला है। शुद्ध स्वरूपी "मैं" अहकार को क्षीण नष्ट करने वाला होता है।

मैं के साथ बहुत सारे फाल्स रिलेशन जोड़ रखे हैं। जिनमें चिपका हुआ आदमी आजकल से नहीं अपितु अनन्त जन्मो से 84 लाख रूपों मे भटका है। उन रूपो को जरूर छोड आया पर उनके कुसस्कार नहीं छोडे। इसलिए आज भी घूम फिर कर उसी चक्कर में उलझा पडा है। वे ही सस्कार उसे बार–बार अडचने खडी क्रर रहे हैं। परेशान कर रहे हैं।

उन सब कुसस्कारों को हटाने के लिए मैं की झलक पानी होगी। तभी वह कहा से आया है और कहा जाएगा इस तथ्य को जान सकेगा। इसकी जानकारी के लिए तीन मुख्य कारण बतलाए गए हैं। प्रथम तो जाति स्मरण ज्ञान से।

जाति स्मरण यह शब्द जैन दर्शन का पारिभाषिक शब्द है। महत्त्वपूर्ण है यह शब्द। इस ज्ञान को मतिज्ञान का भी भेद माना है। अर्थात् पहला जो सामान्य ज्ञान है मतिज्ञान का भेद है। जाति स्मरण, वैसे भी सामान्य ज्ञान है। क्योकि जो सस्कारो में भरा होता है वह निमित्त पाकर कभी–कभी, किसी–किसी के मस्तिष्क में उभर जाता है। जाति से पूर्व जन्म के सस्कार लिये जा सकते हैं उनका स्मरण हो आना, जाति स्मरण ज्ञान माना जाता है। यह ज्ञान, जीव को बीते भव की जानकारी दे सकता है।

मैं के साथ ही गत एव आगत भवों की जानकारी के लिए दूसरा कारण ज्ञानियों का कथन भी माना गया है। जिनके दिव्य नेत्र उद्घाटित हैं। ऐसे आत्मज्ञानी के सपर्क में आने वाले व्यक्ति को उनके कहने मात्र से भी ऐसा विशिष्ट ज्ञान हो सकता है।

इन्द्रभूति आदि गणधरों के सामने प्रभु ने त्रिपदी के रूप में "उप्पेइवा विगमेइ वा धुवेइ वा" ये तीन वाक्य कहे। इतने मात्र से ही उन्हें 14 वर्षों का ज्ञान होना स्वीकार किया गया है। जब मेघ कुमार मुनि दीक्षित होने की प्रथम

रात्रि मे ही विचलित हो गए और पुन ससार में जाने का सकल्प करके प्रभु की सेवा मे पहुचे। तब प्रभु ने उनकी आत्मा को जगाते हुए उसे उसके पूर्वभव का स्मरण करने के लिए हाथी के भव मे की गई खरगोश की रक्षा की घटना सुनाई। जिस छोटे से तुच्छ समझे जाने वाले प्राणी खरगोश के लिए मेघकुमार ने हाथी के भव में अढाई अहोरात्र पर्यन्त एक पैर अधर मे ही रखा। प्रभु बोले तएण तुम मेहा। गाव कडुइत्ता पुणरवि पाय पडिनिक्खमिस्सामि त्ति कट्टु तु ससय अणुपविट्ठ पाससि, पासित्ता, पाणेणुकपाए, भूयाणुकपयाए जीवाणुकपयाए, सत्ताणुकपयाए से पाए अतराचेव सधारिए नो चेवण णिक्खित्ते।

हे मेघ। तुमने उस समय 2½ दिन–रात तक अपने पैर को ऊपर रखकर उस छोटे से प्राणी की रक्षा की थी। और आज सतो के प्रमार्जन से घबरा गए।

बस यह सुनते ही कुछ मेघकुमार पर इन शब्दो का चमत्कारिक असर हुआ और "सुमेहिपरिणामेहि ए पसत्थेहि अज्झवसाणेहि लेस्साहि विसुज्झ माणीहि तयावरणिज्जाण कम्माण खओसमेण ईहा–पोह–मग्गगण–गवेसण करेमाणस्स सन्निपुव्वे जाइसरणे समुप्पन्ने।।

मेघकुमार को शुभ परिणाम, प्रशक्त अध्यवसाय, विशुद्ध लेश्या के कारण से जाति स्मरण के वे आवारक कर्म के क्षयोपशम होने पर इहा ऊपोह मार्गण गवेषणा करते हुए जाति स्मरण ज्ञान प्रकट हुआ। जिसमे उन्हे पूर्वभव स्पष्ट नजर आने लगा।

मेघकुमार की यह घटना, शब्दों के चमत्कारिक प्रभाव को भी स्पष्ट करती है। प्रभु सर्वज्ञ थे, उन्हे यह सब ज्ञात था कि कौन सा शब्द बोलने से मेघकुमार की उस अदृश्य सुषुप्त शक्ति पर झटका लगेगा और वह सक्रिय हो उठेगी ? जिस प्रकार किसी के क्रोध को जगाने के लिए आपको शब्द प्रयोग की जानकारी होती है कि कुछ अपशब्द बोलो और सामने वाले को गुस्सा आ जाएगा। वैसे ही कुछ प्रशसा करो तो मान मे चेहरा खिल उठेगा। तो भगवान को तो यह भी पता था कि मेरे हम शब्द के प्रयोग से इस आत्मा को जाति स्मरण ज्ञान हो जाएगा। ये वचन प्रयोग, शास्त्रीय दृष्टि से वचन चिकित्सा को स्पष्ट कर रहे हैं। मानसिक सोच एव वचनों के सही प्रयोग से भी किसी की चिकित्सा की जा सकती है। आज शारीरिक इलाज के लिए मेडिसन प्रयोग एव मानसिक इलाज के प्रयोग तो काफी हो रहे हैं। पर वचन चिकित्सा पद्धति का अपेक्षित विकास नहीं हो पाया है। जबकि यह पद्धति

अत्यन्त सरल एव विशिष्ट असरकारक होती है पर इसके चिकित्सक का नॉलेज महत्त्वपूर्ण होना आवश्यक होता है।

इसीलिए शास्त्र मे ज्ञानी, तीर्थंकर, महापुरुषो के वचन प्रयोग से ही 'सोह' का सही ज्ञान होना बतलाया है और जिस दिन वह स्वय का स्वरूप जान गया उस दिन गत-आगत की जानकारी भी सम्यक् हो जाती है।

"मैं" का बोध होने पर यह जाना जा सकता है कि मैं कहा से आया हू। इसे जानने के लिए पुद्गल परावर्तन का स्वरूप भी जान लेना चाहिये। जिसके माध्यम से आगत की स्थिति स्पष्ट हो सकती है। यह आत्मा अनादिकाल से कर्मवर्गणाओ से आबद्ध विविध योनियो मे भटकता चला आ रहा है। पुद्गल परावर्तन जैन धर्म का पारिभाषिक शब्द है। इसे द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव के भेद से चार भागो मे विभक्त किया गया है। सूक्ष्म और बादर के भेद से हर पुद्गल परावर्तन दो-दो प्रकार का कहा गया है। स्थूल द्रव्य पुद्गल परावर्तन से तात्पर्य यह है कि एक जीव लोक के समस्त पुद्गलों को ग्रहण करके त्याग कर दे और सूक्ष्म द्रव्य पुद्गल का मतलब यह है कि सात वर्गणाओं के रूप मे जो समस्त लोक मे पुद्गल है। उनमे सबसे पहले एक पुद्गल परमाणु को औदारिक वर्गणा के रूप में अपने में परिणमित करे फिर छोडे। इसी प्रकार व्यवधान रहित दूसरी वर्गणा मे क्रमश वैक्रियादि छहों वर्गणा को परिणमित करे-छोडे। इस प्रकार क्रमश सातो वर्गणाओ के रूप मे सर्व पुद्गलो का ग्रहण विसर्जन हो। तब द्रव्य से सूक्ष्म पुद्गल परावर्तन होता है। यदि इस बीच एक परमाणु औदारिक वर्गणा के भोगने पर बीच मे उसे वैक्रियादि वर्गणा के रूप मे चाहे जितनी बार भोगा जाय। उसका सूक्ष्म पुद्गल परावर्तन मे परिगणन नहीं होगा। इसी तरह क्षेत्र के दृष्टि से सपूर्ण भू भाग को व्यत्क्रम से एव क्रमश मृत्यु द्वारा स्पर्श किया जाय। इसी प्रकार काल की दृष्टि से उत्सर्पिणी-अवसर्पिणी काल के समयों को मृत्यु की दृष्टि से व्युत्क्रम और क्रमश स्पर्श करना तथा अध्यवसायों की दृष्टि से असख्य अध्यवसायों को मरण के साथ व्युत्क्रम और क्रमश स्पर्श करना। द्रव्य क्षेत्र कालभाव से बादर और सूक्ष्म पुद्गल परावर्तन है। हमारी इस आत्मा ने एक नहीं अनन्त बार ऐसे परावर्तन कर लिए हैं। इस लोक में एक भी कोना ऐसा नहीं जहा पर हमने जन्म-मरण नहीं किया हो।

भगवती सूत्र शतक 2 उद्देशक 8 में इस बात को बकरे के बाड़े की उपमा से भी भगवान ने समझाया है।

यह बतलाने से यह एकदम स्पष्ट हो जाता है कि इस आत्मा के लिए अपरिचित कुछ रहा ही नही है। न तो कोई जगह है और न ही कोई रिश्ता ही है। इस आत्मा के सभी आत्मा के साथ सभी तरह के रिश्ते एक नहीं अनेक बार हो चुके हैं।

ऐसी स्थिति मे हमारी आत्मा के लिए न तो कोई रिश्ता महत्त्वपूर्ण है और न ही कोई क्षेत्र महत्त्वपूर्ण रहा है और न ही कोई समय महत्त्वपूर्ण है। सभी समयों मे जी चुकी है, मर चुकी है तब क्यो वह किसी पदार्थ के प्रति आकर्षित हो रही है आकर्षण की तो कोई जगह ही नहीं रह जाती। सब कुछ तुम्हारे ग्रहण करके छोडा हुआ है। आत्मा के निस्पृह भावो को जगाने के लिए प्रभु द्वारा किया गया कथन अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है।

तुम्हारे सम्यक् जागरण मे तुम्हे ज्ञानी के कथन से यह ज्ञात हो जाता है कि तुम कहा से भटक कर आए हो। शास्त्रकारों ने तो यहा तक बतलाया है कि यदि तुम्हे छोटी–छोटी बातों मे क्रोध ज्यादा आता है और भयभीत भी जल्दी होते हो तो समझ लो नरक से आ रहे हो।

दूसरी बात यदि छल कपट ज्यादा करने की आदत हो और इधर भूख भी बार–बार लगती है तो समझ लो तिर्यंच–पशु–पक्षी की योनि से आ रहे हो।

तीसरी बात यदि तुम्हें अहकार ज्यादा हो रहा है इसके साथ ही मैथुन की भावना भी प्रबल रहती है तो मनुष्य योनि से आ रहे हो।

चौथी बात यदि तुम्हे तृष्णा ज्यादा हो तथा परिग्रह की भावना अधिक मुह फैलाती हो तो समझो कि देव गति से आए हो। यह एक सामान्य रूप से बीते किस भव से आ रहे हो, उसका अदाज लगाया जा सकता है। यह भी एक स्थूल दृष्टिकोण है। सूक्ष्म रीति से तो हमारी वृत्तिया—आदते किस–किस रूप में उभर–उभर कर आ रही है इसे पकडने की आवश्यकता है। वे आदते बीते सस्कारों का सकेत करती है। जैसे इस भव में भी किसी आदमी की गलत आदमियो के साथ रहकर गाली देने की आदत पड जाती है तो वह भविष्य में सस्कारित भी हो जाता है, तथापि उसकी वह आदत कभी न कभी उभरती है और उसके मुह से वह अपशब्द निकल जाता है या फिर कई बार जिसकी जन्म जात जो भाषा रही हो, पढने के बाद वह अपनी भाषा को कितना भी परिवर्तित कर ले, फिर भी उसकी वह आदत एकदम नहीं छूट सकती है। जो कि उसके पूर्व जीवन का आभास कराती है उसी प्रकार इन्सान की आदते, उसके पूर्वभव का भी आभास करा देती है।

जीव के 563 भेदों की दृष्टि से यदि चिन्तन किया जाता है तो मनुष्य गति मे कर्म भूमिज जीवो की दृष्टि से आने वाले रास्ते 279 हैं। 101 समूर्च्छिम मनुष्य के अपर्याप्त बतलाए हैं। 15 कर्मभूमिज पर्याप्त अपर्याप्त बतलाए हैं। तिर्यंच मे केवल तेजस्काय– वायुकाय के 8 भेद छोड कर सभी तिर्यंच के जीव मनुष्य मे आ सकते हैं और देवलोक में से तो सभी 99 में ही देवलोक में से जीव निकल कर मनुष्य मे आ सकता है।

अब इन आगमन के 279 स्तोत्रो पर चिन्तन आवश्यक है कि इनमें से मैं कहा से आ रहा हू ? क्योंकि इन योनियो से मनुष्य में आने का डाइरेक्ट सपर्क है। समूर्च्छिम मनुष्य वे होते हैं जो मनुष्य के द्वारा ही छोडी गई विभिन्न अशुचियो मे पैदा होते हैं। अब वहा से मरकर जो इस कर्म भूमिज मनुष्य मे आता है तो उसका उस गदगी की ओर सहज आकर्षण हो सकता है, जिसे वह छोडकर आया है। तिर्यंच मे पशु–पक्षी मे से किसी भी प्रकार के पशु से पक्षी से निकलकर वह यहा मनुष्य बन सकता है। ऐसी स्थिति मे उस पशु पक्षी की पाशविकता की झलक उसमे आज भी आ सकती है। जो जीव पृथ्वी, पानी, वनस्पति से आया हो उसमें वह आकर्षण भी उसकी उस गति के आगमन का ज्ञापक बन सकता है। यदि वह देवलोक से आत्मा है तो भवनपति के असुर कुमार आदि देवों से आया है। ये जो नारकियों को लडाने वाले परमाधर्मी देवों से आया है यह उसके आज की झगडेल आदतों से अन्दाज लगाया जा सकता है। पापपूर्ण वृत्तियों से समझा जा सकता है। यही स्थिति व्यन्तर, ज्योतिष और वैमानिक देवलोको से आने वाले जीव के चिन्तन मे अपने–अपने कारणो के अनुसार बन सकती है।

कहा से मैं आया हू। इसे समझने के लिए यह भी एक उपयुक्त दृष्टिकोण रहता है। इसीलिए इन्सान की बहुत सी आदतें इस जन्म से जुडी न होकर पूर्व जन्म से चली आ रही होती है। पर विशेषता बहुत बडी यह है कि इस जन्म में अपने प्रखर–चिन्तन और विशुद्ध आचरण के बल पर अपनी आदतो को जड मूल से उखाडता हुआ, निजी स्वरूप को विकसित कर सकता है। इसीलिए नर से नारायण बनने की क्षमता मनुष्य जीवन में स्वीकार की गई है। यह क्षमता और किसी भी गति में रह–रहे जीव में नहीं होती। कोई भी इसे विकसित नहीं कर सकता है।

चित्त एक उभय प्रेक्षी दर्पण है, वह विकारों से जितना शुद्ध होता जाएगा उतना ही उसे दोनो तरफ भूत और भविष्य दिखना प्रारम हो जाएगा।

मनुष्य के जाने के लिए सारे रास्ते खुले हुए हैं। वह एक ऐसे चौराहे पर है, जहा से वह किसी भी मार्ग पर आगे बढ सकता है। चारों गतियो में से किसी भी गति मे जा सकता है। जीव के 563 भेद बतलाए हैं। उनमे से किसी भी जीव के भेद मे/योनि मे उसकी उत्पत्ति हो सकती है अर्थात् इन्सान में अच्छे से अच्छा और बुरे से बुरा करने की शक्ति रही हुई है। वह जिस किसी प्रकार से उसका उपयोग कर सकता है वह उसी अनुसार उस गति मे चला भी जाता है।

नरक मे जाने के चार कारण बतलाए गए हैं–महाआरम, महापरिग्रह, पचेन्द्रिय वध और मासाहार। महारम्भ से हिसा जनित कार्य लिये जाते हैं। जिन कार्यों मे भयकर हिसा हो, वह महारम्भ में आता है जैसे जगल जला डालना। 15 कर्मादान को भी महारम की कोटि मे लिया जाता है।

वैस अल्पारम या महारम्भ आदमी के विवेक पर निर्भर करता है। वह क्या कार्य कर रहा है ? अल्प हिसा वाले कार्य मे भी कई बार महाहिसा हो जाती है। रोटी बनाना अल्पारम्भ है। पर यदि महिला फूहड है और वह न तो पूरा छानती है, न ही अरणि–काष्ट देखभाल कर जलाती है उस स्थिति में त्रस जीवो की भी भारी हिसा होने की सभावना होने से महारम्भ भी हो सकता है। या फिर गैस की टकी से गैस लिकेज हो रहा है और ध्यान नही दिया जाता है, तब जब भारी विस्फोट हो जाता है, तो वह प्रमाद जन्य हिसा भी महारम की कोटि मे आ सकती है। अहिसक दिखने वाला व्यापार भी कई बार महारम की कोटि मे आ जाता है जैसे कि ब्याज पर दिये जाने वाले पैसे। इसमे ऊपर से तो कोई हिसा नजर नहीं आती है। लेकिन किसी की परिस्थिति का लाभ उठाकर उससे भारी मात्रा मे ब्याज लेना भी मनुष्य की हिसा है। इन्सानियत की हिसा है जो कि महारम्भ है। दहेज प्रथा, मृत्यु भोज जैसी कुरीतिया जिसमें इन्सानी खून चूसा जाता है, वह भी महारम्भ की कोटि मे आ सकते हैं। आजकल तो धर्म के नाम पर भी भारी आडम्बर और डेकोरेशन होने लगे हैं। जो धर्म अहिसा का परम पुजारी माना जाता है। बारीक सी हवा के जीवों के लिए भी रक्षा की बात करता है, उसके धर्माधिकारियो द्वारा भी खुले आम आडम्बरकारी महारम जनित गतिविधियों में भाग लेना भी महारम की कोटि मे आता है। महारमजनित बडी–बडी कपनियो के शेयर खरीदना भी महारम के भागीदार बनना है।

जिस प्रकार कण–मास खाओ, चाहे मण मास खाओ। मास तो खा ही लिया गया। वह मासाहारी माना जाता है। चौबीस घटे भूखे रहकर एक घूट

चाय पीने वाले के उपवास नही माना जाता है उसी प्रकार महारभ जनित कार्यों मे जरा भी शेयर रखने वाला व्यक्ति, महारभ से पूरी तरह अछूता नहीं माना जा सकता।

कई व्यक्ति बाहर से अहिसक होते हैं, पर भीतर से मानसिक तौर पर हिसा करते रहते हैं। प्रभु की दृष्टि मे वे भी महारभी हैं। कालिया कसाई को जब श्रेणिक ने एक कोठे में 24 घटे के लिए बद कर दिया तो श्रेणिक खुश हो रहा था कि इस व्यक्ति ने 500 पाडे कल नहीं मारे अब मेरी नरक टल जाएगी। पर जब वह प्रभु के पास पहुचा और प्रभु ने कहा– सुनो– उस कालिया कसाई ने मन से तो 500 पाडे मार लिए हैं। उसे 500 पाडा मारने जितना पाप हो गया है। काया से मारे या न मार पाए। उसे पाप तो हो ही गया। ऐसी स्थिति मे बिना काया के मन से भी महारम्भ हो सकता है।

तन्दुल मत्स्य मन से हिसा करके ही तो सातवीं नरक में गया था। अत तन से अहिंसक, मन से महारम्भ करने वाला भी महावीर की दृष्टि मे महारमी है।

नरक मे जाने का दूसरा कारण महापरिग्रही बतलाया है। महापरिग्रही से ये ही तात्पर्य नहीं है कि जिसके पास सबसे ज्यादा पैसा, धन–काचन हो। बल्कि कई बार तो ज्यादा धन होकर भी महापरिग्रह को दूर भरत जी जैसे व्यक्ति केवलज्ञानी भी हो जाते हैं।

मूर्च्छा को परिग्रह कहा है। "मुच्छा परिग्गहो वुत्तो" आसक्ति ही परिग्रह का कारण है। आदि तीर्थंकर ऋषभदेव ने बाहर से अल्पपरिग्रही सुनार की लम्बी भव परपरा बतलाकर यह निर्दिष्ट कर दिया कि आदमी बाहर से भले ही धन–सपत्ति रहित हो, परन्तु भीतर मे परिग्रह के प्रति उद्दाम–लालसा मडरा रही है, तो वह महापरिग्रही माना जाएगा। क्योकि शास्त्रकारों ने अर्थ को अनर्थ का मूल बतलाया है सभी अनर्थों की खान अर्थ है। ऐसे अर्थ को चाहने वाला गौणरूप से उन सारे अनर्थों का समर्थक हो जाने से/अनुमोदक हो जाने से महापरिग्रही बन जाता है।

पचेन्द्रिय वध से भी जीव नरक में जा सकता है पचेन्द्रिय मे मनुष्य और सारे तिर्यंच पचेन्द्रिय आ जाते हैं। उनकी हिसा करने वाला भी नरक मे जा सकता है। जिन कल कारखानों मे पचेन्द्रिय का घात होता हो, उसका शेयर होल्डर बन जाना भी पचेन्द्रिय वध की कोटि में आ जाता है। आजकल की श्रृगार प्रसाधन की / रहन–सहन की बहुत सारी वस्तुए ऐसी बनी है जिसमे पचेन्द्रिय जीवो की हिसा होती है। उनका खुला उपयोग भी पचेन्द्रिय वध की

कोटि मे आता है। अत इनके उपयोग का परहेज रखना भी जरूरी है। लेदर–
चमडे के साधनो का खुश होकर किया जाने वाला उपयोग घोर हानिकारक
बनता जा रहा है। स्कदक अणगार की आत्मा ने एक काचरे को छीलकर
प्रसन्नता जाहिर की थी जिसके कारण उनके शरीर की चमडी उतारी गई
और यहा जब लेदर की वस्तुए या ऐसी पचेन्द्रिय घाती वस्तुओं का उत्साह
के साथ अपने अह का प्रदर्शन करने के लिए आसक्ति पूर्वक किया जाने
वाला उपयोग उसकी आत्मा के लिए कितना घातक होगा, इसका सहज ही
अनुमान लगाया जा सकता है।

आज के आधुनिक युग मे गर्भपात भी एक आम घटना होती जा रही
है। आदमी अपने तुच्छ स्वार्थ के लिए अपनी गर्भस्थ सतान को भी मार
डालता है। भ्रुण परीक्षण के माध्यम से बच्चे का लिग परीक्षण कर लिया जाता
है। गर्भगत शिशु लडका है या लडकी। इसके बाद अनिच्छित शिशु को खत्म
करवा दिया जाता है यह स्पष्ट रूप से पचेन्द्रिय वध तो है ही। साथ ही
अपनी सतान की नृशसा हत्या भी है। ऐसा व्यक्ति ऊपर से कितना भी
धर्मानुष्ठान करले उसकी होने वाली गति नहीं सुधर सकती। पहले ऐसे घोर
पाप को रोकना जरूरी है। किये का सधोधन प्रायश्चित करना होगा।

चौथा नरक मे जाने का कारण मासाहार भी बतलाया है। वर्तमान के
युग मे शाकाहार और मासाहार का स्पष्टत विभाग करना मुश्किल हो रहा
है। कई खाद्य शाकाहारी पदार्थों में भी कमोवेश मास मिला होता है। 'घी'
जैसे विशुद्ध पदार्थ मे भी चर्बी के मिश्रण की बात सुनी जा चुकी है। हर रोज
सबेरे किये जाने वाले कोलगेट में भी हड्डी का चूरा बतलाया जाता है। यही
नहीं कई प्रकार की आइसक्रीम में भी अखाद्य मिला होता हे। इसके अलावा
कई चाकलेट–बिस्कुटो में भी नॉनवेज मिलता है ऐसी शाकाहार के नाम से
चलने वाली सैकडो वस्तुए मिल जाएगी, जिसमें नॉनवेज मिलाया जाता हे।
इस प्रकार के शाकाहार मे होने वाला, मिश्रण भी शाकाहारियो के पेट मे मास
उतारने वाला बनता चला जा रहा है। ऐसी स्थिति मे मासाहार से बचने के
लिए विशेष सतर्कता की आवश्यकता है। जिन वस्तुओ मे कण भर भी मास
मिला हो, नरक से बचने के लिए उसे छोडना भी जरूरी है जिस प्रकार कण
भर फिटकरी भी मण भर दूध को फाड देती है। वैसे ही कण भर मास भी
व्यक्ति की सात्विकता को विकृत कर देता है। अत मासाहार की स्थिति से
स्वय को बचाना बहुत जरूरी है। उपर्युक्त चार कारणो में से एक भी कारण
घटित हो जाता है तो वह जीव नरक गति की ओर आगे बढ सकता है

तिर्यंच गति मे जाने के लिए भी चार कारण बतलाए गए हैं—माया करने से, गूढ माया करने से, असत्य बोलने से, न्यूनाधिक माप तोल करने से।

जो व्यक्ति छल कपट करता है छोटी–छोटी बातो मे भी माया का आसेवन करता है। वह तिर्यंच गति मे जाने वाला बन सकता है। दूसरा कारण गूढ माया बतलाया है। इससे तात्पर्य है कि माया भी करता है, पर जरा छिप कर। अर्थात् लोगो की दृष्टि में सरल सयमी बना रहे और अन्दर ही अन्दर कपट का सेवन करने वाला गूढ मायावी होता है।

तीसरा कारण झूठ बोलने का बतलाया है। कई व्यक्तियो की छोटी छोटी बातों मे झूठ बोलने की आदत होती है। कारण–बिना कारण आदमी झूठ बोल कर भी तिर्यंच गति का मेहमान बन जाता है।

चौथा कारण कम माप तोल का बतलाया है। व्यापारी आदि कार्यों मे लेती वक्त ज्यादा लेना और देती वक्त कम तोल कर देना। थोडे से लाभ के पीछे व्यक्ति अपने दोनो भव बिगाड लेता है। जिसको कम दिया है या ज्यादा लिया है, उसे पशु योनि मे जाकर उसका भुगतान करना ही पडता हैं।

मनुष्य गति मे जाने के भी चार कारण बतलाए हैं। पहला कारण प्रकृति से भद्रिक हो अर्थात् सरल हो। मनुष्य गति सबसे उत्तम गति बतलाई जाती है। मोक्ष भी इसी गति से जाया जा सकता है। इसे पाने के लिए सरल होना जरूरी है। दूसरा कारण प्रकृति से अर्थात् नैसर्गिक रूप से ही विनय युक्त व्यवहार वाला हो। तीसरा कारण— दीन–दुखियो पर दयाभाव हो और चौथा कारण अहकार एव ईर्ष्या भाव कम हो।

देवगति में जाने के भी चार कारण बतलाए हैं— सराग सयम, पालन करने वाला— अर्थात् सराग साधु जीवन मे चल रहा है, उसकी गति वैमानिक देवलोक की बतलाई है। श्रावक भी देश विरत रूप से व्रतो का पालन करता है तो वह भी देवलोक मे जाता है। यद्यपि बाल तपस्वी है। पर घोर तपश्चर्या करता है तब भी देवलोक की गति है और कई बार अकाम निर्जरा से भी देवलोक प्राप्त हो जाता है।

यह सब कथन स्थूल दृष्टिकोण को लेकर है। कई बार अध्यवसायो की तीव्रता मदता से भी बाहरी कारणो के कुछ भी रहते हुए भी गतियो में परिवर्तन होता देखा जाता है।

इसीलिए कर्मवाद मे कर्म परमाणुओं के जीव के साथ आबद्धीकरण में प्रकृति, स्थिति, अनुभाग, प्रदेश रूप चार विभाग किये हैं। कौनसा कर्म,

किस स्वभाव का है और उसकी स्थिति कितनी बध रही है और वह अनुभाग की दृष्टि से फल देने की दृष्टि से कितनी शक्ति वाला है तथा कितने कर्म दलिक सचित हुए हैं। अपने विशिष्ट क्षयोपशम के बल पर जीव इस समय भी यह अन्दाज लगाकर कि "मैं कहा जाऊगा" यह जान सकता है।

देहली दीपक न्याय के अनुसार आपका वर्तमान जीवन ही आपके भूत एव भविष्य का दृष्टा-सर्जक बनता है। जिस प्रकार कक्ष की देहली पर पडा दीपक, अन्दर-बाहर दोनो तरफ प्रकाश करता है। उसी प्रकार व्यक्ति का वर्तमान जीवन, उसके भूतकालीन जीवन का भी परिचय देता है और भविष्य मे कहा जाने वाला है। यह भी स्पष्ट कर देता है। कहा जाना है ? यह इतना महत्त्वपूर्ण नही है, जितना कि क्या कर रहे हो, यह महत्त्वपूर्ण है।

प्रभु महावीर ने स्पष्ट रूप से उद्घोषित किया है कि तुम्हारा भविष्य तुम्हारे हाथों मे है। भविष्य को सवारने के लिए वर्तमान को सवारना सीखे। श्रेणिक राजा का ऐतिहासिक घटना क्रम सामने है। उसने जब भगवान महावीर सहित सैकडो सतो को विधि पूर्वक भक्तिभाव के साथ वन्दना की थी, तब उसके सात नारकी तक के कर्म दलिक कटकर एक नारकी तक के रह गए थे। प्रसन्नचन्द राजर्षि ध्यान मे खडे-खडे ही अशुद्ध अध्यवसायो से सातवीं नरक मे जाने तक की कडीशन अपनी बनाली और जब अध्यवसायो को विशुद्ध किया तो इतना विशुद्ध कर लिया कि केवलज्ञान-केवलदर्शन प्राप्त कर लिया। इसलिए हमारा भविष्य हमारे हाथो मे है।

जड से जड दिमाग वाला व्यक्ति भी अपने पुरुषार्थ से बडे से बडा दिमागी आदमी बन जाता है। अलबर्ट आइस्टीन के लिए कहा जाता है, वह गणित मे सबसे ज्यादा कमजोर था। मास्टर लोग उसे कहा करते थे कि इसे गणित तो सात जन्मों मे भी नहीं आएगी। जबकि आइस्टीन ने मन लगाकर मेहनत करी तो उसी भव मे विश्व का सबसे बडा गणितज्ञ बन गया। इसी प्रकार विलिग्टन नाम का अनाथ बच्चा अपने सत्पुरुषार्थ के बल पर लन्दन का मेयर बन बैठा। लकडिया बेचने वाला पाइथागोरस, ग्रीक देश मे, डेमोक्रेटिस के बाद सबसे बडा विद्वान बन गया। रेखा गणित मे पाइथागोरस का सिद्धात उसी के नाम पर चल रहा है।

भाग्य के भयकर थपेडे खाकर भी अब्राहम लिकन हताश नहीं हुआ। जिन्दगी मे सघर्ष करता रहा। कई बार व्यापार चौपट हुए, जो भी चुनाव लडा, सबमें हारा पर अन्त मे अमेरिका के प्रेसीडेन्ट का चुनाव जीत गया और

एक सर्वाधिक शक्तिशाली देश अमेरिका का राष्ट्रपति बन गया। इसी प्रकार कृशकाय सामान्य सा दिखने वाला मोहनदास गाधी, पूरे भारत का भाग्य विधाता बन गया। अकेले मदनमोहन मालवीय ने अपने सतत पुरुषार्थ के बल पर काशी यूनिवर्सिटी का निर्माण कर दिया। ऐसे एक नहीं सैकडो उदाहरण मिलेंगे जो इस बात के गवाह हैं कि सामान्य से सामान्य दिखने वाले व्यक्ति ने अपने पुरुषार्थ के बल पर असामान्य से असामान्य काम करके दिखलाया।

इसीलिए भगवान महावीर ने कहा कि हे– भव्य आत्मन् ! उट्ठिए नो पमायए। उठो प्रमाद का परित्याग करो।

इधर, उधर की बातो मे मत उलझो। तुम स्वय अनन्त शक्ति के स्रोत हो।

अनत शाति के भडार हो।
अनत सुख के समुद्र हो।
अनत ज्ञान के दिव्य प्रकाश हो।
बुज्झ बुज्झ किम न बुज्झह।

जाग–जाग क्यो नही जागता है। जगाइये अपने विशुद्ध स्वरूपी "मैं" को जिसके साथ जड तत्त्वो का जरा भी सपर्क न हो। पारसमणि से थोडा सा व्यवधान भी लोहे को सोना नही बनने देता। इसी प्रकार जड तत्त्वो की जरा सी आसक्ति भी आत्मा के अनत स्वरूप को प्रकट नहीं होने देती। प्रकटाना है उसे।

जिस प्रकार राजा बनाने के आश्वासन पर भी भिखारी जब अपने मागने का डब्बा छोडने के लिए तैयार नही हो तो उसे राजा नहीं बनाया जाता। इसी प्रकार जब तक जड तत्त्वो की पकड नहीं छूटेगी, तब तक अनतता का दिव्य रूप प्राप्त नही होगा।

यदि इसान हर दिन रात्रि को सोते वक्त यह चिन्तन करने लग जाय कि–

मैं कौन हू
कहा से आया हू
कहा जाऊगा।

प्रतिरात्रि को यह चिन्तन करने से उसकी अन्तश्चेतना में इसका समाधान प्रस्फुटित हो जाएगा विचारो को शुद्ध बनाइये। विभावो से हटकर

स्वभाव मे रमण करना सीखिये।

मैं के साथ जितना भी रिलेशन जुडने लगता है। वह उसके अस्तित्व को विकृत बनाता हुआ, अहकार मे भटकने लगता है। अत मैं को में के शुद्ध रूप मे ही ले। जहा द्वेत न होकर एक अद्वैत रह जाय। सबध रूप द्वन्द न होकर निर्द्वन्द रह जाय। विकल्प समाप्त हो जाय।

शुद्ध स्वरूपी अस्तित्व का प्रकटीकरण ही परमात्म स्वरूप का जागरण है।



3

अन्दर की आग : जला दे बाग

आचाराग सूत्र मे प्रभु महावीर की वाणी मुखरित हुई कि "जहा अतो तहा बाहिम" भव्य आत्माओं को समझाने के लिए अति सूक्ष्म प्रयत्न किया। इन्सान के अन्तर मानस मे अर्थात् दिल की भावना जैसी होती है वैसी ही बाहर मे उसकी अभिव्यक्ति हो जाती है। अतरग विचारो का प्रभाव बाहर पडे बिना नहीं रहता। अन्दर के भावो को कितना भी छुपाले परन्तु समझदार व्यक्ति उन भावो को ताड जाता है, समझ लेता है। वह उसको पकड लेता है अगर भीतर मे क्रोध है तो चेहरा उसको बता देता है। आखे लाल हो जाती हे, होठ फडफडाने लगते हैं। अन्तरग की स्थिति बाहर मे व्यक्त हो जाती है। अगर भीतर में मान है तो शरीर मे अकडन आ जायेगी। भीतर मे मोह है तो उसकी आखे व एक्शन बोल देगे कि क्या चल रहा है। आज इन बातो पर वैज्ञानिक और मनोवैज्ञानिक भी बोल रहे हैं।

आकारै इगितैर्गत्या, चेष्टया भाषणेन च

नेत्र वक्त्र विकारेण लक्ष्यतेर्न्तगत मन ।।

आकार इगित, गति चाल चेष्टा, नयन के स्फुरण से व्यक्ति के भीतर के विचार जाने जाते हैं। यह बात व्यावहारिक जगत मे मानी जाने लगी है। जब कोई बडा आदमी आशीर्वाद देता है तो हाथ का एक्शन भी यो सीधा होता है। (दया पालो का एक्शन हाथ से किया गया) उलटा नहीं होता है। कभी इसका विचार किया कि हाथ ऐसे क्यो किया जाता है। व्यक्ति जब अन्दर से बिलकुल खाली होता हे तब आत्म समर्पण करना चाहता हे। उस समय वह दोनो हाथ खडे कर देता है कि मैं समर्पित हू। मैं आपके अधीन हू जब व्यक्ति खतरे मे होता है तो वह दोनो हाथ खडा करके दया पालो का एक्शन करते हुए समर्पित हो जाता है। इसी प्रकार आशीर्वाद देते समय हाथ

दया पालो के एक्शन के साथ ऊपर किया जाता है। उस हाथ से ऊर्जा का प्रसारण होता है। अगर व्यक्ति क्रोध मे है तो चेहरा बोल देगा–उसके हाथ के एक्शन बोल देगे। यह काम ऐसे करना है। वह आदेशात्मक भाषा मे बोलेगा। आदमी के हाव भाव एक्शन बोल देते हैं कि व्यक्ति कहा झूठ बोल रहा है। कितना सत्य बोल रहा है। सत्य बोलने वाला शीघ्र बोल देगा। लेकिन झूठ बोलने वाले को विचार करना होगा, सोचना पडेगा। बच्चा तर्क पैदा नही करता। वह झट से बोल देता है। एक बार एक बच्चे को स्कूल से छुट्टी लेनी थी। परन्तु ले कैसे ? स्कूल चालू है। वह झूठ बोलना सीख रहा है। वह आधे रास्ते से ही घर लौट आया और कहने लगा आज प्रिंसीपल ने छुट्टी कर दी है। यहा तो उसने झूठ बोल दिया पर स्कूल मे प्रिंसीपल से भी तो छुट्टी लेनी होगी। अत उसने फोन उठाया और बोला कि आज मुन्ना स्कूल नहीं आयेगा। प्रिंसीपल ने पूछा – क्यो नही आयेगा तब वह स्वय ही बोला कि उसको बुखार आ रहा है। प्रिंसीपल ने कहा–कौन बोल रहा है ? तब मुन्ना बोला मेरे पापा बोल रहे हैं। उसने सच्चाई को छिपाने की बहुत कोशिश की किन्तु सच्चाई प्रकट हो गई। हम बोलना चाहते हैं झूठ, पर हमारे हाथ आदि के एक्शन सच्चाई को प्रकट कर देते हैं। यदि वह झूठ बोल रहा है तो एकदम नही बोल सकता। वह दाढी पर हाथ घुमाये तो सोच लीजिये वह निश्चित रूप से झूठ बोल रहा है। अभिनय कर रहा है। भगवान ने कहा– " जहा अतो तहा बाहिं" जो अन्दर मे होता है वह बाहर आये बगैर नहीं रहता है। अगर आपको बाहर में शाति प्राप्त करना है तो पहले भीतर मे चैन जरूरी है।

आज का मानव बाहर का सुख प्राप्त करने में लगा हुआ है। वह बाहर की फेसिलिटी को बढा रहा है वह उनसे सुख पाना चाहता है। शाति पाने की लालसा रखता है पर शाति मिले कैसे ? अन्दर में जब तक शाति नहीं होगी। अन्दर की आग नहीं बुझेगी तब तक शाति मिलेगी नहीं। चूल्हे मे नीचे आग जल रही है, ऊपर तवा पडा है, वह गर्म हो रहा है। उस तवे को ठडा करने के लिए ऊपर से पानी के कुछ छींटे डाल रहे हैं। उससे क्या तवा ठडा हो जायेगा ? लकडिया के नीचे जलते तवे पर छींटे डालने का कोई अर्थ नहीं। उसकी सार्थकता नहीं। इसी प्रकार बाहर से सतप्त जिदगी को शात बनाना है तो अन्दर में धधकने वाली आग को शात करना होगा। वरना बाहर के उपाय सार्थक नहीं होगे। अन्तर की आग जीवन को जलाकर भस्मीभूत बना देगी। बाहर का थोडा सा क्रोध जीवन को अशान्त बना देता है। विविध प्रकार से जीवन को नुकसान पहुचाता है। उसकी उस अवस्था मे

आखे लाल हो जाती है और अन्ट सन्ट बोलना चालू कर देता है। वह स्वय भी अशात बन जाता है। वातावरण में अशाति फैल जाती है।

आज के वैज्ञानिको ने इस बात को स्पष्ट कर दिया है कि एक बार क्रोध मे भान भूल जावे ऐसे क्रोध से 80 तोला खून जल जाता है। अवशेष खून मे जहर पैदा हो जाता है। उस व्यक्ति के खून का प्रयोग दूसरो पर किया जावे तो कई व्यक्ति समाप्त हो जाये। वैज्ञानिक पद्धति ने यह सिद्ध करके बता दिया कि– एक बार एक व्यक्ति तीव्र गुस्सा कर रहा था। उसी समय एक सर्प आया। उस सर्प ने उसे काटा। काटते ही सर्प खत्म हो गया। उस व्यक्ति का जहर सर्प पर चढ गया। एक बार एक मा गुस्से मे बच्चे को स्तनपान करा रही थी– दूध जहर मिश्रित हो चुका था। अत बच्चे के पेट मे दूध जाते ही बच्चा खत्म हो गया। ऐसे प्रयोग वैज्ञानिक जगत मे हो चुके हैं। यदि कोई क्रोध मे खाना खा रहा है तो खाना विषाक्त बन जायेगा। शरीर का हास होगा व आत्मा की भी हानि होगी ही।

कोह पीइ पणासेइ

क्रोधी व्यक्ति से कोई प्रेम नहीं करता। पत्नी सोचती है पति ऑफिस जले जावे तो अच्छा है क्योकि उसे डर रहता है कि किसी निमित्त से कब उबल पडे ? कब शाति भग हो जाय इसीलिए कहा गया है कि क्रोध प्रीति का नाश करने वाला है। गुस्सेल व्यक्ति के लिये माता–पिता, भाई–बहिन आदि रिश्ते भी काम नहीं आते। वे पास में आना नहीं चाहते, बात करना नहीं चाहते। क्रोध की आग सारे सद्गुणो को जला देती है। यह भीतरी आग बाहर के बाग को जला देती है। बाहर के सबधो को भी खत्म कर देती है।

जर्मनी का सम्राट हिटलर बहुत सद्गुणी था। किन्तु उसमे एक ही दुर्गुण था वह यह कि उसको क्रोध बहुत आता था। कहा जाता है कि वह एक बार होटल में बैठा था। होटल वाले को न जाने क्यो हसी आई। हिटलर की उस पर नजर पड गयी, गुस्सा आ गया। आदेश जारी हुआ। बबों से होटल को उडा दिया जावे। टेक द्वारा बबो से होटल को उडा दिया गया। सभी खत्म हो गये। आज भी कोई ज्यादा गुस्सा करता है तो उसे हिटलर कहा जाता है। क्रोधी व्यक्ति हर समय अशात रहता है। वह दुकान आदि सभी स्थानो पर अशात रहता है। एक व्यक्ति को भयकर गुस्सा आता था। पत्नी उसे इसलिए सहन कर लेती है कि महाभारत न मचे। कहते हैं– गर्मी का समय था। 5 वर्ष का बच्चा था। पत्नी को कहीं फक्शन अटेण्ड करने

जाना था। पत्नी बच्चे को साथ ले जाने के लिए नये कपडे पहना रही थी। पति ने कहा– तुम इस बच्चे को मत ले जाओ। गर्मी का समय है। वह बोली– मैं ले जाऊगी। यह साथ मे चलेगा। कुछ भी नहीं होगा। इधर पति भी अड गया– यह मेरा भी तो बच्चा है इसे रखूगा पत्नी बोली– आपको गुस्सा तेज आता है। बच्चे को सभालना आपके लिए मुश्किल है। मा ही बच्चे को सभाल सकती है। यदि बच्चा तग करने लगे तो बाप दो थप्पड मार भगा देगा। किन्तु मा खिलौना देगी, प्यार करेगी, उसे सहलायेगी, समझायेगी किन्तु पिता मे इतनी कहा सहनशीलता होती है ? पति के कथनानुसार बच्चे को छोडकर फक्शन में चली गयी। किन्तु मन बच्चे मे ही था। इधर पिता जो दुकान से रुपये कल लाया था उन रुपयो को गिनना था। रुपये के बण्डल निकाले और 10–10 हजार गिन कर रखने लगा। पिता का ध्यान रुपये गिनने मे लगा हुआ था। इधर पास मे बैठे बच्चे ने एक बण्डल उठाया, और बाहर चला गया। बच्चो ने कहा– अपन नाव बनाते हैं। रुपयो की नावें बनाकर बच्चे नाली मे तैराने लगे। सारे नोट खत्म हो गए। तब उन नावों की गोटिया बना–बना के एक–दूसरे पर फेकने लगे। सारे नोटो को मसल दिया। नष्ट कर दिया। फिर वह बच्चा नोट लेने घर मे आया। इधर उसका पिता नोट का बडल जो गुम हो गया उसे ढूढ रहे थे। पूरा कमरा छान मारा पर वह बडल नहीं मिला। इतने मे बच्चा अन्दर आया और पापा से बोला– पापा–पापा वे बाबा वाले कागज ओर दो। इसका मतलब एक बडल पहले ले गया। तो पिता ने पुत्र से पूछा– वे पहले वाले कागज कहा है ? बेटा बोला– उसकी तो नावे बना ली, नावे कहा है ? तो बोला– नावो की गोटिया बना करके फेक दी। 10,000 रुपये पानी मे मिला दिये। पिता को भयकर क्रोध आया। हाथो से, लातो से उस बच्चे को मारना चालू किया। लात मारने से बच्चा उछलकर दूर गिरा फिर भी पिता ने उसकी कोई परवाह नही की। ऊपर जाकर सो गये। इधर वह बच्चा दीवार से टक्कर खाकर गिरने से खत्म हो गया। उस बच्चे की मा आई। बच्चे को नीचे एक तरफ सोये हुए देखा। उठाया तो हिलना–डुलना कुछ नही। मैं पहले ही जानती थी कि इनका गुस्सा बहुत तेज है। वह अन्दर गई। पति गुस्से मे बेभान हो रहा था। बोला– तेरे कपूत ने मेरे 10 हजार रुपये नष्ट कर दिये। उसको यह सुन बडा दु ख हुआ। सोचा–ऐसे पति के साथ रहना बेकार है। जहा सन्तान के साथ भी प्रेम नहीं। वह बच्चे को अन्दर वाले कमरे मे ले गई और फासी लगाली। बहुत देर हो गई। वह बाहर नहीं आई तो वह उस कमरे मे गया देखा–यह क्या ? अरे ! रुपये तो

मैं फिर भी कमा लेता पर पत्नी बच्चा कहा से लाऊ। अत किसी को समझाना हो तो प्रेम से समझाओ, गुस्से से कोई समझने वाला नही है। गुस्सा करने वाले को अन्तत पश्चाताप करना पडता है। इसलिए किसी को समझाना है तो शाति से समझाइये। आपके पास धन नहीं है, परिवार नहीं है, मकान नहीं है तो कोई बात नही पर आपके अन्त करण की प्रशान्त अवस्था है, शान्ति है तो आप आराम से सुख से जी सकेगे आपका अस्तित्व बना रहेगा।

आज राजनीतिक पार्टियो में भी कहा जाने लगा है–अगर तुम्हे सफल होना है तो गुस्सा मत करो शान्त भाव से बात सुनो, मिलनसार प्रवृत्ति रखो आदि। अमेरिका में एक राजनीतिक पार्टी बनी थी। उसमे यही कहा गया कि जो भी इस पार्टी मे भर्ती होना चाहता है उसको गुस्सा किसी भी हालत में नही करना होगा। इसका इटरव्यू हो रहा था। उसमे पहली शर्त थी कि तुम्हें कोई भी कुछ भी कहे, तुम गुस्सा नही करोगे। शाति से जवाब दोगे। एक व्यक्ति पार्टी मे भरती होने फार्म भरने, इटरव्यू देने आया। उसे वही बात समझायी गई। उसने हा भर ली। तब इटरव्यू लेने वाले ने सबसे पहले कहा कि– तुम्हारे जैसे सिद्धात हीन, नालायक, बदमाश को लेना तो नही चाहते मगर तुम्हारा फार्म भर रहे हैं। जैसे ही गाली सुनी वह तमतमा उठा आवेश मे कहने लगा आपको गालिया बोलने की क्या जरूरत पड गई। तब इटरव्यू लेने वाले ने कहा– पहले तुम 5 डालर रखो क्योकि पार्टी का पहला नियम यही है कि जो भूल से भी गाली बोलेगा। उसे 5 डालर फाइन रखना पडेगा फिर उसने दुबारा उसी प्रकार से गालिया दी तो फिर 5 डालर रखने को कहा गया तब वह कहने लगा–अरे ! मैं भूल जाता हू। अब गुस्सा नही करूगा। पर वह कहता हे–पहले डालर रखो। फिर आगे बोलो–हमने सुना है कि तुम तो कर्जा चुकाने मे भी बदनाम हो। हरामखोर हो। इतना सुनते ही फिर उसने गुस्सा किया तो 5 डालर और रखवा लिए। इन्टरव्यू लेने वाले ने फिर कहा– मैंने सुना है तुम्हारा बाप बेवकूफ–लुच्चा एक नम्बर का बदमाश रहा है। तब वह फिर क्रोधित होकर बोलने लगा– आप क्या गलत–गलत बाते बोल रहे हो ? उसने कहा– पहले तुम 5 डालर रखो वह समझा– चौंका अरे ! अभी तो इन्टरव्यू चल रहा है। उसमें भी इतना क्रोध आ रहा है तो फिर पार्टी मे क्रोध करोगे तब क्या होगा ? अगर विरोधी पार्टी वाले कुछ भी कह दे। जनता कुछ भी कह दे तो भी गुस्सा नहीं करना है। इस प्रकार आज राजनैतिक पार्टियों मे भी क्रोध पर पहले ब्रेक लगाया जाता है। क्योकि क्रोध करने वाले के लिए सफलता पाना मुश्किल ही नहीं अति मुश्किल है। जीवन में गर शान्ति

पाने की लालसा है तो अन्दर की आग को खत्म करना होगा। वह अन्दर की आग एक प्रकार की नहीं, अनेक तरह की है।

क्रोध भी एक आग है, ईर्ष्या भी एक आग है। देवरानी– जेठानी मे छोटी–छोटी वस्तु के पीछे आपस में ईर्ष्या की आग धधकती है, अशाति हो जाती है। बेटा मा को छोड पत्नी का गुलाम हो जाता है। सास–ससुर कुछ का कुछ सुनाने लगते हैं। पर वे सास–ससुर ये नहीं सोचते कि हमारी स्वय की पूर्वावस्था कैसी थी ? जब हम नये थे तब हमारी स्थिति कैसी थी, क्या ऐसी ही नहीं थी। आज तो सतों के जीवन मे भी ईर्ष्या प्रवेश कर गई है यदि सतो के सामने अन्य सतो के गुण गाये जाते हैं वे उन्हे सहन नही होते। उनके सामने बस उनके ही गुण गाये जाए अन्य के नहीं। परन्तु तुम यह मत सोचो कि मैं ही बडा हू। अन्य छोटा है तुम अपने–अपने अस्तित्व के साथ चलते रहो। दो गाव पास–पास मे थे। दोनो गाव मे एक–एक सेठ थे। एक सेठ करोडपति था दूसरा उससे कम था। जब भी दूसरा सेठ सुनता कि अमुक सेठ के पास इतनी जमीन हो गयी है। इतने मकान हो गए हैं, खेत हो गए हैं, तो वह जलता रहता। उसको सुन–सुन करके क्या हुआ उसको ? अन्दर की आग मे वह झुलसने लगा बीमार पड गया। बेटों ने बहुत इलाज करवाया पर ठीक नहीं हुआ। क्योकि बीमारी आसू बहाने की नहीं अन्दर की थी। घर वाले दिन, रात हैरान होते थे। उस सेठ का भाणजा पास वाले गाव में रहता था। जब उसने सुना तो वह मामा की साता पूछने दोस्त के साथ आया। पूछा–क्या बीमारी हो गयी ? निढाल पडे हो। तब मामाजी पूछते हैं– क्यों रे। तुम्हारे गाव मे जो सेठ जी है–उनका क्या हाल चाल है। कितनेक पैसो वाला हो गया। भाणजा बोला– मामाजी। उनके खेत में आग लग गयी। अभी बहुत नुकसान हो गया। जैसे ही ऐसी बात मामाजी ने सुनी कि मामाजी लटकी गर्दन तन गई। आग की बात सुनते ही एकदम बोले– अच्छा–अच्छा और क्या हुआ ? भाणजे ने कहा– उनका एक बेटा कपूत निकल गया। सपत्ति लेकर परदेश गया था एशो आराम मे खत्म कर दी वापस आया ही नहीं। मामाजी सुनकर उठ बैठे– हो गये जैसे बीमारी कुछ हो ही नहीं बोले– ओर क्या हुआ। तब भाणजे ने बताया दोनों बेटे और दो बहुए हैं– उसमे आपस मे बनती नहीं है। जोरदार लडाई हुई। घर का बटवारा हो गया, सपत्ति बट गयी। दुकान मे भी भारी नुकसान हुआ। बेलों की जोडिया प्लेग जैसी बीमारी में मर गई। यह सब सुन उसका मुर्झाया चेहरा खिला हुआ सा दिखायी देने लगा या तो मामाजी निढाल पड़े थे, करवट लेने की शक्ति नहीं थी, वे उठ बैठे। भाणजे

को भोजन कराया और कहा– तू कल जरूर आना। भाणजे के साथ जो दोस्त था, उन्होंने भी सारी बात सुनी। मकान से बाहर निकलने पर दोस्त बोला वाह ! तूने क्या गप्पे मारी। कहा नुकसान हुआ है। उनके बेटो ने बहुत पैसा कमाया है। घर मे बहुए स्नेह से रह रही है। वह बोला– दोस्त ! मैं मामाजी को टॉनिक दे रहा था क्योकि उनकी बीमारी उस सेठ को बढने से ईर्ष्यावश रो रही हैं। देख ले जब उन्हे ऐसा टॉनिक दिया तो उनमें करट आ गया। झूठ बोलना पडा तो क्या हुआ ? मामाजी को आराम हो गया। देवरानी–जेठानी अलग–अलग फ्लेटो मे रहती है अगर जेठानी को समाचार मिले कि आपकी देवरानी के बहुत नुकसान हो गया, चोरी हो गयी, या इज्जत चली गयी तो बहुत खुश हो जाती है। भाई के नुकसान हो जावे तो बडा मजा आता है। ऊपर से भले ही कुछ दुख बता दे। किन्तु अन्दर से खुशी होती है इस अन्दर की आग को बुझाना है तो मन में करट पैदा करना होगा। अन्य क्या कह रहा है ? क्या कर रहा है ? इसको मत देखो, अपने को देखो। शादी मे यदि कोई बहुत खर्चा कर रहा है तो भी ईर्ष्या हो जाती है। उसमे भी गुण दोष की चर्चा छिड जाती है। यह आदत ज्यादातर लोगों में मिलेगी।

जीवन के बाग की हरियाली को जलाने वाली अनेक लकडिया हैं उसमे पहली क्रोध की, दूसरी ईर्ष्या की, तीसरी द्वेष की और चौथी चिन्ता की। बेटी घर मे पेदा होते ही चिन्ता शुरू हो जाती है। बेटी की शादी आदि मे इतना–इतना खर्चा चाहिये। वह कहा से आएगा ? मैं खाली हो जाऊगा ? आज का जमाना भयकर है ? बहुत कुछ देने पर भी यश नही मिलता। एक वृद्ध आदमी लकडियो का भारा लिये जा रहा है। परेशान है। आकाश मे ऊपर से देव–विमान जा रहा है। देवी की दृष्टि नीचे पडी। वह अपने स्वामी देव से बोली– जरा इस पर रहम करो। वृद्ध है। कितना कष्ट पा रहा है। कुछ इसे दे दो। देव ने कहा– इसके भाग्य मे नही है। देवी ने कहा– देखो तो सही। देव ने उसी समय जिस रास्ते से लकडहारा गुजर रहा था। उसी रास्ते मे उसके आगे चिन्तामणि रत्न डाल दिया। लकडहारे के मन मे आया कि मान लो में कभी अधा हो गया तो कैसे चलूगा। अत पहले से ही अभ्यास कर लू। ऐसा सोचकर वह लकडहारा आखो पर पट्टी बाधकर चलने लगा। चलते–चलते वह आगे निकल गया और हीरा पीछे ही छूट गया। तब देव ने देवी से कहा– देख ले इसका भाग्य ही ऐसा है। इसको कुछ मिलने वाला नही है।

आप चिन्ता करके परेशान न हो। आपकी पुण्यवानी सिकन्दर है तो आपका भविष्य सही होकर रहेगा। अगर दुष्कर्म हे, अन्तराय है तो दुनिया की

कोई भी ताकत आपके भविष्य को सही बना नहीं सकती। भविष्य की चिन्ता–चिन्ता मे वर्तमान को खराब करना अच्छा नहीं है। चिन्ता वह चित्ता है जो जिन्दे आदमी को जला देती है। यह जिन्दगी चिन्ता करने के लिये नहीं मिली है। जो बीत गया, वह गया। भविष्य का कोई भरोसा नहीं अत वर्तमान को सुफल रखो। वर्तमान को सही बनाओ। यह लकडी भी ऐसी है, इसे आग में से निकालो।

एक लकड़ी ओर है भ्रम की। बात–बात में एक दूसरे के प्रति भ्रम कर लिया जाता है। शका को लेकर चलते रहते हैं बाप–बेटे पर विश्वास न रख भ्रम करता है कि यह कहीं अन्दर ही अन्दर अपना बैंक बैंलेस तो नहीं बना रहा है। मैं ऐसे ही रह जाऊगा। सासू–बहु के बीच भ्रम की दीवार खडी रहती है वह सोचती है कि कहीं यह अपने पीहर साडिया तो छोडकर नही आई है। घी, दूध कही ज्यादा तो खत्म नहीं कर रही है। कई बार पत्नी को पति का भ्रम हो जाता है कि इतनी देर बाहर क्यो घूमते रहते हैं। तो पति को पत्नी पर बात–बात मे बहम हो जाता है। भ्रम ही भ्रम मे व्यक्ति परेशान हो जाता है। अगर कुछ कहना है, मन मे भ्रम है तो पूछ लेना चाहिए। साफ–साफ कह देना चाहिए किन्तु भ्रम रखने से जिन्दगी अशान्त बन जायेगी। विध्वस होने लग जायेगा।

एक बुजुर्ग बहुत बहमी था। (वैसे तो ज्यादातर बुड्ढे बहमी प्रकृति के होते हैं।) एक बार वह अपने कमरे मे बैठा था। उसके नकली दात थे। खाना खाने के लिये लगाता फिर उन्हे खोल कर धोकर रख देता था। एक दिन दात डिब्बे में नहीं मिले। तो उसके मन मे विचार आया कि मैंने दात कल लगाये थे। पर निकाले नहीं। समव है वे मेरे पेट मे उतर गये। बहम दृढ बनता गया। पेट की ओर ध्यान गया तो पेट में दर्द हो रहा है 10 मिनिट मे वह दर्द असह्य बन गया चिल्लाने लगा। बेटा दौडकर आया। पिताजी से पूछा–क्या हुआ ? पिताजी बोले–दात पेट मे उतर गये हैं अत दर्द बहुत तेजी से हो रहा है। बेटे ने कहा– पिताजी ! दात पेट मे नहीं उतर सकते। पिताजी बोले–तू कहता तो ठीक है या मैं कहता हू वो ठीक है। डाक्टर को बुलाने पोते को भेजा। उतनी देर मे तो वे जोर–जोर से चिल्लाने लगे। अस्पताल से एम्बुलेस मगाई। उन्हे स्टेचर पर लिटाकर बाहर ले जा रहे थे। उसी समय उनका छोटा पोता खेलते–खेलते आया। दोनो दात उसके पास थे। पिताजी की नजर उस बच्चे पर पडी। उसके हाथ मे दात देखे। जिन्हें वह उछालता हुआ आ रहा था। पिताजी ने पूछा– अरे ! तू ये दात कहा से लेकर आया। बेटे ने कहा– पापा

एक डब्बी मे दो खिलौने पडे थे। मैं उसमे से अपने खेलने के लिये से लेकर आया हू। ये तो मेरे खिलौने हैं। पिता ने कर्म फोड लिये। वाह रे तेरे इन खिलौनो के कारण पिताजी का पेट चीर दिया जाता। वह उन दातो को लेकर एम्बुलेंस में सोये पिताजी के पास दौडता–दौडता पहुचा और बोला– पिताजी–पिताजी दात तो ये रहे। पोता खेलने ले गया था। दादाजी को याद आया–हा। वह रोज–रोज मेरे से मागता था। ओह वे दात पेट में नहीं गये। थोडी देर में सब ठीक हो गया वह बैठ गये और चलकर घर आ गए। इस प्रकार बहमी जीव शान्त प्रशान्त जीवन मे भी आग लगा देते हैं। वह छोटी–छोटी बातों में अशान्ति फैला देते हैं।

आपने अपने जीवन में यह एक धारणा बनाली कि धन आयेगा तो शाति मिलेगी ? बगला होगा तो शान्ति मिलेगी। मैंने देखा कि एक व्यक्ति को अलग रहने की इच्छा थी। उसकी इच्छानुसार बगला हो गया। वह घर से भी अलग हो गया। कालान्तर में पहुचा। तो देखा कि वह बहुत दु खी है क्यों भाई तुम तो अलग होना चाहते थे। अब क्या ? वह बोला– महाराज अब पता चलता है कि साथ रहने से कितना सुख था ? अत कितना आनद है आप अपने आपके जीवन मे सुख चाहते हो तो जो विविध रूप में लकडिया अन्तरग में जल रही हैं जीवन रूपी चूल्हे पर रहे शरीर रूपी तवे को शात करना है तो जलती लकडियो को निकालना होगा। अगर ये निकल जाएगी तो अन्दर मे शाति आ जाएगी।



4

"मृत्यु है द्वार मुक्ति का"

प्रज्ञाशील उपासकों ! आज की चर्चा एक शास्त्रीय उदाहरण से प्रारम्भ करते हैं। छट्ठे अग ज्ञाताधर्म कथाग सूत्र मे प्रभु महावीर ने जिन्दगी की शाश्वतता को समझाने के लिए भव्य आत्माओ के समक्ष एक महत्त्वपूर्ण घटना प्रस्तुत की। द्वारिका नगर में एक विशाल भवन के ऊपर छोटा सा बच्चा खडा था जिसकी उम्र मुश्किल से 8 वर्ष ही होगी। वह बच्चा भवन के ऊपरी छत की दीवाल के पास खडा था। अनायास ही पास वाले मकान में दृष्टि पडी तो देखा कि कई लोग बढिया-बढिया वस्त्र पहनके आ रहे हैं। सिर पर तिलक लगे हैं। किसी-किसी के हाथो मे नारियल हैं। बाजे बज रहे हैं। ढोलक बज रहे हैं। छोटी-छोटी लडकिया नृत्य कर रही हैं। बहिने मधुर गायन गा रही है। बच्चा बहुत खुश हो रहा था। वह नीचे आकर कहने लगा- मा-मा पास वाले घर मे बहुत सुन्दर वातावरण है। गायन, वादन, नृत्य हो रहा है। चलो ऊपर चलो देखो, सुनो। बडा आनद आयेगा। मा ने कहा-बेटा ! मैं अभी काम कर रही हू। तुम जाओ खुशी से देखो। बच्चा कहता है- नहीं मा, तुम भी चलो। तो मैंने कहा- अभी मेरे कुछ आवश्यक काम है। बेटे ने पूछा- मा पास वाले घर मे इतनी खुशी किस बात की मनाई जा रही है। अपने घर मे तो ऐसा नहीं हो रहा है। मा ने कहा ! उनके घर मे बच्चे का जन्म हुआ है, इसलिये खुशिया मना रहे हैं। बेटे ने कहा- तो मा क्या मैं जन्मा तब भी इस प्रकार खुशिया मनायी गयी। हा ! इससे भी ज्यादा तेरे जन्म के समय खुशिया मनायी गयी थी। तेरा तो कहना ही क्या ? वह बच्चा उसी समय जल्दी-जल्दी उस दीवार के पास पहुचा पुन देखने लगा। किन्तु तब तक दृश्य बदल चुका था। इस बार वातावरण बडा वीभत्स था। औरतें रो रही

थी। सभी के चेहरे फीके पडे थे सब के सब उदास थे। छोटी–छोटी बच्चिया जो नृत्य कर रही थी। वे भी रोने लगी थी। बच्चा घबराया–घबराया मा के पास आय और कहने लगा– मा–मा इस बार तो बडा डरावना गायन गाया जा रहा है। क्या बच्चा जन्म लेता है, उस समय दो तरह का गायन गाया जाता है, दो तरह का नृत्य किया जाता है। मा सब कुछ समझ चुकी थी। मा ने कहा–बेटा ! जिस बच्चे का जन्म हुआ, वह मर चुका है। थावच्चा ने कहा– मा आप क्या बोल रही हैं मरना ! मरना ! क्या होता है ? मा ने कहा– बेटा इस जिन्दगी की समाप्ति होने को मरना कहते हैं। तो क्या मैं भी मरूगा ? मा उसके मुह पर हाथ रखती हुई बोली– बेटा ! ऐसी अपशकुन वाली बाते नहीं बोला करते। बेटे को सतोष नहीं हुआ। उसने मा से पुन पूछा– मा मुझे सही–सही बताना। आप बात को छिपा क्यो रही हैं। मुझे सच–सच बता। तब मा ने कहा– बेटा ! यह सूर्य जो सुबह उदित हुआ वह साझ को अस्त हो जाता है। 12 घटे मे इसकी तीन अवस्था होती है– बालपन, जवानी और बुढापा और फिर वह शाम को अस्त हो जाता है। ठीक इसी प्रकार जिसका जन्म हुआ है उसकी मृत्यु अवश्यभावी है। दुनिया की कोई भी ताकत मरते हुए को नही बचा सकती। सबको मरना पडता है। अपने को भी एक दिन मरना पडेगा। जब तक अपना आयुष्य कर्म प्रबल है तब तक अपन सब जिन्दे हैं। उस बच्चे का आयुष्य खत्म हो गया। अत वह मर गया। बेटे ने पूछा– तो मा उसकी क्या कोई दवा नही है। जिसे लेने के बाद मरण न हो। पुनरपि जन्म, पुनरपि मरण । मा मुझे यह पुन–पुन जन्म लेना, पुन–पुन मरना अच्छा नहीं लगता। तब मा ने कहा– इस भूमण्डल पर 22वे तीर्थंकर सर्वज्ञ सर्वदर्शी भगवान अरिष्टनेमि हें उनके चरणो मे जो अपना जीवन समर्पित करता है, वह मृत्युजयी हो जाता है। मौत को भी जीत लेता है। एक उन्हीं की शरण सही है। तब थावच्चा ने कहा–मा, मैं तो उन्हीं के पास जाऊगा। यहा तो कभी सुख है, कभी दुख हैं। कभी जन्म की खुशी है तो कभी मृत्यु का दुख है। मुझे तो अजर–अमर बनना है। प्रभु की शरण में जाना है। सब कुछ छोडना हे। मुझे मा–बाप, धन–दोलत–महलादि कुछ नहीं चाहिये। मा ने सोचा रे ! मैंने सच्ची–सच्ची बात बताई तो यह भागने लगा हे। ऐसी स्थिति देखकर आज के मा– बाप तो सही बात बताते ही नहीं। वे बच्चे को टीवी के सामने बिठायेगे, होटल मे ले जायेगे। क्लबो मे भेज देगे। जिससे बच्चे उसी ढग से एक्शन करते हैं, डायलॉक बोलते हैं और शूटिंग करने लगते हैं।

इस प्रकार के माहोल मे जीने वाले मा–बाप की सन्तान से क्या आशा कर सकते हैं। बीज खराब हैं तो फल कैसे अच्छा आयेगा ? आज सत्य बात बताने वाले मा–बाप कम हैं। थावच्चा कुमार को उसकी मा ने सच्ची बात बताई। बच्चा अरिष्टनेमि नाथ की शरण मे जाने को तत्काल तैयार हो गया। मा की ममता भी जागृत हो गयी। वह रोकने लगी किन्तु बच्चा मानने वाला नहीं था। अत मा ने तीसरा रास्ता निकालते हुए बोली– बेटा । अभी अरिष्टनेमी प्रभु का विचरण किधर हो रहा है, वे कहा विराज रहे हैं। इसकी जानकारी हो जाय फिर चले जाना। यह सुन बच्चा शान्त हो गया। समय निकलता गया। बचपन बीत गया, जवानी में आ गया। 32 कन्याओ के साथ शादी कर दी गयी, शादी के पहले ही दिन पत्नियों के साथ मनोविनोद की बाते चल रही थी कि सयोग से उसी दिन अरिष्टनेमी प्रभु का नगर में पदार्पण हो गया। देव दुदुभि बज रही थी। नगर मे चारो ओर सूचना जारी हो रही थी कि त्रिलोकी नाथ अरह अरिष्टनेमि प्रभु पधारे हैं। लाभ उठाया जाये। आज तो जैन बन्धुओ को पता नही भी चलता तो भी कोई–कोई जान बुझकर ही सोये रहते हैं। जान बुझकर सोये को जगाना मुश्किल है। जो असली मे सोये हैं उन्हे जगाया जा सकता है। प्रभु आगमन की सूचना को थावच्चा ने सुना। अरिष्टनेमी का नाम सुनते ही विचारमग्न हो गये। सोचने लगे यह नाम पहले कही सुना तो है। सोचते–सोचते बचपन की बात स्मरण मे आ गयी। दीक्षा लेने की धुन पुन सवार हो गयी। शीघ्रता से उसकी तैयारी करने लगे। पारिवारिक जनो ने बहुत समझाया कि किन्तु थावच्चा ने कहा मैं तो निरन्तर मौत के मुह मे जा रहा हू। क्या आप बता सकते हैं कि मेरी आयु कितनी है। माता–पिता थावच्चा को समझा नहीं सके। आखिर दीक्षा लेकर ही रहे। उसने अपना समय गवाना उचित नही समझा। अब आप पाजिटिव पोइन्ट पर सोचिये। क्या दीक्षा लेते ही वह अमर बन गया। सुखी हो गया–नहीं वह निर्भय बन गया उसे मौत का डर नहीं रहा। सदैव भय अपनी कमजोरियों का होता है। चैकिग इस्पेक्टर यदि इस हॉल मे आकर बैठ जाये तो क्या आपको डर लगेगा ? आप उनसे यहा आराम से बातचीत करेगे। किन्तु आपकी दुकान की गद्दी पर आकर बैठ जावे तो आपकी घबराहट बढ जायेगी। गद्दी पर तो दूर आपको मार्केट में भी दिख जावे तो आपकी घबराहट बढ जायेगी। क्यो आप अपनी गल्तियो से घबराते हैं। यदि हमारे पास आवे तो हम नहीं घबराते। क्योंकि जहा अपराध है, वहीं घबराहट है , भय है, साधु बनते समय पर सारी अपराध वृत्तियो को छोड देते हैं। अपराध जन्य

कार्यो को नैतिक समझा ही नहीं जाता उनसे सर्वथा मुख मोड लिया जाता है इसलिए वहा घबराहट नहीं आती। सफेद कपडे किसे पहनाया जाता है ? मुर्दे को क्या, घर में शादी के समय सफेद कपडे पहने जाते हैं ? नहीं। फक्शन के समय सफेद कपडे अपशकुनकारक माने जाते हैं। किन्तु साधु बनते ही उसे सफेद कपडे पहनाये जाते हैं। पारिवारिकजन भी सफेद वस्त्र ओढाते हैं, डालते हैं। इसका कारण यह है कि वह साधु बनते ही सयमीय वातावरण से भर गया है। सासारिक अन्याय अनीति पूर्ण कामनाओं, वासनाओ को जीवन से समाप्त कर वह अमरता की ओर गतिशील बन गया है। व्यक्ति मौत से इसीलिए डरता है कि उसने जिन्दगी मे अपराध किये वे अपराध उस समय उसे आतकित करने लगते हें। मेरी गति खराब होगी, अब मेरा क्या होगा ? जिसने अपराध ही नही किए उसके डरने का कोई कारण नहीं होता। उसके लिए मृत्यु भी महोत्सव बन जाता है। वह उसका स्वागत करता है, सहर्ष उसका वरण करता है। जो मृत्युजयी बन गया उसे कोई भी व्यक्ति डरा नहीं सकता। भगवान ऋषभदेव 12 महीने भूखे प्यासे रहे किन्तु उन्हे कोई कष्ट नही, तकलीफ नहीं। भगवान महावीर छ महीने तक ध्यान में रहे, भूखे प्यासे रहे किन्तु वे भूख से आतकित नहीं हुये क्योकि उन्हे मौत का डर नहीं था। बाहुबली जी एक वर्ष तक कायोत्सर्ग मे खडे–खडे तपस्या करते रहे उन्होने इस बात को अच्छी तरह से जान लिया कि मौत तो कपडे बदलती है। खराब कपडे उतार कर अच्छे कपडे धारण कर पहनाए जाते हैं तो उसमे डरने की क्या बात हे। मौत से सघर्ष करने हेतु जो व्यक्ति साधना करता हे। वह एक न एक दिन मृत्युजयी बन जाता है अमरता को प्राप्त कर लेता है। अगर अमरता पाना हे तो एक बार अपने आपको जिन्दे को ही खतरे मे डालना होगा। अगर शरीर की ही हिफाजत मे लगे रहे तो कभी भी विकास नहीं कर पाओगे। जो तैरने के लिए पहली बार जब नदी मे कूदता है तो वह डरता है कि कही डूब न जाऊ। जब डूबने की स्थिति सामने नजर आती है तब वह स्वत सावधान हो जाता है। अपने हाथ–पैर चलाने शुरू कर देता है। जब डूबने जितना खतरा मोल लेता है तभी वह एक दिन तैराक बन जाता हे, तैरना सीख जाता है। शुरू–शुरू मे जो ड्राइविग करता है, वह भी खतरे में पडता है कि कही टकरा न जावे आदि किन्तु एक बार खतरे मे पडना ही पडता है। उसके बाद वह शनै–शनै निडर हो जाता हे। यदि तुम्हें मृत्यु महोत्सव करना है, जन्म मरण से मुक्त होना है तो खतरे से डरना नहीं, किन्तु जिन्दगी की गणित को सही करना है।

बच्चा स्कूल में पढता है। गणित की पुस्तक में आगे सवाल होता है। पीछे उत्तर होता है। एक बच्चे को प्रश्न दिया। वह यदि प्रश्न लिख कर उसका सही उत्तर जो पीछे लिखा है मात्र उतना सा लिख दे तो क्या नबर मिलेगा। कुछ नहीं। क्योकि उसने गुणन फलादि बीच की विधि नहीं की। अगर जोडने, घटाने, भाग देने, गुणा करने का फार्मूला सही होगा, उसके अनुसार सही उत्तर आये तो उसको पूरे के पूरे नबर मिलेगे इसी प्रकार यह जिन्दगी भी एक गणित है। इसमें जन्म–मरण रूप प्रश्न उत्तर का समझना है। जिसने जन्म को तो समझा किन्तु बीच के फार्मूले को नहीं समझा तो मौत के आते ही घबराहट पैदा होगी। अगर बीच का फार्मूला जो भेद विज्ञान की साधना का सही है तो वह मौत का स्वागत करेगा, घबरायेगा नही। जिस बच्चे ने अच्छी तरह से पढाई की है वह परीक्षा आने पर घबरायेगा नहीं उसका स्वागत करेगा। इसी प्रकार यदि जिन्दगी को भेद विज्ञान के साथ जिया है तो अत में घबराहट नहीं होगी। वह मृत्यु का स्वागत करेगा। मृत्यु को मनुष्य समझ नहीं पा रहा है। किसी के दाग में जाकर वापस घर मे आयेगा तो श्मशान के मौत के परमाणु घर मे न घुस जाये। इसलिए वे पहले नहायेगा। महाराज की मागलिक सुनेगे, फिर घर मे घुसेगे। महाराज के वहा सीधा श्मशान जाकर व्यक्ति आवे तो डर नहीं क्योकि सफेद कपडे उन्होने पहले ही पहन लिये हैं।

एक सन्यासी जगल मे रहकर साधना कर रहा था। दो मित्र रास्ता भूल जाने से उधर जगल मे आ गए। उन्हें रास्ता पूछना था। इधर–उधर देखने पर भी दिखाई नहीं दिया फिर योगी की झोपडी दिखायी दी वे वहा आ गये। बोले हम रास्ता भूल गये हैं अत आप हमे रास्ता बता दीजिए। योगी ने कहा– तुम पहले यह बताओ कि तुम्हे कहा जाना है बस्ती मे जाना है या मरघट मे ? दोनो मित्रो ने सोचा यह योगी कोई सनकी दिमाग का लगता है जो मरघट का पूछता है। हम जिन्दे हैं। किन्तु करे क्या ? उन्होंने कहा– योगी राज हमे बस्ती में जाना है। योगी ने कहा तुम ! एक बार फिर सोच लो। दोनो ने कहा– आप हमें बस्ती का रास्ता बता दीजिये। योगी ने पुन कहा देखो एक बार फिर सोच लो तब दोनो ने कहा– हा ! हा ! हमने आपको कह तो दिया कि हमें बस्ती मे जाना है। योगी ने बस्ती का रास्ता बता दिया उन्होंने जाकर देखा तो वहा चिताए जल रही हैं। ओहो अपन तो श्मशान आ गये। आपस मे कहने लगे रे अपन ने पहले ही सोचा एव कहा था कि वह सन्यासी सनकी दिमाग का है। वापस योगी के पास आये, उस पर चढ गये

कि तुम कैसे मूर्ख हो हमने 10 बार कहा कि बस्ती का रास्ता बताओ, फिर भी तुमने हमको मरघट का रास्ता बता दिया। योगी मुस्करा रहा था। उसने उनसे पूछा– भाईयो बस्ती और मरघट की सही परिभाषा क्या है ? उसे तुम अभी तक समझते ही नहीं। जहा जाकर लोग बस जाते हैं–वह बस्ती और जहा जाकर लोग मर जाते हैं वह है मरघट। क्या तुम्हारे गाव मे ऐसी कोई जगह है जहा व्यक्ति मरता न हो। श्मशान मे जो भी जाता है वह लौटकर नहीं आता वह वहीं बस जाता है। दोनो ने समझा कि यह तो बडा आत्मज्ञानी है, कहने लगे गुरुदेव ! हम गलत रास्ते पर थे। हम मरघट मे ही जी रहे हैं। आप हमे अब मरघट का रास्ता बता दीजिए। योगी ने रास्ता बता दिया। वे गाव मे पहुच गए। सत्य तथ्य तो यही है पर नीचे उतर कर किसी से यह मत कह देना कि हमे मरघट का रास्ता बता दो– वह तुम्हे मूर्ख समझेगा। क्योकि हमारी धारणा ही गलत है। मौत ने हमारी आखे बद की। हमने मोत से बचने के लिए अपनी आखें बन्द कर ली है। जैसे– खरगोश शिकारी से बचने के लिए अपनी आखे बद कर लेता है पर शिकारी ने थोडे ही अपनी आखे बन्द की है। वही हाल सभी का हो रहा है। हम निरन्तर आगे से आगे भागते जा रहे हैं। जन्म दिन मनाते हैं उस मोत को भुलाने के लिए। बुड्ढे बुड्ढी भी अपना जन्म दिन, गोल्डन जुबली आदि मनाते हें। शादी के 50 वर्ष बाद गोल्डन जुबली हेतु मडप बनाया जाता है, नाच गाने होते हैं। बेटे बहू भी उनके सामने नाचते हैं, खुशिया मनाते हैं। जिस समय उनकी शादी हुई उस समय तो 10–20 हजार मे काम चल गया होगा किन्तु अब तो मडप को सजाने मे कितना पैसा बहा देते हैं। जैसे नई शादी हो रही है। यह मौत को भुलाने की कोशिश की जा रही है। इसके लिए आये दिन फक्शन मनाये जाते हैं। किन्तु मौत आपको भूल नहीं सकती। आपको अपनी जिन्दगी की गणित को सही बनाना होगा। आज पाश्चात्य सस्कृति की देखा देखी जन्मदिन मनाया जा रहा है। उससे भी तथ्य स्पष्ट हो रहे हैं कि अगर बच्चा 10 वर्ष का है तो टेबल पर 10 मोमबत्ती जलायी जाती है। फिर उन मोमबत्तियों को वह बच्चा स्वय बुझाता चला जाता है। इस प्रकार वह साबित करता है कि मेरे 10 वर्ष अधकार मे जा चुके हैं। एक भी मोमबत्ती अधिक नहीं जलाई जाती क्योंकि अगले वर्ष का कोई भरोसा नहीं है जरा भी पता नहीं है। अगली जिन्दगी भी अधकार मे है। फिर केक काटते हैं, गाना गाते हैं।

"हम भी अगर बच्चे होते नाम हमारा होता अबलू–डबलू, खाने को मिलते लड्डू–लड्डू दुनिया कहती है हेपी बर्थ डे टू यू।"

गाते हुए नाचते हैं। बडी अजीबो गरीब खुशिया मनाते हैं। जैनियो की महिलाए नाच रही हैं। मा–बाप खुश हो रहे हैं। यह क्या हो रहा है ? नीच जाति मे नाचने के लिए हिजडों को बुलाते हैं।

गोगेलाव मे, मैं स्थानक के बरामदे में बैठा था। गर्मी का समय था। दरवाजा भी बद नहीं किया जा सकता। इधर सामने वाले मकान के बाहर हिजडा नाच रहा था उसे हमको देखकर शर्म आ गई। हिजडा मुश्किल से पाच मिनट नाचा होगा फिर भाग गया। लोगो ने कहा– रे ! क्या हुआ ? हिजडे ने कहा– सामने महाराज बैठे हैं। उनके सामने नहीं नाचूगा। मुझे शर्म आती है। अगर महाराज नहीं होते तो नाच लेता। उसके बाद हिजडा मकान के अन्दर ही नाचा। अब आप ही बताइये कि हिजडे को तो गुरुजनो की शर्म आती है। किन्तु हमारे लोगो को शर्म नही आती।

वे कहते हैं– हम मौत को भूल जायेगे। किन्तु मौत तुम्हे नही भूल सकती। केक काटते हुए इस बात को सिद्ध किया जाता है कि तुम्हारी जिन्दगी कट रही हे। जब जिन्दगी पूरी हो जायेगी तो यही लोग घी, खिचडी, मिठाई खाएगे। हमारी जिन्दगी निरन्तर मौत के मुह में समाती जा रही है। जिनके पीछे जिन्दगी अशात हो रही है। उन परिवार, मकान, दुकान आदि के लिए समय है। ऐसा व्यक्ति मौत के समय भी ज्यादातर अशात रहता है। घर के सब व्यक्ति पास मे खडे हैं, देख रहे हैं और वह असहाय बना हुआ तडफता रहता है। कोई भी उस समय उसके दु ख से ताप आदि को बटा नहीं सकता। जिस परिवार के लिए महल बनाया सब कुछ करने की चेष्टा की, माया जोडी उन सबको एक दिन यहीं छोडकर जाना होगा।

एक सेठ के चार पुत्र थे– एक डॉक्टर, दूसरा जज, तीसरा वकील, चौथा व्यापारी। बाप बीमार हो गया। जो डॉक्टर था वह लडका आया वह इजेक्शन निकाल कर भर रहा था कि उसके पिताजी बोले क्या पानी का इजेक्शन लगायेगा डॉक्टर ने कहा–हा औरो के तो खाली इजेक्शन ही लगा देता हू। आपके पानी का तो लगा रहा हू। अन्तिम में कौन पैसा बर्बाद करे। बाप ने सोचा ओ–हो जिन्दगी भर मैंने कमाया, लडको को पढाने–लिखाने मे खर्चा किया और यह लडका डॉक्टर बना है जो मेरे खाली पानी का इजेक्शन लगा रहा है। दूसरे लडके को बुलाया अब तू कुछ उपचार करा सकता है तो करा। वह जज बना लडका बोला– पिताजी आप ऐसा कीजिये कि 50 पैसे का टिकिट लगाकर याचिका दायर कीजिये कोर्ट मे। उस पर विचार करेंगे कि क्या करना है ? पिता ने तीसरा लडका जो वकील था उसे बुलाकर कहा

तू इलाज करवा दे। वह बोला पिताजी पहले तो यह देखना होगा कि आपको बीमारी भी है या नहीं ? बहस की जायेगी। जीरह चालू हुई। वकील बनने वाला पुत्र अपने पिता से पूछने लगा कि आपको दर्द कहा पर है ? पिता– कमर मे। वकील– कब से हैं। पिता– तीन दिन से। वकील– कितनी बजे से दर्द चालू हुआ। पिता– सात बजे से। वकील– क्या अपने उस समय घडी देखी थी। पिताजी–हा ! वकील–उस समय ओर कोई आया था ? पिताजी–हा दो तीन आदमी आये थे। वकील– और किसको देखा। अब पिता गुस्से में आ गया और बोला– हा और मौत को देखा था। वकील ने कहा– यह केश बीमारी का नहीं। "सुसाइड" (आत्महत्या) का है। वकील ने अपने असिसटेण्ट से कहा– लिखोजी–केश। बाप ने सिर फोड लिया– ये बेटे हैं। उसने फिर चौथे बेटे को बुलाया। उससे उपचार हेतु कहा। चौथे बेटे का दिमाग व्यापारिक दिमाग था। वह कहता है पिताजी आपने कहा था कि खर्चा कम किया करो। अत पहले हिसाब देखना पडेगा।

पिता ने कहा– वाह रे ! तुम्हारे जीवन को बनाने के पीछे सारी जिन्दगी लगा दी और तुम इलाज नहीं करा सकते। मान लो– कभी बेटा इलाज करा भी दे। परिवार आपके सामने खडा है। फिर भी एक दिन ऐसा आयेगा कि उनके सामने आपकी मौत होगी। परिवार व धन को देखकर आखो मे आसू होगे। अत जब तक जीवन साधना की गणित सही नहीं होगी, एक नम्बर का हिसाब नही होगा। तब तक भय आखो के सामने बना रहेगा। सब यहीं रह जायेगे जो बाहर की वस्तुओ के पीछे न भागकर आत्मा की ओर जाना है। हमे सावधान होना है। खाये तब भी सावधानी रखनी है, सोये तब भी सावधानी रखना है। अगर हम हर समय सावधान रहे तो मौत हमे परेशान नही कर सकती।

जापान मे एक मकान है उसके बाहर लिखा है– House of God भगवान का घर। वहा लोगो को तलवार चलाना सिखाया जाता है। पहले व्यक्ति ऐसे ही तलवार चलाते थे उसके बाद सावधान किया जाता है। देखो तुम खा रहे हो उस समय भी तलवार चला सकता हू काम कर रहे हो जरा भी सावधान न रहे तो तलवार चल सकती है। बोलते–बोलते चलते–चलते सोते वक्त भी चुक गए तो तलवार गर्दन पर चल सकती है अत हर समय जागृत रहना होगा।

पहले तो गुरु ने लकडी की तलवार बनाई। खाना खाते समय चेला जरा सा चुके कि खट से तलवार पडी, सावधान हुआ। इसी प्रकार कभी

चलते समय कभी बोलते समय तो कभी सोते वक्त तलवार पडी। तब उसके दिल दिमाग मे बात बैठ गयी कि मुझे हर समय जागृत रहना है। अब वह हर तरह जागृत हो गया। अबकी बार गुरुजी ने लोहे की तलवार उठायी वह सचेत हो गया जागृत बन गया। तलवार उसके शरीर तक नहीं पहुच सकी। गुरुजी ने समझ लिया कि इसमें अब पूर्ण जागृति आ गयी है। अब यह कहीं भी जावे। इसे कोई मार नहीं सकता। प्रभु कहते हैं-- भव्यो ! तुम खाते पीते सोते सभी क्रियाए करते समय जागृत रहो। हर समय जागृत रहना सीखो। अगर इस जीवन में जागना सीख गये, तो तुम हर समय, हर क्षेत्र मे सफल हो जाओगे। हमे अपने जीवन को सफल बनाने के लिए भौतिकता से विमुख बनकर, दूर रहकर आत्मा के विषय मे सोचना होगा। शारीरिक सुविधा के पीछे आदमी निरन्तर भाग रहा है पर शरीर को वह स्थिर नही रख पा रहा है। इसलिये जितने भी सत महापुरुष हुये हैं वे शरीर की सुविधा से दूर हटकर आत्म साधना मे लगे थे। कई महापुरुषो ने अपना पूरे का पूरा जीवन दूसरो के लिये समर्पण कर दिया।

इटली मे एक भोरिया पाजियो हो गये हैं। वैज्ञानिको की मीटिग हुई उसमें यह प्रस्ताव आया कि एक्सरे की किरणों से व्यक्ति का शरीर कितना प्रभावित होता है। यह देखने लिखने के लिये उन्होंने अपनी जिन्दगी कुर्बान कर दी। दुनिया के लिये अपने आपको अर्पण कर दिया। मोरबी का बाध टूटा। सारा शहर पानी मे डूब रहा था। चन्द्रकान्त भाई अपनी ऊपरी मजिल पर बैठ प्रलयकारी दृश्य देख रहा था। कई मरे व्यक्ति पानी मे बहे जा रहे हें तो कई जिन्दे व्यक्ति भी पानी मे बहकर जा रहे हैं। उन्हें वह देख नहीं सका एक मजबूत रस्सा लिया उसके एक सिरे को मजिल से तथा एक सिरे को कमर से बाध वह पानी में कूद पडा। कई जिन्दे व्यक्ति को उसने बचा लिया किन्तु इसी बीच रस्सा कट जाने से वह चन्द्रकान्त भाई पानी मे बह गया। चन्द्रकान्त ने अपनी जिन्दगी खतरे मे डालकर कितनों की जिन्दगी बचा ली। अपना यह जीवन भी अन्यों के जीवन को जीवन दान देने में, हित साधने मे, रक्षण करने मे काम आवे तो ही इसकी सार्थकता है।

आज मानव स्वार्थ से जुडा है। वह अन्य का नहीं सोचता। तब मृत्यु मुक्ति का द्वार कैसे बन सकती है।

भगवान महावीर के पास सगम देव आया। उपसर्ग देकर छ महीने बाद वापस जाने लगा तो भगवान दयार्द्र हो उठे। चडकौशिक जैसे जहरीले सर्प को भी बोध प्रदान किया। उसे भी शाति दी। इसीलिये उनकी मृत्यु,

तू इलाज करवा दे। वह बोला पिताजी पहले तो यह देखना होगा कि आपको बीमारी भी है या नहीं ? बहस की जायेगी। जीरह चालू हुई। वकील बनने वाला पुत्र अपने पिता से पूछने लगा कि आपको दर्द कहा पर है ? पिता– कमर मे। वकील– कब से हैं। पिता– तीन दिन से। वकील– कितनी बजे से दर्द चालू हुआ। पिता– सात बजे से। वकील– क्या अपने उस समय घडी देखी थी। पिताजी–हा ! वकील–उस समय ओर कोई आया था ? पिताजी–हा दो तीन आदमी आये थे। वकील– और किसको देखा। अब पिता गुस्से में आ गया और बोला– हा और मौत को देखा था। वकील ने कहा– यह केश बीमारी का नहीं। "सुसाइड" (आत्महत्या) का है। वकील ने अपने असिसटेण्ट से कहा– लिखोजी–केश। बाप ने सिर फोड लिया– ये बेटे हैं। उसने फिर चौथे बेटे को बुलाया। उससे उपचार हेतु कहा। चौथे बेटे का दिमाग व्यापारिक दिमाग था। वह कहता है पिताजी आपने कहा था कि खर्चा कम किया करो। अत पहले हिसाब देखना पडेगा।

पिता ने कहा– वाह रे ! तुम्हारे जीवन को बनाने के पीछे सारी जिन्दगी लगा दी ओर तुम इलाज नहीं करा सकते। मान लो– कभी बेटा इलाज करा भी दे। परिवार आपके सामने खडा है। फिर भी एक दिन ऐसा आयेगा कि उनके सामने आपकी मौत होगी। परिवार व धन को देखकर आखो मे आसू होगे। अत जब तक जीवन साधना की गणित सही नहीं होगी, एक नम्बर का हिसाब नहीं होगा। तब तक भय आखो के सामने बना रहेगा। सब यहीं रह जायेगे जो बाहर की वस्तुओ के पीछे न भागकर आत्मा की ओर जाना है। हमे सावधान होना है। खाये तब भी सावधानी रखनी है, सोये तब भी सावधानी रखना है। अगर हम हर समय सावधान रहे तो मौत हमे परेशान नहीं कर सकती।

जापान में एक मकान है उसके बाहर लिखा है– House of God भगवान का घर। वहा लोगो को तलवार चलाना सिखाया जाता है। पहले व्यक्ति ऐसे ही तलवार चलाते थे उसके बाद सावधान किया जाता है। देखो तुम खा रहे हो उस समय भी तलवार चला सकता हू काम कर रहे हो जरा भी सावधान न रहे तो तलवार चल सकती है। बोलते–बोलते चलते–चलते सोते वक्त भी चुक गए तो तलवार गर्दन पर चल सकती है अत हर समय जागृत रहना होगा।

पहले तो गुरु ने लकडी की तलवार बनाई। खाना खाते समय चेला जरा सा चुके कि खट से तलवार पडी, सावधान हुआ। इसी प्रकार कभी

से ही महाराज को याद करना सीखो। परमात्मा का स्मरण करो। आप पहले से ही जिनवाणी सुनना हृदयगम करना सीख लें तो आपकी जिन्दगी सही हो जायेगी तब मृत्यु को निश्चय ही सही ही होगी अत आप अभी से अपनी जिदगी को सही बनाने के लिए जागृत बन जाये। जितनी–जितनी मात्रा मे आप अपनी जिदगी को सही ढग से जीने का प्रयत्न करेगे उतनी–उतनी मात्रा मे आपका जीवन सफल एव सार्थक बनेगा। मृत्यु का भय आपके जीवन से दूर हटता चला जायेगा मृत्युजयी बनने की अवस्था को प्राप्त कर सकेगे। इसी भावना के साथ मे अपने इस विषय को विराम दे रहा हू।



5

संथारा : उत्कर्ष : आत्महत्या-अपकर्ष

प्रज्ञाशील उपासको ! वीतराग देव, प्रभु महावीर ने अपने अनन्त–अनन्त ज्ञानालोक से ससार की अधिकाश आत्माओ को आधि, व्याधि, उपाधि से ग्रस्त देखा, देखकर के उन आत्माओ को समाधि तक पहुचाने के लिए जिन्दगी के शाश्वत सत्य को बहुत ही सहज एव सरल ढग से अपनी देशना मे प्रस्तुत किया, वहीं भव्यात्माओ को समझाते हुए कहा– कि हर इसान के साथ कर्म– बद्ध आत्मा के साथ के एक तत्त्व शाश्वत रूप से जुडा हुआ है वह है–मृत्यु। जिस इन्सान ने इस दुनिया मे जन्म ग्रहण किया है, वह इसान मृत्यु को भी अवश्यमेव प्राप्त करेगा। ऐसा कोई इसान दुनिया मे पेदा नही हुआ, जिसने जन्म तो लिया हो परन्तु मृत्यु न पाई हो। जन्मने वाला व्यक्ति मरता ही है। दुनिया की कोई ताकत उसे मौत से बचा नहीं सकती। एक ही सिक्के के दो पहलू हैं, एक ही नोट की दो छाप है, एक ही जिदगी के दो पक्ष हैं। जिस व्यक्ति ने जन्म और मौत को समझ लिया, वह व्यक्ति अपनी जिन्दगी को सही ढग से आगे बढा सकता है। आज के इसाान ने जन्म को जरूर समझ लिया है किन्तु मौत की ओर से वह आखें मूदे हुए हैं। वह मौत का नाम सुनना नहीं चाहता, मौत की बात सोचना नहीं चाहता, मौत की चर्चा नहीं करना चाहता, किन्तु मौत तो एक दिन आनी ही है, वह आयेगी ही। इसलिए सुख के अन्दर अगर हमे अपनी जिन्दगी को सार्थक बनाना है तो हमे मृत्यु को समझना ही होगा, उसे निकटता से देखना होगा और जिस दिन भी हमने मृत्यु को देख लिया, जान लिया, समझ लिया, उस दिन हमारी आत्मा, मौत से निर्भय हो जायेगी। इस बात को यों कह सकते हैं कि एक छबडी के अन्दर सर्प है। इस बात की जानकारी होने के बाद व्यक्ति को छबडी से डर लगता है, वह उससे दूर रहता है किन्तु जब उसे खोल कर बता

दिया गया कि उसमे सर्प जरूर है लेकिन वह असली सर्प नही है। तो क्या उसके बाद उसे उस छबडी से डर लगता है ? उस सर्प से डर नही लगता। वैसे ही जब तक हम मौत से दूर खडे रहेगे, मौत से अपनी भावनाओ को हटाये रखेगे और उसकी चर्चा से घबराते रहेगे, तब तक हमें मौत से डर लगता रहेगा किन्तु जब हम मौत को सुनेगे, मौत को देखेगे, मौत को समझेगे और उसे समझने का प्रयास करेगे तो हमे मालूम पडेगा कि वह हमारी आत्मा के लिए नकली सर्प है। फिर वह मौत हमे कभी भी भयभीत नहीं कर सकती। इस बात को समझने के लिए आज हमे महावीर के उन पृष्ठो को खोलकर देखना है, जिन्होने एक बात बताई कि हर इसान प्रति समय मर रहा है, हर प्राणी प्रति समय मर रहा है।

भगवती सूत्र मे एक शब्द आया है आवीचिक मरण। आवीचिक मरण का तात्पर्य यह है कि प्रति समय मौत। जब से इस आत्मा ने देह धारण की है तब से वह निरन्तर मृत्यु का वरण कर रही है। उसका आयुष्य प्रति समय क्षीण होता जा रहा है, वह उस आत्मा का मरण ही हो रहा है। लेकिन स्थूल दृष्टि से लेकर चलने वाले पुरुषों यह बात समझ मे नही आती और न ही वे जीवन विज्ञान के बिना समझ सकते हैं। वे तो यह सोचते हैं कि हम इतने बडे हो गये और उसकी "बर्थ डे" मनाने की तैयारी करते हैं, परन्तु जो समय बीत गया उतना समय उनकी आयु का क्षय हो गया। वे उतने ही मौत के सन्निकट हो गये। इस प्रकार से हर समय आत्मा का मरण हो रहा है लेकिन प्रत्येक आत्मा के मरण में अतर रहता है। हर समय आत्मा कभी बाल मरण से मर रही है, कभी पडित मरण से मर रही है, कभी बाल पडित मरण से मर रही है। लेकिन आज यह समझ ले कि पडित मरण अथवा बाल मौत आदि जब जिन्दगी की अतिम स्टेज पर आयेगी, जिसके बाद तो कुछ भी बचा नही रह जायेगा। तब हर समय मौत क्यों हो रही है ? उसमें शास्त्रकारो की दृष्टि कुछ और है। उनका कहना है " जा जा वच्चइरयणीणसापडिणियत्तइ" (अ 14 गा 24) कि जो–जो रात्रिया बीत रही हैं, जो–जो समय बीत रहा है, वह लाख कोशिश करने के बावजूद भी पुन लौट कर नहीं आयेगा। जो व्यक्ति इस समय के अन्दर अपनी भावनाओ को हिसक बनाये रखता है, विकारों से ग्रस्त बनाये रखता है, क्रोध मे उलझाये रखता है, विषयों मे फसाये रखता है, उस व्यक्ति की उस बीत रहे समय में हो रही मौत बाल मौत होती है, वह बाल मरण है और जो व्यक्ति उस समय में साधना कर रहा है, समता की भावना बनाये हुए हैं, सामायिक के भाव लिए हुए हैं, ब्रह्मचर्य की साधना में

लगा है, ऐसे व्यक्ति की उस समय मे हो रही मृत्यु पडित मरण है। जैन दृष्टि मे प्रति समय मौत का कलेक्शन हो रहा है। इस मरण का मतलब हर समय का कलेक्शन। मैं भी प्रति समय मर रहा हू, आप भी प्रति समय मर रहे हैं क्योकि मौत निरतर हो रही है। जो समय बीत रहा है, वह मृत्यु हो रही है, उस समय मे अगर आपके विचार सही हैं तो उन विचारो मे होने वाली आपकी मौत पडित मरण की स्थिति मे है। अगर वह विचार गलत है तो वह समय बाल मरण की गिनती मे जा रहा है।

आज के बच्चो की पढाई पर आपने ध्यान दिया होगा। बच्चे जब स्कूल जाते हैं, उनके टेस्ट होते हैं तो टेस्ट के अन्दर बहुत जोरदार पढाई करते हैं। मैं समझता हू पहले इतनी पढाई नहीं होती थी जितनी आज के बच्चे पढाई कर रहे हें। आज बच्चों के छोटे–छोटे टेस्ट हो रहे हैं। महीने–महीने में, 2–2 महीने के अन्दर हो रहे हैं। टेस्ट मे भी बहुत जमकर पढाई करते हैं। बच्चो से पूछा जाता है कि यह कोई 12 मासी की परीक्षा तो नहीं है, फिर तुम इतनी पढाई क्यो कर रहे हो। बच्चो ने कहा, महाराज, ये टेस्ट हो रहे हैं, इन टेस्ट के नम्बर भी जुडेगे। बारह मासी परीक्षा के साथ ये भी जुड जायेंगे। अगर मेरा टेस्ट अच्छा होगा तो मेरी बारह मासी परीक्षा भी अच्छी मानी जायेगी। इसलिए आज बच्चे उस टेस्ट मे भी जमकर पढाई कर रहे हैं यानी साल भर तक पढाई की जाती है। जैसे टेस्टो का कलेक्शन हो रहा है, वैसे ही हमारी जिन्दगी के लास्ट समय में होने वाली मौत के समय का कलेक्शन हो रहा है, इस समय हमारी मौत हो रही है। इस मौत के अन्दर बाल मरण या पडित मरण जो भी स्थिति बनती है। उसका कलेक्शन होता चला जायेगा और वह कलेक्शन लास्ट स्टेज के अन्दर सही होगा। वह लास्ट स्टेज आयुष्य बध की अपेक्षा से आपको समझना है।

आयुष्य बध के योग्य परिणाम जब तक जीव के नही बनते हैं तब आयु का बध नहीं होता है। जिस समय जीव के आयुष्य बध का प्रसग आता है तब उसके साथ–साथ ही गति, जाति, स्थिति, अवगाहना, अनुभाग और प्रदेश इन छ स्थानो का बध भी वह कर लेता है। इनका बध किये बिना जीव अपने पूर्व स्थान को नहीं छोडता है। लेकिन शास्त्रीय सिद्धान्त के धरातल पर अग्रिम जन्म का आयुष्य बधन जिन्दगी के दो हिस्से बीतने के बाद तीसरे हिस्से मे हुआ करता है। यथा कोई व्यक्ति 90 वर्ष की उम्र लेकर आया है उस उम्र में से 60 वर्ष व्यतीत होने के बाद जब वह 61वें वर्ष मे प्रवेश करता है उस समय उसके अन्तर्मुहूर्त अर्थात् 48 मिनट के अन्दर–अन्दर जो विचार

बनते हैं, जेसा आचरण होता है, भावना रहती है, उसके अनुसार उसके आयुष्य बधन का प्रसग उपस्थित होता है, उस समय आयुष्य का बध नहीं हुआ तो पुन आयुष्य बध का अवसर 9 वें भाग मे प्राप्त होता है। यदि उस अवसर को भी वह चूक गया तो पुन उसको 27 वे भाग मे वह अवसर प्राप्त होता है। इस प्रकार उसको आयुष्य बध के कई अवसर प्राप्त हो सकते हैं। लेकिन परिणामो की अध्यवसाय की धारा जो आयुष्य बध के योग्य होनी चाहिए वह नहीं बनने के कारण आयुष्य का बध नहीं किया तो जीवन के अतिम समय के अन्दर अन्तर्मुहूर्त मे तो वह आयुष्य का बध अवश्यमेव कर ही लेता है। आयुष्य बधन के बाद ही वह अपने वर्तमान शरीर को छोडता है। आयुष्य बध के समय जैसे जैसे अध्यवसाय की धारा रही, परिणाम बने वे ही अध्यवसाय एव परिणाम जीवन को छोडते समय आ जाते हैं इसलिए कहा जाता है कि " अन्त मति सो गति" अन्त समय जीव के यदि शुभ परिणाम जन्य लेश्या रहती है तो उसके सुगति जन्य बध पडता है और परिणाम यदि सक्लिष्ट है, अशुभ है तो दुर्गति का बध पड जाता है। इसे शास्त्रीय भाषा मे यो कह सकते हैं कि पडित मरण अथवा बाल मरण। जीवन का जितना भी समय गुजर रहा है उन सबका कलेक्शन तो हर समय हो रहा हे। मगर आयुष्य बध के समय परिणाम कैसे रहते हैं। उसकी मुख्यता रहती है। इसलिए प्रत्येक सुज्ञ चिन्तक पुरुष को अपने जीवन के अन्दर शुभ भावो शुद्ध अध्यवसायो के कलेक्शन के प्रति सतर्क रहना चाहिए, सावधान बने रहना चाहिये। क्योकि आयुस् बध का प्रसग जीवन मे किस समय, किस क्षण में आ जाय इस सबध मे कुछ भी नहीं कहा जा सकता। आयुष्य का बध चार गति, चौरासी लाख योनियो मे से एक स्थान का होता है, जिस गति मे जीव को जाना है उस गति के अनुसार उसके विचार होना चाहिए। इसके साथ में आपको एक बात और बता दू कि मनुष्य गति से जैन सिद्धान्त के अनुसार मोक्ष जाना स्वीकार किया है। वैसे ही मनुष्य गति से जैन सिद्धान्तानुसार जो 84 लाख योनिया हैं, उन 84 लाख योनियों मे से, यह आत्मा यहा से मरकर किसी भी योनि मे जा सकती है, अन्य किसी भी गति से जीव के सभी भेदो मे नहीं जाया जा सकता। देवता नरक मे नहीं जाते हैं लेकिन यह मनुष्य नरक में भी जा सकता है, देवता भी बन सकता है। जितने पशु-पक्षी आपको नजर आ रहे हे उनमे से वह किसी भी योनि मे जा सकता है। क्योकि वह जितना धर्म कर सकता है, उतना ही पाप भी कर सकता है। जीव के 563 भेद माने गये हे, उनमे से हरेक भेद के अन्दर मनुष्य जा सकता है। पुण्य और पाप दोनों

की स्थिति उसके साथ जुडी होती है।

ऐसी आत्मा को निर्मल बनाने के लिए, उसे अपनी मोत को सही बनाने के लिए मोत को नजदीक से देखना होगा। जो बात देखी जाती है वह बात ज्यादा प्रभावशाली बनती है, जो बात समझी जाती है, वह उतनी प्रभावशाली नहीं बनती। इसलिए शास्त्रों में दो शब्द आये हैं– "जाणइ और पासइ" जानना भी और देखना भी, दोनो ही स्थिति घटित होनी चाहिए।

व्यक्ति को अपनी आत्मा का कल्याण करने के लिए अगर लाभ प्राप्त करना है तो हानि को देखना ही होगा, हानि को भी जानना होगा। वैसे ही अगर हमे अपनी जिन्दगी को सार्थक बनाना है, तो हमे अपनी मौत को भी समझना होगा। जब हम मौत को सही ढग से देख लेगे उस समय हम अपनी जिन्दगी को भी सार्थक बना सकते हैं। जैसे– आप किसी व्यक्ति को कहे कि देखिये, मास इतना खराब होता है, कत्लखाने ऐसे चलते हैं, तो उसे, मास से थोडी घृणा होगी। लेकिन उसी व्यक्ति को यदि मास दिखा दिया जाय, कत्लखानो को दिखा दिया जाय तो उसे जबर्दस्त घृणा होगी। वैसे ही हम जब मौत को नजदीक से देखते हैं, जिन्दगी की उन अवस्थाओ को समझते हैं, तो अपनी आत्मा की शक्ति जागृत होने लगती है, हमारी आत्मा का हमे भान होने लगता है, कि आत्मा क्या है हमे किस तरीके से जीना चाहिए।

आज का इन्सान अपनी जिदगी की बीच की परिधियों को बिगाड रहा है। उन्हे बिगाडने के कारण से उसे सही गति प्राप्त नहीं हो पा रही है। मशीन का एक पुर्जा भी अगर खराब हो जाता है, तो मशीन चल नहीं पाती अगर बच्चे का एक भी पेपर बिगड जाय, दस पेपर में से एक पेपर भी बिगड गया तो वह अपनी परीक्षा मे पास नही हो सकता। शरीर के अन्दर एक अग मे भी रोग पैदा हो गया तो वह शरीर सही नहीं कहला सकता। वैसे ही जिस व्यक्ति ने अपनी जिन्दगी को सही निगाह से नही देखा, सही नही समझा ऐसा व्यक्ति अपनी जिन्दगी के शाश्वत सुख को प्राप्त नहीं कर सकता। जिदगी के शाश्वत सुख को प्राप्त करने के लिए अपनी सारी की सारी जिदगी को व्यवस्थित ढग से लेकर चलना होगा, सही तरीके से जीवन जीना होगा। उसे शाति पाने के लिए अपने भार से मुक्त होना पडता है। व्यावहारिक जीवन मे देखिये आपकी जेब के अन्दर रुपये हैं तो आपको नींद अच्छी तरह से नहीं आएगी। लेकिन आपने वे रुपये अगर किसी दूसरे व्यक्ति को दे दिये, आपकी जेब खाली हो गई सकट एव खतरे जैसी जोखिम नहीं रही तब आप

शाति से नीद लेगे। वैसी ही शास्त्रकार कहते हैं कि प्रत्येक आत्मा विविध प्रकार की सासारिक कामनाओं, भावनाओं, वासनाओं मे उलझी रहती है। सकटो से घिरी रहती है, जिससे उसमें रही राग–द्वेष की भावनाए सक्रिय रूप मे उभरती रहती है। वह आत्मा राग–द्वेष मय भावनाओ से, विषय की कामनाओं से भारी होती चली जाती है। उस भारी आत्मा को शाति नहीं मिलती। उसे शान्ति पाने के लिए उस भार से मुक्त होना होगा। वह आत्मा ज्यो ही उस भार से मुक्त होने लगती है त्यों ही उसको शाति का अनुभव होने लगता है।

जैनागमों में से सथारे की विधि बतलाई गयी है वह आत्मा को, आधि, व्याधि और उपाधि से मुक्त बनाने के लिए ही है, परन्तु सथारे को लेकर दुनिया मे बडा ऊहा पोह चल रहा है। लोग कहते हैं, क्या यह सुसाइड है, आत्महत्या है। कोई क्या कहता है ? कोई क्या कहता है ? जितनी मुह उतनी बातें। जिसने सथारे को नहीं समझा है वही ऐसी बातें कर सकता है। बाकी सथारा एक साइन्टिफिक वैज्ञानिक प्रक्रिया है। जो व्यक्ति की आत्मा का उद्धार करने के लिए सही समय पर करवाया जाता है। जिस व्यक्ति का शरीर स्वस्थ हो जो निरोग शरीर वाला हो जिसकी जिन्दगी चल रही हो उस व्यक्ति को सथारा नहीं करवाया जाता है। सथारा करते–कराते वक्त उसके सारे शरीर लक्षणो को देखा जाता है। जब लगता है कि उस व्यक्ति की जिन्दगी भविष्य में चल नहीं सकती, अथवा चलने जैसी नहीं है। ऐसी जब स्थिति बन जाती है तब उसे सथारा करवाया जाता है। जब वह अपनी जिदगी की सारी एलोपैथिक चिकित्सा करा ले, डॉक्टर यह कह दे कि भले ही इलाज कराओ लेकिन यह व्यक्ति अब बच नहीं सकता, ऐसी जब शरीर की स्थिति बन रही हो तो उसके बाद ही सथारे की स्थिति बनती है। दूसरी बात, ऐसी स्थिति बन जाने के बावजूद किसी भी व्यक्ति को बिना इच्छा के सथारा नहीं करवाया जाता।

परन्तु आज सथारे की परम्परा कुछ रूढिगत परम्परा बन गई है। कई लोग देखते हैं कि यह बेहोश हो गया, इसको होश नहीं रहा, किसी की हालत गिर गई उस समय सथारा करवायेंगे। अब परम्परा से सथारा करवाया जाता है लेकिन अगर सामने वाला व्यक्ति नहीं धारता है तो उसके सथारा सही रूप मे नहीं आ सकता। खैर सथारे को हम ऐसी स्थिति के अन्दर आत्महत्या नहीं कह सकते। किन्तु सथारे से लाभ क्या ? लोग सथारा–सथारा करते हैं। पण्डित मरण कहते हैं इसको, लेकिन इस पण्डित मरण से लाभ क्या होता

है ? यह बहुत विचारणीय बात है। बहुत लोगो को इस बात की पूरी जानकारी नही है। अब आप ही विचारिये कि सथारा कौन व्यक्ति कर सकता है ? जो व्यक्ति स्व–पर का भेद विज्ञानवेता हो जाय आत्म प्रतीति दृढ हो जाय मौत से भी निर्भय हो जाय, जिसकी पक्की मन स्थिति बन जाय। वही सथारा करने का साहस कर सकता है। जिसके मन मे जरा भी भय है, जो मौत से डरता है उसका सही ढग से सथारा लेना तो दूर वह उसके नाम से ही कतराता है, कापता है। डरपोक उसे धारण नहीं कर सकता। कदाचित ले भी लिया तो उसको सही ढग से आराध नही सकता है। अत जिसकी मन स्थिति निर्भय बन जाती है उसके भीतर से आत्म शक्तिया जागृत होने लगती है।

व्यवहारिक जीवन मे लीजिए कि डॉक्टर लोग किसी का आपरेशन करते हैं तो वे पहले क्या चेक करते हैं ? डॉक्टर सूर्या जी बैठे है यहा पर वे रोज–रोज कहते हैं कि मैं सुनना चाहता हू, मैं सुनना चाहता हू। लेकिन उन मरीजो की सेवा के पीछे वे यहा नहीं आ पाते। वह उनका पहला कार्य है। वे सेवा के अन्दर लगे हुए हैं। हा, तो किसी का ऑपरेशन करना पड जाय तो सब से पहले उसका हार्ट देखा जाता है कि उसका हार्ट सही है या नहीं ? हार्ट मजबूत है या नहीं ? अगर उसका हार्ट मजबूत नहीं है और उसका आपरेशन कर दिया जाय तो हो सकता है उसका हार्ट फेल हो जाय ओर मर जाय। इसीलिए उस व्यक्ति का ऑपरेशन करते वक्त हार्ट की मजबूती देखी जाती है तब जाकर उसका ऑपरेशन किया जाता है। वैसे ही जब व्यक्ति सथारा लेता है, तब उसका विलपावर कितना मजबूत होता होगा। जिन्दगी में सबसे ज्यादा डर होता है अगर किसी व्यक्ति को तो मौत का होता है, मौत के अलावा किसी का डर नहीं होता। जिस व्यक्ति ने मौत पर विजय प्राप्त कर ली, मौत पर निर्भयता प्राप्त कर ली, वह दुनिया की किसी भी ताकत से नहीं डरता, वह बडे से बडे काम करने को तैयार हो जाता है, क्योंकि उसे अपनी मौत का भय नहीं है।

आप देखेगे सेना के अन्दर जो भर्ती होते हैं वे सैनिक, मौत को अपने पीछे रखते हैं और जो सैनिक निर्भय होता है वह ही व्यक्ति सेना के अन्दर कोई बडा काम कर सकता है। सन् 1965 के अन्दर जब युद्ध चल रहा था, उस समय फ्लाइग अफसर प्रेमराज चदानी भारत की ओर से लड रहे थे। युद्ध जारी था और उस समय वह लडाकू विमान में बैठ कर जा रहा था। उसे जिस जगह बम्ब डालना है। वहा पर शत्रुओं की भयकर सेना खडी है

और उस भयकर सेना के बीच मे जाकर बम डालना है, सौ प्रतिशत यह बात निश्चित थी, यही आशा थी कि वह बम डालने वाला मर जायेगा, बच नहीं सकता। लेकिन उस फ्लाइग अफसर ने कहा– मुझे भारत की रक्षा करने के लिए युद्ध के अन्दर मौत का डर नहीं है और वह फ्लाइग अफसर उस लडाकू विमान मे बैठ शत्रुओ की भयकर सेना के बीच मे गया और बीच मे जाकर उसने भयकर बम डाले और बम डाल कर लौटा उस समय उसके भी गोलिया लगी और गोलिया लगते–लगते भी वह विमान सहित सुरक्षित भारत में पहुच गया। लेकिन गोलिया उसके शरीर मे बहुत लग चुकी थी। उसके अफसरो ने उसको बहुत बधाई दी कि तुमने बहुत ही साहस का काम किया है। उसने कहा– शरीर की ओर मत देखो, यह बताओ कि मेरा निशाना सही लगा या नहीं ? उन्होने कहा– तुम्हारा निशाना सही लग गया और वह शाति के साथ सदा के लिए सो गया। आप सोचिये जिस व्यक्ति मे मौत का डर नही रहता है, वही व्यक्ति शत्रुओं के बीच मे जाकर भी अपना काम कर गुजरता है। वैसी ही हालत सथारे की है, सथारे मे भी वही हाल होता है कि चारो ओर शत्रु ही शत्रु खडे होते हें, उन शत्रुओ के बीच मे व्यक्ति को परमात्मा को पकडना होता है वह कैसे पकडे। उनके शत्रु काम, क्रोध, मद, मत्सर, तृष्णा और लोभादि हैं वे सब सन्नद्ध होकर के एकदम सावधान खडे हैं, उन सारे शत्रुओं के बीच परमात्मा है, व्यक्ति जब सथारा करता है तो एकदम निर्भय हो जाता है और निर्भय होकर के वह उन शत्रुओं के अन्दर प्रवेश करता है और प्रवेश करके उस परमात्मा के साथ प्यार करने लगता हे, उसके साथ जुड़ जाता है, तो आत्म शक्ति प्रकट होने लगती है।

सथारा करने वाली आत्मा जब समभाव मे चलने लगती है उस समय, उस आत्मा की अनन्त– अनन्त शक्तिया बहुत तेजी के साथ प्रकट होने लगती है, वह हमे मालूम नही पडती, उस व्यक्ति की आत्मा ही उसे जान सकती है, जो आत्मा सथारे में समभाव के साथ जीवन जी रही है, समता के साथ आगे बढ रही है। उसकी निश्चित रूप से आत्म शक्तिया बहुत तेजी के साथ फैलने लगती है, उसका विल पावर बहुत तेजी के साथ आगे बढने लगता है क्योंकि सथारे के अन्दर उसकी आत्मा शारीरिक भावो, सासारिक परिधियो से ऊपर उठती है और परमात्म स्वरूप स्वभाव मे रमण करती है।

आपने देखा होगा दीये तले अधेरा रहता हे। क्यो रहता है ? जब दीये की बाती पूरा प्रकाश फैला रही है, उसके पूरे प्रकाश फैलाने के बावजूद भी उसके तल मे अधेरा रहता है, वह अधेरा इसलिए है कि वह बाती दीये के

सहारे खडी है और जब तक वह बाती दीये के सहारे रहेगी तब तक अधेरा रहेगा। उस बाती को ऊपर उठा लिया जाय और केवल ज्योति रह जाय और दीया न रहे उस समय उस तल मे कोई अधेरा नहीं रहेगा। वैसे ही यह आत्मा जब तक शरीर के साथ चिपकी रहेगी, तब तक उस आत्मा के तल में दु ख का, शोक का, सताप का और अशान्ति का अधेरा बना रहेगा। उस आत्म ज्योति को ज्यो ही शरीर से बाहर निकाल दिया जाता है, अर्थात् अनासक्त भाव से जीवन जिया जाता है और नि स्पृह होकर केवल आत्म स्वरूप में रहा जाय तो उस समय उस आत्मा में केवल ज्योति ही रह जायेगी और इस ज्योति के तल मे अधेरा रहेगा ही नहीं तो सथारे की वह प्रक्रिया उस तल के अधेरे को मिटाने वाली है, वह शरीर के सहारे को तुडाने वाली है, उस शरीर से इसमें अशाति फैल रही है, उस शरीर से रोग फैल रहा है, क्लेश फैल रहा है, उस शरीर को हटाने के लिए हम अपनी आत्म शक्ति को जगाना चालू करे। आप देखेगे कि जो व्यक्ति तैरना चाहता है लेकिन तैरते वक्त भी जब तक लकड़ी का सहारा लेता है, ट्यूब का सहारा लेता है या दूसरे आदमी का सहारा लेता है तब वह बढ़िया तैराक नही बनता। लेकिन जब वह सारे सहारे छोड कर तैरने लगता है तो बढिया तैराक बन जाता है। जीवन मरण के अन्दर सथारे की प्रक्रिया बिना सहारे तैरने की प्रक्रिया है, सथारे के काल मे आत्मा अपने शरीर के सहारे को भी छोड देती है, उस सहारे को परे हटा देती है, तब जाकर उसकी आत्मा में शाति प्राप्त होती है। इसलिए जैन समाज के अन्दर सथारे का बहुत महत्त्व दिया गया है।

सथारा उसी व्यक्ति को सही आ सकता है, जिस व्यक्ति ने अपनी जिदगी की गणित को सही किया हो, पूरी जिन्दगी जिसने सही तरीके से निकाली हो। उस व्यक्ति का ही सथारा सही आ सकता है। हमारी बहने रसोई बनाती हैं, पूरे एक घटे तक रसोई में ध्यान देती है, किन्तु एक क्षण के लिए भी चूक जाय और सब्जी बनाते वक्त नमक की जगह शक्कर डाल दे तो क्या होगा ? सारी रसोई बिगड जाएगी। रोटी बनाती है। रोटी पकाते वक्त पूरा ध्यान देना पड़ता है। वे क्या करती हैं ? अगर थोड़ा सा रोटी पकाते वक्त ध्यान न दें तो ज्यादा पक जाय या जल जाय, थोडा कम ध्यान दे तो रोटी बीच में कच्ची रह जाय। दोनों स्थिति बिगडने लगती है। इसीलिए बहनें पूरा ध्यान देती हैं कि रोटी कच्ची नहीं रहनी चाहिए और ज्यादा पकनी भी नहीं चाहिए। बीच की स्थिति रहनी चाहिए। जब बीच की स्थिति रहे तभी रोटी सही पकती है। वैसी ही सथारा उसी व्यक्ति को सही आता है, जो पूरी

जिदगी को सही ढग से लेकर चलने की कोशिश करता है, जिसकी पूरी जिदगी में न कच्ची रोटी रहे न ज्यादा पके, जिसके न सब्जी मे शक्कर पडे न सीरे में नमक जाय। इन सारी बातो का जो ध्यान रखता है, जो अपनी पूरी जिन्दगी में विषमताओं को न आने दे, अपनी पूरी जिदगी मे दुर्भावनाओ को न आने दे, ऐसी स्थिति बनती है तमी अतिम समय में सथारा सही आता है। सारे पेपर सही होते हैं तो ही अतिम समय में रिजल्ट सही आता है। जिसने एक पेपर भी बिगाड दिया तो वह वर्ष भर की परीक्षा में पास नहीं हो सकता। सथारे में आत्म ज्योति का प्रकटन होता है। आत्म ज्ञान का प्रकटन होता है। लेकिन व्यक्ति को उतनी ही समता लानी होगी, उतनी ही निस्पृहता लानी होगी, तब जाकर सथारे का ज्ञान प्रकट होने लगता है। यह नहीं कि यह मर रहा है, सथारा करवा दो, आत्मा का उद्धार हो जाएगा। समता भाव को लेकर जो व्यक्ति ज्ञान सहित सथारा करता है, तो उसकी आत्मा का उसी वक्त उसी क्षण से उद्धार होने लगता है। इसलिए बधुओ ! आप सामायिक करते हैं, उपवास करते हैं, कितना मन को वश मे रखते हैं। आपने सूत्र के अन्दर सुना होगा, जितने महापुरुष मोक्ष में गये उन सभी ने सथारा किया। महीने महीने भर तक सथारा चलता रहा है। उन्होने बुरे कर्मो का क्षय किया। सारे कर्मों का क्षय पडित मरण से हुआ तब जाकर आत्मा की ज्योति प्रकट हुई। वह ज्योति बिना सहारे के हो गई। आत्मा को शरीर का सहारा नहीं रहा। केवल ज्योति हो गई। जहा केवल ज्योति हो जाती है वहा आत्मा का सम्पूर्ण ज्ञान प्रकट होने लगता है।

स्व आचार्य श्री गणेशी जी महाराज साहब के समय मे आपने सुना होगा उन्होंने सथारा लिया और वह सथारा उन्होने बडी ही सजगता के साथ लिया। बैठे–बैठे और पूर्ण सजग अवस्था में उन्होंने सथारा लिया और हजारो हजार व्यक्तियों को उन्होंने दर्शन दिया। पूर्ण समाधिभाव के साथ वे इस शरीर के सस्कार की प्रक्रिया से परे थे। मैंने आचार्य श्री गणेशी जी महाराज के दर्शन नहीं किए। मैंने ये बातें अनेन्त आराध्य गुरुदेव एव श्रावकों के मुह से सुनी हैं, लेकिन बधुओं आज भी इतिहास इन बातों का गवाह है। जिस बात को मैंने नजदीक से देखा है और बहुत निकट से समझा है, उस बात को भी मैं आपको बता दू।

गत वर्ष निम्बाज के अन्दर परम श्रद्धेय हस्तीमल जी महाराज का सथारा हुआ था। वह आज भी आपकी आखों के सामने होगा। उन्होंने सथारा कैसे लिया ? मैं उस सथारा के समय उनके साथ नजदीक से रहा,

सहारे खडी है और जब तक वह बाती दीये के सहारे रहेगी तब तक अधेरा रहेगा। उस बाती को ऊपर उठा लिया जाय और केवल ज्योति रह जाय और दीया न रहे उस समय उस तल में कोई अधेरा नहीं रहेगा। वैसे ही यह आत्मा जब तक शरीर के साथ चिपकी रहेगी, तब तक उस आत्मा के तल में दु ख का, शोक का, सताप का और अशान्ति का अधेरा बना रहेगा। उस आत्म ज्योति को ज्यों ही शरीर से बाहर निकाल दिया जाता है, अर्थात् अनासक्त भाव से जीवन जिया जाता है और नि स्पृह होकर केवल आत्म स्वरूप में रहा जाय तो उस समय उस आत्मा मे केवल ज्योति ही रह जायेगी और इस ज्योति के तल मे अधेरा रहेगा ही नहीं तो सथारे की वह प्रक्रिया उस तल के अधेरे को मिटाने वाली है, वह शरीर के सहारे को तुडाने वाली है, उस शरीर से इसमे अशाति फैल रही है, उस शरीर से रोग फैल रहा है, क्लेश फैल रहा है, उस शरीर को हटाने के लिए हम अपनी आत्म शक्ति को जगाना चालू करे। आप देखेगे कि जो व्यक्ति तैरना चाहता है लेकिन तैरते वक्त भी जब तक लकड़ी का सहारा लेता है, ट्यूब का सहारा लेता है या दूसरे आदमी का सहारा लेता है तब वह बढिया तैराक नही बनता। लेकिन जब वह सारे सहारे छोड कर तैरने लगता है तो बढिया तैराक बन जाता है। जीवन मरण के अन्दर सथारे की प्रक्रिया बिना सहारे तैरने की प्रक्रिया है, सथारे के काल मे आत्मा अपने शरीर के सहारे को भी छोड देती है, उस सहारे को परे हटा देती है, तब जाकर उसकी आत्मा में शाति प्राप्त होती है। इसलिए जैन समाज के अन्दर सथारे का बहुत महत्त्व दिया गया है।

सथारा उसी व्यक्ति को सही आ सकता है, जिस व्यक्ति ने अपनी जिदगी की गणित को सही किया हो, पूरी जिन्दगी जिसने सही तरीके से निकाली हो। उस व्यक्ति का ही सथारा सही आ सकता है। हमारी बहनें रसोई बनाती हैं, पूरे एक घटे तक रसोई मे ध्यान देती है, किन्तु एक क्षण के लिए भी चूक जाय और सब्जी बनाते वक्त नमक की जगह शक्कर डाल दें तो क्या होगा ? सारी रसोई बिगड जाएगी। रोटी बनाती है। रोटी पकाते वक्त पूरा ध्यान देना पड़ता है। वे क्या करती हैं ? अगर थोडा सा रोटी पकाते वक्त ध्यान न दें तो ज्यादा पक जाय या जल जाय, थोडा कम ध्यान दे तो रोटी बीच मे कच्ची रह जाय। दोनों स्थिति बिगडने लगती है। इसीलिए बहने पूरा ध्यान देती हैं कि रोटी कच्ची नहीं रहनी चाहिए और ज्यादा पकनी भी नहीं चाहिए। बीच की स्थिति रहनी चाहिए। जब बीच की स्थिति रहे तभी रोटी सही पकती है। वैसी ही सथारा उसी व्यक्ति को सही आता है, जो पूरी

जिदगी को सही ढग से लेकर चलने की कोशिश करता है, जिसकी पूरी जिदगी में न कच्ची रोटी रहे न ज्यादा पके, जिसके न सब्जी में शक्कर पडे न सीरे मे नमक जाय। इन सारी बातो का जो ध्यान रखता है, जो अपनी पूरी जिन्दगी में विषमताओं को न आने दे, अपनी पूरी जिदगी मे दुर्भावनाओ को न आने दे, ऐसी स्थिति बनती है तभी अतिम समय मे सथारा सही आता है। सारे पेपर सही होते हैं तो ही अतिम समय में रिजल्ट सही आता है। जिसने एक पेपर भी बिगाड दिया तो वह वर्ष भर की परीक्षा में पास नहीं हो सकता। सथारे में आत्म ज्योति का प्रकटन होता है। आत्म ज्ञान का प्रकटन होता है। लेकिन व्यक्ति को उतनी ही समता लानी होगी, उतनी ही निस्पृहता लानी होगी, तब जाकर सथारे का ज्ञान प्रकट होने लगता है। यह नहीं कि यह मर रहा है, सथारा करवा दो, आत्मा का उद्धार हो जाएगा। समता भाव को लेकर जो व्यक्ति ज्ञान सहित सथारा करता है, तो उसकी आत्मा का उसी वक्त उसी क्षण से उद्धार होने लगता है। इसलिए बधुओं ! आप सामायिक करते हैं, उपवास करते हैं, कितना मन को वश में रखते हैं। आपने सूत्र के अन्दर सुना होगा, जितने महापुरुष मोक्ष में गये उन सभी ने सथारा किया। महीने महीने भर तक सथारा चलता रहा है। उन्होंने बुरे कर्मो का क्षय किया। सारे कर्मों का क्षय पडित मरण से हुआ तब जाकर आत्मा की ज्योति प्रकट हुई। वह ज्योति बिना सहारे के हो गई। आत्मा को शरीर का सहारा नहीं रहा। केवल ज्योति हो गई। जहा केवल ज्योति हो जाती है वहा आत्मा का सम्पूर्ण ज्ञान प्रकट होने लगता है।

स्व आचार्य श्री गणेशी जी महाराज साहब के समय मे आपने सुना होगा उन्होंने सथारा लिया और वह सथारा उन्होंने बडी ही सजगता के साथ लिया। बैठे-बैठे और पूर्ण सजग अवस्था में उन्होंने सथारा लिया और हजारों हजार व्यक्तियो को उन्होंने दर्शन दिया। पूर्ण समाधिभाव के साथ वे इस शरीर के सस्कार की प्रक्रिया से परे थे। मैंने आचार्य श्री गणेशी जी महाराज के दर्शन नहीं किए। मैंने ये बातें अनंन्त आराध्य गुरुदेव एव श्रावकों के मुह से सुनी हैं, लेकिन बधुओं आज भी इतिहास इन बातों का गवाह है। जिस बात को मैंने नजदीक से देखा है और बहुत निकट से समझा है, उस बात को भी मैं आपको बता दू।

गत वर्ष निम्बाज के अन्दर परम श्रद्धेय हस्तीमल जी महाराज का सथारा हुआ था। वह आज भी आपकी आखों के सामने होगा। उन्होंने सथारा कैसे लिया ? मैं उस सथारा के समय उनके साथ नजदीक से रहा,

नजदीक से उन्हे देखने की कोशिश की। मैंने अगर अपनी जिदगी मैं किसी व्यक्ति को जाते हुआ देखा है तो वे पहले व्यक्ति थे। मैंने इससे पहले अपनी जिदगी मे किसी को निकट से मृत्यु का सामना करते नहीं देखा। मैंने सुना है कि उन्होने पूरी जिन्दगी में कभी भी तेले से अधिक तप नही किया। कोई कहता था इतनी जल्दी सथारा करा दिया। इतना लम्बा सथारा चला। वे क्यो ऐसी प्रतिक्रिया करते हैं। कोई भी महान् आत्मा और उसमे भी आचार्य सथारा करते हैं तो वे सोच समझकर करते हैं। उनकी जिदगी सयम साधनामय होती है। आप देखेगे कि कोई काम एक साल से कर रहा है तो उसकी वह हेबिट पडने के बाद वह काम अपने आप होने लग जाता है। जैसे किसी व्यक्ति की हेबिट पड गई बीडी पीने की तो जब भी बीडी का समय आयेगा तो उसे ध्यान आ जायेगा कि बीडी पीनी है। जो आदत पड जाती है वह ध्यान मे आ जाती है तो जरा सोचिए जिस आत्मा ने लगभग 60–60 साल तक सयम पर्याय का पालन किया, 50 साल तक जो आचार्य पद पर रहे उस व्यक्ति की हेबिट कितनी गहराई से पडती होगी। उसकी आदत रोबॉट मे याने कि अनकासियस माइड के अन्दर कितनी गहरी जाती होगी। जब उन्हे अपने महाप्रयाण की स्थिति महसूस होती है तो उनका अन्तर मन बोलता है मुझे क्या करना है। अपनी आत्मा को ऊपर उठाना है तो महापुरुषो से प्रेरणा लेने की कोशिश कीजिए। हम सभी भगवान महावीर के अनुयायी हैं। हम यह न सोचे कि हमारे गुरु हैं तो अच्छे हैं और दूसरो के हैं तो खराब जहा ऐसी स्थिति है, वहा वह व्यक्ति महावीर का अनुयायी नही माना जा सकता। सच्चा अनुयायी वह व्यक्ति होता है जो औरो के गुणो को भी ग्रहण करने की कोशिश करे। जवाहराचार्य के विषय मे सुना कि जिन्होने अपने फोडे का आपरेशन बिना क्लोरोफार्म सूघे होश हवाश की अवस्था मे डॉक्टर से करवाया, सजगता के साथ उन्होंने अपने फोडे का ऑपरेशन करा लिया।

सथारे मे साधक की सोच यह भी होनी चाहिए कि इस समय न कोई मेरा है ओर न मैं किसी का हू ओर यह सब यहीं रहेगे। इस समय मुझे अपनी आत्म ज्योति को ऊपर उठाना है, शरीर रूपी दीपक से अनासक्त बनाना है, इस ज्योति को बाहर निकालने के लिए एक समय की भी गडबड हो गई तो मेरी आत्मा का उद्धार नहीं हो सकता। अगर बहनों ने एक घण्टे की रसोई मे जरा भी गडबड कर दी तो सब कुछ बिगड जायेगा। अगर रोटी को ज्यादा सेक दिया तो वह जल जायेगी। अगर कम सेका तो रोटी कच्ची रह जायेगी। इस तरह सथारा मे व्यक्ति विरोधी के प्रति प्रतिशोध की भावनाओ, लौकिक

कामनाओ, वैषयिक वासनाओ से घिर गया, अपने–पराये के द्वन्द्व मे उलझ गया, मोह ममता के चक्र मे फस गया तो वह काषायिक अध्यवसाय, उच्च परिणाम रोक सकते हैं। इसलिए सथारा लेने वाले के लिए यह निर्देश दिया है कि वह अपने जीवन की सम्मानजनक स्थिति देख जीने की आकाक्षा न करे और न ही वह दुखो से घबराकर मरण की कामना ही करे तथा न ही सासारिक सुख समृद्धि की लालसा करें। वह इन सबसे निर्लिप्त निस्पृह रहकर आत्म चिन्तन मे अपने योगों को लगाये। समत्वभाव मे रमण करे तभी उसमें ज्योति स्फुलिग फूटने लगते हैं और वह आत्मा अहिसक भावनाओं से ओत प्रोत होती जाती है, सत्यमय परमात्मा के साथ जुडती चली जाती है।

अहिसा की किरणे विकिरण होती हैं अर्थात् फूटती है, उससे समता का वायुमण्डल बनता है। वह सभी आत्माओं को प्रभावित करते हुए उनका आत्मज्ञान बनाने में सहयोग करती है। ऐसी आत्माए अपने जीवन में सही ज्योति दे पाती है। उस ज्योति को समझने की कोशिश कीजिए। हम विनोद के घेरे से ऊपर उठें, हमे अपनी समझ को सही बनाना चाहिए। मैं इस सम्प्रदाय का हू वह इस सम्प्रदाय का है, वह अलग है, ऐसी भावना अन्तर्मन एव मानस मे है तो समझिये हमने महावीर के उपदेशो को तोडकर रख दिया है। जो कहता है यह मेरा है, वह व्यक्ति अपनी आत्मा का उद्धार नहीं कर सकता। शास्त्रकारो ने यह एक महत्त्वपूर्ण बात बताई है।

लोग कहते हैं, हमारी आत्मा का उद्धार होता है या नहीं। हमें इसका कैसे पता लगे ? इसके लिए ऐसा कोई थर्मामीटर होना चाहिए जो यह भी बता देता है। मैं आपको वह थर्मामीटर देता हू। उस थर्मामीटर को अपने अन्दर लगा लीजिए। इस पेरामीटर को अन्दर लगाकर देखिये, आपकी आत्मा हकीकत में सही होती है या नहीं ? इसके लिए मैं आपको एक उदाहरण बताना चाहूगा। अगर हमारे सामने किसी पराये व्यक्ति के गुण गाये जाते हैं, उन गुणो को सुनते समय यदि आपकी आत्मा दिल से खुश होती है तो समझ लीजिये आपकी आत्मा ऊपर उठ रही है। अमुक व्यक्ति की प्रशसा न हो, यह भावना दिल मे रहती है चाहे वह गुणी है, ज्ञानी है, तपस्वी है, धर्म ध्यान करने वाला है तो भी उसके अन्दर गुणो के प्रति प्रमोद भाव नहीं है, दुराग्रह भाव है, सम्प्रदाय दुराग्रह की भावना है। जिस व्यक्ति मे गुणो के प्रति मेरे ओर तुम्हारे का भाव है, उस व्यक्ति की आत्मा ऊपर नहीं उठ सकती है, उसकी आत्मा नीचे गिर रही है। ससार को वढा रही है। इसलिए आप अपने अन्तरगन में पैरामीटर लगाकर देखिये। इसी तरह अगर कहीं बहू ज्यादा

धर्म ध्यान कर रही है, सासू धर्म ध्यान नहीं कर रही है तो सासू को बहू से ईर्ष्या होने लगे तो समझ लीजिए उसकी आत्मा ऊपर नहीं उठ रही है।

इस बात को इस तरह से समझे कि दो सेठ थे उसमें से एक सेठ ने दान दिया, उसका नाम दानवीर सेठों में होने लगा तो दान न लेने वाला सेठ कहता है कि अरे, उसने तो दो नम्बर का पैसा इकट्ठा कर लिया है, इसलिए उस पैसे को कहीं न कहीं तो लगाना ही है। ऐसे व्यक्ति जरूर सामायिक करने वाले हैं, प्रतिक्रमण करने वाले हैं। लेकिन दिल में गुणो के प्रति प्रमोद भाव नहीं है तो वह व्यक्ति ऊपर नहीं उठ सकता। आज अधिसख्य लोगो मे सच्चे गुणो के प्रति अच्छे भाव बहुत कम मिलेंगे। आज अन्तरात्मा से हा मे हा करने वाले बहुत कम मिलेंगे और उनमे भी जो पराया व्यक्ति है, उसके गुणो को मानने वाले तो बहुत कम मिलेगे। इसलिए ऐसी स्थिति मे आत्मा का कल्याण नहीं होगा। अगर उस व्यक्ति के अन्दर गुण हैं, जो चाहे हमारा कम्पीटीटर है, हमारा दुश्मन है, घोर शत्रु है, तो भी उसकी सही बात को मान लेना चाहिए, उससे आपकी आत्मा ऊपर उठ सकेगी। हमे अपने को चेज करना चाहिए, अपनी आत्मा को बदलना चाहिए अगर मेरे या तेरे के भाव मे ही रहेंगे तो कभी भी पडित मरण को नहीं समझ सकते। हमें अपनी जिन्दगी की किताब को सही रखकर चलना है। अपने विचारो में परिवर्तन लाना है। सत्य को सुनने की क्षमता बढानी चाहिए, सत्य को स्वीकार करने की तत्परता होगी तब जाकर के हमारी आत्मा परमात्मा के साथ जुड़ेगी। जो मेरा है, वह बढिया है, मेरी चीज अच्छी है ऐसी भावना यदि आपकी है तो वह आपको घटिया बना देगी। आपके जीवन को उन्नति की ओर अग्रसर नहीं होने देगी। इस बात को सहर्ष दिल से स्वीकार करना होगा, अत जहा कहीं गुण की साधना, सत्य की साधना, शील की साधना, तपस्या की साधना, अहिसा की साधना नजर आती है, उसे सहज स्वीकार कर लीजिए दिल से स्वीकार कर लीजिये, दिल में उसके प्रति प्रमोद भाव पैदा करना चाहिए। सत्य की साधना, अहिसा की साधना करनी चाहिए। आप उसके गुणों को गाइये। जो सही काम करते हैं, हम उसको क्यों नहीं मानते क्यो उसको मानने में हमारी हमे हीनता नजर आती है ? क्यों अभिमान नजर आता है ? क्यों अहकार नजर आता है, इसलिए हम उसकी सच्ची बात को भी घुमा फिराकर बताते हैं। जिससे वह व्यक्ति किसी न किसी प्रकार से खराब है। यह धारणा हमारी आत्मा को निरन्तर खराब कर रही है, हमारी जिन्दगी की गणित के टुकड़े कर रही है, टेंशन पैदा कर रही है। पडित मरण को समझने के लिए गणित

को सही करना पडेगा। हम यदि यह सोचते हैं कि हमारा पण्डित मरण आयेगा वह अतिम समय आयेगा। अरे वह अतिम समय नही बन्धुओं, पण्डित मरण हर समय आ रहा है, हर समय हम मौत के मुह में जा रहे हैं। अगर हर समय को आप ध्यान मे रखेंगे, जागरूक रहेंगे, समता में रहेगे, अहिसा मे रहेगे तो आपका पण्डित मरण सही आयेगा, और वह सथारा बिना दीप की ज्योत है, बिना दीये की बाती है। दीया है तो अधेरा रहता है लेकिन दीया नही है वहा तो केवल ज्योत है। तो हमारा सथारा है वह केवल ज्योत है, केवलज्ञान है, केवल प्रकाश पुज है, जिसके अन्दर कहीं भी दु ख, द्वन्द, क्लेश और अशान्ति नही है, इसलिए जो आज यह भ्रातिया फैला रहे हैं कि सथारा सुसाइड है, आत्महत्या है, यह नासमझ लोगो की बात है, उन नासमझ लोगो की बातो में आप मत आइये। भगवान के कथन को आप गहराई से सोचने की, समझने की कोशिश करिए। जब हम गहराई से बात को समझेगे तो हमारी आत्मा निर्मल हो जायेगी, हमारी आत्मा सही स्तर पर चली जायेगी। हमारी आत्मा मे शाति और समता फूटने लगेगी। जहा कभी भी बाहर का विभाव आता है, वहा जाकर दबाव आता है, अशाति आती है और जहा बाहर का विभाव टूटने लगता है वहा शाति और समता फूटने लगती है। अत आत्म– हत्या एव सथारे के स्वरूप को समझना जरूरी है।

आत्महत्या जब कभी भी होती है, वह आवेश मे होती है, बेहोशी मे होती है, अज्ञानता मे होती है जबकि सथारा शान्त सतुलित अवस्था मे किया, लिया जाता है। समझने की शक्ति जागृत रहती है, ज्ञान दशा बनी रहती है। आत्महत्या करने वाला अपने शरीर मे आग लगाने तक जोश मे रहता है जयोंही आग की लपटों मे वह झुलसने लगता है, तब वह चिल्लाता है, अपने आपको बचाने की कोशिश करता है पर तब बात उसके हाथ से निकल चुकी होती है, इसी तरह से जहर खाने वाला जोश–जोश में जहर खा लेता है, फिर बचने की कोशिश करता है। अपने आप पर पछताता भी है। परन्तु किए का परिणाम तो भुगतना ही पडता है। उससे बचा नहीं जा सकता लेकिन सथारा ग्रहण करने वाले को पछताने की नौबत ही नहीं आती क्योकि वह सोच समझकर लिया गया होता है। वह अपने आप को जीवन और मरण से अलग रखता हुआ स्व–स्वरूप मे रमण करता है। समता भाव की साधना जीवन आराधना के क्षणो में जीता है, उसे अन्य शब्दों मे यों कह सकते हैं कि सथारा जीवन के लिए अगर ज्योति है तो आत्महत्या जीवन का अधेरा ही नहीं घोर अधेरा है। सथारा मोक्ष का द्वार है, तो आत्महत्या नरक का द्वार है क्योंकि

आत्महत्या जीवन के प्रति अतिकुण्ठा, घोर निराशा छा जाने पर ही होती है। जबकि सथारे मे किसी प्रकार की कोई आकाक्षा न जीवन के प्रति रही होती है और न मृत्यु के प्रति भी, जबकि ससार के अन्दर आत्महत्या करने वालो को महापापी कहा गया है। सथारा करने वाले को नही । आवश्यक है कि आत्महत्या और सथारे के अन्तर में छिपे गहरे तथ्यों को समझने की। सथारे से आत्म शक्ति निरन्तर जहा उद्घाटित होती है, तो आत्महत्या से वह आवृत्त होती चली जाती है। महादु खो का उपार्जन हो जाता है जबकि सथारे में जन्म–जन्मान्तरों के दु खो का नाश होता चला जाता है।

बन्धुओ ! समय बहुत ज्यादा हो गया है, इसलिए मैं इस बात को और लम्बा नही करके इतनी सी बात और बता दू कि जब भी हमारे अन्दर विभाव की बात आती है, तो दिमाग भारी होने लगता है, खराब होने लगता है। लेकिन ज्यो–ज्यो विभाव का वजन, विषयो का वजन घटेगा, हमारी आत्मा हल्की होगी, त्यो–त्यो हमारी आत्मा मे सुख शाति फूटने लगेगी। इसलिए हमे अपना पर्युषण सही मायने मे मनाना है, और उसे उचित ढग से आगे बढाना है, तो इस सत्य को आप अपने जीवन के साथ जोडिए और यह समझिये कि उस दीये की बाती का प्रतिक्रमण करना है, हमे बिना सहारे चलना है। उस बिना सहारे चलने के लिए यह पर्युषण हमारी आत्मा के साथ जुडता हुआ हमारी आत्मा का कल्याण करने लग जायेगा। इसलिए पर्युषण पर्व मे यह बाते बताई जाती है।

अब कल क्या आने वाली है, कल सवत्सरी आने वाली है, कल आपकी भी जिन्दगी का रिजल्ट आने वाला है। सात दिन पर्युषण मे आपने क्या धर्म–ध्यान किया, क्या समझा, उसकी समीक्षा की, परीक्षा का समय कल आ रहा है। इसलिए हम अपनी तैयारी बहुत अच्छे ढग से करे और बहुत अच्छे ढग से हम साधना मे, सयम में उतरने की कोशिश करे। मन की ग्रथियों में उतरने की कोशिश करे ताकि वे विमोचित हो सके, तभी हम परम ध्यान परम शान्ति को प्राप्त कर सकते हैं।

आज का विषय परमशान्ति का महाधाम–सथारा और पण्डित मरण था, मैं अपनी बात कितनी समझा पाया, यह मैं नहीं कह सकता। समय हो गया है, कोई नहीं समझ पाया हो तो वह मुझसे पूछ सकता है। आप इन बातो को अपने जीवन मे उतारने की कोशिश करेगे तो आपका जीवन मगलावस्था को प्राप्त करेगा। 

6

विश्व युद्ध होने पर भारत का क्या होगा ?

प्रज्ञाशील उपासको, विश्व हितकर, सर्वज्ञ, सर्वदृष्टा, वीतराग देव प्रभु महावीर ने ससार की आत्माओ की आन्तरिक जिजीविषा को बताने के लिए सकेत दिया कि –

"सव्वे जीवा वि इच्छति, जीविउ ण मरिज्जिउ" (दश अ 6) अपना अपना जीवन सबको प्रिय है। इसीलिए जिस किसी भव में जिस किसी योनि मे, कोई भी आत्मा जी रही है, चाहे वह योनि कैसी भी क्यों न हो, वह आत्मा उस योनि को छोडना नहीं चाहती, वह उसी मे जीना चाहती है। चाहे वह गन्दी नाली के कीडे के रूप मे ही क्यो न हो, वह भी जीना चाहती है। मरना नहीं चाहती, हर प्राणी को अपनी जिन्दगी प्रिय हे। किन्तु इस प्रिय जिन्दगी की रक्षा करने के लिए उसे क्या करना चाहिए। किन उपायों को आख्तियार करना चाहिए, इस ओर अन्य प्राणियो का ध्यान जाना तो विशेष समव नहीं है, लेकिन मानव जीवन को धारण कर चलने वाले इसान का भी इस ओर ध्यान बहुत कम जा पाता है। क्योकि इसान ने अपने स्वार्थ के वशीभूत होकर यह सोच एव समझकर निर्णय ले लिया है कि मुझे मेरी जिन्दगी प्रिय है। अपनी जिदगी की सुरक्षा करने के लिए चाहे मुझे अपने पास वाले की जिन्दगी की भी उपेक्षा करनी पडे या उसका शोषण अथवा हनन भी करना पडे तो कर दिया जाय, इस स्वार्थ परक सकुचित मानस के कारण वह अपने आप की रक्षा भी सही ढग से नहीं कर पा रहा है, अपने आप पर हर समय खतरा महसूस करता रहता है, यह सब इस वैज्ञानिक बौद्धिक युग को सम्यक्तया न समझने की देन है। "आत्मवत् सर्वभुतेपु" की भावना को भूल विलासिता मे डूबने का परिणाम है।

आत्महत्या जीवन के प्रति अतिकुण्ठा, घोर निराशा छा जाने पर ही होती है। जबकि सथारे मे किसी प्रकार की कोई आकाक्षा न जीवन के प्रति रही होती है और न मृत्यु के प्रति भी, जबकि ससार के अन्दर आत्महत्या करने वालों को महापापी कहा गया है। सथारा करने वाले को नहीं । आवश्यक है कि आत्महत्या और सथारे के अन्तर मे छिपे गहरे तथ्यो को समझने की। सथारे से आत्म शक्ति निरन्तर जहा उद्घाटित होती है, तो आत्महत्या से वह आवृत्त होती चली जाती है। महादु खो का उपार्जन हो जाता है जबकि सथारे मे जन्म–जन्मान्तरों के दु खों का नाश होता चला जाता है।

बन्धुओ ! समय बहुत ज्यादा हो गया है, इसलिए मैं इस बात को और लम्बा नहीं करके इतनी सी बात और बता दू कि जब भी हमारे अन्दर विभाव की बात आती है, तो दिमाग भारी होने लगता है, खराब होने लगता है। लेकिन ज्यो–ज्यो विभाव का वजन, विषयो का वजन घटेगा, हमारी आत्मा हल्की होगी, त्यो–त्यो हमारी आत्मा मे सुख शाति फूटने लगेगी। इसलिए हमे अपना पर्युषण सही मायने मे मनाना है, और उसे उचित ढग से आगे बढाना है, तो इस सत्य को आप अपने जीवन के साथ जोडिए और यह समझिये कि उस दीये की बाती का प्रतिक्रमण करना है, हमे बिना सहारे चलना है। उस बिना सहारे चलने के लिए यह पर्युषण हमारी आत्मा के साथ जुडता हुआ हमारी आत्मा का कल्याण करने लग जायेगा। इसलिए पर्युषण पर्व मे यह बाते बताई जाती है।

अब कल क्या आने वाली है, कल सवत्सरी आने वाली है, कल आपकी भी जिन्दगी का रिजल्ट आने वाला है। सात दिन पर्युषण मे आपने क्या धर्म–ध्यान किया, क्या समझा, उसकी समीक्षा की, परीक्षा का समय कल आ रहा है। इसलिए हम अपनी तैयारी बहुत अच्छे ढग से करें और बहुत अच्छे ढग से हम साधना मे, सयम में उतरने की कोशिश करे। मन की ग्रथियो मे उतरने की कोशिश करे ताकि वे विमोचित हो सके, तभी हम परम ध्यान परम शान्ति को प्राप्त कर सकते हैं।

आज का विषय परमशान्ति का महाधाम–सथारा और पण्डित मरण था, मैं अपनी बात कितनी समझा पाया, यह मैं नहीं कह सकता। समय हो गया है, कोई नहीं समझ पाया हो तो वह मुझसे पूछ सकता है। आप इन बातो को अपने जीवन मे उतारने की कोशिश करेगे तो आपका जीवन मगलावस्था को प्राप्त करेगा। 

इतिहास इस बात का गवाह है कि इसान ने इसान को कितना मारा। भगवती सूत्र के अन्दर रथमूशल सग्राम, महाशिला कटक सग्राम बताया है जिसके अन्दर 1 करोड 80 लाख आदमी मारे गये। दो दिन के भयकर युद्ध मे करोडो आदमियो का मारा जाना विश्व युद्ध का भी रिकार्ड नहीं है। इतना भयकर युद्ध उस प्राचीन काल मे हुआ। क्योकि कोणिक ने अपने स्वार्थ के लिए निरपराध व्यक्तियों का हनन कर डाला, मेरे पास मेरा राज्य भी रहना चाहिए और भाईयों का भी रहना चाहिए। भाई के पास हार और हाथी हैं, वे भी मेरे हो जाना चाहिए। यौगलिक के बीच मे जो स्वार्थ का बीज पडा वह छोटा सा था। उस स्वार्थ का विस्तार इतना बढ गया कि पहले बातचीत की लडाई शुरू हुई उसके बाद हाथा पाई की स्थिति बनी, उसके बाद पत्थरो से फिर लकडियों का इस्तेमाल होने लगा। फिर वह लडाई बढते-बढते महावीर के समय इतनी जबर्दस्त फैली कि इसान ने ही इसान को मारना चालू कर दिया। करोडों आदमी थोड़े से स्वार्थ के पीछे घमासान हो गये। यह इस बात का साक्षी है कि इसान ने अपने अन्दर कितना स्वार्थ फैला लिया है। यद्यपि इसान के पास बहुत बडा वरदान है, जो किसी भी योनि के पास नहीं है। 84 लाख योनियो में अगर किसी को वरदान है तो केवल इसान को है। देवताओं को भी यह वरदान प्राप्त नहीं है, तिर्यंचों को भी यह वरदान नहीं मिला नारकी के नैरिए भी इस वरदान से वचित रहे, केवल मनुष्य ही उस वरदान का अधिकारी बना। मनुष्य मे ही एक मात्र ऐसी शक्ति है कि वह परमात्मा को पा सकता है, मोक्ष में जा सकता है। इसके अलावा दुनिया में ऐसी ताकत किसी भी योनि के पास नहीं जो परमात्मा बन सके। परमात्मा बन सकता है तो केवल मनुष्य ही बन सकता है। बहुत बडा वरदान है यह। जैन शास्त्रों मे ही नहीं, जितने भी धर्मों के प्रमुख ग्रथ हैं उन्हें उठाकर देख लीजिए हर धर्म के प्रवर्तक ने यह बात दुहरायी है कि इसान ही सर्वश्रेष्ठ प्राणी है। इतना बडा वरदान हमें प्राप्त हुआ, लेकिन हमने उस वरदान को न समझकर अपने स्वार्थ के वशीभूत होकर एक दूसरे को मारना चालू कर दिया।

सस्कृत में एक वाक्य आता है कि "सुन्दोपसुन्द न्याय" सुद और उपसुन्द ये दो भाई थे। यह न्याय की परिभाषा है। कहा जाता है– उन दोनों भाईयों ने भोलेनाथ की सेवा की और भोलेनाथ उनके ऊपर बहुत खुश हो गये, उन्होने उनसे कहा– जाओ, मैं तुम्हें वरदान देता हू और दुनिया मे तुम्हें मारने वाला कोई दूसरा पैदा नहीं होगा, तुम अमर रहोगे और यदि तुम दुनिया में मरोगे तो दोनो परस्पर लडोगे तो ही मरोगे। इसके अलावा दुनिया में तुम्हें

भगवान ऋषभदेव से पहले जब आदिम कालीन युग था। जिस समय यौगलिक जिन्दगी जीते थे, उस समय मे उनकी यह अवस्था नहीं थी। वे लोग सग्रह की भावना एव कामना नहीं करते थे न ही वे सग्रह रखते थे। इसलिए कोई सघर्ष उनमे नहीं होता था वे अपनी जिन्दगी मे मस्त रहते थे। इसे इस रूप मे समझे कि यौगलिक लोग खुद जीते थे और दूसरो को भी जीने का अधिकार देते थे। किसी के भी जीने के अधिकार का हनन नहीं होता था, न किया जाता था। इसलिए उस जिन्दगी के अन्दर शाति बराबर बनी हुई थी। लेकिन जैसे–जैसे कल्पवृक्ष ने फल देना बन्द किया अथवा कम कर दिया, तभी से उन लोगो मे सग्रह की भावना पैदा हुई कि आज तो मैं खा लूगा, कल क्या होगा ? इसी दृष्टि एव भावना को लक्ष्य मे रखकर कल का और आज का साथ मे इकट्ठा कर लिया जाय। लेकिन इकट्ठा करते वक्त यह नहीं सोचा गया कि मैंने तो दोनों वक्त का साथ में इकट्ठा कर लिया, मगर मेरे बाद जो यौगलिक आएगा वह क्या करेगा ? वह खाये या नहीं खाये ? उसको मिले या नहीं मिले ? मुझे मिल जाना चाहिए। यह धारणा उस समय पैदा हुई। यह स्वार्थ का बीज उस समय पैदा हुआ कि मेरा पेट भरना चाहिए। इस बीज ने ही सघर्ष पैदा कर दिया। यौगलिक ही यौगलिक से लडने लग गया। शातिमय जीवन में अशाति का प्रादुर्भाव हो गया, समता के बीच मे विषमता का उदभव हुआ और जिदगी के बीच मे दुर्भाव एव दूरत्व जागृत हुआ। उसका पहला कारण था स्वार्थ।

स्वार्थ इन्सान में ऐसा घुस गया कि उस स्वार्थ मे इन्सान ने इन्सान को मारना चालू कर दिया। इसान ही इसान को मार रहा है। अपने स्वार्थ को पूरा करने के लिए, अपनी जिन्दगी की रक्षा करने के लिए जब हम दूसरों की जिन्दगी के साथ खिलवाड़ करने के लिए तैयार हैं तो आप स्वय जरा सोचिए कि दूसरा व्यक्ति भी अपनी जिन्दगी की सुरक्षा करने के लिए सामने वाले के साथ क्या कुछ करने के लिए कटिबद्ध बन जायेगा ? यही कारण है कि इसान ही इसान को जितना मारता रहा है उतना कोई अन्य प्राणी नहीं मारता। दुनिया की कोई भी ताकत इसान को इतना नहीं मार रही है उससे ज्यादा इसान ही इसान को मार रहा है, इसान ही इसान को खा रहा है। मैं चाहता हू मेरी जिन्दगी रहनी चाहिए उस जिदगी के लिए मैं दूसरों को मारता हू और दूसरा भी यही चाहता है कि मेरी जिदगी रहनी चाहिए। तो वह भी मारता है।

इतिहास इस बात का गवाह है कि इसान ने इसान को कितना मारा। भगवती सूत्र के अन्दर रथमूशल सग्राम, महाशिला कटक सग्राम बताया है जिसके अन्दर 1 करोड 80 लाख आदमी मारे गये। दो दिन के भयकर युद्ध में करोडो आदमियो का मारा जाना विश्व युद्ध का भी रिकार्ड नहीं है। इतना भयकर युद्ध उस प्राचीन काल में हुआ। क्योंकि कोणिक ने अपने स्वार्थ के लिए निरपराध व्यक्तियो का हनन कर डाला, मेरे पास मेरा राज्य भी रहना चाहिए और भाईयो का भी रहना चाहिए। भाई के पास हार और हाथी हैं, वे भी मेरे हो जाना चाहिए। यौगलिक के बीच में जो स्वार्थ का बीज पडा वह छोटा सा था। उस स्वार्थ का विस्तार इतना बढ गया कि पहले बातचीत की लड़ाई शुरू हुई उसके बाद हाथा पाई की स्थिति बनी, उसके बाद पत्थरो से फिर लकडियों का इस्तेमाल होने लगा। फिर वह लडाई बढते-बढते महावीर के समय इतनी जबर्दस्त फैली कि इसान ने ही इसान को मारना चालू कर दिया। करोडों आदमी थोडे से स्वार्थ के पीछे घमासान हो गये। यह इस बात का साक्षी है कि इसान ने अपने अन्दर कितना स्वार्थ फैला लिया है। यद्यपि इसान के पास बहुत बडा वरदान है, जो किसी भी योनि के पास नहीं है। 84 लाख योनियों मे अगर किसी को वरदान है तो केवल इसान को है। देवताओ को भी यह वरदान प्राप्त नही है, तिर्यचो को भी यह वरदान नहीं मिला नारकी के नैरिए भी इस वरदान से वचित रहे, केवल मनुष्य ही उस वरदान का अधिकारी बना। मनुष्य में ही एक मात्र ऐसी शक्ति है कि वह परमात्मा को पा सकता है, मोक्ष मे जा सकता है। इसके अलावा दुनिया मे ऐसी ताकत किसी भी योनि के पास नहीं जो परमात्मा बन सके। परमात्मा बन सकता हे तो केवल मनुष्य ही बन सकता है। बहुत बडा वरदान है यह। जैन शास्त्रों में ही नहीं, जितने भी धर्मो के प्रमुख ग्रथ हैं उन्हे उठाकर देख लीजिए हर धर्म के प्रवर्तक ने यह बात दुहरायी है कि इसान ही सर्वश्रेष्ठ प्राणी है। इतना बडा वरदान हमें प्राप्त हुआ, लेकिन हमने उस वरदान को न समझकर अपने स्वार्थ के वशीभूत होकर एक दूसरे को मारना चालू कर दिया।

सस्कृत में एक वाक्य आता है कि "सुन्दोपसुन्द न्याय" सुद और उपसुन्द ये दो भाई थे। यह न्याय की परिभाषा है। कहा जाता है– उन दोनों भाईयों ने भोलेनाथ की सेवा की और भोलेनाथ उनके ऊपर वहुत खुश हो गये, उन्होने उनसे कहा– जाओ, मैं तुम्हें वरदान देता हू और दुनिया मे तुम्हें मारने वाला कोई दूसरा पैदा नहीं होगा, तुम अमर रहोगे और यदि तुम दुनिया में मरोगे तो दोनों परस्पर लड़ोगे तो ही मरोगे। इसके अलावा दुनिया में तुम्हें

मारने वाला कोई दूसरा इसान नहीं होगा। यह वरदान भोलेनाथ ने सुन्द और उपसुन्द भाइयों को दे दिया। उन दोनो भाइयो ने देखा, वाह अब तो हम अमर हो गये, अब हमें दुनिया मे कौन मारने वाला है। जब आदमी मैं इतनी बडी ताकत आ जाय, अजेय बन जाय तब फिर कहना ही क्या ? यदि इस शक्ति को पचाने की क्षमता और इसके सदुपयोग की कला जीवन मे न हो तो वह शक्ति दूसरों को परेशान करने, सत्रास पहुचाने तथा सहार करने के उपयोग मे आती है। ऐसा ही हुआ वे दोनो सुन्द और उपसुन्द भी अपने आपको निर्भय ओर अजेय मानकर तथा जानकर अपराध करने लगे। कहीं चोरिया कर लेते, कहीं मारकाट मचा देते, किसी के साथ छेडछाड कर देते, यह उनके लिए मामूली बात हो गई, क्योंकि दुनिया की कोई भी ताकत उनसे टकरा नहीं सकती थी। वे अजेय हो गये। उन्होने देश के भीतर भयकर विप्लव मचा दिया, जहा भी जाते वहा बदमाशिया करते। सारे लोग परेशान हो गये। और तो और न्याय कहता है, वे देवलोक मे चले गये, स्वर्गलोक मे जाकर उन्होने इन्द्र को परेशान करना चालू कर दिया। क्योंकि वरदान से वे अजेय बन चुके थे, अत उनको कोई मार तो सकता नहीं, इन्द्र भी उनको नही मार सके, इन्द्र भी परेशानी महसूस करने लगे कि यह क्या हो गया ? इन्हे मारे कैसे ? यह बुलेटप्रूफ है कि देवताओं की ताकत भी काम नही करती। इन को ऐसा आशीर्वाद प्राप्त हुआ है कि कोई शक्ति उनके सामने काम करना तो दूर टिक भी नहीं सकती, इन्द्र ने पता लगाया कि इनको ऐसा आशीर्वाद किसने दिया ? पता लगा कि भोलेनाथ ने दिया। इन्द्र भोलेनाथ के पास गये और हाथ जोडकर निवेदन किया कि प्रभो ! आपने इन दोनो भाईयो को अजेय बनने रूप जो आशीर्वाद दिया वे इसके लायक ही नहीं है। वे आपके इस आशीर्वाद रूप शक्ति का कितना दुरुपयोग कर रहे हैं ? घोर अनर्थ हो गया। यह कार्य तो ऐसा है कि बदर को नग्न तलवार दे अग रक्षक नियुक्त किया हो। यह क्या कर दिया आपने ? उन्होने कहा कि आशीर्वाद तो मैंने दे दिया, मैं भी दु खी हू पर अब क्या होगा ? आशीर्वाद तो आशीर्वाद ही है। इन्द्र ने कहा—भगवन्, आपने आशीर्वाद किस रूप मे प्रदान किया ? भोलेनाथ ने कहा— कि तुम्हें कोई नहीं मार सकता यदि तुम मरोगे तो आपस मे लड़कर ही मरोगे, एक दूसरे से मरोगे अन्य कोई तुम्हें नहीं मार सकता। इन्द्र ने कहा— वाह ! वाह ! इस रूप मे है तब तो मैं सब काम कर लूगा, इतनी बचाव की जगह उस आशीर्वाद में रखी हुई है तो फिर मैं आगे का सारा कार्य स्वत कर लूगा, इन्द्र ने मन ही मन विचार किया कि अब मुझे इसके लिए उपाय

करना है। उपाय सोचते–सोचते एक उपाय उनके विनाश का मिल ही गया, इन्द्र स्व–स्थान पर लौट आया।

आकर इन्द्र ने स्वर्गलोक मे जो देविया थी, उन देवियों का जो सुन्दर रूप था, उन एक–एक देवियो के रूप का एक तिल जितना–जितना अश सभी का निचोड निकाला, निकाल कर फिर उससे एक अप्सरा बनाई जिसका नाम रखा तिलोत्तमा। ऐसी तिलोत्तमा कि स्वर्गलोक मे उससे सुन्दर कोई दूसरी देवी नहीं। ऐसी सुन्दर देवी उसने बनाई और उस देवी को मृत्युलोक के जगत् में उतार दिया, साथ ही यह सदेश देकर भेजा कि जिस उद्यान मे सुन्द और उपसुन्द दोनो घूमने आते हैं उस उद्यान मे तुम जाकर ऐसे स्थान पर रुकना कि उन दोनो की दृष्टि तुम पर पड जाय, जैसा निर्देश इन्द्र ने किया तदनुसार ही उसने कार्य किया। दोनो ही उद्यान मे पहुचे कि उनकी दृष्टि उस पर पडी सोचा कि इतनी सुन्दर देवी आज तक हमने कहीं नहीं देखी। उसे देखते ही उनके अतरग मे उसे पाने की इच्छा जागृत हुई। परस्पर कहने लगे इसे तो अब हमे पाना चाहिए, बात–बात के आवेश मे अब वे "हमे" तो भूल गये और कहने लग गए कि इसको तो "मुझे" पाना है। "हमे" भूले और मुझे" पकडा उन्होंने। सुन्द कहता है कि अप्सरा को मैं पाऊगा और उपसुद कहने लगा कि इस अप्सरा को मैं पाऊगा। सुन्द उस अप्सरा के पास जाने लगा तो उपसुन्द कहता है कि तुम नहीं जा सकते, और उपसुन्द जाने लगा तो सुन्द कहता है कि तुम नहीं जा सकते। एक कहता हे कि यह मेरी है तो दूसरा कहता है कि यह मेरी है। बात वहुत गर्मा गई, आवेश सीमा को लाघ गया, दोनों अपने आप को अजय समझ रहे थे।

स्वबल के बलोन्माद में परस्पर उन्होंने कहा कि इसको तो बाद में पायेगे, पहले अपनी शक्ति अजमाले जो शक्तिशाली होगा वह इसको पायेगा। बस फिर क्या था, तिलोत्तमा एक तरफ खडी हो गई और सुंद और उपसुन्द परस्पर भिड गये और इतने जबरदस्त भिडे कि दोनों के दोनो खत्म हो गये और तिलोत्तमा खडी की खडी रह गई। इसे कहते हे सुन्दोपसुन्द न्याय। यानी व्यक्ति जब स्वार्थ में आकर में–मैं की वात करता है, हम से हटकर मुझ पर आने लगता है और ज्योंही इसान के दिमाग मे मैं–मैं की वात घुसी कि झगडा पैदा हो गया। देखिए उन सुन्द और उपसुन्द को कितना वडा वरदान मिला था, उसको भी अपने स्वार्थ के वशीभूत होकर खो दिया। वैसे ही इसान को कोई सामान्य वरदान नहीं मिला है। अर्हन्त भगवान ने यह उद्घोष किया, वरदान दिया है कि इसान मे ऐसी शक्ति है जो परमात्मा को

प्राप्त कर सकती है। लेकिन उस परमात्मा को पाने के लिए उसे "आत्मवत सर्वभूतेषु" की भावना ससार की समस्त आत्माओ के साथ कायम रखनी होगी, उसको वह भूल गया है और स्वार्थ के वशीभूत होकर अपने आप के पेट को भरने के लिए, अपने आप की इच्छा को पूर्ण करने के लिए वह दूसरो को मार रहा है। मारना भी किसे ? अरे मानव मे इतना स्वार्थ आ गया है कि आज के युग मे भाई ही अपने स्वार्थ के लिए अपने भाई को मार रहा है, बाप–बेटे से लड रहा है। कोर्ट केस चल रहा है। पता नहीं क्या–क्या इस दुनिया मे हो रहा है। पति–पत्नी सम्पत्ति के नाम पर झगड रहे हैं। यह सारी सम्पत्ति, यह सारी दौलत, यह सारी जायदाद यहीं रह जाने वाली है। अरे, तिलोत्तमा वहीं की वहीं खडी रह गई, सुन्द और उपसुन्द मारे गये। वैसे ही दुनिया में जो बड़े–बडे महारथी पैदा हुए, बडे–बडे पराक्रमी राजा महाराज पैदा हुए सब लडे, जमीन की खातिर लडे, दौलत के खातिर लड़े। किसने दौलत प्राप्त की, किसने जमीन प्राप्त की ? वह सारी जमीन, सारी दौलत यहीं रह गई, दुनिया मे भयकर युद्ध मचने लगे और आज के इस आधुनिक युग के अन्दर तो युद्ध की सख्या और बढ गई। आज के युद्ध बन्दूको से नहीं होते, आज के युद्ध पिस्तौलों से नहीं होते, तोप और अणुबमों से होते हैं।

भगवती सूत्र के अन्दर परमाणुओं की व्याख्या मिलती है कि परमाणुओं मे आचित्य शक्ति रही हुई है। भगवान महावीर ने दो बाते कही थी कि परमाणु सृजनात्मक काम भी करता है और परमाणु विध्वसात्मक काम भी कर सकता है। दो बातें शास्त्रो मे आती है कि परमाणु से मानव का उद्धार भी किया जा सकता है, तो परमाणु से मानव का विनाश भी किया जा सकता है। लेकिन आज के वैज्ञानिकों ने दोनों में से एक बात पकड ली कि परमाणुओं से मानव का विनाश कैसे किया जा सकता है ? अधिक से अधिक मानव कैसे परमाणु बम से मारे जा सकते हैं ? किस तरीके से इनकी घात की जा सकती है। इस ओर आज के वैज्ञानिकों का ध्यान विशेष तौर पर लगा हुआ है। आपको मालूम होगा पानी को गर्म करने के लिए कितने डिग्री हीट चाहिए, सौ डिग्री हीट के अन्दर पानी भाप बन जाता है। 100 डिग्री हीट लगने पर लोहा भी पिघलने लगता है और पच्चीस सौ डिग्री हीट लग जाय तो लोहा भाप बन जाता है, लोहा आकाश में उड़ने लगता है किन्तु वैज्ञानिको ने जो हाड्रोजन बम बनाया है उस हाइड्रोजन बम की गर्मी 10 करोड डिग्री है। उस हाइड्रोजन बम की ताकत 45 हजार वर्गमील जितनी जमीन को खत्म करने की हैं। ऐसे हाइड्रोजन बम इस दुनिया के अन्दर

पचास हजार से भी ज्यादा हैं। यही नहीं आज जो दुनिया है, ऐसी सात दुनिया इकट्ठी हो जाय तो उसे समाप्त करने की ताकत रखते हैं। हाइड्रोजन बम तो मामूली बम है, इसके बाद तो वैज्ञानिकों ने न्यूट्रोन बम, मेगाटन डूम्सडे आदि भयकर अणुबमों का निर्माण किया है, जिन अणु बमों ने देश को प्रलयकारी कगार पर खडा कर दिया है।

आज के इस आधुनिक विज्ञान के युग मे विनाशकारी ही नहीं महाविनाश की, अस्त्र शस्त्रों के निर्माण की होड़ सी लग गयी है। इस युग मे छोटे से छोटा अपने को अपराजित बनाने के लिए नित नये तकनीक का आश्रय लेकर अधिकाधिक मारक शस्त्रास्त्रो का निर्माण कर रहा है। वह यह चाहता ही नहीं, बल्कि उसके योग्य कोशिश भी जारी रखता है। साथ ही अपने देश की वस्तुओं का निर्यात कर वह दूसरे देश से शस्त्रों का आयात करता है।

इसका कारण यह है कि हर एक देश मे शस्त्रों की होड से भय व्याप्त है। उस भय से उभरने के लिए वह भयकर साधन रूप शस्त्रों को सग्रहित करने मे लगा हुआ है। यही कारण है कि हर देश में विनाशकारी शस्त्रों का प्रभाव बढता चला जा रहा है और यह पशु-पक्षियों को मारने के लिए नहीं बल्कि इसानो को मारने के लिए बनाए जा रहे हैं। मेरा देश बढे और दूसरो का नाम नहीं आए, यह धारणा एक खतरनाक रूप धारण कर रही है, विनाशकारी विकट स्थितिया पैदा कर रही हैं। हिरोशिमा और नागाशाकी का युद्ध, जिसमे एक युद्ध मे 65150 आदमी मारे गये। इसके अतिरिक्त 36452 आदमी अपग हो गए। यह सिर्फ अपनी अहम् की तुष्टि के लिए अपनी भावनाओं को पूरा करने के लिए अपना स्वार्थ पूरा करने के लिए हुआ है। दूसरे विश्वयुद्ध के अन्दर 2 करोड़ 70 लाख लोग मरे और छुटपुट युद्धों मे 2.5 करोड मरे। 61 देशों मे परस्पर युद्ध हुआ। उसके बाद अभी बहुराष्ट्रीय सेना और इराक का युद्ध स्वार्थ पूर्ति का परिचायक है। यह क्यों हो रहा है ? इसलिए कि हमारे अन्दर स्वार्थ घर कर गया है। किसी व्यक्ति के अन्दर स्वार्थ की भावना काम करने से, महासग्राम होने लगता है। तिल-तिल पैदा होते तिलोत्तमा पैदा हो गई। वैसे ही व्यक्ति-व्यक्ति में स्वार्थ पैदा होते-होते खतरनाक महास्वार्थ पैदा हो गया, जो मानवीय सस्कृति को निरन्तर खा रहा है।

बोटुलिज्म जहर का एक ग्राम एक करोड आदमियों का मारने की क्षमता रखता है। यहा तक बताया जाता है कि अशुद्ध बोटुलिज्म जहर का 1/4 ग्राम 7 अरब आदमियों को मारने की क्षमता रखता है। ऐसी-ऐसी भयानक ताकते विश्व में विनाश पैदा करने की क्षमता रखती है। किसी देश

को कैसे मारा जाय, यह भावनाए इसानों के दिल मे पैदा हो रही है।

न्यूट्रोन बम के अविष्कारक सेमुअल कोहन ने एक भविष्यवाणी की है कि 1985 से 1999 के बीच तीसरा विश्वयुद्ध होने की समावना है। उन्होंने यह भी बताया कि भारत और पाकिस्तान लडेगे, अरब और चीन लडेगे और रूस एव अमेरिका ब्रेक से लडायेगे। ऐसी स्थिति की घोषणा सेम्युअल कोहन ने की। वे बातें सच निकले या न निकले इसका कोई महत्त्व नहीं है। यद्यपि हिन्दुस्तान पाकिस्तान का अघोषित युद्ध विश्व को फिर विश्व युद्ध के कगार पर ला रहा था। लेकिन फिलहाल तो विश्वयुद्ध की अग्नि शात हो गई है। कब भडक जाय कुछ कहा नहीं जा सकता है। क्योंकि दोनों देशों के दिलों में तो आक्रामकता की चिनगारिया उठ रही हैं। इस भयानक स्थिति को देखते हुए हमें क्या करना चाहिए यह हमें सोचना है। ऐसे समय मे हमारा क्या उत्तरदायित्व होता है और उसका निर्वाह कैसे हमें करना चाहिए ? हर व्यक्ति अपनी धारणा को किस रूप में लेकर चले कि जिससे इस प्रलयकर/भयकर स्थिति से हर कोई अपने आप को उबार सके और हम भी अपने आपको बचा सकें।

भारत के अदर कितनी भी प्रलयकारी स्थिति क्यो न हो पूरे वर्ल्ड की ताकत इस भारत को तहस-नहस करने, मारने के लिए लग जाय तो भी यह निश्चित है कि भारत सम्पूर्ण रूप से खत्म नहीं होगा और न नाश को प्राप्त हो सकेगा। सारी दुनिया के अणुबम भी यहा आकर पड जाय तो भी भारत का अस्तित्व विलय को प्राप्त नहीं हो सकता।

आप कह सकते हैं कि क्या आप सर्वज्ञ हो गए हैं ? मैं सर्वज्ञ तो नहीं हो गया लेकिन सर्वज्ञो की बात जरूर कहता हू। भगवान महावीर से पूछा गया कि-भगवन् ! आपका शासन कितने हजार वर्षो तक चलेगा ? उन्होने कहा कि यह शासन 21 हजार वर्षों तक चलेगा, अर्थात् मेरे साधु-श्रावक 21 हजार वर्षो तक बराबर रहेंगे। तो महावीर की भाषा क्या झूठी चली जायेगी ? क्या भगवान महावीर ने असत्य कहा ? भगवान महावीर ने कहा कि दुनिया की कोई भी ताकत इसे पूरी तरह खत्म नहीं कर सकती। आखिर इसके पीछे क्या रहस्य छिपा है ? यह क्यो नहीं खत्म होगा ? भारत के पास इतनी बडी कौनसी ताकत हैं ? जिसके कारण यह बात कही गई है कि दुनिया की सारी ताकत लग जाय तो भी भारत को खत्म नहीं कर सकती। भगवान महावीर की इस बात के पीछे कोई न कोई ताकत जरूर रही है।

भगवती सूत्र मे एक बात और आई है। जब चमरेन्द्र अपनी राजधानी चमरचचा की राजसभा में थे। उस समय उसने अपने अवधिज्ञान से सौधर्म

देव लोक के इन्द्र को अपने ऊपर बैठे देखा। देखकर वह विचार करने लगा कि यह कौन है ? अपनी मौत को निमत्रण देने वाला मेरे ऊपर कोई इन्द्र नहीं हो सकता। मैं इन्द्र से बडा हू। उसने अन्य देवी देवताओं से कहा– कि मैं इसको मारकर रहूगा, कैसे मारू ? उसने अवधिज्ञान का प्रयोग करके देखा इस समय प्रभु महावीर कहा है ? ज्ञान से जाना कि तीर्थेश प्रभु महावीर जम्बूद्वीप के सुसुमारपुर नगर के बाहर अशोक वन खण्ड के अशोक वृक्ष के नीचे एक रात्रि की महाप्रतिमा धारण कर ध्यान साधना मे निमग्न बने हुए थे, उस समय प्रभु छट्ठ–छट्ठ तप की आराधना कर रहे थे और साधना काल का यह ग्यारहवा वर्ष था। वह सीधा देवलोक से चला और भगवान महावीर के पास आया। भगवान महावीर तो ध्यान मे खडे थे उसने कहा कि हे ! देवाधि देव ! मैं आपके सान्निध्य से देवराज शक्र के पास जाता हू। इतना कहकर वह ऊपर गया देवराज शक्र के पास और अपशब्द बोलने लगा। देवराज ने सोचा कि इसमे इतनी ताकत कैसे आई, शकेन्द्र ने उसको मारने के लिए वज्र छोडा। वज्र बहुत ताकतवर था, जिसका विरोध चमरेन्द्र के पास नहीं था। चमरेन्द्र घबराया, वह घबराकर नीचे मुह करके भागने लगा। सोचा अब अगर मेरा बचाव हो सकता है तो अरिहत की शरण मे ही, ऐसा विचार कर चमरेन्द्र ने तेजी से दौड लगाई। आगे चमरेन्द्र पीछे वज्र उसको मारने के लिए दौड रहा था।

यह चमरेन्द्र ऊपर कैसे आ गया। चमरेन्द्र की तो इतनी ताकत नहीं कि वह ऊपर आ सके। जरूर इसने किसी न किसी तीर्थंकर का सान्निध्य लिया है, तभी इसके पास ताकत आई है। जब शक्रेन्द्र ने ध्यान लगाया तो मालूम हुआ कि यह तो तीर्थेश प्रभु महावीर के सान्निध्य से आया है। कहीं अनर्थ न हो जाय। आगे–आगे चमरेन्द्र और पीछे वज्र भाग रहा है और उसके पीछे देवराज इन्द्र घबराये भाग रहे हैं। वह जहा अशोक वनखण्ड था, जहा महावीर ध्यान मे खडे थे वहा चमरेन्द्र पहुचा। उसने छोटा रूप बनाया और महावीर के पैरो मे घुसकर बैठ गया और सोचा कि अब मुझे कोई नहीं मार सकता। वज्र भी चमरेन्द्र के पीछे–पीछे आ रहा था उसको मारने के लिए। शक्रेन्द्र अति तीव्र गति से दौडे। प्रभु महावीर के पैर से 4 अगुल दूर रहते–रहते वज्र को शक्रेन्द्र ने पकड लिया। इन्द्र बोले कि हे भगवन् ! मुझे यह नहीं मालूम था कि चमरेन्द्र आपकी शरण मे आया है। यदि मुझे पहले मालूम होता तो मैं वज्र नहीं छोडता। मैं आप से क्षमा चाहता हू और चमरेन्द्र को अभयदान देता हू। चमरेन्द्र बच गया। यह कहानी, कहानी नहीं है। यह विवेचना

भगवती सूत्र मे वर्णित है।

आगे बताया गया है कि महावीर के सान्निध्य से उन्हें अभय प्राप्त हो गया। उनके दर्शन किये, उनके साधनाशील जीवन से चमरेन्द्र में इतनी ताकत आ गई कि वह इन्द्र के पास पहुच गया। शास्त्रकार कहते हैं कि "आत्म शक्ति साधना की ताकत दुनिया में सबसे बड़ी सर्वश्रेष्ठ शक्ति है। केवल साधना ही एक ऐसी ताकत है जिसके सामने दुनिया की ताकत हार जाती है, साधना की ताकत विजय पाती है। सकल्पबद्ध अहिसामय पावन विचारों की ताकत जीत जाती है। जिस व्यक्ति के विचार ताकतवर हो, वह अहिसा के आभामडल से दूसरों को परास्त कर सकता है। आज के वैज्ञानिकों ने इस बात को स्वीकार कर लिया है, उन्होने ऐसे अनेक प्रयोग अपनी प्रयोग–शालाओं मे गृहीत कर लिये हैं।

शब्दो और भावों में गहरा सम्बन्ध है। जो बाहरी वस्तुओ को आश्चर्य जनक ढग से प्रभावित करता है। फ्रास की मेडम फिनलाग आश्चर्यजनक ढग से प्रभावित करती है। फ्रास की मेडम फिलेलाग के विषय में पढा गया कि उसने ऐसा एक प्रयोग किया जिसमे चाक के एक टुकड़े को बाधकर उसके साथ बिजली के दो तारों को जोड दिया। सामने काला बोर्ड लगा दिया। इसके बाद वह अपने प्रेमी का चिन्तन करती हुई कुछ गाने लगी। गाने के बाद जब उसने बोर्ड की ओर देखा तो उसे आश्चर्य हुआ कि चाक का टुकड़ा घूमा और उस बोर्ड पर उसके प्रेमी का रेखाचित्र बन गया। उसके बाद तो फिलेलाग ने अनेक प्रयोग किये। पेरिस में एक महाविद्यालय मे इसी ढग से एक छात्र से भैरवाष्टक गवाया तो देखा भैंरू जी की मूर्ति बोर्ड पर बन गई। शब्दो का भावो के साथ गहरा सम्बन्ध दुनिया के सामने प्रमाणित हो गया।

यही नहीं मन का प्रभाव तो अचिन्त्य है। जैन दर्शन मे तो कहा गया है –" मन एवमनुष्याणा कारण बध मोक्षयो' मन ही मनुष्यों के लिए बंध मोक्ष का कारण है। लोगों की भले ऐसी सोच रही है कि मन मे कुछ भी सोचे किसी को मालूम नहीं चलता, पर अब साइस इसे भी पकडने लगती है। मन की बहुत बडी ताकत स्वीकार की गई है। यूरोप के चेकोस्लोवाकिया देश की राजधानी प्राह में बेतिस्लाव काफ्का नाम के व्यक्ति ने अपने मन और दृष्टि को एकाग्र करके यूरोप के सैकडों वैज्ञानिको के सामने यह प्रयोग कर दिखाया कि वृक्ष पर बैठे सैकडो पक्षी उसकी दृष्टि के सामने आकर धड़ाधड नीचे गिर गए खतम हो गए। वैज्ञानिकों को मानना पड़ा कि बेतिस्लाव की प्राण ऊर्जा ने पक्षियों की प्राण ऊर्जा खींचकर नीचे गिरा दिया।

मन से प्राण ऊर्जा खींचने का यह आश्चर्यजनक प्रयोग सामने आया।

अरब कट्री में एक व्यक्ति हुआ है, यूरीगेलर जिसने अपने मन को एकाग्र करके घडी की सुई घुमादी चम्मच तोड दिया। बिना किसी हाथ लगाए जड मूर्ति को अपने कधे पर बिठा दिया। यह सब घटनाए मन की शक्ति को प्रमाणित करती है। अब वह समय भी दूर नहीं कि जब एटमबम के बाद लोग मन से युद्ध करने लगेंगे। मन से ही सोचकर सामने वाले शत्रु को मार दिया जाएगा। अब सोचने वाली बात यह है कि जिस मन से इतने सहारक हिसक प्रयोग हो सकते हैं तो क्या उसी मन से रक्षक के रूप में अहिसक प्रयोग नहीं हो सकते ? शक्ति तो वही है उसे दोनों रूपो मे काम ली जा सकती। यदि मन और वचन से अहिसा की रक्षा की सोच और आवाज पैदा की जाय तो रक्षा का बहुत बडा काम हो सकता है, बल्कि हो रहा है।

इस देश मे जितने त्यागी, योगी, महायोगी आत्माए हैं जो पूरी तरह अहिंसा का पालन करती है, उतनी विश्व के किसी भी देश में नहीं है। जितने प्रभु की प्रार्थना करने वाले इस देश मे हैं शायद और किसी देश मे नहीं। जितने शाकाहारी लोग इस देश में, उतने किसी देश मे नहीं। जरा सोचिये करोडो लोग जब प्रभु की भक्ति के साथ विशुद्ध मन से सभी जीवों की रक्षा की कामना करते हैं तो उनके मन एव वचन से निकलने वाली रक्षात्मक तरगें इस पूरे देश की रक्षा करने वाली नहीं होगी ? अवश्य होगी। भारत का यह एक ऐसा सशक्त आमामडल होगा जो विश्व की सगठित विनाशक शक्ति का प्रतिरोधक करने मे भी समर्थ हो जाएगा। जिस दिन मन से युद्ध होने लगेगा। उस दिन मन से रक्षात्मक भाव होने से विश्व युद्ध होने पर भी भारत कभी भी सपूर्णत खतम नहीं होगा।

यद्यपि भारत का यह अहिसक आमामडल पूरे विश्व मे सचार करता है। पर वहा इसे केच करने वाले अहिसक व्यक्ति नहीं होने से वहा इतना प्रभावी नहीं बनता। जिस प्रकार लन्दन से ब्रॉडकास्टिग की तरगें यहा पर भी आती पर यदि हमारा रेडियो ऑन नहीं हो तो वह तरगे, हमारे काम की नहीं रहती। इसी प्रकार अहिसक तरगें विदेशो में भी जाती है, पर उन मासाहारियों का भावात्मक रेडियो ऑन न होने से वह प्रभावी नहीं बन पाती। जबकि भारत मे तो अहिसा त्याग की तरगें चौबीसों घटे प्रोडक्ट निर्मित हो रही है। जो निश्चय ही इस देश की रक्षा करने का सामर्थ्य रखती है।

जैन साधु तो पूर्ण रूप से अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह के सिद्धान्तों के साथ चलने वाला होता है। ऐसे साधु का तो पूरे

विश्व मे कोई विकल्प नहीं मिलेगा। ऐसे लोगो के अहिसक आभामडल से देश की रक्षा अवश्य होगी। आपने सुना होगा कि जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति मे एक बात आती है कि लवण समुद्र मे ज्वारा भाटा आता है, उसका पानी इस जम्बूद्वीप मे आ जाय तो इस जम्बूद्वीप मे प्रलय मच सकता है। वह क्यो नहीं आता, यह बात भगवान से गौतम स्वामी ने पूछी। भगवान ने कहा कि – इस जम्बूद्वीप मे बहुत से साधु–साध्वी, श्रावक–श्राविकाए हैं, अहिसादि पचशील गुणो की साधना, पालन कर रहे हैं। धर्म का शुद्ध आचरण कर रहे हैं। उनके धर्ममय जीवन और आचरण का प्रभाव ही इस पानी को रोक रहा है। इसलिए इतनी ताकत रखने वाले साधु–साध्वी, श्रावक–श्राविकाए भारत देश मे भी विद्यमान हैं और रहेगे। तब यह कैसे खत्म हो सकता है। प्रश्न हो सकता है फिर देश मे टुकडे–टुकडे मे युद्ध हो रहा है उन युद्धो का कारण क्या है ? उनका कारण यह है कि हमारे अन्दर धार्मिक भावना की कमी आ रही है, हमारे अन्दर अहिसा की वृत्ति गौण बन रही है, सत्य की कमी आ रही है, त्याग भावना की कमी आ रही है। आज देश मे हिसा फैल रही है, स्वार्थ फैलता जा रहा है, जिससे भयकर विनाश की स्थिति पैदा हो रही है, इस बात को समझना होगा कि हम अधिक से अधिक ध्यान करे, हम पर्युषण पर्व के अवसर पर तप करे, इस पर्व पर यह बात स्पष्ट कही जाती है कि हम अधिक से अधिक धर्म ध्यान करे, इतनी अधिक तप की साधना करे, समता की साधना करे जिससे वह आभामण्डल मजबूत हो जाय, जिसे कोई भी नहीं तोड़ सके। आपने सुना होगा कि द्वारका नगरी 9 योजन चौड़ी और 12 योजन लम्बी थी, अर्थात् 36 कोस चौडी और 48 कोस लम्बी द्वारका नगरी थी, एक योजन चार कोस का कहा गया है।

इतनी बडी द्वारिका नगरी के लिए भगवान ने भी कृष्ण को कहा कि हे कृष्ण ! जब तक इस द्वारका नगरी मे एक भी व्यक्ति आयम्बिल करता रहेगा उस नगरी को देवता की ताकत भी नहीं जला सकेगी और यह हुआ भी। जब तक द्वारका नगरी मे एक भी आयम्बिल चलता रहा देवता की भी ताकत नही रही कि वह उस द्वारिका नगरी को जला सके। लेकिन बहुत दिनो के बाद महीनो के बाद लोगों ने सोचा कि अब देवता कुछ नहीं कर सकते हैं। उन्होने सोचा वह आयम्बिल कर लिये। ऐसा भरोसा जहा होता है वहा दोष ही होता है। इस चक्कर मे एक दिन ऐसा आया जब पूरी द्वारिका नगरी मे एक भी व्यक्ति ने आयम्बिल नहीं किया और देव ने उस नगरी को जलाकर भस्म कर दिया, तो जब एक आयबिल पूरे नगर मे चलता रहा तब तक देव

की शक्ति नाकामयाब होती रही, विफल बनती रही और नगर की रक्षा होती रही।

मैं पूछता हू आपके परिवार में एक आयबिल होता रहे तो क्या आपके परिवार को आप अनिष्ट आक्रमणो से नहीं बचा सकते ? हा, आप जरूर बचा सकते हैं। मेरी माताए कहती हैं, मेरा बेटा गया है विदेश में, सुरक्षित है कि नहीं ? ट्रेन में आ रहा है, कहीं ट्रेन का एक्सीडैण्ट तो नहीं हो गया ? प्लेन में आ रहा है कही प्लेन नीचे तो नहीं गिर जाएगी ? पता नहीं क्या-क्या सोचते रहते हैं। उसके लिए देवी-देवताओ को मनाते हैं। भैरू भवानियो को ध्याते रहते हैं। पता नहीं क्या-क्या मानताए करते रहते हैं। जब एक आयबिल से पूरे नगर की रक्षा हो जाती है, देवता भी नहीं मार सकते तो क्या आपके छोटे से परिवार की रक्षा नहीं हो सकती ? जरूर हो सकती है। लेकिन हमारे मन में श्रद्धा होनी चाहिए हमारे मन मे सकल्प होना चाहिए। हमारे अन्दर दृढ विश्वास की भावना होनी चाहिए। तब जाकर हमारी रक्षा हो सकती है। पर न हम आयम्बिल करना चाहते हैं, न तप करना चाहते हैं। ऐसे लोग वास्तव मे तपस्या का महत्त्व नहीं जानते।

सारी दुनिया एक तरफ और तपस्या एक तरफ। तपस्या मे इतनी ताकत होती है कि वह पूरी दुनिया को हिला दे, स्वर्गलोक के इन्द्र के आसन को कपायमान कर दे। तप करना कोई सहज नहीं है, एक टाईम भूखे रहने पर भी व्यक्ति घबराता है। मुह मे लार टपकने लगती है। सवत्सरी आने से पहले ही भूख लगने लग जाती है। लोग कहते हैं, महाराज ! जिस दिन भी सवत्सरी मनाते हैं, जिस समय उपवास का नियम लेते हैं, उसी समय बल्कि उससे पहले ही भूख लगने लगती है।

कई लोग कहते हैं कि वैसे तो 9 बजे से पहले नाश्ता नहीं करते हैं, चाय नहीं पीते हैं। लेकिन उपवास यदि कर लिया तो 6 बजे ही भूख लग जाती है, माथा दुखने लगता है। यह साइकोलॉजिक इफैक्ट है। इसलिए आप तप से इस पर विजय प्राप्त कर सकते हैं। बहुत मुश्किल साधना है, पर जिस व्यक्ति ने तपस्या के बल पर शरीर पर, मन पर विजय प्राप्त कर ली, वह परमात्मा के निकट होता चला जाता है। इसलिए जैनी भारत की रक्षा मे सबसे ज्यादा उत्तरदायित्व का निर्वहन करते हैं क्योकि इतनी बड़ी अहिसा की शक्ति, तपश्चर्या किसी भी धर्म में नहीं मिलेगी, जितनी इस जैन धर्म में है।

अगर देश की रक्षा करनी है, देश को विश्व युद्ध से बचाना है, विनाश से बचाना है, अधिक से अधिक धर्म साधना लानी है तो छोटे-छोटे तप बहुत

बडी स्थिति पैदा करते हैं, व्यापक स्तर पर पैदा करते हैं।

एक बार आयुर्वेद के आचार्य के सामने एक बात आई उसने कहा– कि एक रुपये की दवा ऐसी हो जो कि पूरे विश्व मे स्वास्थ्य का सरक्षण करे, शाति फैल जाय। आयुर्वेद के आचार्य ने महायोगराज गुगर मगायी। उसको जलाया, जलने से उसके परमाणु वायुमडल में फैलना शुरू हुए उसकी गध फैलने लगी। आचार्य ने कहा– कि यह हवा जहा–जहा भी जाएगी वहा–वहा स्वास्थ्य का सचार करेगी। एक रुपये की महा योगराज गुगर का प्रभाव वायुमडल मे सर्वत्र फैल गई। मैं अकेला आयबिल करू, अकेला तेला करू तो दुनिया का कल्याण होगा ? नहीं। इसलिए मैं क्यों करू ? ऐसा मत सोचिये। अकेले आप पैसा कमाते हैं दुनिया नहीं कमाती है, तो क्यों सोचते हैं, कि मैं अकेला क्यों कमाऊ, किसलिए कमाऊ, लोग तो भूखे मर रहे हैं ? अकेले समता फैलाएगे, अकेले तपस्या करेगे तो आपका उद्धार होगा सो होगा, लेकिन उसकी तरगे जो वायुमण्डल मे प्रसारित होगी व जहा–जहा भी फैलेगी वहा–वहा शाति फैलेगी, वहा–वहा अहिसा फैलेगी, वहा–वहा सयम फैलेगा। जितनी आप प्रभु की भक्ति करेगे साथ ही उसकी शब्दो में अभिव्यक्ति करेगे उतना असर उसका अधिक फैलेगा।

मैंने सुना है एक बार दो हजार सैनिक एक पुल के ऊपर जा रहे थे। आप जानते हैं सैनिको को। सैनिको का कदम एक साथ उठता एक साथ पड़ता है। ऐसा नहीं होता है कि एक पैर कभी उठ रहा और दूसरा पैर कभी। सैनिक एक साथ पैर उठाते हैं। एक साथ पैर नीचे रखते हैं। हुआ क्या ? दो हजार सैनिक चल रहे थे पुल के ऊपर। पदचाप की आवाज आ रही थी। उस आवाज से पुल टूट गया। इजीनियरो को कहा, पुल कैसे टूट गया। जिस पुल के ऊपर से हजारों टन की ट्रके माल लेकर गुजर जाती है, उससे वह पुल नहीं टूटा, किन्तु सैनिकों की पदचाप की आवाज से टूट गया। तब इजीनियरो ने कहा कि ध्वनि तरगे इतनी ताकतवर हो गई कि शक्तिशाली पुल उस पदचाप की ध्वनि को बर्दाश्त न कर ध्वस्त हो गया।

वैज्ञानिकों ने इस बात को एक स्वर से एक मत से मान लिया कि जब आवाज से ब्रिज (पुल) टूट सकता है, महाविनाश हो सकता है, तो क्या आवाज से महाविनाश रुक नहीं सकता ? यदि महाविनाश हो सकता है, तो रुक भी सकता है। अगर हमारी अहिसा की आवाज बुलन्द हो, समता का आचरण प्रवल हो, हमारी क्षमा सबल हो मैत्री की भावना सक्रिय हो, हमारी सहिष्णुता की क्षमता तेज हो, समन्वय की दृष्टि विकसित हो, तो हम

महाविनाश को भी रोक सकते हैं, भयकर से भयकर युद्ध को टाल सकते हैं। लेकिन आज हम अपनी रक्षा करने के लिए दूसरो को मार रहे हैं। मारते समय हम यह क्यों भूल जाते हैं, दूसरा भी आपको मारेगा। एक दूसरा एक दूसरे को मारने मे लगा है। हम अपने आप ही टकरा–टकरा कर खत्म हो रहे हैं। "सुन्दोपसुन्द" का न्याय हमारे ऊपर लागू हो रहा है। तिलोत्तमा तो खडी ही रह गई। सब कुछ यहीं रहेगा, दौलत भी यही पडी रहेगी, जमीन जायदाद भी यही रह जायेगी कोई किसी भी इसान के साथ जाने वाली नहीं है। लेकिन इसान खुद इन वस्तुओं पदार्थों के लिए लड़कर अपनी ताकत को खत्म कर रहा है। आप पर्युषण पर्व के इन दिनो में तो विशेष रूप से अपनी आत्मा को ध्याने का प्रयास करेंगे। जीवन में राग और द्वेष की भावना काम करती रहती है, छोटी–छोटी बातों में लडाई हो जाती है। मूछे तनने लगती है, इसने ऐसा कैसे कह दिया। यह नीचा है, मैं ऊचा हू, आदि–आदि। क्या गौतम स्वामी से ऊचा कोई इतनी बड़ी दुनिया में है अभी ? गौतम स्वामी को भगवान महावीर ने कहा–आनन्द श्रावक सही है। उसने जो बात कही वह सत्य कही है। उसको जो अवधिज्ञान प्राप्त हुआ है, वह सही प्राप्त हुआ है। आनन्द श्रावक सच्चा है, तुम गलती पर हो, जाओ माफी मागकर आओ। गौतम गये, उसी वक्त गये। आनन्द के पास पहुचे और माफी मागी कहा कि आपने जो कहा जैसा कहा वह बिल्कुल सत्य है। मैं गलती पर था। इसी सरलता सहजता निरभिमानता आदि सद्गुणों के कारण उनको आगे जाकर केवल्यज्ञान हुआ। उस समय गौतम कह देते कि मैं क्यों जाऊ, मैं नहीं जाऊगा। नहीं जाते तो उन्हे केवल्यज्ञान प्राप्त नहीं होता। क्योकि वह वृत्ति उनकी सबलशाली बन जाती। ग्रन्थि मजबूत हो जाती। फिर वह ग्रन्थि जब तक नहीं खुलती तब तक केवलज्ञान होता ही नहीं। लेकिन गौतम स्वामी उसी वक्त गये और आनन्द श्रावक से क्षमा मागी। है हमारे में इतनी ताकत ?

अगर नौकर ने गलती कर दी तो हम उससे लड पडेंगे और यदि हमारी गलती हो गई तो हम नौकर से कभी माफी नहीं मागेंगे। हमारी भावना पता नही किस–किस रूप मे क्या–क्या कार्य कर रही है, ऐसी स्थिति मे हमें कैसे होगा केवल ज्ञान ? कैसे हम समताभाव में रत रह सकेगे ? कैसे यह विश्व युद्ध टले ? विश्व युद्ध टले या न टले लेकिन हमारा स्वय का तो उद्धार होना चाहिये। आप ऐसा वातावरण बनाये अपने परिवार का जिससे परिवार में वाक्‌युद्ध व वैर विरोध की भावना न जन्मे। मान लो युद्ध न टाल सके, देश की लडाई न टाल सकें परन्तु परिवार की लडाई तो टाल सकते हैं। इसके

लिए आप आयबिल के तप को अपनाए, तेले के अन्दर आये। इससे हमारे परिवार का झगडा टल सकता है। पारिवारिक झगडे से जो प्रदूषण पैदा हो रहा है जो दूसरे परिवारो को अप्रत्यक्ष रूप से खराब कर रहा है वे उससे बच जायेगे। जो घातक प्रदूषण जन–जन के विचारो का हो रहा है; उससे देश के अन्दर खतरनाक स्थिति पैदा हो रही है। उस हानि से देश को बचाने की ताकत है, आप सब मे भी। उस ताकत से आप भी दूसरो को बचा सकते हैं।

ऐसे साधु आज भी हैं, जिनके सत्य, अहिसा, त्याग, तप के प्रभाव से भारत देश का सरक्षण हो रहा है। यह मत समझ लेना आप कि वे उस समय थे और इस समय नहीं है तो महावीर की भाषा झूठी हो जाय। लेकिन महावीर ने यह कहा–साधु इस समय है वैसे ही साधु 21 हजार वर्ष तक न्यूनाधिक रूप मे रहेगे और वैसे साधु आज नही है तो क्या आज धर्म शासन नहीं चल रहा है ? आज भी चल रहा है। क्योंकि जैसे आचारवान, शीलवान प्रधान साधु भगवान महावीर के समय थे, उस प्रकार के साधु 21 हजार वर्ष तक चलेंगे। वे अपनी ताकत का प्रयोग तभी करते हैं जब कोई महाविनाश की स्थिति पैदा हो रही हो। अत यह कहा जा सकता है कि भारत को कभी सम्पूर्ण रूप से समाप्त करने की, खत्म करने की ताकत किसी मे नहीं है। इसलिए हम इस शक्ति को अधिक से अधिक जोडने की कोशिश करे, अधिक से अधिक इस तरह की भावना को जगाने की कोशिश करे, जिससे विश्व की समस्याओं को टाला जा सके।

कम से कम अब जन–जन, इस भगवान महावीर का व्यवहार प्रधान पहला सूत्र तो अपना ले जो "जीओ और जीने दो" के रूप मे है। लेकिन आज आप जिस दुनिया में जी रहे हैं, उसमे दूसरों को जीने देना है या नहीं ? अगर आपकी दुकान के पास मे अन्य कोई दुकानदार बैठा है, उसकी कमाई ज्यादा हो रही है तो आप क्या चाहेंगे। क्या उसके लिए सोचने लगेगे कैसे भी इसके ऊपर इनकम टेक्स का छापा आ जाय, कैसे भी उसको खराब किया जाय, यह भावना तो आपके मन मस्तिष्क मे पैदा नही हो रही है। आपके पडोस मे कोई व्यक्ति बैठा है उसके घर मे शाति है और अपने घर मे अशाति है तो आप क्या करते हैं, उसका घर नर्क जैसा कैसे बने ? कहा तक है, अपने अन्दर "जीओ और जीने दो" की भावना ? इसको समझिये आप। आप भी जीओ और दूसरो को भी जीने का अधिकार दो। आप गुणी हे या नहीं, दूसरा गुणी है तो उसकी प्रशसा आप नहीं करेंगे, जल्दी से आदमी दूसरे के दुर्गुण निकालेगा और दुनिया को कहेगा कि तुम तो कहते हो वह आदमी इतना

बढिया है, लेकिन उसे पहचान पाना बहुत कठिन है। अच्छे–अच्छे उसे पहचानने मे धोखा खा जाते हैं। मैं उसकी नश–नश को जानता हू, उसके पूरे के पूरे खानदान को जानता हू कि वह कैसा है ? इस तरह वह हर प्रकार से उसके विषय में, उसके चरित्र पर लाछन लगाने का प्रयास करेगा। शकास्पद स्थिति निर्मित करना चाहेगा वह भी इतनी सज्जनता के साथ कि उसके जीवन के प्रति भ्रामक वातावरण बन सके, न जाने कैसे–कैसे विचार उसके लिए प्रकट कर बैठेगा जिसकी कोई प्रामाणिकता भी न हो। न ही उसका कोई अस्तित्व हो, इस ढग का अनर्गल भ्रामक वातावरण बनता है और कहता रहता है कि वह तो इतना लचर है यानी उसके गुणों को आप जल्दी से कभी नही देखेंगे। बहुत कम इसान ऐसे हैं जो किसी के गुण देखेंगे, सुनेगे अगर वह आदमी मेरा नहीं है और उसके गुण मेरे सामने गिनाये जा रहे हैं तो मैं कहूगा कि वह आदमी खराब है। यदि वह मेरा आदमी है तो बदमाश है तो भी अच्छा है, दुर्गुणी है तो भी सद्‌गुणी है। मेरा आदमी नहीं है तो वह खराब है चाहे वह सौ टच सोने की तरह खरा भी क्यो न हो ? क्या इसे कहते हैं साधना ? सत्य मे भी जो मेरा हे वह सच्चा है, मेरी बात सच्ची है, दुनिया की बात झूठी है यह तो आज का ज्यादातर मानस है। यह बात हमारे दिमाग मे घर की हुई है। यह पर्युषण की धारणा नहीं है। मेरा है वह ही सत्य नहीं है, जो सत्य है वह मेरा है, यह भावना हमारे मे आनी चाहिए, सत्य को ग्रहण करने की सहज सरल वृत्ति जीवन मे आनी चाहिए। हमारे मे सत्य को ग्रहण करने की क्षमता नहीं, पात्रता नहीं तो हम सत्य को कैसे ग्रहण करेगे ? तो फिर कैसे इतनी साधना, तपस्या हम कर सकते हैं। तुम कहते हो कि हमने इतनी साधना कर ली, इतने आयबिल कर लिये क्या साधना कर ली ? क्या भूखे रहने से आयबिल हो गया। हमारे मन मे तो दूसरो को मारने की, खत्म करने की, गिराने की भावना है। शरीर को भूखा रखने से साधना नहीं सध सकती है, मन मे भी आयबिल करना होगा, मानसिक वृत्तियों को शुद्ध करना होगा, लोभ का आयबिल करना होगा, अहकार का आयबिल करना होगा, क्रोध का आयबिल करना होगा, अहकार और मोह का आयबिल करना होगा तब कहीं जाकर हमारे अन्दर शाति आयेगी, जीवन मे सद्‌गुण पनपेंगे।

आज का विषय आपके सामने रखा गया कि क्या विश्व युद्ध में भारत का विनाश होगा ? चाहे कितने भी विश्व युद्ध हो जाय, कितनी ताकत लग जाय तो भी सम्पूर्ण रूप से भारत का विनाश कभी नहीं होगा। 21 हजार वर्ष की स्थिति का यह आरा है इस आरे की समाप्ति तक कुछ नहीं होगा। लेकिन

ध्यान से सुनिये जब तक इस भरत क्षेत्र के अन्दर एक साधु, एक साध्वी, एक श्रावक और एक श्राविका भी नहीं रहेगी उस दिन भरत क्षेत्र को विनाश होने से कोई भी ताकत नहीं रोक सकेगी। फिर प्राकृतिक प्रकोप का प्रभुत्व बढता चला जायेगा और यह सब कुछ खत्म हो जायेगा। फिर क्या होगा ? यही कि यहा पर कोई साधु–साध्वी, श्रावक–श्राविका नहीं रहेंगे इस क्षेत्र की दृष्टि से धर्म विलोप हो जायेगा, धर्म समाप्त हो जायेगा, धर्म का एक अश भी नहीं रहेगा उस दिन इस भरत क्षेत्र को खत्म होने से कोई नहीं रोक सकेगा, सब कुछ खत्म हो जायेगा। बहुत मामूली–मामूली आदमी रह जायेंगे।

अब आप सोचिये धर्म का, समता का, अहिसा का कितना प्रभाव है। इस प्रभाव को आज के वैज्ञानिकों ने, मनोवैज्ञानिकों ने मान लिया है कि समता होगी, अहिसा होगी तो हम दुनिया की रक्षा कर सकते हैं। भारत अग्रेजो के शिकजे से कैसे स्वतन्त्र बना, मुक्त बना–अहिंसा से। महात्मा–गाधी ने क्या किया, अहिसा को इस पूरे देश में बढाया और ब्रिटीश सरकार को इस देश से भगा दिया। इतनी बडी ताकत हमारे पास है, फिर भी हम पीछे हट रहे हैं ? क्यो नहीं हमारे मे धर्म का जोश आता, क्यो नही हमारे अन्दर समता आती, ईर्ष्या की भावना क्यों नहीं छोड रहे हैं ? स्वार्थ का जो बीज युगलिक काल के अन्त समय वपित हुआ, आज वह महा वटवृक्ष बन चुका है। उस वटवृक्ष के बीज को सम्पूर्णत नष्ट करने के लिए हम अपनी भावना और विचारो को नि स्पृह शुद्ध बनाने की कोशिश करे। जब हमारी भावना नि स्पृह बनेगी तब कहीं जाकर वह बीज निकलेगा। आप कम से कम वह बीज अपने भीतर से तो निकालें। जिस व्यक्ति के भीतर से वह बीज निकलेगा वह व्यक्ति सुखी हो जायेगा।

एक कैदखाने के अन्दर हजार व्यक्ति बद हैं, हजार व्यक्ति दुखी हैं लेकिन एक व्यक्ति को उस कैद से बाहर निकाल दिया तो कम से कम वह तो सुखी हो गया। वैसे ही ससार की समस्त आत्माओ के अन्दर स्वार्थ बैठा है, सभी स्वार्थ के कैद खाने के अन्दर बद हैं लेकिन जिस व्यक्ति ने स्वार्थ के कैदखाने से अपने आप को निकाल लिया वह सुखी हो गया, अपन सभी को उस सुख को पाने के लिए स्वार्थ के कैदखाने से बाहर निकलना होगा। स्वय जीओ और दूसरो को भी जीने का अधिकार दो, यह पहली स्टेज है। जो इससे आगे बढना चाहते है वह यह समझ लें कि मैं भी जीऊ और जिनके पास जीने के अधिकार नहीं है उसे हम अपने अधिकार में से जीने का हक दें। यह दूसरी स्टेज है। पहली स्टेज है जीओ औरे जीने दो और दूसरी स्टेज

है– तुम भी जीओ और जो जी रहें हैं उन व्यक्तियों के पास जीने के अधिकार नही हैं और आपके पास ज्यादा हैं, तो आप उन्हे अधिकार दीजिए। जो आपको देता है आप भी उसको दीजिए। यह दूसरी स्टेज है और तीसरी स्टेज यह है कि जो आपको जीने का अधिकार नहीं देता हैं लेकिन आपके पास जीने के अधिकार बहुत ज्यादा हैं तो आप अधिकार नहीं देने वाले को भी आप अपने अधिकार मे से जीने का अधिकार दीजिए। यह तीसरी स्टेज है, और चौथी स्टेज यह है कि आप दूसरों को जीने के लिए, दूसरों को जीवन दान देने के लिए आप अपनी जिदगी का भी बलिदान दे दीजिए, अपनी जिन्दगी को भी कुर्बान कर दीजिए। इस चौथी स्टेज पर जो चला जाता है वह आदमी परमात्मा के निकट आने लगता है, वह आदमी आगे बढने लग जाता है। पर ऐसे आदमी दुनिया में बहुत कम हैं जो दूसरो को जीने के लिए अपने अधिकार दे सकते हैं।

एक बार मोरवी शहर मे वर्षा के कारण अत्यधिक पानी आ गया था। बाध भी पूरा भर गया था, और पूरे गाव में पानी ही पानी हो गया था। उसके कुछ समय बाद जब हम वहा पहुचे तो एक श्रावक ने मुझे बताया कि आज से 7–8 महीने पहले यह बाध टूट गया, पूरा गाव पानी में था और हजारो आदमी बेघर हो गए थे। उस समय एक आदमी अपने मकान में बैठा था, वह आदमी देख रहा था कि पानी के अन्दर अनेक लोग बह रहे हैं। अनेक औरते बच्चे बहे जा रहे हैं, कुछ मरे हुए जा रहे हैं लेकिन कुछ जिन्दे भी जा रहे हैं। उसके मकान की भी एक मजिल पानी मे थी, उसने क्या किया ? अपने मकान के झरोखे से एक डोरी बाधी और उस डोरी को अपनी पीठ से बाध लिया। उस पानी के बहाव में जो बच्चे, औरते जिन्दा बहे जा रहे थे। उनको बचाने के लिए वह पानी मे कूद गया। वह कूदकर उन बहने वालों को पकड लेता और उस रस्सी के सहारे अपने मकान मे आ जाता। इस प्रकार उसने एक दो नहीं बल्कि कई व्यक्तियों की जिन्दगी बचा ली। अनेक व्यक्तियो को पकडकर अपने घर में ले आया। लेकिन वह एक बार पानी में कूदा और कूदने के बाद एक व्यक्ति को अपने घर मे लाने की कोशिश कर रहा था कि खींचा–खाची के अन्दर रस्सी का फदा टूट गया और दोनों ही डूब गए। उस व्यक्ति का आज तक पता नहीं। जिस व्यकित्त ने दूसरों की जिन्दगी की रक्षा के लिए अपनी जिदगी कुर्बान कर दी ऐसे व्यक्ति कम हैं, हमारे अन्दर दूसरो को बचाने की ताकत होनी चाहिए। जयपुर में भी एक जैनी थे जिन्होंने दूसरो के लिए अपना सर्वस्व त्याग दिया। जयपुर के प्रधान

जिन्होने जयपुर को बचाने के लिए अपनी कुर्बान दी थी। वैसी ही भावना हमारे मे भी पैदा होनी चाहिए हम सबके अन्दर ऐसी भावना आएगी तो ही यह पर्व मनाना सार्थक हो सकता है। इसलिए मैंने भाई और बहनों से कहा है हम अधिक से अधिक तप और सयम की आराधना करके अपने जीवन को सफल एव सार्थक करते हुए देश की रक्षा के अन्दर भी यथायोग्य अपना सहयोग प्रदान करे। इस भावना के साथ में अपने विषय को यहीं विराम दे रहा हू। अस्तु



7

संवत्सरी कैसे मनाएं

प्रज्ञाशील उपासको ! ध्यान केन्द्रित करिये, आज आपको यहा से कुछ न कुछ ग्रहण करके जाना है। इसलिए आप अपने विचारो को एकाग्र बनाइये, कानो को सजग करिये कि हमे आज कुछ न कुछ सुनना है, कुछ न कुछ समझना है, कुछ न कुछ सीखना है और यथा शक्ति जीवन को कुछ न कुछ बदलने का प्रयास करना है। इसके लिए मानस को सतर्क एव सावधान करना आवश्यक है।

श्रमण भगवान महावीर स्वामी ने साधु जीवन स्वीकार करने के बाद चातुर्मास के 50 वे दिन इस सवत्सरी पर्व को मनाया था, और 70 दिन अवशेष रहे थे। भगवान महावीर ने चतुर्विध सघ को भी इस बात का निर्देश दिया है। वह निर्देश समवायाग सूत्र मे यथावत उल्लिखित है कि "रमणे भगव महावीरे सवीसराइ मासे वइक्कते, सत्तरिएहि राइदिएहि सेसेहि वासावास पज्जोसेवेई।"

चतुर्विध सघ चातुर्मास प्रारम से 50वे दिन सवत्सरी महापर्व की आराधना करे, उसे मनावे और बाद मे सत्तर दिन चातुर्मास के अवशेष रहने चाहिए। मगर आज के ज्योतिष विज्ञान ने इस परम्परा को, इस व्यवस्था को विश्रृखलित कर दिया है। क्योकि जब 4 महिने की जगह 5 महिने का चातुर्मास आता है, उस समय व्यवस्था बिगडने लगती है। यदि भादवा सुदी पचमी को सवत्सरी मनाने के आग्रह किया जाय तो, जब सावन दो होंगे तो वह सवत्सरी पचासवे दिन न होकर 80वे दिन आएगी और जब आसोज दो हो तो भादवा सुदी पचमी को सवत्सरी मनाने पर पीछे 70 दिन की जगह सौ दिन बच जाऐगे। ऐसी स्थिति में कभी पहला नियम टूटेगा, तो कभी

दूसरा। इस प्रकार जब नियम भग होते देखा, तब मूर्धन्य मुनिराजों ने दो में से एक नियम तो सुरक्षित रह सके। इस दृष्टि से विचार किया कि चाहे कोई भी महीना घटे, बढे पर सवत्सरी 50वे दिन ही मनाने का निर्णय लिया, जिससे एक नियम सदा सुरक्षित रह सके।

उदय अस्त तिथि के कारण भी कभी–कभी सवत्सरी एक दिन आगे पीछे हो जाती है। किसी का यह मानना है कि सूर्योदय के समय जो तिथि हो उस उदय तिथि को मानकर सवत्सरी मनाई जाय, भले शाम को प्रतिक्रमण के समय छट्ठ आ जाय और कईयो का मानना यह है कि उदय तिथि महत्त्वपूर्ण न होकर अस्त तिथि महत्त्वपूर्ण है। सूर्यास्त के समय अगर पचमी आ जाती है तो सूर्योदय के समय चाहे चौथ रही हो यदि सूर्यास्त के समय पचमी आ रही है, तो उसी दिन सवत्सरी मनाई जाय। क्योकि सवत्सरी का प्रतिक्रमण ही सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण होता है। अत सूर्योदय के समय अगर चौथ हो, शाम को पचमी लग जाय तो सवत्सरी उसी दिन मनाना उपयुक्त है। साधुमार्गी परम्परा की यही धारणा है। चाहे सावन दो हो, चाहे भादवा दो हो, चाहे आसोज दो हो। कोई भी महिना दो क्यो नहीं हो, हमे सवत्सरी 50वे दिन मना लेनी चाहिए। लेकिन अलग–अलग समाज के, सम्प्रदाय के, सघ मान्य मूर्धन्य सतों एव श्रावक–श्राविकाओं के द्वारा सवत्सरी चौथ को मनाई जाती है, तो कोई पाचम को मनाता है। इस स्थिति के कारण जैन समाज की बहुत बडी हसी होती है। लोग कहते हैं इतना बड़ा जैन समाज अपने आत्माराधना जीवन साधना के महत्त्वपूर्ण पर्व को भी एक दिन नहीं मना पा रहा है ?

जैन समाज को सवत्सरी के नाम से तो कम से कम एक हो जाना चाहिए। इस बात को ध्यान मे रखते हुए भोपालगढ के अन्दर स्वर्गीय इतिहासविद् परम श्रद्धेय आचार्य श्री हस्तीमल जी महाराज और वर्तमान में विराजित समता विभूति आचार्य श्री नानालाल जी महाराज, जो कि जैन समाज मे ख्याति प्राप्त हैं। इन दो विद्वान साधनाशील, ज्ञानशील आचार्यो ने मिल कर यह निर्णय लिया कि, अगर सम्पूर्ण जैन समाज सवत्सरी को एक करना चाहता है और समाज की एकता के लिए अगर एक दिन सवत्सरी मनाना चाहता है तो हम दोनो आचार्य तैयार हैं। जो तिथि हमे बताई जायेगी, चाहे वह तिथि हमारी परम्परा की नहीं रही हो, पाचम की जगह आठम भी क्यों न आ जाय ? कोई भी तिथि क्यों न हो, उस तिथि को सवत्सरी मना लेंगे। ऐसी आम सभा में घोषणा की और उस घोषणा के अनुरूप आचार्य

प्रवर ने अपनी–अपनी परम्परा की तिथि समाज की एकता के लिए गौण कर के बता भी दिया। पूरा जैन समाज आचार्य श्री की इस बात को समझे और समझकर अपनी–अपनी अतिथियो को गौण कर सवत्सरी के लिए कोई नई तिथि निकाल दे तो यह जैन समाज की बहुत बडी उपलब्धि हो सकती है। लेकिन आज हम सवत्सरी के नाम से एक नहीं हो पा रहे हैं तो हमारा क्षमापना पर्व मनाना कैसे सार्थक हो सकता है ? इसलिए हमें सबसे पहले यह बात समझना चाहिए कि सवत्सरी को एक दिन मनाने में गडबडी कहा हो रही है ? और क्यों गडबडी हो रही है ? अगर हम अपनी–अपनी तिथियों को गौण कर दे और जैन समाज की एकता के लिए हम किसी नई तिथि को मान लें तो हमारी सवत्सरी एक हो सकती है। इसके लिए हमें अपने मन और मस्तिष्क को एक रखना है। ताकि सवत्सरी की एकता में आने वाली बाधाए और दोष दूर हो सकें। पहली बात मैंने आपको सिद्धात की समझा दी है।

अब दूसरी बात जो है वह यह है कि हमे सवत्सरी के रोज क्या करना चाहिए ? इस बात को हमें समझना है। हमने संवत्सरी की स्थिति को इस रूप में समझ लिया है कि आज उपवास करना है। धर्म स्थानक मे जाकर थोडी देर बैठ जाना, थोडा बहुत सुनना, और एक दूसरे से मिलकर चले जाना, यह सवत्सरी है ? नहीं, सवत्सरी केवल जैन समाज का ही पर्व नहीं है। महावीर ने जो बात कही है, वह सम्पूर्ण विश्व के लिए है, सारे विश्व के लिए सवत्सरी पर्व है इसको मनाने में गूढ तथ्य छिपा है। गहरा विज्ञान रहा हुआ है। उस विज्ञान को अध्यात्म की गहराई में उतरे बिना अभिव्यक्त नहीं किया जा सकता, इस पर्व को मनाने वालों अध्यात्म प्रेमी साधक जहा अपने जीवन के अतरग रहस्यों को छूता है, वहीं वे विश्व स्तर पर अपनी भावना एव मानसिकता का विकास करने की ओर गतिशील बनते हैं, जिनके सत्सानिध्य में राग–द्वेष, वैर विरोध, घृणा, द्वेष प्रतिशोधादि भावो का कालुष्य धुलता चला जाता है। इनका प्रभुत्व क्षीण होने की स्थिति अथवा उपशमनता को प्राप्त हो जाता है। भव्य दिव्य अध्यात्म प्रधान वायुमडल बना रहता है अत इसे मनाना सबसे ज्यादा आवश्यक है, क्योकि सवत्सरी के माध्यम से हम विश्व में मैत्री भाव का प्रसारण करते हैं, फेल रहे मानसिक प्रदूषण जन्य वैर विरोध, अपने पराये के क्षुद्र घेरे को समाप्त करते हैं जिससे सही वातावरण बनने लगता है। मन का मन से रिलेशन बनाते हैं और मन मे उठने वाले जिन विचारो से पूरा वायुमण्डल प्रभावित हो रहा है और सारा का सारा वायु

मण्डल खराब हो रहा है, उस दूषित वायुमण्डल को विशुद्ध, सही बनाये रखने के लिए हमे सवत्सरी को मनाना सर्वाधिक ज्यादा आवश्यक है। देश को खतरा जितना शोर प्रदूषण से हो रहा है उससे भी अधिक खतरा मानसिक प्रदूषण का है। विचारो का प्रदूषण आज पूरे विश्व के अन्दर इतना ज्यादा फैल गया है कि आज छोटे से छोटे बच्चे के अन्दर सुसस्कार पैदा नहीं हो पाते हैं, सही विचार नहीं आते हैं, गदे विचार आते हैं, गदी भावना ज़ल्दी पैदा होती है। क्योंकि मानसिक प्रदूषण पूरे विश्व के अन्दर भारी स्तर पर फैला हुआ है और फैलता चला जा रहा है। इस सवत्सरी के रोज हम उस मानसिक प्रदूषण का त्याग करने के लिए, मन का मन से सम्बन्ध जोडने के लिए अपनी भावना को समतामय बनाते हैं, क्षमामय बनाते हैं, जिससे की मानसिक प्रदूषण समाप्त हो। जिस मानसिक प्रदूषण से देश की स्थिति निरन्तर खतरनाक बनती चली जा रही है, उस खतरनाक स्थिति को टालने के लिए सवत्सरी के रोज हम अपने मन को साफ करते हैं। हमारे मन मे जो राग और द्वेष की भावनाए हैं, तेरे और मेरे के सकीर्ण विचार हैं, काम, क्रोध, मद, मोह की दूषित वृत्तिया हैं जिसके कारण हमारी आत्मा खराब होती है, विकृत भाव को प्राप्त होती है और उस सोच से पूरा वायुमण्डल खराब होता है वह वायु प्रदूषण पूरे विश्व को प्रभावित करता है।

अमेरिका के वैज्ञानिक रूडॉल्फ ने दुनिया के सामने यह प्रयोग करके बताया कि जैसे पानी का गिलास है, उस पानी के गिलास को किसी व्यक्ति ने अपने हाथ में उठाया और अपने मन मे क्रोधपूर्ण विचार किये, द्वेषपूर्ण विचार किये, घृणापूर्ण विचार किये और उसके बाद उस गिलास के पानी को किसी व्यक्ति को पिला दिया। पानी पीने के बाद उस व्यक्ति के दिमाग में भी उसके प्रति क्रोध पैदा हो गया, घृणा पैदा हो गई, द्वेष पैदा हो गया। इस प्रयोग द्वारा वैज्ञानिक रूडॉल्फ ने यह सिद्ध कर दिया दुनिया के सामने, कि हमारे सोचने का दुनिया के पदार्थो पर केमिकली तो नहीं, किन्तु गुणात्मक प्रभाव जरूर पडता है। जैसा हम सोचेगे उस सोच के अनुसार वस्तुए भी प्रभावित हुए बिना नहीं रहती। इसलिए हमें अपनी सोच को बदलना सबसे ज्यादा जरूरी है।

रूसी वैज्ञानिक वासीलिएव और कामिनिएव का टैलीपेथी सम्प्रेषण विचारो का आदान–प्रदान पूरे वैज्ञानिक जगत् मे एक क्राति मचा गया था। वैज्ञानिक जगत् में वनस्पति विज्ञान, जिसको आपने सुना होगा कि वैज्ञानिक वेकेस्टर ने वनस्पतियो पर प्रयोग किया और उस प्रयोग में यह बताया कि

अगर हम वनस्पति के प्रति भी बुरे विचार करते हैं तो वनस्पति भी मुरझा जाती है। उस वनस्पति के अन्दर भी आपके विचारों से प्रकपन पैदा होने लगता है। उसके अन्दर भी उन्होंने प्रयोग किया कि किसी आदमी ने वनस्पति के प्रति बुरा चिन्तन किया तो उस वनस्पति के साथ में जो गेल्वेनो मीटर की मशीन फिट थी, उस मशीन की सुइया बडी तेजी के साथ हिलने लग गई। वैज्ञानिक वेकेस्टर ने इस बात को सिद्ध कर दिया कि अगर हम वनस्पति के प्रति भी बुरा सोचते हैं तो वह वनस्पति भी प्रकपित होने लगती है। इन सारी बातो से यह स्पष्ट हो जाता है कि जैसा हम सोचते हैं उस सोच का प्रभाव पूरे विश्व पर पडता है। भगवान महावीर ने इस सवत्सरी के रोज पूरे विश्व के अन्दर फैले हुए दूषित वायुमण्डल को समाप्त करने के लिए यह कहा कि ससार के सभी चिन्तनशील प्राणी यह चितन करे कि—

मैं ससार की समस्त आत्माओं से क्षमायाचना करता हू, मैं ससार की समस्त आत्माओ के साथ मैत्री भाव कायम करता हू। आपका यह विचार पूरे विश्व मे फैलेगा, फैल करके उस वायुमण्डल को साफ करने लगेगा, उसके अन्दर आने वाली विकृति को साफ करने लगेगा। आज के वैज्ञानिक शोर प्रदूषण को रोकने के लिए सोच रहे हैं, ध्वनि प्रदूषण को रोकने के लिए सोच रहे हैं। लेकिन उससे भी ज्यादा मानसिक प्रदूषण को रोकने के लिए सोचना जरूरी हो गया है। आज नही कल, कल नहीं परसो उन्हे महावीर के सिद्धान्तों पर आना होगा और वैज्ञानिको को मानसिक प्रदूषण को रोकने की बात सोचनी होगी और जिस दिन भी वैज्ञानिक मानसिक प्रदूषण को रोकने की बात सोचेंगे उस दिन पूरे विश्व के अन्दर सवत्सरी का मूल्याकन सामने आ जायेगा कि भगवान महावीर ने क्यों सवत्सरी मनाने की बात कही है। आज हम माने या नहीं माने लेकिन फोरेन के अन्दर इस बात को बहुत अच्छी तरह से लोग मानने लग गये हैं।

मैं आपको एक बहुत महत्त्वपूर्ण बात बताने जा रहा हू। अमेरिका के अन्दर न्यूयार्क में घटना घटित हुई स्टेट बैंक मे, जिस स्टेट बैंक के अन्दर काउन्टर के ऊपर जहा कैश–राशि दी जाती है वहा छह काउन्टर लगे हुए हैं और उन छहो काउन्टरो पर कहते हैं प्रतिदिन करोडों का लेन–देन होता है। उन काउन्टरों मे से एक काउन्टर पर एक व्यक्ति बैठा था, जिस व्यक्ति का नाम था, लाम्यु जॉन। उस लाम्यु जॉन के काउन्टर पर बडी भीड लगी रहती थी, उसके पास में पैसा लेने के लिए एक लम्बी लाईन लगी रहती थी दूर–दूर तक, जबकि दूसरे काउन्टर खाली पडे हैं, उन काउन्टरों पर कोई भी

नहीं खडा है फिर भी लोग अपना टाइम खराब करके उस लाम्यु जॉन के काउन्टर पर खडे रहते थे। स्टेट बैंक के मैनेजर ने जब यह बात देखी तो उसने सोचा अरे, इतने लोग लॉम्यु जॉन के पास क्यो खडे रहते हैं ? क्या बात है ? तो उस बैंक मैनेजर ने उस काउन्टर पर खडे आदमियो में से एक को अपने पास बुलाया और उस व्यक्ति से पूछा, कि तुम जॉन के काउन्टर पर क्यों खडे हो ? दूसरे काउन्टर पर क्यों नहीं खडे हो जाते ? तो उसने कहा– हम इस व्यक्ति से पैसा लेते हैं तो हमे वह पैसा बरकत हो जाता है, हमारे अच्छे काम मे आता है।

यह कोई बात हुई कि इससे पैसा लेने से बरकत हो जाय, मैनेजर के समझ मे नहीं आया। उसने दूसरे व्यक्ति को बुलाया और उस से कहा– अरे तुम यहा क्यों खडे हो ? तो वह कहता है–इस व्यक्ति से पैसा लेने से हमारे सारे काम सरल हो जाते हैं। मैनेजर को फिर भी समझ मे नहीं आया। उसने तीसरे व्यक्ति को बुलाया। तीसरा व्यक्ति एक महिला थी उस का नाम था रीटा हैबर्थ। वह महिला जब गई तब मैंनेजर ने उससे पूछा कि तुम लॉम्यु जॉन के काउन्टर पर क्यों खड़ी हो ? तो वह बोलती है कि साहब, इससे पैसा लेने से मेरी जिन्दगी मे चमत्कार घटित हुआ। मैंनेजर ने कहा– क्या हुआ ? तो वह बोलती है कि मेरी शादी हो चुकी है लेकिन मेरा एक प्रेमी है, मेरा प्यार किसी उस व्यक्ति के साथ था और हम प्यार किया करते थे। एक दिन मेरे प्रेमी को मालूम हुआ कि मेरा और मेरे पति का बैंक के अन्दर पैसा जमा है तो उस व्यक्ति ने मुझसे कहा कि तुम पैसे निकाल लो और अपना पैसा लेकर यहा से भाग जाते हैं और दूसरी जगह आराम से रहेगे। मैं उसकी बातों मे आ गई। मेरा वह प्रेमी मुझे यहा लेकर आया मैं काउन्टर पर आई और मैंने चैक पर दस्तखत करके बैंक में से अपना जितना भी पैसा जमा था उस सारे पैसे को निकाला। लॉम्यु जॉन ने मुझे सारा पैसा कैश राशि के रूप में दिया। ज्योही वह कैश मेरे हाथ मे आया, त्योही मेरे विचार घूमे, मेरे दिमाग में परिवर्तन आया। मैंने सोचा कि इतना पैसा मैंने ले तो लिया और मैं अपने प्रेमी के साथ भागने की कोशिश कर रही हूं, लेकिन मेरा प्रेमी पैसा खत्म होने के बाद मुझे छोड सकता है। इसलिए मुझे प्रेमी के साथ में अपने पति की सम्पत्ति को बर्बाद नही करना चाहिये, यह विचार इस लॉम्यु जॉन के काउन्टर से पैसा लेते समय मेरे दिमाग मे आया। मेरा दिमाग घूम गया। मैंने उसी समय सारे पैसे पुन वहीं बैंक में जमा करा दिये और मैं स्वयं चुपचाप बैंक के पिछले दरवाजे से अपने घर चली गई। मैंने अपनी पति की सुध ली। यह सब धारणा

मेरे मन मे उस लॉम्यु जॉन से केश लेने के कारण से बनी है। लॉम्यु जॉन की आत्मा कोई ईश्वर का रूप है, इस से ऐसे विचार पैदा हुए/हो रहे हैं।

मैनेजर ने एक के बाद एक कई व्यक्तियो को बुलाया। उनमे से एक व्यक्ति ने आचर्श्यजनक बात बताई। उसने कहा कि मैं वेश्यागृह मे जाता था। अपना सारा पैसा वैश्यागृह में लगाता था। जिस दिन मैंने लॉम्यु जॉन के काउन्टर से पैसे निकाले, उस दिन मेरा दिमाग बदल गया। मुझे ऐसा लगा कि मैं जो काम कर रहा हू, वह बहुत खराब काम है, बहुत गलत काम है, मैं पैसों की बर्बादी कर रहा हू। उसके बाद मैंने गिरजाघर जाकर यह निर्णय ले लिया कि आज के बाद मैं कभी भी वेश्यागृह नहीं जाऊगा। रात में मुझे सपना आया। यह चमत्कार जॉम्यु जॉन के कारण से हुआ है। बैंक का मैनेजर विचार मे पड गया। उसने कहा लॉम्यु जॉन में इतनी ताकत कहा से आ गई। यह कैसे चमत्कार कर रहा है। मैनेजर ने लॉम्यु जॉन को बुलाया और कहा कि तुम यह बताओ कि तुम्हारे काउन्टर के ऊपर इतने लोग क्यो खड़े रहते हैं ? इस बात को मुझे समझाओ। लॉम्यु जॉन ने कहा साहब, मैं कोई भगवान नहीं हू। मैं कोई ईश्वर नही हू, मैं कोई परमात्मा नहीं हू, लेकिन आप ध्यान से सुनिये मैं एक पादरी का बेटा हू। पेरे पिता पादरी रहे हैं, मेरी माता सदाचारिणी रही है। मुझे जोखिम भरी नौकरी मिली है, मेरे दिल में सदैव यही भावना रहती है, मैं यही सोचता रहता हू कि ससार के सभी प्राणियो का कल्याण हो। उसने कहा, मेरे पास नौकरी खतरे की है, रिसक की है, पैसो का लेन–देन है, ऐसी स्थिति मे मेरे काउन्टर पर जो भी व्यक्ति केश–राशि लेने आता है, जिस समय मैं उसे पैसे देता हू, उस समय एक बात मुह से बोलता हू। वह क्या बोलते हो–" मै गॉड ब्लेस यू" उसने कहा कि मैं रोज यह बोलता हू। हे, ईश्वर, तुम सभी का कल्याण करो, इस सामने वाले का कल्याण कर दो, इसका उद्धार हो जाय। इस बात को अपने दिमाग में रखता हू, इस बात को निरन्तर बोलता हू। मैं इसके अलावा कुछ नहीं जानता हू। बैंक मैंनेजर ने सारी बातो की समीक्षा की, सारी बातों की समीक्षा करने के बाद इस बात का निर्णय लिया कि जो कुछ भी चमत्कार है, केवल इन शब्दो का है " **मै गॉड ब्लेस यू**"।

इसके बाद उस बैंक मैंनेजर ने न्यूयार्क की स्टेट बैंक के अन्दर यह वाक्य बैंक के मेन गेट–द्वार पर लगा दिया, बैंक की खिडकियों पर लगा दिया कि अगर हम सामने वाले का कल्याण चाहते हैं तो सामने वाले का दिमाग बदल सकते हैं, उसके विचार बदल सकते हैं। यह बात भारत में नहीं,

अमेरिका के न्यूयार्क के अन्दर घटित हुई। आज सारे न्यूयार्क के लोग इस बात को मानने लग गये हैं। हम जो कुछ भी चिन्तन करते हैं, उसका प्रभाव सामने वाले के मन पर निश्चित रूप से पडता है।

सवत्सरी के दिन यह कहा जाता है कि आप लोग दूसरो के प्रति शुद्ध भावना रखिये, दूसरो के प्रति शुद्ध चिन्तन रखिये। अपने मन के अन्दर रही ईर्ष्या को समाप्त करिये, घृणा को समाप्त करिये, द्वेष को समाप्त करिये, निश्चित रूप से उसका प्रभाव सामने वाले इसान पर पडेगा। भगवान महावीर कहते हैं कि ससार की समस्त आत्माओ के साथ हम क्षमायाचना करते हैं।

आज के विज्ञान ने इस बात को स्वीकार कर लिया है कि आत्मा से आत्मा का सबध करना सीखिये। जब तक इस बात को गहराई से नहीं समझेगे, तब तक हमारा सवत्सरी पर्व मनाना सार्थक नहीं हो सकता। आज लोग सवत्सरी कैसे मनाते हैं ? उपवास कर लिया, भूखे रह लिये, मुह पर पट्टी बाध ली, ये सब तो शरीर की साधना है। यदि भूखे रहे तो केवल शरीर को भूखा रखा। आपने मन की साधना क्या की ? यदि आपने मन की साधना नहीं की तो वह साधना आत्मा तक नहीं पहुच सकती। आत्मा तक साधना को पहुचाने के लिए काया से साधना करनी होगी ? मन से साधना करनी होगी ? वचन से साधना करनी होगी ? काया की साधना मन तक आयेगी और मन की साधना आत्मा तक जायेगी। हम अपने विचारो से समन्वय करके रहे। इसलिए सवत्सरी के रोज आप इस बात का विचार कीजिये कि हमारा किसी के साथ में कोई झगडा हुआ हो, क्लेश हुआ हो, विवाद हुआ हो तो उस आज के रोज अपने दिल, दिमाग से निकाल दीजिये, अपने दिल में उनके प्रति अपनी शुभमगलमय भावनाओं को, स्थान दीजिये। आपकी भावना निर्मल बन गई तो उसका सबसे पहले आपकी आत्मा पर प्रभाव पडेगा। जब आत्मा के ऊपर प्रभाव होगा तो सारे विश्व मे प्रभाव होगा। सवत्सरी का यह पहला तत्त्व है जो मैंने आपको बताया है। आज जीवन में मैत्री भाव को कैसे कायम किया जाय ? आत्मा से आत्मा को कैसे समझा जाय ?

भगवान महावीर ने बताया है कि हम अपनी आत्मा की आलोचना करने की कोशिश करें, जन्म–जन्म के उन अपराधों की आलोचना करें, उन अपराधों को धोने की कोशिश करें। आज का इसान अपने गुणों को देखता आया है, अपनी झूठी प्रशसा सुनता आया है, अपनी झूठी प्रशसा करता आया है, लेकिन हर इसान के अन्दर कोई न कोई कमी होती है, हर इन्सान से कोई

न कोई गलत काम होता है, अपराध करता है, उस अपराध की आलोचना नहीं करके वह उस अपराध को दुनिया से छिपाना चाहता है। ऐसा व्यक्ति अपनी आत्मा को सार्थक नहीं बना सकता। हमें अपने अपराधों पर आज के रोज सोचना है, आज के रोज दिमाग में यह लाया जाय कि एक साल में हमारी आत्मा ने क्या-क्या अपराध किये हैं ? आपने राष्ट्र के नेता ठक्कर बाबा का नाम सुना होगा। जिस समय ठक्कर बाबा की जन्म जयती मनाई जा रही थी, उस समय वे 80 वर्ष के थे। राष्ट्र के बडे-बड़े नेता उनकी जन्म जयती मे आये थे और लोग उनके गुणगान गा रहे थे कि आप बहुत अच्छे, बहुत सात्विक हैं और बहुत चरित्रवान परोपकारी आदमी हैं जिन्होंने देश की भारी सेवा की है। इस तरीके से उस ठक्कर बाबा की भारी मात्रा में प्रशसा हो रही थी। उस वक्त ठक्कर बाबा खडे हुए और कहा आप सब लोगों ने मेरी बाहरी जिन्दगी को देखा है, आपने मेरी ऊपर की जिन्दगी देखी है। लेकिन मेरे अपराध मुझे परेशान कर रहे हैं, मेरे अपराध मुझे खा रहे हैं, वे कह रहे हैं कि तेरी जिन्दगी अन्दर से खराब है। ऐसा कहते हुए उस समय उस साहसिक ठक्कर बाबा ने भीड़ भरे अभिनन्दन के बीच मे, महोत्सव के बीच में एक बात स्पष्ट शब्दो में कही- कि मैंने अपनी पूरी जिन्दगी में दो बार परस्त्रीगमन किया है, दो बार रिश्वत ली है। यह बात मैंने महात्मागाधी को कह दी है लेकिन महात्मा गाधी के बाद मैं दुनिया के सामने भी यह बात कर दू, जिससे दुनिया को भी यह मालूम हो जाय कि मैंने ऐसे गलत काम भी किये हैं। इस बात को ठक्कर बाबा ने दुनिया के सामने जन्मोत्सव के रोज रखा था।

है किसी जैनी मे यह ताकत, कि वह अपने अपराध को इस सभा के बीच मे आकर स्वीकार करें, कोई यह भी कहे कि मैंने अपनी जिन्दगी में ये अपराध किये हैं। कोई चोरी की है, कोई अत्याचार किया है, कोई बदमाशी की है ? किसी की धरोहर दवाई हो, धोखा दिया हो, हत्या की हो इत्यादि जो-जो अपराध हैं उन हुए अपराधों को स्वीकार करने वाला कौन महिला होगी, कौन पुरुष होगा ? हम आलोचना करना जानते हैं, हम सवत्सरी मनाने के लिए तैयार हो जाते हैं, लेकिन सवत्सरी मनाने के लिए हमें मन का उपवास करना होगा। हमारे मन में जो पाप मय विचार भरे पडे हैं, जो हमने जिन्दगी मे अपराध किये हैं, उन अपराधो को आज के रोज सोचना होगा। जब तक उन अपराधो के विषय में नहीं सोचेंगे तो वे अपराध एक कुण्ठा का रूप ले लेगे, ग्रथि बन जायेंगे अन्तर में और वह ग्रन्थि हमे दिन-रात सताती

रहेगी। आज अगर हमारे मन में क्लेश पैदा हो गया तो हमारे शारीरिक स्वास्थ्य भी स्वस्थ नहीं रह सकता। शरीर को स्वस्थ रखने के लिए हमें अपने मन को स्वस्थ रखना होता है।

जब हमारा मन स्वस्थ होगा तो ही हमारा शरीर सुचारू रूप से स्वस्थ तरीके से चल सकेगा। मन को स्वस्थ बनाने के लिए यह सवत्सरी पर्व है। इस दिन यह सोचे कि हमसे जो अपराध हुए हैं, उसे दुनिया तो नहीं जानती लेकिन मैं स्वय तो जानता हू, उन अपराधों को सोच कर उन से घृणा करे, उन्हें छोडने का प्रयास करें, उन्हे दिल से खत्म करने का प्रयास करें। गुरु के सामने एकान्त मे सब कुछ कहकर प्रायश्चित लेकर मन हल्का कर लेंगे तो कहीं जाकर आपके मन की ग्रन्थि खुलेगी, मन के विचार सही बनेगे, तब आत्मा को शाति मिलेगी। नही तो, व्यक्ति जब सोया रहता है उस वक्त भी उसके दिमाग में तनाव रहा है ? टेशन रहता है ? क्यो रहता है, इसलिए कि उसने जिन्दगी मे बहुत सारे अपराध किये हैं। अपराध होना कोई बहुत बडी बात नहीं है लेकिन अपराध को स्वीकार कर लेना, अपराध की आलोचना कर प्रायश्चित ले लेना, यह बहुत बडी बात है। भगवान महावीर ने इस सवत्सरी के रोज अपने भाइयों को यह सदेश दिया कि अपनी जिन्दगी के अन्दर कोई भी अपराध हो गया हो, किसी तरह का गलत काम हो गया हो किसी तरह की गलती हो गई हो तो आज के रोज अपने सारे अपराधो को मान कर अपने मन की ग्रन्थि को खोल कर अपने मन को साफ कर लो, शुद्ध बना लो। जब व्यक्ति का मन शुद्ध बन जायेगा निर्मल हो जायेगा तो उसकी आत्मा को निश्चित रूप से शाति मिलेगी। अब आप ही बोलिये बन्धुओं– आज कितने लोग ऐसे हैं जो इस प्रकार सवत्सरी मना रहे हैं ? आप क्या कर रहे सवत्सरी के रोज ? इस रोज भी दूसरो को आलोचना करना, निदा करना नहीं छोडते, सवत्सरी के रोज भी कईयो का मन शात नही रहता, मन में समता नहीं रहती, आत्म चितन नहीं रहता तो कैसे मन पवित्र बनेगा। अगर हमे अपने मन को पवित्र बनाना है तो भगवान महावीर के इस सिद्धान्त को समझना होगा कि हम अपने मन की सारी ग्रन्थियो को खोलकर क्षमायाचना करें, एक दूसरे के साथ मैत्रीभाव कायम करे।

यह पर्व जैनियो का ही पर्व नहीं है, यह पूरे विश्व का पर्व है। पूरे विश्व के अन्दर शाति फैलाने में जैनियों का सबसे बडा योगदान है। जैन बन्धु अगर इस बात को समझ जायें और इस सवत्सरी पर्व को सही ढग से मना लें तो निश्चित रूप से आज के वैज्ञानिकों को भी सोचना पडेगा कि हमें भी यह

सवत्सरी मनानी होगी। आपने सुना होगा—अभी पृथ्वी सम्मेलन ब्राजील के अन्दर हुआ, उसके अन्दर हुए निर्णय दुनिया के सामने आये, उसमें यह कहा गया कि शोर प्रदूषण, वायु प्रदूषण को रोकना होगा तथा वायु प्रदूषण को रोकने के लिए वनस्पति की रक्षा करना बहुत जरूरी है। वनस्पति की रक्षा होगी तो वायु प्रदूषण को रोका जा सकता है और व्यक्ति की जिन्दगी में जीवतता लाई जा सकती है। इस बात का जिक्र ब्राजील के अन्दर अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर हुआ। आने वाला भविष्य यह बतायेगा कि अगर विश्व के लोगों को मानसिक शाति देनी है, मन को शात बनाये रखना है तो विश्व भर के अन्दर हमें सवत्सरी मनानी होगी, दुनिया से क्षमायाचना करनी होगी, दुनिया को मैत्रीभाव का महत्त्व समझना होगा। यह बात भी निकट भविष्य के अन्दर आप देखेंगे वैज्ञानिक लोग मानने लग जायेगे क्योकि वैज्ञानिकों ने इतना तो मान ही लिया है कि अगर हमे आत्मा से आत्मा का सबध कायम करना है तो निश्चित रूप से परस्पर मैत्री भाव लाना होगा और सवत्सरी का भी मूल उद्देश्य यही है।

इस सवत्सरी पर्व को मनाने का आपको कुछ प्रेक्टिकल प्रयोग कराना चाहता हू। केवल हमे प्रवचन ही नहीं सुनना है, अपनी जिन्दगी को शुद्ध और साफ करने के लिए कुछ प्रेक्टिकल प्रयोग करना है। उस प्रेक्टिकल प्रयोग में आने के लिए आप शाति के साथ बैठ जाइये, सब पालथी मार कर बैठ जाइये। अब मैं आपको सवत्सरी कैसे मनाई जाती है इसका प्रेक्टिकल प्रयोग बता रहा हू कि सबसे पहले अपनी आत्मा की आलोचना कैसे करे ? अपनी आत्मा की शुद्धि कैसे करे ? कैसे इस सवत्सरी को मनाये ? मैं इस प्रवचन के माध्यम से ही आपको सवत्सरी मनाने का सही तरीका बता रहा हू। आप खुद ध्यान मे प्रवेश करके अपने आप को अपने सामने खडा करें अपनी जिन्दगी को देखने का प्रयास करे। आपने सही ढग से अपनी जिन्दगी को देख लिया तो निश्चित रूप से सवत्सरी सही ढग से मना लेंगे। इसलिए आप इस सवत्सरी को सही ढग से मनाने के लिए ध्यान में उतरने की कोशिश करिये।

जरा सोचिए कि हमने बीते एक वर्ष मे कितने जीवों की हत्या की, कितने पशु-पक्षी हमारे हाथों, से मारे गये। सोचिए, हमने कितने लोगों की हिसाए की हैं। जरा अरिहत भगवान की साक्षी से सोचें कि साल भर में मैंने कितनी हिसा की। जान या अनजान में जो हिसा हुई है मैं अरिहत भगवान की साक्षी मे उन सारे पापों से अपने मन को दूर ले जाता हू। जो हिसा मैंने

की है उस हिसा के अपराध को छोड़ता हू। मैंने परिवार के निमित्त व्यापार को चलाने के लिए, अपनी इज्जत को बचाने के लिए जितना भी झूठ बोला है जितनी गलत बाते कही है, जो गलत बातें दिमाग में भरी हैं, अपनी इज्जत बचाने के लिए कितने झूठे प्लस्तर लगाये हैं और आज अरिहत भगवान की साक्षी से मैं उन सारे अपराध को छोडता हू। मैं अरिहत भगवान के सामने अपनी आत्मा को खोलकर रखता हू। मैंने जितनी भी गलत बाते बोली है, झूठ बोला है, उनको गलत मानता हू, पापपूर्ण मानता हू और उनको छोड़ने का सकल्प लेता हू। जितनी भी चोरिया की हैं, अपराध किए हैं उनको भी छोडता हू। अब्रह्मचर्य ने मेरी आत्मा मे प्रवेश किया है, पराई स्त्रियो के साथ बुरा बर्ताव किया, दूसरी स्त्रियों को गलत ढग से देखा है या स्त्रियों के प्रति मन मे बुरी भावना पैदा की है तो अपने अपराध को स्वीकार कीजिए कि मेरे मन मे जो गलत भाव पैदा हुए है, जो गलत काम किए हैं, कुचेष्टाए की, आज मैं अरिहत भगवान की साक्षी से उन सारी विकारी भावनाओं का त्याग करता हू, मैं अपनी बुराइयों को स्वीकार करता हू और उनको छोडता हू। इस तरह से आप अपने अपराधों को छोडने का प्रयास कीजिए। मैंने अच्छे बुरे का ध्यान नहीं किया और पैसा कमाने के चक्कर में लोगों को ठगने का प्रयास किया। मैं उन सारे व्यक्तियों के साथ मे हुए अपराधों को स्वीकार करने के साथ क्षमायाचना करता हू, मैत्रीभाव कायम करता हू। यह अपने मन में भावना करिये। मैंने क्रोध के वशीभूत होकर उचित–अनुचित बात कही हो, किसी को गाली दी हो तो मैं उन पापो को छोड़ता हू। मैं बहुत बडा सेठ हू, बहुत पैसे वाला हू, ऐसा सोचकर नौकरों के साथ, मुनिमो के साथ, गरीबों के साथ, अहकार के वश दुर्व्यवहार किया हो, यदि कोई अपमान की बात कही हो, उनकी निन्दा की हो, तो आप सोचिए, उस बात को मैं छोडता हू, उस बात की मैं निन्दा करता हू, उस गलती को स्वीकार करता हू। इस तरीके से आप अपने अहकार को निकालिए। एक–दूसरे के साथ छल कपट किया है, एक–दूसरे को ठगने का प्रयास किया है, लोभ के वशीभूत होकर दूसरों के हितो को चोट पहुचाई है, उन्हें नुकसान पहुचाया है तो आज मैं उनको स्वीकार करता हू। मैंने किसी की निदा की है, किसी ही इज्जत पर आच पहुचाई है तो मैं दिल से उस दोष को स्वीकार करता हू। कितनों की मैंने चुगलिया की है, किसी की झूठी बात की है तो उनके लिए मैं उनसे क्षमा मागता हू। इस एक वर्ष की फिल्म को अपने दिमाग मे लाइये और इस फिल्म की एडिटिग करिये। जो चीजें गलत हुई है उनको हटा दीजिए ताकि आपकी

पिक्चर साफ हो जाय, वह क्लीयर हो जाय और सोचिए भगवान कृपा बरसा रहा है इस कृपा से मेरे सारे पाप धुल रहे हैं।

आपका मानसिक चिन्तन आपकी आत्मा को पवित्र अथवा दूषित बनाता है। वैज्ञानिको ने इस बात को मान लिया है। व्यक्ति जो सोचता है उसका प्रभाव निश्चित रूप से उसकी आत्मा पर पड़ता है। इसलिए आत्मा को प्रभावित करने के लिए मन से शुद्ध चिन्तन करने का प्रयास कीजिए ताकि सारे पापों को दूर करने के बाद आत्मा शुद्ध हो जाय।

आप सोचिए कि मैंने जीवों की रक्षा के लिए कितने काम किए हैं ? मैंने इसान की भलाई के लिए कौनसा त्याग किया है ? ऐसे काम अपने दिमाग मे मत लाइये जिसमें आपको कोई लाभ न हो। यदि साल भर मे ऐसा कोई काम नहीं किया हो तो यह निश्चित कीजिए कि भविष्य में एक काम ऐसा करूगा जो सच्ची इसानियत का होगा ? जीवों की रक्षा करने के लिए कोई न कोई ऐसा काम निश्चित रुप से भविष्य में करूगा, यह सकल्प अपने दिल और दिमाग में पक्का कीजिए तब जाकर आपकी आत्मा ऊपर उठेगी। साथ ही आप सोचिए कि मैं ससार की समस्त आत्माओं के साथ मैत्री सबध कायम कर रहा हू। ध्यान लगाइये, ससार की आत्माए जो आकाश मे हैं, धरती पर हैं, किसी भी भाग पर क्यों न हो उन सारी आत्माओं के साथ मैं मैत्री सबध जोड़ता हू। वे मेरी हैं मैं उनका हू, उनकी आत्मा मेरी आत्मा है, मेरी आत्मा उनकी आत्मा है। इस तरह का विचार अपने भीतर जमाइये, अपने मन में इस तरह का चिन्तन लाइये। आपकी आत्मा निर्मल बनेगी, पवित्र बनेगी निर्मलता को प्राप्त कर सकेगी। अपने मन की वृत्तियो को निर्मल बनाने के लिए आपको अपनी आत्मा के साथ रिलेशन कायम करना होगा, टेलीपैथी। टैलीपेथी रिलेशन जब सही ढग से कायम होगा तब आपकी आत्मा का कल्याण होगा। अब आप एक मिनट के लिए आखें बद कर लें और परमात्मा का चितन करे, अरिहत भगवान को देखने की कोशिश करें। उनकी दृष्टि के साथ अपनी दृष्टि मिलाए। एक मिनट के लिए सब कुछ भूल जाइये और परमात्मा के चरणो मे अपने अस्तित्व को समर्पित कर दीजिए। चुप हो जाइये और परमात्मा के साथ अपने अस्तित्व को मिला दीजिए। प्रभु को सच्चे दिल से स्मरण करने का प्रयास कीजिए। (एक मिनिट का मौन)

मैंने आपके सामने सामूहिक रूप से ध्यान की प्रक्रिया जो सवत्सरी के दिन की जाती है उसका सामान्य ज्ञान आपको दिया है। जब भी समय मिले आपको चिन्तन करे। अपनी आत्मा को पावन बनाने का प्रयास करना

की है उस हिसा के अपराध को छोड़ता हू। मैंने परिवार के निमित्त व्यापार को चलाने के लिए, अपनी इज्जत को बचाने के लिए जितना भी झूठ बोला है जितनी गलत बाते कही है, जो गलत बाते दिमाग में भरी हैं, अपनी इज्जत बचाने के लिए कितने झूठे प्लस्तर लगाये हैं और आज अरिहत भगवान की साक्षी से मैं उन सारे अपराध को छोडता हू। मैं अरिहत भगवान के सामने अपनी आत्मा को खोलकर रखता हू। मैंने जितनी भी गलत बाते बोली है, झूठ बोला है, उनको गलत मानता हू, पापपूर्ण मानता हू और उनको छोडने का सकल्प लेता हू। जितनी भी चोरिया की हैं, अपराध किए हैं उनको भी छोडता हू। अब्रह्मचर्य ने मेरी आत्मा मे प्रवेश किया है, पराई स्त्रियो के साथ बुरा बर्ताव किया, दूसरी स्त्रियो को गलत ढग से देखा है या स्त्रियों के प्रति मन मे बुरी भावना पैदा की है तो अपने अपराध को स्वीकार कीजिए कि मेरे मन मे जो गलत भाव पैदा हुए है, जो गलत काम किए हैं, कुचेष्टाए कीं, आज मैं अरिहत भगवान की साक्षी से उन सारी विकारी भावनाओं का त्याग करता हू, मैं अपनी बुराइयो को स्वीकार करता हू और उनको छोडता हू। इस तरह से आप अपने अपराधों को छोड़ने का प्रयास कीजिए। मैंने अच्छे बुरे का ध्यान नहीं किया और पैसा कमाने के चक्कर मे लोगों को ठगने का प्रयास किया। मैं उन सारे व्यक्तियों के साथ में हुए अपराधों को स्वीकार करने के साथ क्षमायाचना करता हू, मैत्रीभाव कायम करता हू। यह अपने मन में भावना करिये। मैंने क्रोध के वशीभूत होकर उचित–अनुचित बात कही हो, किसी को गाली दी हो तो मैं उन पापो को छोडता हू। मैं बहुत बडा सेठ हू, बहुत पैसे वाला हू, ऐसा सोचकर नौकरों के साथ, मुनिमों के साथ, गरीबो के साथ, अहकार के वश दुर्व्यवहार किया हो, यदि कोई अपमान की बात कही हो, उनकी निन्दा की हो, तो आप सोचिए, उस बात को मैं छोडता हू, उस बात की मैं निन्दा करता हू, उस गलती को स्वीकार करता हू। इस तरीके से आप अपने अहकार को निकालिए। एक–दूसरे के साथ छल कपट किया है, एक–दूसरे को ठगने का प्रयास किया है, लोम के वशीभूत होकर दूसरों के हितों को चोट पहुचाई है, उन्हें नुकसान पहुचाया है तो आज मैं उनको स्वीकार करता हू। मैंने किसी की निदा की है, किसी ही इज्जत पर आच पहुचाई है तो मैं दिल से उस दोष को स्वीकार करता हू। कितनों की मैंने चुगलिया की है, किसी की झूठी बात की है तो उनके लिए मैं उनसे क्षमा मागता हू। इस एक वर्ष की फिल्म को अपने दिमाग मे लाइये और इस फिल्म की एडिटिग करिये। जो चीजे गलत हुई है उनको हटा दीजिए ताकि आपकी

पिक्चर साफ हो जाय, वह क्लीयर हो जाय और सोचिए भगवान कृपा बरसा रहा है इस कृपा से मेरे सारे पाप धुल रहे हैं।

आपका मानसिक चिन्तन आपकी आत्मा को पवित्र अथवा दूषित बनाता है। वैज्ञानिकों ने इस बात को मान लिया है। व्यक्ति जो सोचता है उसका प्रभाव निश्चित रूप से उसकी आत्मा पर पडता है। इसलिए आत्मा को प्रभावित करने के लिए मन से शुद्ध चिन्तन करने का प्रयास कीजिए ताकि सारे पापों को दूर करने के बाद आत्मा शुद्ध हो जाय।

आप सोचिए कि मैंने जीवों की रक्षा के लिए कितने काम किए हैं ? मैंने इसान की भलाई के लिए कौनसा त्याग किया है ? ऐसे काम अपने दिमाग मे मत लाइये जिसमे आपको कोई लाभ न हो। यदि साल भर मे ऐसा कोई काम नहीं किया हो तो यह निश्चित कीजिए कि भविष्य में एक काम ऐसा करूगा जो सच्ची इसानियत का होगा ? जीवो की रक्षा करने के लिए कोई न कोई ऐसा काम निश्चित रुप से भविष्य मे करूगा, यह सकल्प अपने दिल और दिमाग मे पक्का कीजिए तब जाकर आपकी आत्मा ऊपर उठेगी। साथ ही आप सोचिए कि मैं ससार की समस्त आत्माओं के साथ मैत्री सबध कायम कर रहा हू। ध्यान लगाइये, ससार की आत्माए जो आकाश मे हैं, धरती पर हैं, किसी भी भाग पर क्यों न हों उन सारी आत्माओ के साथ मैं मैत्री सबध जोड़ता हू। वे मेरी हैं मैं उनका हू, उनकी आत्मा मेरी आत्मा है, मेरी आत्मा उनकी आत्मा है। इस तरह का विचार अपने भीतर जमाइये, अपने मन मे इस तरह का चिन्तन लाइये। आपकी आत्मा निर्मल बनेगी, पवित्र बनेगी निर्मलता को प्राप्त कर सकेगी। अपने मन की वृत्तियों को निर्मल बनाने के लिए आपको अपनी आत्मा के साथ रिलेशन कायम करना होगा, टेलीपैथी। टैलीपेथी रिलेशन जब सही ढग से कायम होगा तब आपकी आत्मा का कल्याण होगा। अब आप एक मिनट के लिए आखें बद कर लें और परमात्मा का चितन करे, अरिहत भगवान को देखने की कोशिश करें। उनकी दृष्टि के साथ अपनी दृष्टि मिलाए। एक मिनट के लिए सब कुछ भूल जाइये और परमात्मा के चरणों मे अपने अस्तित्व को समर्पित कर दीजिए। चुप हो जाइये और परमात्मा के साथ अपने अस्तित्व को मिला दीजिए। प्रभु को सच्चे दिल से स्मरण करने का प्रयास कीजिए। (एक मिनिट का मौन)

मैंने आपके सामने सामूहिक रूप से ध्यान की प्रक्रिया जो सवत्सरी के दिन की जाती है उसका सामान्य ज्ञान आपको दिया है। जब भी समय मिले आपको चिन्तन करें। अपनी आत्मा को पावन बनाने का प्रयास करना

है तो इस बात को जीवन मे गहराई के साथ उतारना होगा दिल के साथ जोडना होगा। जो व्यक्ति सच्चे दिल से अपनी आत्मा की आलोचना कर लेता है उस व्यक्ति का बडे से बडा पाप भी धुल जाता है, उसके पाप की शुद्धि हो जाती है।

मैं इतिहास की एक घटना आपको बताता हू। इससे आपको मालूम होगा कि बड़े से बडे पाप की भी सवत्सरी के रोज दिल से अपनी आत्मा की आलोचना कर ली जाय, अपना पाप स्वीकार कर लिया जाय तो वह पाप भी धूल जाता है। एक आचार्य महाराज थे। उन्होंने एक जगह चातुर्मास किया। उस चातुर्मास मे उनके पास बहुत सारे साधु थे। उनमें एक छोटा साधु था जो बहुत सुन्दर था, नौजवान था। उस नौजवान साधु को गोचरी के लिए भेजा गया। गोचरी के लिए जब वह किसी घर में गया तो उस घर के अन्दर अकेली महिला थी। उसका पति विदेश मे रहता था। उस महिला के मन मे साधु को देख विकारी भावना आ गयी, गलत भावना आ गयी। उस महिला ने क्या किया ? अपना मेन गेट मुख्य द्वार बद कर लिया। बद करने के बाद वह महिला महाराज को अदर ले जाती है। बहुत अदर ले गई। अदर ले जाने के बाद वह कहती है कि महाराज ! आप क्यो इस ससार को छोडकर अपने इतने कोमल शरीर को, सुन्दर शरीर को बर्बाद कर रहे हो। मेरे साथ रहिये, ससार का सुख भोगिये और ऐशो आराम करिये। यह सारी सपत्ति आपकी हो जाएगी। इस प्रकार कहा तो महाराज ने समझाया मैं ससार को छोड चुका हू। ससार की सारी महिलाए मेरे लिए माता और बहिनें हैं, इसलिए मैं ऐसा नहीं कर सकता। उस महिला ने महाराज को बहुत समझाने की कोशिश की। दुनिया भर के प्रलोभन दिये, लेकिन वे महाराज अडिग रहे, विचलित नहीं हुए। तब महिला ने सोचा कि बात तो कह दी लेकिन ये मेरी बात नहीं मानते, वह खाली जा रही है। अब ये अपने गुरु महाराज के पास जाएगे और गुरु महाराज के सामने मेरी सारी बात कह दी तो इज्जत मिट्टी मे मिल जाएगी। ऐसा सोचकर उस महिला ने एक लकडी उठाई और महाराज के कपाल पर मारी। लोच कराया हुआ था, मस्तिष्क कच्चा था लकडी के जोरदार प्रहार से महाराज नीचे गिर गये। नाक से खून आने लग गया और थोडी ही देर में महाराज खत्म हो गये। महिला ने देखा कि महाराज तो खत्म हो गये, मर गये। उसे यह समावना नहीं थी लेकिन अब क्या हो वह बहुत घबरायी कुछ समय के लिए दिग्मूढ सी हो गई। फिर उसने गड्ढा खोदा और उसमें महाराज को दफना दिया उसे ढक दिया। ढकने के बाद वह निश्चित हो गई

और सोचने लगी कि, अब मुझे कोई जानने वाला नहीं है, किसी को भी मेरा अपराध मालूम नही होगा। उसने ऐसा सोचकर दरवाजा खोल दिया जिससे किसी को वहम नहीं हो। इधर स्थानक के अन्दर महाराज इतजार कर रहे थे कि मेरा प्रिय छोटा साधु गोचरी के लिए गया अब तक नहीं आया। एक घटा हो गया, दो घटे हो गये, तीन घंटे हो गये। फिर भी वह नहीं आया तो महाराज ने श्रावक और श्राविकाओं को बुलाया और सारी बात समझाई।

श्रावक–श्राविकाओं ने खोज करनी चालू की। घर–घर, गली–गली में खोज की, जगल में खोज की। महाराज हो तो मिलें। उन्होंने तो अपनी साधना में दृढ रहकर शरीर को छोड दिया था। एक दिन बीत गया। आचार्य महाराज ने भोजन नहीं किया, साधुओं ने भोजन नहीं किया। जब तक महाराज नहीं मिले तब तक क्या करे। दूसरा दिन हुआ। दूसरे दिन भी खोज की। तीसरा दिन भी गया। तीन दिन हो गये। पूरा साधु समाज और आचार्य महाराज भूखे बैठे थे। लेकिन वह साधु नहीं मिला। यह बात उस महिला को मालूम हुई। उसने सोचा कि मेरी पाप वासना के कारण एक साधु मर गया और उसके बाद पूरे साधु भूखे बैठे हैं, खुद आचार्य महाराज भूखे बैठे हैं। तीन दिन हो गये किसी ने आहार नहीं किया। उस महिला को उसका पाप खाने लगा, महिला अन्दर ही अन्दर घबराने लगी। मैं कितनी पापिनी हू, अत्याचारिणी हू, सत घातिनी हू। मैंने साधु की हत्या कर दी, उसे मार डाला। मैंने घोर पाप किया है। उसकी आत्मा उसी को खाने लगी, उसका पाप उसी को कचोटने लगा। अब उसे न तो सोना अच्छा लगता है न पीना अच्छा लगता है। उसका जीना हराम हो गया तो मरना भी दुष्कर हो गया। चिता करने लगी। दु खी हो गई। आखिर उससे रहा नहीं गया। वह अपने घर से निकल कर स्थानक मे आई। वहा आकर उसने आचार्य महाराज को कहा कि हे आचार्य देव। मैं आप से एकात मे बात करना चाहती हू। मुझे कुछ समय चाहिए। महाराज ने एक भाई को दूर खडा कर दिया बोलो तुम्हें क्या कहना है। लेकिन उससे बोलते नही बन रहा था कहने लगी कि मैंने बहुत बडा पाप किया है। क्या किया है ? उसने साहस बटोर हिम्मत कर कहा कि आपका प्रिय चेला, जो बहुत गुणवान था, सुन्दर था। वे मेरे घर भिक्षार्थ आये थे। मैं अकेली थी। मैंने उनकी जवानी को देखकर, रूप को देखकर उन पर मोहित हो गई। मेरे पति विदेश हैं। उस हवेली के अदर और कोई नहीं था। मेरा मन डोल गया और मैंने मुनि राज से कहा, महाराज– आप मुझे स्वीकार कर लीजिए, यहा आराम से रहिये। लेकिन वे महाराज अपने सयम जीवन की

साधना मे पक्के निकले। मैंने बहुत कहा लेकिन वे जरा भी विचलित नहीं हुए, बात नहीं माने तो मैंने अपने अपराध को छुपाने के लिए एक डण्डा उठाया और महाराज के मार दिया। लेकिन महाराज एक ही डण्डे में गिर गए खत्म हो गए। मैंने अपने घर के अदर खड्ढा खोदकर आपके प्यारे शिष्य को दफना दिया है। यह मैंने घोर जघन्य पाप किया है, घोर कुकर्म किया है। मैं पापिनी हू, मैं कुलक्षिणी हू। मैं अपने पापों की स्वीकार करती हू। मेरी क्या गति होगी ? मेरा कैसा उद्धार होगा ?

आचार्य गुरुदेव ने जब यह बात सुनी तो वे बहुत खुश हुए। उनकी आत्मा को शाति हुई। आचार्य श्री ने कहा कि मैं इस बात से बहुत खुश हू कि मेरे प्यारे चेले के सामने अनुकूल परीषह आया लेकिन वह अपने सयम में पक्का रहा कुर्बानी दे दी लेकिन वह विचलित नहीं हुआ। जो व्यक्ति अपने चरित्र में दृढ रहकर अपने सयम में स्थिर बनकर इस जीवन को छोडता है वह अमर हो जाता है। गुरु महाराज ने कहा– हे श्राविका, तुझे घबराने की जरूरत नहीं है। अपराध जरूर किया है लेकिन अपने अपराध को स्वीकार करना भी महानता है। उस महिला ने कहा कि मेरे अपराध का प्रायश्चित क्या है ? तो गुरुदेव ने कहा कि कल सवत्सरी आ रही है। उस सवत्सरी के रोज जो श्रावक–श्राविकायें बैठे रहेंगे परा सभा–हॉल भरा रहेगा उन सब के सामने खड़ी होकर जो पाप किए हैं उसे कहने कि अगर तुम्हारे मे हिम्मत हो तो तुम्हारे सारे पाप धुल जायेगे। महिला ने कहा, अगर मेरे कहने से ही सारे पाप धुल जाते हैं तो मैं तैयार हू। मैंने पाप किया है, घोर पाप किया उस पाप को धोने के लिए सारी दुनिया अगर मेरी निदा करे तो भी मैं तैयार हू लेकिन मेरे पाप धुल जाने चाहिए। गुरुदेव ने उस महिला से कहा कि कल सवत्सरी के रोज काली साड़ी पहन कर आना और यहा आकर अपनी बात कहना। वह महिला चली गई और गुरुदेव ने अपने श्रावक और श्राविकाओं को कह दिया कि मेरे चेले को ढूढना बद कर दीजिए वह मिल गया। वह ससार से चला गया कोई बात नहीं है लेकिन उसका सयम उसकी साधना, उसका चरित्र नहीं मरा है इसलिए आप उस चेले को ढूढना बद कर दीजिए। श्रावक और श्राविकाओं को बहुत आश्चर्य हुआ कि पता नहीं चेला कैसे मिल गया लेकिन गुरुदेव ने कह दिया तो सबने मान लिया।

दूसरे दिन सवत्सरी आ रही थी। आज सवत्सरी के दिन जैसा आपका यह सभा भवन भरा हुआ है उसी तरह वह हॉल भी भरा हुआ था। वह महिला उस हॉल में आयी और उस महिला को सबके सामने खड़ा किया गया। खड़ा

करके उससे कहा गया कि बोलो, तुम क्या कहना चाहती हो ? महिला ने अपनी बात कहना चालू की। उसने सारी बात बताई कि आप गुरु महाराज के जिस चेले को ढूढ रहे थे वे महाराज मेरे यहा पर आये थे। मैं उनको अदर ले गई मैंने अपनी खराब भावना उनके सामने रखी। उनको प्रलोभन देकर सयम से डिगाने का बहुत प्रयास किया लेकिन वे सयम के पक्के निकले। मैंने खींजकर उनको लकड़ी मार दी और वे लकडी के प्रहार के कारण मर गए। उस महिला ने सारी बात उपस्थित महिलाओं और पुरुषों के सामने स्पष्ट कहना चालू कर दिया। उसने यह नहीं सोचा कि ये सब लोग मुझे क्या कहेगे ? मेरी इज्जत इससे मिट्टी में मिल जायेगी यह बात उसने नहीं सोची। उसने झूठी इज्जत की परवाह नहीं की। उसने सारी की सारी सच्ची–सच्ची बात सबके सामने कह दी। उसने यह नहीं कहा कि महाराज ने मुझे छेडा, छेडने के कारण मैंने उनको लकड़ी मार दी। यदि ऐसा कह देती तो दुनिया को क्या मालूम कि क्या हुआ ? लेकिन उस महिला ने सवत्सरी के रोज सारी बात स्पष्ट रख दी। श्रावक और श्राविकाओं ने सुना तो उनका खून उबल गया, और उनको भयकर गुस्सा आया कि यह महिला लम्पटी है, कामी है, दुराचारिणी है, कलकिनी है, घोर व्यभिचारिणी है। पूरी सभा में भयकर रूप से उसकी निदा होने लग गई। सब लोग उसकी निदा करने लगे, उसको गाली बकने लगे। पूरी सभा को उसके प्रति इतना गुस्सा आया कि वे कहने लगे कि इसको पत्थरो से मारों, इसको जूतो से मारो, ऐसी महिला को इस सभा से बाहर निकाल दो। इस तरह से पूरी सभा में हगामा मंच गया। पूरी सभा जोर–जोर से बोल रही थी। तभी आचार्य गुरु देव ने हाथ खडा किया और हाथ खडा करते ही सारी सभा चुप हो गई शात हो गई। जिस समय मे सारी सभा निदा कर रही थी, सारी सभा के लोग गालिया बक रहे थे उस समय वह महिला शाति के साथ सुन रही थी। वह सोच रही थी कि ये पुरुष व महिलाए सच्ची बात कह रहे हैं। मैं कामी हू, मैं कुलक्षिणी हू, मैं व्यभिचारिणी हू। मैंने साधु की हत्या की है, मैंने घोर पाप किया है। ये जो कुछ भी कहते हैं वह सब सही बात कह रहे हैं। 10 मिनिट तक पूरी सभा में शोर–शराबा चलता रहा। करीब–करीब सारे लोगो ने निदा की। उस निदा से क्या हुआ एक चमत्कार घटित हुआ। वह काली साडी ऑटोमेटिक रूप से सफेद होने लगती है। वह धुलने लगती है और साडी धुलती जाती है। 10 मिनिट में वह साडी बिल्कुल सफेद हो जाती है। लेकिन उस साडी पर दो धब्बे रह जाते हैं। दो काले छापे रह गये। बाकी साडी एकदम सफेद हो

गई। उसके बाद गुरु महाराज ने अपना वक्तव्य जारी किया। उन्होंने कहा कि इस औरत ने जितना बडा पाप किया है उतना ही बडा धर्म किया है। इसने अपने सारे पापों को सबके सामने स्वीकार कर लिया है। सच्चे दिल से इस ने अपराध को मान लिया है। लेकिन इस पूरी सभा में दो व्यक्ति ऐसे हैं जिन्होंने इसकी निदा नहीं की, गाली नहीं निकाली।

आचार्य देव ने दोनों श्रावकों को खडा किया। जो समताशील थे, त्यागी थे, पूरे समाज का आदर्श थे। उन दोनों श्रावकों ने निंदा नहीं की। आचार्य महाराज ने पूछा, अरे ! तुमने निदा क्यों नहीं की ? गाली क्यों नहीं बोली ? तब उन्होंने कहा, गुरुदेव ! यह महिला बहुत पुण्यवान है, बहुत बडी सती है। अपराध तो किसी भी व्यक्ति से हो सकता है, व्यक्ति बडे से बडा पाप कर सकता है, लेकिन अपराध को इतनी बडी सभा मे स्वीकार कर लेना बहुत कठिन काम है। यह बहुत पवित्र आत्मा है। हमने भी पाप किये हैं लेकिन हम हिम्मत नहीं रखते। इसने कितनी हिम्मत की है, यह तो महान् पुण्यवान है। अगर हमें निदा करनी है तो हम हमारी निदा करेंगे, औरत की क्यों करे ? इससे तो हमारी आत्मा दूषित बनेगी। ससार सागर मे रूलेगी।

आचार्य देव ने कहा कि इस भरी सभा के अन्दर दो व्यक्तियो ने निदा नहीं की बाकी सभी ने इसकी निदा की। इसकी निदा करने से इसके पाप धुल गये। इसका प्रमाण यह है इसकी काली साड़ी एकदम सफेद हो गई। केवल दो बिदु रह गये, धब्बे रह गये। इसलिए कि इस सभा में दो श्रावकों ने इसकी निदा नहीं की। आचार्य देव ने उस महिला से कहा बोलो तुम अपने मुह से मिच्छामि दुक्कड। मिच्छामि दुक्कड को दो बार बोलते ही दोनो धब्बे एक ही झटके के साथ गायब हो गये। साडी एकदम सफेद हो गयी। आचार्य महाराज ने कहा कि इसने जितना बड़ा पाप किया है, सारा का सारा इसका पाप धुल गया है। यह एक सती सन्नारी हो गई है। उसने सयम जीवन स्वीकार कर लिया, साध्वी बन गई। सबकी पूजनीय बन गई। फिर आचार्य महाराज ने सभा को सबोधित करते हुए कहा इस सभा के अन्दर दो लोगों ने इसकी निदा नहीं की, गाली नहीं बकी। लेकिन यह बताओ कौन व्यक्ति ऐसा है जिसने एक भी पाप नहीं किया हो ? जिसने अपनी जिदगी को सम्पूर्ण रूप से पवित्र बनाये रखा हो, गलत बात नहीं कही हो, गलत बात सोची नहीं हो ? अगर नहीं तो इस महिला की निदा करने का आपको कहा अधिकार था ? पहले अपने गिरेबान को खोलकर देखिये कि मैंने कितना पाप किया है ? कितनी बार परस्त्रीगमन किया है ? व्यभिचार का सेवन किया है,

जुआ खेला है, दूसरो को ठगा है। पहले स्वय के पापो को खोलकर देखिये। हमे अपनी निदा करनी चाहिए, हम अपनी आलोचना करे, अपनी आत्मा की शुद्धि करे। तो ही जाकर सवत्सरी मनाना सार्थक हो सकता है। उस महिला ने सच्चे दिल से सवत्सरी मनाई इसलिए इसके सारे पाप धुल गये। आप भी मनाएगे, लेकिन कब मनाएगे ? रात को। जब प्रतिक्रमण होगा और आप लोग खमत–खामना, खमत–खामना बोलेगे। लेकिन अपनी आत्मा को पवित्र बनाना है, निर्मल बनाना हे तो उस महिला की तरह आलोचना करिये।

ज्यादातर लोग मिच्छामि दुक्कड कुम्हार का देते हैं। मटकी फोड दी बाद मे बोले मिच्छामि दुक्कड। फिर मटकी फोड दी। फिर मिच्छामि दुक्कड ऐसा मिच्छामि दुक्कड किस काम का ? अगर सच्चे दिल से सवत्सरी मनानी है तो अपने आप के पापों को धोने का प्रयास कीजिए, अपने दिल मे पवित्रता लाइये, समता की भावना पैदा करिये। आज परिवार के बीच झगडे हो रहे हैं, मा–बाप, भाई–भाई, पति–पत्नी का। आप उससे माफी माग लीजिए। माफी मागने वाला इसान छोटा नहीं होता। महावीर की दृष्टि से क्षमा मागने वाला इसान वीर होता है। "क्षमा वीरस्य भूषणम" । क्षमा वीरो का आभूषण है, आपको महावीर का अनुयायी बनना है तो क्षमा मागना सीखिये भले ही आपने अपराध नहीं किया हो, गलती सामने वाले की हो और भले ही सामने वाला व्यक्ति माफी मागता है या नहीं। इसकी परवाह मत करिये पर आप सच्चे दिल से माफी मागे। वह पाप धुल जाएगा। जो कठोर से कठोर तपस्या से नहीं धुल सकता, वह पाप, सच्चे दिल से माफी मागेगे, क्षमायाचना करेगे तो धुल जाएगा, आप पवित्र हो जाएगे। इसलिए इस सवत्सरी के रोज अपने दिल और दिमाग मे यह बात अच्छी तरह से धारण कर ले कि मुझे सच्चे दिल से माफी मागनी है।

मैं क्या कहू। इस समय में हमारी सवत्सरी ज्यादातर हसी का पात्र बन गई है, क्योकि हमारे भाई सवत्सरी के नाम से लड रहे हैं। समाज मे आएगे तो केवल अपनी मूछ ऊची रहनी चाहिए, अपनी बात रहनी चाहिए, यह धारणा लेकर सवत्सरी मनाने के लिए तैयार होगे तो वह सवत्सरी कर्मो को न घटाकर और बढाने वाली होती है वे चाहे श्रावक हो या साधु हो। अगर साधु भी सच्चे दिल से क्षमा याचना नहीं करता है, अपने अहकार को लेकर चलता है, अपने क्रोध को नहीं छोडता है तो साधु का भी कल्याण नही हो सकता है। कल्याण तभी होगा जब कि आज सवत्सरी के रोज अपने अहकार को भूल जाये, अपने अपमान को भूल जाये, ईर्ष्या को भूल जायें, सम्मान को

भूल जायें और भगवान महावीर के चरणो मे सच्ची क्षमा याचना की कोशिश करें, माफी मागने की कोशिश करें। भगवान महावीर ने कहा कि एक सवत्सरी भी सच्चे दिल से मना लें तो आपका मोक्ष निश्चित है, दुनिया की कोई भी ताकत आपका मोक्ष नहीं टाल सकती। अपनी आत्मा को आगे बढाना है तो इस सवत्सरी कोई जैनियों का ही पर्व नहीं है। पूरी मानव जाति प्राणी वर्ग का कल्याण इस पर्व मे रहा हुआ है। यह सवत्सरी एक साइण्टिफिक प्रक्रिया है। इस साइण्टिफिक प्रक्रिया को समझकर अपने जीवन के साथ जोडने का प्रयास करें। मैं समझता हू, पूरे विश्व के अन्दर यदि जरा भी शान्ति है, जरा भी अहिसा है तो उस सब के मूल मे यह जैन धर्म है और यह सवत्सरी का पर्व है। विचारों का भयकर प्रदूषण पूरे विश्व मे हो रहा है, यह सवत्सरी उसको साफ करती है। क्योकि आज के रोज हजारो–लाखो आदमी उपवास रखकर अपने मन को साफ करते हैं, शुद्ध चिन्तन करते हैं, समता का चितन करते है विश्व कल्याण की भावना रखते हैं। इसलिए वायुमण्डल शुद्ध होता है, प्रदूषण की भावनाए समाप्त होती हैं।

अभी आपके सामने एक भाई ने जैन समाज मे आडम्बरकारी बहुत सी बाते रखी। उनको मैं रखता, लेकिन आपने स्वय गलती को समझा। जैन समाज मे बहुत आडम्बर हो रहा है। शादी ब्याह के नाम पर जिस जैनी को जीवों की रक्षा करनी चाहिए वे जीवों का सहार कर रहे हैं। शादियो मे फिजूलखर्ची हो रही है। लाखो रुपये शान–शौकत बढाने मे लगाये जाते हैं। फूलो को बिछाने मे हिसा हो रही है। यह चद समय का आडम्बर जिन्दगी को खराब करने वाला है। यह पैसे का भयकर दुरुपयोग हो रहा है। इसकी बजाय सच्चे दिल से इसान की सेवा करना सीखे। यहा के वासी इस बात को समझेगे तो यहा का जैन समाज बहुत बड़ा कार्य कर सकेगा। सही ढग से क्षमापना पर्व को मनाने के लिए इसे जीवन मे उतारने की कोशिश करे। अगर इस क्षमापना पर्व को अपने जीवन के साथ जोडने की कोशिश करेंगे तो आपकी आत्मा मगल अवस्था को प्राप्त होगी।

अभी–अभी श्री सघ की ओर से साधु–साध्वियों से क्षमा याचना की। उन्होने कहा कि हमारे द्वारा कोई अपराध हो गया हो, हमारी व्यवस्था में कोई कमी रही हो तो क्षमा मागते हैं। अरे ! आप क्या अपराध करते हैं ? मैं इस मच पर जब खडा हो जाता हू तो मैं किसी से नहीं डरता। अगर मैं किसी से डरता हू तो केवल अरिहत भगवान से, कि उनके प्रतिकूल एक भी शब्द नहीं निकालना चाहिए, इसके अलावा दुनिया में किसी से नहीं डरता। उस

समय जो मुझे सच्ची हितकारी बात नजर आती है उसे कहने मे कोई सकोच नहीं करता भगवान महावीर के बताए हुए सिद्धात हैं हम उनको माने। इस चातुर्मास में मैंने निरन्तर भगवान महावीर के सिद्धातों को आप तक पहुचाने का प्रयास किया है, लगातार मैं बोला हू। हमारे सम्पर्क से, हमारे साधुओ के सम्पर्क से, हमारी साध्वियों के सम्पर्क से, उनके व्यवहार से, बोलने से, गोचरी से अगर आपको मन मे जरा भी बुरा भाव आया हो, आपकी किसी भावना को ठेस पहुची हो तो मैं सबकी की ओर से आप श्रावक-श्राविकाओ से क्षमा याचना करता हू। जो बातें आपके सामने कही है, उन बातो को जीवन के साथ जोडने की कोशिश करे। आप हमारे हैं और हम आपके हैं इसलिए जो अपने होते हैं उनके सामने कहने मे कोई सकोच नहीं होता। सघ के अधिकारी, कार्यकारिणी के सदस्य, सघ से जुडे सभी पुरुष व महिलाए गुणवान हैं, सभी को जीवन मे एक-दूसरे का सहयोग करना चाहिए। झूठी बातों की ओर ध्यान नहीं देना चाहिए। गलत भाव पैदा नहीं करना चाहिए। इस सघ की जितनी प्रशसा की जाय, जितना गुणगान किया जाय वह कम है। यहा के सघ की जो कुछ भी साधना की सीमा है उस साधना की सीमा को आगे बढाइये यहा के सघ कार्यकर्ताओ की सयमी जीवन की सुरक्षा रखने के लिए, भगवान महावीर की परम्परा को अक्षुण्ण रूप से चलाने के लिए अपना योगदान निरन्तर देता रहेगा, मर्यादा के सरक्षण के लिए सघ अग्रणी रहेगा, यह मैं अपेक्षा करता हू। यहा के सघ के अधिकारी, सदस्य इस बात का ख्याल रखेगे, इस बात को जीवन के साथ जोडने का प्रयास करेगे। इसके साथ ही हम सभी लोग अरिहत भगवान से क्षमा याचना कर लेते हैं, जिन्होंने साधना का मार्ग दिखाया है। हम उनके सिद्धातो को लेकर आगे बढेगे तो हमारा जीवन मगलमय भविष्य को प्राप्त करेगा। आप श्रद्धा से हमारी बात को सुन रहे हैं इससे हममे खुशी है। उपर्युक्त तरीके से अगर हम अपने जीवन को बनायेगे तो हमारा सवत्सरी पर्व मनाना सार्थक हो सकेगा। सवत्सरी आ रही है और जा रही है लेकिन आप यह मत भूलिए कि चातुर्मास नहीं जा रहा है। चातुर्मास के अभी 70 दिन बाकी हैं आप यह मत भूल जाना। अब कुल 4 महीनों में 70 दिन हमें स्थानक के अदर रहना है। ऐसी स्थिति में श्रावक-श्राविकाओं से निवेदन है कि वे सच्चे दिल से जिनवाणी को सुनने के लिए समय निकाले। सवत्सरी के रोज अपने आपको भूलने का प्रयास न करे, अपने आपको जोड़ने का प्रयास करें। अगर भविष्य के 70 दिन सही ढग से निकालेंगे तो आपका चातुर्मास कराना सार्थक हो सकेगा। इस चातुर्मास

को सही ढग से उत्तरोत्तर आगे बढाने के लिए आपको अधिकाधिक धर्म-ध्यान करना अपेक्षित हैं।

हमे लाइसेस रिन्यू करना है। हम जैन हैं, हमारे लिए प्रतिक्रमण कर लेना ही जरूरी नही है। जैन के लिए सात बाते ध्यान रखना जरूरी है– जो जुआ नहीं खेलता, जो मास नहीं खाता, जो अण्डा नहीं खाता, जो शराब नहीं पीता, जो चोरी नही करता, जो शिकार नहीं करता, जो परस्त्रीगमन नहीं करता, जो वेश्यागमन नहीं करता, जिनेश्वरों की वाणी पर श्रद्धा रखता है, वही जैन है। जो इन कुलक्षणो को छोडता है वह जैन है। आज शाम को ही यह निर्णय ले कि अगर हमने गलत काम किया है तो भविष्य मे ऐसा पाप नहीं करेगे, ऐसा गलत काम नही करेंगे, अपनी आत्मा को शुद्ध करेगे। तब जाकर हमारा सवत्सरी मनाना सार्थक होगा। निन्दा करना छोडिये और अपनी आत्मा का शुद्ध चिन्तन करना चालू करिये। समय आपका बहुत ज्यादा हो गया है, 12 बज चुके हैं। लेकिन ऐसे घडी की कितने ही बारह बज जाय हमारे कर्मों की बारह बजनी चाहिए, हमारे कर्म साफ होने चाहिए। मैं नहीं उकता रहा हू आप भी नहीं उकता रहे हैं। इसी प्रकार आपको धैर्य के साथ इन बातो को जीवन के साथ जोडना चाहिए। हर रोज तो हम आपके घर पगलिए करने आते हैं अर्थात् भिक्षा आदि के लिए आते हैं पर आज आप हमारे यहा आए हो क्योकि आज तो रोज नहीं आने वाला भी आता है पर जरा सोचें। जब हम आपके घर आए हों और आकर भी कुछ भी भोजन न ले तो आपको कैसे लगेगा। हम आपके घर से गोचरी नहीं ले तो आपको कितना दु ख होगा, कितनी पीडा होगी। सोचेगे महाराज घर पर आये, कुछ भी नहीं लिया, खाली चले गये, तो सोचिये मेरे को भी इस बात की पीडा नहीं होगी क्या ? जब आप श्राविकाओ ने यहा आकर भी कुछ नहीं किया तो। इसलिए आप भी कुछ लेकर जाय, सदगुण लेकर जाय और दुर्गुणों को छोडकर जाय। मैं समझता हू कि सच्चे ढग से कोई एक गुण भी आप ले लेंगे आज के रोज तो सवत्सरी पर्व को मनाना, महाराज के स्थानक मे आना सार्थक होगा और मुझे भी पीडा नहीं होगी। अगर हमारे यहा से कुछ भी ले जाएगे तो मेरे को भी .. । महाराज की आत्मा को शाति हो, तो इतना जो आपने सुना है उन सुनी बातों मे से कुछ न कुछ लेकर जाय और उस तरीके से अपना दिल और दिमाग बनाऐ तभी आपका जीवन समतामय होगा आप अपने कर्मों की निर्जरा करेंगे। इसी के साथ मैं सम्पूर्ण श्रावक–श्राविका समाज मे सबसे क्षमायाचना करता हू।

8

जैनियों ! भागो मत, जागो

वीतराग देव भगवान महावीर ने दो प्रकार का धर्म बतलाया है। दुविहे धम्मे पण्णत्ते–आगार चेव, अनगार चेव। धर्म दो प्रकार का प्रज्ञप्त है– आगार धर्म और अनगार धर्म। आगार धर्म से तात्पर्य गृहस्थ जीवन मे रहते हुए धर्माचरण से एव अनगार जीवन से तात्पर्य जैन सन्यास लेकर किये गए आचरण से।

इन दोनो मे से किसी भी धर्म को स्वीकार करने से पहले प्राथमिक भूमिका के रूप मे सम्यक्त्वी होना अनिवार्य है। बिना सम्यक्त्व के किसी भी व्रत का आचरण करने की भूमिका नहीं बनती। याने कि व्रताचरण करने से पहले जैनी बनना आवश्यक है। जैन कोई काष्ट विशेष न होकर एक जीवन्त धर्म है। जो तेरे–मेरे की भावना से ऊपर उठकर सत्य का परम साक्षात्कार करवाता है। जेन जन्मना नहीं कर्मणा माना जाता है। कर्म से जैनी होना ही सही माने मे जैन है। ऐसे जैनी को जुआ, मास, शराब, चोरी, शिकार, परस्त्रीगमन और वेश्यागमन का त्याग करना जिन्दगी भर के लिए अनिवार्य होता है।

जैन श्रावक और जैन सन्यासी बनने से पहले जैनी बनना अनिवार्य है। जैन श्रावक, 12 व्रतो का पालन करता हुआ धार्मिकता के साथ ही सदाचार, नैतिकता एव इन्सानियत की जिन्दगी जीने वाला होता हे। जैन सन्यासी तो अहिसा, सत्य, अचोर्य, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह के सिद्धातो का पूर्ण रूप से पालन करने वाला होता है, जो कि सिद्धातो के आचरण का एक उच्चतम आदर्श है।

आचरण की उच्चतम पवित्रता मे प्रवेश पाने वाले व्यक्तियों की मानसिक तरतमता के कारण कई जैन मतानुयायियों मे विकृति भी पनपती देखी जाती है।

घी में चर्बी काण्ड, शेयर घोटाला, जैन डायरी, व्यापारिक तस्करी कत्लखाना मे जबर्दस्त फाइनेस आदि कुछ सगीन काण्ड ऐसे हुए हैं जो निश्चय ही जैनियो के पवित्र भाल पर एक कलक है। इसके अलावा चरित्र एव खान–पान की पवित्रता मे भी निरन्तर कमी आई है। एक वो युग था, जब जैन श्रावकों को राजमहलो मे भी निराबाध प्रवेश दिया जाता। आज हर जैनी को शका–कुशका की नजरों से देखा जाने लगा है।

जैन श्रावक ही जैन साधुओं की भी शकास्पद स्थिति बनती जा रही है। जबकि जैन साधु पवित्रता एव चरित्र के आधार भूत होते हैं। उन साधुओं मे भी विकृतिया, भयकरता के साथ पनपती जा रही है। अपरिग्रह के परम आदर्श पर चलने वाला साधु जन कल्याण के नाम से भक्तो से करोडो रुपये एकत्रित कर पूजी निवेश कर रहा है। कितना भी कल्याणकारी कार्य हो पर भगवान महावीर की दृष्टि में साधु मर्यादित उपदेष्टा तो हो सकता है, पर सहभागी नहीं बनता। लेकिन कुछ मठधारी साधुओं के कारण जैन साधु की राष्ट्रीय, अन्तर्राष्ट्रीय छवि बिगडती जा रही है। इस परिग्रह के नाम पर ही तथाकथित अपरिग्रहधारी साधुओं की ओरगाबाद एव निम्बाहेडा मे की गई हत्या साधुता को प्रश्नाकित बना रही है। इसी प्रकार चारित्रिक दृष्टि से भी श्रमण सस्कृति में कुछ तथाकथित साधुओं के कारण चरित्रहीनता पनपी है। जहा जैनी के लिए परस्त्री माता एव बहिन बतलाई गई है। वहा जैन साधुओ के लिए ससार की समस्त महिलाए बहिन एव माता कही गई है। जैन साधु तो उनके स्पर्श की बात तो दूर रही, महिला से सस्पर्शित कपडे का भी स्पर्श नहीं करता। वह परपरागत सगट्ठा भी टाल जाता है। किसी महिला से एकान्त मे अकेले, साधु को और किसी साध्वी को एकान्त मे किसी पुरुष से बात करना भी सख्त निषिद्ध है। लेकिन जैनियों की अजागरुकता ने जैन साधुओ मे भी चरित्रहीनता को पनपाया है। यही कारण है कि गत दो तीन सालो मे ऐसा देखा जा रहा है कि हर 2–4 महीने बाद जैन साधुओ का एक सेक्स स्कैण्डल उभर कर आ रहा है।

यह कोई महत्त्वपूर्ण नहीं कि वह दिगम्बर साधु है या श्वेताम्बर स्थानकवासी, मदिरमार्गी या तेरापथी साधु हैं। लेकिन वे सब जैन साधु पहले हैं। दिगम्बर साधु नग्न रहते हैं। स्थानकवासी मुख पर चौडी मुख वस्त्रिका,

तेरापथी लम्बी मुखवस्त्रिका मुह पर लगाते हैं। जबकि मदिरमार्गी साधु मुख वस्त्रिका को हाथ मे रखते हैं। लेकिन है सभी भगवान महावीर के अनुयायी जैन।

किसी भी वर्ग विशेष के जैन साधु एव जैन श्रावक में पनप रही विकृतिया पूरी जैन समाज को प्रभावित करती है। अत बढती हुई विकृतियों के समूल उन्मूलन के लिए समस्त जैन समाज को जागरूक होना आवश्यक है।

जिस प्रकार एक भारतीय नागरिक के लिए भारतीय सविधानों की अनुपालना आवश्यक है। नियमों का उल्लघन करने पर भारतीय दण्ड सहिता के अन्तर्गत उसे दण्डित किया जाता है। उसी प्रकार प्रकार जैन साधु एव जैन श्रावक की भी आचार सहिता है। उसका उल्लघन करने पर भगवान महावीर की दृष्टि में तो वह दण्डनीय है। पर जब गुरु चेले दोनों स्वार्थ-परस्त हो जाय-तब जैन समाज/जन समाज को जागृत होना आवश्यक हो जाता है।

जैन सस्कृति, अन्य सस्कृतियों की अपेक्षा, विचार एव आचार दोनों ही दृष्टियो से पवित्रतम सस्कृति रही है। कतिपय व्यक्तियो के कारण वह दूषित परिलक्षित होने लगी है। विकृतिया पेदा करने वाले चन्द नाम हैं, जिन्हें अगुलियो पर गिना जा सकता है। लेकिन जन उद्धार का काम करने वाले नामों में भी जैनी सदा अग्रणी रहे हैं। जयपुर का सतोकबा दुर्लभ जी हॉस्पिटल एक ही जैनी का बनाया हुआ है। लातूर भूकप के बाद करीब 1400 अनाथ बच्चों को गोद एक ही जैनी ने ले लिया। अतीत के इतिहास के पृष्ठो में तो ऐसे सैकडो हजारों जैनियों के नाम मिल जाएगे, जिन्होंने अपने सद् आचरण के बल पर व्यक्ति से लेकर समूचे राष्ट्र को तन-मन-धन से सहयोग किया था। ऐसे उदारमना जैनियो की आज के युग मे भी कमी नहीं है। देश के कोने-कोने में जैनियों द्वारा सचालित हॉस्पिटल, कॉलेज, स्कूल, धर्मशाला, अनाथालय, छात्रावास आदि जनहित के हजारों काम देखने/ सुनने को मिल जाएगे। जैन समाज मात्र जैनियो के लिए ही नहीं अपितु समस्त जैन समाज वल्कि प्राणी मात्र के कल्याण में सक्रिय रहा और है। ऐसी स्थिति मे चद व्यक्तियो के गलत आचरण से सारे जैन समाज को बदनाम करना उचित नहीं कहा जा सकता। फिर कोई भी जैनी अगर गलत आचरण करता पाया जाता है तो पत्र पत्रिकाए आश्चर्य व्यक्त करती हुई छापती है कि जैनी होकर ऐसा । इससे स्पष्ट है कि उन प्रकाशकों के दिमाग मे भी जैन समाज की छवि वहुत उज्ज्वल है। किन्तु अमुक जैनी ने ऐसा किया। तो एक जैनी विशेष

के दुराचरण से सबको खराब कहना कथमपि न्याय सगत नहीं कहा जा सकता।

गुटका, पान मसाला, बीडी, सिगरेट जैसी छोटी–छोटी वस्तुओ के उपयोग का भी जैनियो मे परहेज किया जाता है। यदि कोई खाता भी है तो वह भीतर शर्मिन्दगी महसूस करता है। जबकि जैन समाज से इतर समाज मे देखे तो लोग ये वस्तुए तो क्या इससे भी भयानक वस्तुओ का बिना किसी शर्म के खुला उपयोग करते हुए देखे जा सकते हैं।

इसी प्रकार जैन साधुओ के चरित्र की समीक्षा कर लेना भी आवश्यक है। जैन साधु कनक–कामिनी का सर्वथा त्यागी होता है। वह जिन्दगी भर तक देश के कोने–कोने मे पदयात्राए कर नैतिकता का अपूर्व जागरण करता है। छोटे से छोटे जीव की भी हिसा नही करता। चाहे वह पृथ्वी का जीव हो या पानी, अग्नि, वायु, वनस्पति का ही। यही कारण है कि जिन साधनो से इन स्थावर कायिक जीवो की हिसा होती है उनका भी उपयोग नही करता। किसी प्रकार के वाहन का उपयोग नही करता।

किसी भी प्रसग पर झूठ नहीं बोलना। सदा सर्वदा सत्य बोलता है। वह भी निष्पापकारी सत्य।

छोटी से छोटी वस्तु भी अदत्त–बिना दिये नहीं लेता है। अति आवश्यक वस्तु को भी स्वामी की आज्ञा के बिना नही लेता। भले वह दात कुरेदने का तिनका ही क्यो न हो।

जैन साधु छ महीने की लडकी का भी स्पर्श नही करता सूर्यास्त के बाद उसके स्थानक मे स्त्री मात्र का और साध्वी के स्थानक मे पुरुष मात्र का प्रवेश निषिद्ध है। दिन मे भी साक्षी के साथ ही धर्म चर्चा की जा सकती है। बिना असमय मे साध्वियो को साधुओ के स्थानक पर और साधुओ को साध्वियो के स्थानक पर जाना निषिद्ध है। किसी भी विवाह शादी के लिए लडके–लडकी बताना निषिद्ध है।

जैन साधु किसी प्रकार पैसा–टका, मकान आदि नहीं रखता है। केवल लज्जा निवारणार्थ साधु 62 हाथ और साध्विया 97 हाथ कपडा रख सकती है, इससे ज्यादा नहीं। पोस्टकार्ड, लिफाफा तक अपने पास नही रखता। किसी को भी अपने हाथ से पत्र लिखकर नहीं देना। जन कल्याण के नाम से भी चदा चिट्ठा एकत्रित नहीं करवाना। कोई भी मठ आदि नहीं बनवाना। किसी भी जन कल्याणकारी सस्था का भी स्वय सचालन नहीं करना।

ज्योतिष ज्ञान के बल पर हस्तरेखा नहीं देखना। किसी की कुण्डली आदि नहीं बनाना। मत्र–तत्र–यत्र का प्रयोग नही करना। जिस गाव जाना, वहीं के शाकाहारी घरो से एषणीय आहार ग्रहण करना।

किसी भी गाव या शहर में मर्यादा के उपरान्त नहीं ठहरना। इन सब नियमो का पालन करना प्रत्येक जैन साधु के लिए आवश्यक है। यदि कोई साधु नियमो का उल्लघन करता है तो प्रत्येक व्यक्ति को उन्हे सावधान करने का पूरा अधिकार है।

अगर जैन साधु विश्व वन्द्य है तो प्रत्येक व्यक्ति को उसकी सुरक्षा करना भी अति आवश्यक है।

कुछ साधुओ के गलत आचरण से साधु समाज की प्रतिष्ठा को काफी धक्का लगा है। चाहे वे साधु किसी भी समाज विशेष के रहे हो, पर उनके दुराचरण ने पूरी जैन समाज की प्रतिष्ठा को प्रभावित किया है।

इतर समाज मे प्रतिष्ठा घूमिल हुई है। वैसे ही जैन समाज मे भी साधु–साध्वियो की प्रतिष्ठा दूषित हुई हे। जिसका यग जनरेशन पर काफी प्रभाव पडा है। वैसे ही यग जनरेशन, धर्म को जल्दी से मानने को तैयार नहीं। फिर ऐसी बाते सुनकर तो वे और भी अधिक दूर हटी है। बल्कि जैन साधुओ के पास जाने आने मे भी परहेज करने लगी है। अपने बच्चो तक को भी वह जैन साधुओ के पास जाने तक के लिए जेनी रोकने लगे हें।

लेकिन जैनियो ! भागो मत, जागो। इस प्रकार पलायन करना न उस जैनी के लिए और न ही पूरी जैन समाज के लिए उचित है। कुछ साधुओ के कारण सारे साधु–साध्वी समाज को नकारना ठीक नही कहा जा सकता। दस हजार साधु–साध्वियो मे दस बीस पचास साधु–साध्वी ऐसे निकृष्ट आचरण वाले निकल जाय तो सभी को कैसे नकारा जा सकता है। आम जैसा मधुर फल, फलो का राजा आम यदि कही से सडा हे तो सारा आम नही फेका जाता है, अपितु उस सडे भाग को ही काटकर अलग कर दिया जाता है। अवशेष आम उपयोग मे ले लिया जाता है। वही स्थिति यहा पर भी है।

चद जैन साधुओ मे दुराचरण की स्थिति आज की नही, अपितु ऐतिहासिक एव प्रागएतिहासिक काल से चली आ रही है। भगवान महावीर के समय में राजा श्रेणिक का पुत्र नदीषेण अनगार, घोर तपश्चर्या करके भी भटक गया। वेश्या के यहा रह गया। साधु वेश छोड दिया। महावीर का ससार पक्षीय जवाई जमाली भी धर्म सघ छोडकर जिन्दगी भर अलग रहा।

इसी प्रकार महावीर निर्वाण के बाद भी कई साधु–साध्वी, बल्कि आचार्य तक में चरित्र शैथिल्य आया। तथापि जिन शासन की गरिमा अक्षुण्ण बनी रही।

इसलिए जैनियो को चाहिये कि वे अपनी अस्मिता की सुरक्षा के लिए भागे नहीं जागे। जैन साधुओं की समाचारी से परिचित हो और अच्छे बुरे हर साधु के पास पहुचे और उनकी गतिविधियो का सूक्ष्मता के साथ अवलोकन करें। जहा कही भी स्खलना देखें बिना किसी सकोच के उस साधु से पूछ लें कि क्या उनका कार्य साधुचर्या के अनुकूल है ? यदि नहीं तो वे उसे सुधारें। अगर न सुधारें तो जो भी उनके गुरु हो, उन्हें सूचित करे। यदि गुरु भी ठीक नहीं तो जैन समाज के सामने बात रखी जाय। जैन समाज कडक कदम उठाए। पीछे न हटे। अभी कुछ अर्सो से जैन साधुओं की चरित्रहीनता के चर्चे दैनिक पेपरो मे भी छपते रहे हैं। यद्यपि इससे जैन समाज की प्रतिष्ठा रोड पर आ गई। चद साधुओ की घिनौनी हरकतो ने जैन समाज को कही का नहीं रखा। फिर भी घबराने वाली, पीछे हटने वाली या धर्म छोडकर भागने वाली बात नहीं है किसी भी धर्म, समाज पार्टी मे विकृतिया न आवे, वह पूरी तरह शुद्ध रह जाय यह कम सभव है। ऐसी स्थिति में केवल जैन समाज में ही विकृतिया आई हो तो ऐसी बात नहीं। खैर हमें दूसरो की तरफ न देखकर अपने को ही देखना है सशोधन करना है। स्वच्छ करना है। इस कड़ी मे एक दृष्टि से दैनिक पत्रिकाओ मे छपना भी अनुचित नहीं है। बीमारी, उभर कर बाहर आना जरूरी है। ताकि उसके कीटाणुओ तक को समाप्त किया जा सके। दैनिक पेपरों मे छपने से आम आदमी हर जैन साधु पर सशक हो उठा है। उसे हर एक में विकृतिया लगने लगी है। सबको कुशकाओ की दृष्टि से देखने लगा है। इसका परिणाम यह है कि साधु अब और अधिक सावधान रहने लगा है और आगे भी रह सकेगा।

जब एक दुकान पर छापा पडता है तो पूरा मार्केट सावधान हो जाता है।

पुराने जमाने में अपराधी को काला मुह कर, सिर मुडवाकर गधे पर बिठाकर पूरे शहर मे घूमाया जाता था। साथ ही उसके अपराध और दण्ड की घोषणा भी की जाती थी। यह प्रचलन इसलिए था कि जिससे अन्य लोग इसे देखे और अपराधों से परहेज करे। ऐसी स्थिति में अमुक जैन साधु की खुलकर होने वाली बदनामी अन्य जैन साधुओं के विशुद्धाचरण में सहयोगी बन जाती है। अत दुष्प्रचार से पीछे न हटकर आगे बढना सीखें।

महावीर की सतान है, कायरता, भगौडापन न लाकर वीरता लाए,

सामना करें। मुकाबला करें।

भगवान महावीर विशुद्ध रूप से साधुत्व का आचरण करने वाले जैन साधु-साध्वियों की 21 हजार वर्ष तक उपस्थिति बतलाई है। अभी तो 2½ हजार से कुछ अधिक ही बीता है। करीब 8½ हजार वर्ष बाकी है। तब तक शुद्ध साधुता का झडा इस देश में फहराता रहेगा।

21वीं सदी, उसके उज्ज्वल भविष्य के रूप मे उभरेगी ऐसा विश्वास है।

जगिये, जगाइये।
असाधुता का, चरित्र हीनता का
जमकर मुकाबला करें।
अहिसक असहयोग करे।
यह महावीर की सच्ची सेवा करना है।
उनकी परम भक्ति करना है।
उत्कृष्ट उपासना करना है।



9

बाहर के लिए भीतर को बदलें

श्रद्धाशील उपासकों! अतर की वीणा बजाने के लिए सकेत दिया गया हे। जब तक हम भीतरी वाणी को सही नहीं कर लेते, तब तक भीतर से प्रस्फुटित होकर बाहर प्रकट होने वाली वाणी सही तरीके से बन नहीं सकती। जिस व्यक्ति का मानस ठीक नहीं है, जिसका मानसिक तत्र सही नहीं है, उसका बाहरी शारीरिक तत्र भी सही नहीं हो सकता। बाहरी शरीर को सही तरीके से तन्दुरस्त बनाने के लिए, अतर की आत्मा की स्वस्थता का ख्याल रखना परमावश्यक है। आत्मा को सुचारू रूप से ऊर्ध्व गति प्रदान करने के लिए अतर के मन और बाहर के तन की समान रूप से स्वस्थता का होना अनिवार्य हे। बाहर के शरीर मे भले ही कोई रोग हो जाए, पर यदि मनोबल मजबूत होता है, आत्मबल दृढ होता है, तो काम चल सकता है। आत्मा एव मन की स्वतन्त्रता में शरीर की स्वस्थता का विशेष महत्त्व नहीं होता है। पर जब मन अस्वस्थ हो जाता है, तो शरीर की प्रक्रियाओं में परिवर्तन आने लगता हे।

मन के रोग ग्रस्त हो जाने से शरीर रोगग्रस्त हो जाता है। शोक, सताप, भय, वियोग से दु खी, क्रोध मान, माया, लोभ और मोहादि मन की रोग ग्रस्तता के प्रतीक हैं। आत्मा के साथ चले आ रहे अनादि काल के इन रोगों को समाप्त कर तन एव मन की स्वस्थता के लिए प्रभु महावीर ने फरमाया "जहा अतो तहा बाहि, जहा बाहि तहा अतो।" प्रभु ने बतलाया कि अदर की रुग्नता बाहर प्रकट होती है, बाहर की रुग्नता अतर की रुग्नता से पूरा सबध रखने वाली है। जिस प्रकार कि एक मटकी के अन्दर लकडिया जल रही है, उसके बाहर हाथ लगाने पर हाथो में जलन होगी, लकडिया अन्दर में जल रही है, परन्तु उसकी उष्मा मटकी के बाहर फैल रही है। यदि

उस मटकी के अन्दर शीतल पानी भर दिया जाता है तो मटकी के अन्दर रहे हुए पानी की शीतलता बाहर भी आती रहती है। यही मानवीय जीवन के भीतर और बाहर का प्रतिबिम्ब है। इसलिए प्रभु महावीर ने बाहर अस्वस्थता पर इतना जोर नही दिया, जितना कि अन्तर की अस्वस्थता को दूर कर आत्मा की स्वस्थता पर जोर दिया है। जब तक हमारे अतर की जागृति नहीं होगी, तब सही माने में सुख शान्ति की उपलब्धि नहीं हो सकती। शाश्वत शाति की सप्राप्ति हमको तभी होगी जब हम भीतरी जीवन को स्वस्थता प्रदान करेंगे, भीतरी जीवन की स्वस्थता तभी हासिल हो सकेगी जब कि हम आत्मा पर लगे हुए कषायों को विश्लेषित कर उन्हे पूरा करने का प्रयास करेगे।

उस अदर की अशाति को भग करने के लिए सबसे पहले हमें मोह की चिनगारी बुझानी होगी, आसक्ति को छोडना होगा, तब कहीं जाकर हमारा आन्तरिक जीवन स्वस्थ हो सकेगा।

मानव इस तरह के सम्बन्धो को लेकर चलता रहता है, पर हकीकत मे कोई सबध सही नही है, जैसे कि मेरे पाव मे काटा चुभ जाता है तो उसके कारण मेरे पूरे शरीर मे एक प्रकार के करट की अनुभूति होती है। पर यदि आपके शरीर मे काटा चुभ जाएगा तो मेरे शरीर मे कष्ट नहीं हो सकता, कुछ सवेदना ही हो सकती है।

प्रभु कहते हैं हकीकत मे ससार का कोई भी सम्बन्ध सही नही है, तुम उन सम्बन्धो को तोड डालो ये सबध कभी शाति नहीं देते बल्कि वियोग का दुख उत्पन्न करने वाले होते हैं। हमे चिन्तन करना चाहिए कि ससार के बाह्य सबध कुछ अलग है मेरा स्वरूप उससे भिन्न है। बाहरी भौतिक वस्तुओं का स्वरूप दूसरे प्रकार का है एव मेरी आतरिक अनुभूति का रूप अन्य तरह का है।

शास्त्रीय दृष्टि से इस तथ्य की पुष्टि हो सकती है। उत्तराध्ययन के नवमे अध्याय के अनुसार जब मिथिला नगरी के सम्राट श्रमण धर्म अगीकार कर चुके थे, तब इन्द्र ने उनकी परीक्षा लेने के लिए उन्हे (मिथिला) जलती हुई बतलाई। मिथिला नरेश जो साधु बन चुके थे कि परीक्षा के लिए पहुचा और कहा कि मिथिला नगरी जल रही है, लोग करूण क्रन्दन कर रहे हैं, तब परीक्षक स्वरूप आए देव को उन्होने उत्तर दिया कि भव्य मिथिला के जलने पर मेरा कुछ नहीं जल सकता।

अध्यात्म सम्पन्न साधकात्मा यही विचार करते हैं कि मैं अलग हू, शरीर भिन्न है और ससार अन्य है। गजसुकुमाल मुनि ने भी तो यही सोचा

था, यही कारण है कि दहकते हुए अगारो को भी माथे पर समता भाव से सहन कर लिए। कितनी सहनशीलता, किचित् मात्र भी क्रोध नही आया। जलते हुए अगारे, दहकते हुए अगारे और सिर पर ऐसी भयकर अवस्था मे बडे–बडे आध्यात्मिक कहलाने वाले साधक भी डिगमिगा जाते हैं, परन्तु गजसुकुमाल मुनि ने अतर के जीवन के मुख्य मूल रहस्य को समझ लिया कि मैं कुछ और हू और यह शरीर कुछ और है। आत्मा अलग है शरीर अलग है, आत्मा अजर अमर है उसका कोई कुछ नहीं कर सकता, उसका नुकसान देह के नुकसान से सम्बन्धित है।

शरीर नाशवान है, नश्वर शरीर को एक दिन तो जाना ही है। यह आत्म स्वरूप वे जान गए, अतर की जागृति उनमें आ गई, यही कारण था कि इतनी भयकर वेदना को भी समता भाव के साथ सहन कर गए। उस वेदना को सहने से ही गजसुकुमाल मुनि के भीतर के पट खुल गए। जब व्यक्ति मे सहनशीलता आने लगती है, शरीर की वेदना को सहने की समता आती है तो उस वेदना से उसका आतरिक व्यक्तित्व उभरने लगता है। किन्तु आज व्यक्ति की क्या हालत बन रही है, व्यक्ति को जरा सा कुछ कह दिया जाता है तो वह अपने अहकार पर चोट लगी समझने लगता है, अपने आपको अपमानित हुआ समझने लगता है, वैसी अवस्था में या तो वह क्रोध से चिल्ला उठेगा अथवा अदर ही अदर घुटता रहेगा। क्या ही अच्छा हो कि हम अपनी आत्मा के आतरिक मौलिक स्वरूप को समझते हुए मन की वृत्तियो का विश्लेषण करना सीखें, अतर के कषायों को विषयो को, विकारों को समाप्त करने का पुरुषार्थ करे। अन्तरात्मा की समीक्षा के लिए मन की स्वस्थता के लिए, तन की स्वस्थता के लिए अपने विचारो को अन्तर्मुखी, ऊर्ध्वमुखी बनाने का प्रयास करते हुए, जीवन की मौलिकता एव यथार्थता मे परिभ्रमण करें।

अन्तर की वीणा को बजने दो' सुज्ञ बन्धुओ में अन्तरनाद के विषय के बारे में आपको समझा रहा था, बात कुछ इसी ढग की चल रही थी, शायद आप पूरा ध्यान नहीं दे पाए हों। पूरी तरह से पकड नही पाए हो, क्योंकि अन्तर का समीक्षण करने के लिए व्यक्ति को अपनी दृष्टि अन्तर्मुखी बनानी होती है, अपने विचारों को स्वमुखी बनाने होते हैं। दृष्टि को अन्तर्मुखी बनाने के लिए, विचारों को स्वमुखी बनाने के लिए शरीर की अतिरिक्त शक्ति खर्च होने लगती है, पर वह वैसा चाहता नहीं है, शरीर की अतिरिक्त शक्ति लगाना नहीं चाहता, श्रम करना नहीं चाहता, जब व्यक्ति पुरुषार्थ से ही मुह मोड लेता है और असलियत से विमुख हो जाता है तो उसे अतर की समीक्षा, अतर की

स्वस्थता-स्वच्छता दुस्साध्य सी लगने लगती है। किन्तु यदि हमें सही माने मे आत्मस्थ होना है, समाधिस्थ होना है तो आज नहीं तो कल, कल नहीं तो कभी न कभी इस तथ्य को स्वीकार करना होगा, इसीलिए प्रभु महावीर ने कह दिया "जहा अतो तहा बाहि, जहा बाहि तहा अंतो।" प्रभु ने कहा कि बाहर का सबध अतर के साथ सयुक्त है, बाहरी रोग को, बाहरी बीमारी को समाप्त करने के लिए अतर में जाना ही हमारे लिए श्रेयस्कर होगा। जब हम अपने भीतर को ठीक कर लेंगे तो बाहर आप ही आप ठीक हो जायेगा। आपने देखा होगा कि जब पाव मे किसी प्रकार का फोडा हो जाता है, फोडा बाहर हुआ, किटाणु बाहर है, पर उसके इलाज के लिए जो डॉक्टर लोग दवा देते हैं, इजेक्शन देते हैं वह अन्दर मे दिये जाते हैं, क्योंकि उस जर्म्स की जड उस फोडे का आधार अन्दर मे रहा हुआ है। जब दवा से अन्दर की वह जड समाप्त हो जाती है, वह आधार दूर हो जाता है, तब बाहरी फोडा अपने आप ठीक हो जाता है। वैसे ही शरीर की हर बीमारी, शरीर की प्रत्येक रुग्नता का जर्म्स हमारे अन्दर मे रहा हुआ है। शरीर को स्वस्थता प्रदान करने के लिए पहले हमको अपनी आत्मा और मन को स्वस्थ बनाना होगा। कषायों के फोडे हमारे अदर मे रहे हुए हैं। क्रोध, मान, माया, लोभ और मोह हमारे भीतर में उलझे हुए हैं, जिसमे हमारा शरीर और आत्मा रुग्ण होता जा रहा है। हमको अपने मन का विश्लेषण करना होगा। मन के विश्लेषण के लिए विचारो को स्वमुखी बनाने के लिए वीतराग वाणी का श्रवण सशक्त साधन है। सत्सग के माध्यम से इन्सान अपने भीतर को भी आमूल वदल सकता है।



10

अनित्य देह में : नित्य आत्मा

श्रद्धाशील उपासको। प्रभु महावीर ने द्वादशागी के विशाल समुद्र को जिन्दगी को सजाने एव सवारने के लिए अनेकानेक मणियो से भरा है, जिन माणक मुक्ताओ को सम्पूर्णत यथार्थ दीर्घ–दर्शन कर पाना समव नहीं किन्तु यदि कुछेक बातो का भी हम गहराई से चिन्तन कर ले तो वे माणक मुक्ताए हमारे इस जीवन मे एक अद्भुत परिवर्तन लाने मे समर्थ हो सकती है, प्रभु ने कहा है कि "अनियच्चमावास मुवेई निच्च"। वे बोलते हैं कि अनित्य आवास मे नित्य आत्मा रह रही है, अस्थिर आवास मे स्थिर आत्मा निवास कर रही है। समझे आप अस्थिर आवास में कौन स्थिर अवस्थित है।

हमारा यह शरीर हकीकत मे अस्थिर है, परिवर्तनशील है, बदल रहा है। हरपल, प्रतिक्षण प्रतिपल हमारे इस शरीर मे परिवर्तन होता जा रहा है, इसमे बदलाव आ रहा है, बचपन से जवानी, जवानी से बुढापा इस बदलाव का प्रत्यक्ष प्रमाण माना जा सकता है। दुनिया की कोई ताकत इस अशाश्वत शरीर के परिवर्तन को रोक नहीं सकती, जो बदलना है वह बदलेगा ही। भले ही हम इस शरीर को हृष्ट–पुष्ट बनाने के लिए कितने ही साधनो का प्रयोग कर ले, लेकिन जिसकी नियति ही बदलने की है, जिसका स्वभाव ही क्षीण होने का है तो वह समाप्त होगा ही दुनिया की कोई ताकत उसके स्वभाव को बदल नहीं सकती।

प्रभु कहते हैं–" अनियच्चमावास मुवेई निच्च" कि इस अनित्य–अस्थिर आवास मे नित्य स्थिर आत्मा निवास कर रही है, आत्मा इसमे रह रही है। हम उस नित्य स्थिर आत्मा की ओर अपना ध्यान आकर्षित करने का प्रयास करे। यदि हमारा सारा चिन्तन, हमारी सम्पूर्ण शक्ति अनित्य निवास की ओर

ही चली गई तो उसमे निवास कर रही शाश्वत आत्मा को नही जान पाऐगे। शरीर अनित्य है, परिवर्तनशील है यही कारण है कि हमारे जीवन मे बदलाव आ रहा है, कभी सुख तो कभी दु ख, कभी शाति तो कभी अशाति, यह दुर्दशा हमारे जीवन के साथ अनादि काल से सयुक्त है, ये विभिन्न प्रकार की परिस्थितिया हमारी आत्मा के साथ चल रही है। उस परिवर्तनशील अस्थिर शरीर से हमारा ध्यान हटकर जब तक उस शाश्वत नित्य आत्मा की तरफ नहीं जाएगा, तब तक हम वास्तव में उस नित्य तत्त्व की अनुभूति नहीं कर पाएगे। जब हमे नित्य शाश्वत तत्त्व की अनुभूति ही नहीं होगी तब तक हम नित्यता को जान ही नहीं सकेंगे केवल अनित्यता मे ही हमारी दौड होती रहेगी, तब सुख और शान्ति भी अनित्य, अस्थिर ही प्राप्त होगी, सदा-सदा के लिए रहने वाली सुखानुभूति शाश्वत शाति का अनुभव हमे नहीं हो सकेगा, क्योंकि हमने नित्यता को पहचाना ही नहीं, केवल अनित्यता की एक परिधि मे ही हमारा यह जीवन चल रहा है। तो जरा सोचे कि अनित्यता से नित्यता की अनुभूति किस प्रकार होगी, हमे नित्यता का अनुभव करना है तो नित्यता का ध्यान धरना ही होगा।

जब हमारी वृत्तिया अनित्यता से नित्यता मे परिणित हो जाएगी, तब हमारी आत्मा अनित्यता के आवरणो से विलग होती हुई सम्पूर्णत स्वतत्र स्वावलबी बन जाएगी, वही स्वतन्त्र स्वावलम्बन की स्थिति हमारे जीवन मे शाश्वतता लाने वाली होगी, परन्तु वह स्वतत्रता आए तब है न, कितने-कितने विभावों मे हमारी आत्मिक वृत्तिया होती चली जा रही है, किन-किन कष्टो के मध्य गुजरती हुई भयकर दु खो का अहसास हमारी आत्मा कर रही है, कितनी अशान्ति व्याप्त हो रही है, उस अशान्ति के मध्य यदि शाति का प्रादुर्भाव करना है, उस दु ख की वेला मे सुखानुभूति करनी है, उन सारे सकटो का विमोचन करना है तो आत्मा का सम्बन्ध जो बाहरी तत्त्वो से रखा हुआ है, उस अस्थिर आवास के प्रति अशाश्वत तत्त्वो के प्रति जो हमारा लगाव है उन्हें दूर करें। पूर्ण रूप से हम निरासक्त भाव मे रमण करें। किन्तु यह हो नही रहा है आत्मा स्वतन्त्रता की उस परिधि से दूर हटती हुई पराधीनता की बेडियो में जकड़ती हुई चली जा रही है, यही कारण है कि हमारी आत्मा विकास के पथ से विमुख हो पतन की ओर बढती जा रही है अपने मौलिक स्वरूप नित्य का भान भूलकर अनित्य तत्त्वो के प्रति आसक्त बनी हुई है, यह अवस्था आज से नहीं, कल से नहीं जन्मों-जन्मो से इस आत्मा की बनी हुई है। केवल अनित्य पदार्थो के पीछे ही इसकी दौड भाग

होती चली आ रही है, परिणाम यह हुआ कि अनन्त जन्मों मे भटकने के बावजूद भी सफल नहीं हो पा रही है, शाश्वत सुख को वर नहीं पा रही है।

आपने राजा भर्तृहरि का नाम सुना होगा। एक पिंगला के प्रकरण से उन्होंने जीवन का बोध पा लिया, ससार से निरासक्त हो गए, सारा राज्य वैभव, भौतिक सत्ता सम्पति का परित्याग कर दिया, गृहस्थ जीवन से सन्यास ग्रहण कर लिया, अपने जीवन को बदल दिया, ससार से सन्यास मे परिवर्तित हो गए, पर पूर्ण रूपेण वे अपने आपको बदल नहीं पाए, यद्यपि घर बार कनक कान्ता का परित्याग कर दिया, सन्यास जीवन मे रमण कर रहे थे, पर पूरी तरह जीवन को बदल नहीं पाए, कुछ अनित्यता रह गई।

एक समय की घटना, वे मध्याह्न के समय जगल से गुजर रहे थे, रास्ते मे उनको एक चमकीला लाल पदार्थ दिखाई दिया। उनके मन मे आया कि यह मणी रत्न चमक रहा है, इसे उठा लेना चाहिए, परन्तु उनके अन्दर से आत्मा की आवाज आई कि तुमने तो ऐसे कई रत्नो का, सत्ता सम्पति का, धन वैभव का परित्याग किया है, अब इस मणि की तुमको क्या आवश्यकता है, तुम सन्यासी बने हुए हो, तुम नित्यता के रास्ते पर बढ रहे हो, अनित्यता का तुम्हारे लिए क्या महत्त्व है, यह आत्मा की अतर की आवाज थी, जिसका आत्म विश्वास दृढ होता है, जिसका मनोबल मजबूत होता है, तब प्रत्येक परिस्थिति एव सकट का शालीनता के साथ सामना करता हुआ, उन पर विजय हासिल कर सकता है, किन्तु जिसका आत्म विश्वास इतना दृढ नहीं होता है, वह मोह रूप शत्रु पर विजय भी हासिल नहीं कर पाता। मोह उसे हरा देता है, पर जिसका आत्म विश्वास दृढ हो जाता है वह मन पर मोह के आवरण से विचलित नहीं होता, बल्कि आत्मा की आवाज पर चलता हुआ उसको परास्त कर देता है।

मन और आत्मा में द्वन्द होने लगा। आत्मा का स्वर प्रस्फुटित हो रहा था कि तुम तो सन्यासी हो, निरासक्त होकर चल रहे हो इसके प्रति आसक्ति तुम्हारे लिए उचित नहीं है, दूसरी ओर मन से आवाज आने लगी कि अरे तुम्हारे काम नहीं आएगा तो क्या है उठालो तुम्हारे किसी भक्त के काम आएगा। बडी विचित्र अवस्था बन गई थी। आखिर मन की, मोह की विजय हुई आत्मा की आवाज दबी रह गई, निश्चय कर लिया कि मणि को उठा ली जाए किसी भक्त को खुश कर दिया जाएगा, वह निहाल हो जाएगा।

बन्धुओ ! जिस व्यक्ति ने ससार के रिश्तो का त्याग कर दिया, घर, पत्नी परिवार को जिसने दौड दिया पर भक्त का मोह नहीं गया, भक्त को खुश करने की भावना से उन्होने वह चमकता हुआ पदार्थ उठाना चाहा, मणिरत्न जानकर उसे उठाने लगे। जैसे ही उनका हाथ उस पर लगा तो हाथ लिप-लिप करने लगा, उनको बड़ा आश्चर्य हुआ कि यह क्या हो गया, हुआ क्या वे जिसको मणि मान रहे थे। वह थूक था, कोई पान खाता था, उसे कफ आता था, कफ आया थूका और वह पान का पिलापन उसमें मिक्सर हो गया, और वह सूर्य की किरणो के कारण चमकने लगा। उनको भान हुआ कि मैं कहा से कहा आ गया हू, कहा से ऊपर उठने का प्रयास कर रहा था और कहा इस चिपचिपे तत्त्व के प्रति इतना आसक्त बन गया, वे सभल गए, परन्तु हमारा क्या हाल हो रहा है, हम ससार के उन लिपलिप करने वाले अस्थाई तत्त्वो से कितने चिपके हुए हैं।

ससार का प्रत्येक तत्त्व अनित्य है, वे समाप्त होने वाले हैं, उनसे प्राप्त होने वाली सुख और शाति भी क्षणिक ही होगी, समाप्त होने वाली ही होगी। यदि हमको शाश्वत सुख की अनुभूति करनी है तो शाश्वत तत्त्व से ही होगी।" अनिच्चमावा-समुवेईनिच्च" यानी हम अनित्यता की परिधि में जकडे हुए उस नित्य तत्त्व को पहचाने, आत्मा की अनन्त शक्तियो का अहसास करे, उस पर लगे हुए शाश्वत आवरणो को दूर हटाए। जब अशाश्वत आवरण दूर हो जाऐंगे तो निश्चय ही वह शाश्वत स्वरूप प्रकट हो जाएगा, शाति की वह शाश्वत अनुभूति होने लगेगी, स्थाई सुख की उपलब्धि होगी। आत्मा के उन अनित्य अशाश्वत आवरणों को हटाए। आत्मिक वृत्ति को जगाए। मौलिकता में रमण करे। शाश्वत तत्त्व को पहचान कर शाश्वत शाति की अनुभूति करे। जो भी शाश्वतता को पहचानने का प्रयास करेगा, वह परम आनद परम सुख की उपलब्धि हासिल करेगा।

❑

11

मैं का संस्कार या असंस्कार

असखय जीविय मा पमायए
जरो वणीयस्स हु णात्थि ताण
एव वियाणहि जणे पमत्ते
किण्णु विहिसा अजया गाहिति

प्रज्ञाशील उपासको । आत्म बोध के लिए आत्म दृष्टि से पूर्णत विकसित आत्मा का आदर्श आवश्यक समझा जाता है, जिसकी हमें चाह है, जिसे हम अपनाना चाहते हैं, जिसके साथ जुडना ही नहीं, अभेद हो जाना चाहते हैं। उस आदर्श के प्रति व्यक्ति को "सर्वतो भावेन" समर्पित होना आवश्यक माना गया है। जब तक हमारा समर्पण आशिक रूप से रहेगा तब तक सही माने मे आत्म जागृति नहीं आ सकती। इसलिए प्रभु महावीर ने इस बात का स्पष्टत सकेत दिया है कि यदि तुमको वास्तव मे जागना है तो नींद को पूर्ण रूप से उडानी होगी। अलसाई आखों मे, अर्ध निद्रावस्था कभी-कभी जीवन की वास्तविकता, असलियत और हकीकत को छू नहीं पाएगी। व्यक्ति भले ही पूरी नींद नहीं ले, पर कुछ क्षणों की नींद भी उसके जीवन की सारी साधना को धूल मे मिलाने वाली बन सकती है। ड्राईविंग करने वाला व्यक्ति भले ही पूरी नींद नहीं ले रहा है, परन्तु कुछ क्षणो के लिए भी उसकी आख बद हो जाती है, तो वे क्षण भी उसकी जिन्दगी मे बहुत बडा खतरनाक मोड उपस्थित कर सकते हैं। घोर सकट मे डाल सकते हैं। ड्राईवर ने बडी सावधानी से कुशलता पूर्वक दस घण्टे लगातार गाडी को चलाया है, यदि उसके बाद बीच में दस सैंकड भी नींद ले लेता है तो वे दस सैंकड उसकी दस घण्टे की ड्राईविंग को खाक मे मिला देगे। वह दस घण्टे तक सुचारू

रूप से गाडी चलाने के बाद दस सैंकड की नींद गाडी का एक्सीडेट करा सकती है,

।। सुत्ता अमुणी मुणिणो सया जागरति ।।

उसके सम्पूर्ण पुरुषार्थ पर पानी फेरने वाली बन सकती हे। सारी ड्राईविंग बेकार हो जाती है। ठीक उसी प्रकार से जिदगी मे कुछ क्षण ऐसे आते हैं जो कि हमारे सारे जीवन को धूमिल करने वाले बन सकते हैं। सम्पूर्ण जीवन पर एक भयकर प्रश्नचिह्न खडा हो जाता है, शरीर के भीतर की जरा सी सुषुप्ति सारे जीवन को मिट्टी में मिलाने वाली बन जाया करती है, भले ही हम अपने आपको कितना ही जागृत करने का प्रयास करे, किन्तु अन्दर में जो हमारे सुषुप्ति आ गई है, अदर मे जो हमारे प्रमाद छा गया है, अदर मे जो आलस्य एव अकर्मण्यता की भावना सक्रिय बनी हुई है तो वह भावना उस व्यक्ति को कभी चैन से नही रहने देगी। आत्मस्वरूप के जागरण पर कुछ इस प्रकार की ग्रन्थिया छा गई है, जिन ग्रन्थियों को सही तरीके से विश्लेषण कर सही ढग से विमोचन नही किया गया तो ऐसी ग्रन्थिया समय-समय पर हमारे अन्त करण में उभरकर जीवन मे अनेक प्रकार की समस्याए खडी कर देगी। जैसे कि छोटे-छोटे रोग के किटाणु जब शरीर मे स्थाई रूप ले लेते हे तो वे जर्म्स शनै शनै केसर का रूप धारण कर लेते हैं।

केसर की उत्पत्ति के अनेक कारणो को खोजते हुए वैज्ञानिको ने बतलाया है कि जब शरीर में थोडे-थोडे रोगाणु एकत्र होकर अपना स्थान बना लेते हैं। उनका इलाज नहीं होता है। उन जर्म्स को जल्दी ही शरीर से निष्कासित नही किया तो वे बढते ही चले जाते हैं और वे छोटे-छोटे किटाणु बढकर एक दिन इतना भयकर विकराल रूप धारण कर लेते हैं कि फिर उसका इलाज ही समव नहीं रह पाता उस ग्रन्थियो की विकृतावस्था को केंसर की सज्ञा दे दी जाती है। जैसे यह शरीर की अवस्था है ठीक उसी प्रकार आत्म जागृति की अवस्था है। जीवन में शाति पाने के लिए महाप्रभु महावीर ने यह सकेत दिया कि हम अपने आपके मन का विश्लेषण करे। मन में उठने वाले राग द्वेषात्मक भावनाओं को देखने का प्रयास करे, आत्म जागरण मे बाधक बनने वाले सकल्पों विकल्पो को पहचानने की चेष्टा करें। जिनसे आत्मा अपने स्वभाव को भूल विस्मृति को प्राप्त होते हैं।

दिन-प्रतिदिन विभावो का प्रभुत्व जीवन पर बढता जा रहा है। विषय-कषायों और विकारो की जो अवस्था बढ रही है, उनका यदि हमने समय रहते

सही इलाज नहीं किया, उनको दूर भगाने का पुरुषार्थ नहीं किया, समाप्त करने का प्रयत्न नहीं हुआ, तो एक समय ऐसा आएगा कि मन मे उभरने वाले सकल्प–विकल्प भयकर रूप धारण करते हुए हमारी आत्मा को अस्वस्थ बनाते हुए चले जाएगे। उस विकृत वैभाविक अवस्था मे हम आत्म जागृति का अनुभव ही नहीं कर पायेगे हमारी मूर्च्छा इतनी प्रगाढ हो जायेगी कि स्वात्मा जागृति की स्फूरणा तक नही बन पायेगी, आत्मा उसी मे अत्यन्त दुष्कर बन जायेगा। बल्कि ज्यो–ज्यो सुलझने का प्रयास होगा त्यो–त्यो निरन्तर उलझाने वाला बनेगा। आत्मा दूषित होती चली जाएगी, वह पतन की ओर गमन करने वाली होगी। हमें वास्तव मे अपनी आत्मा का पराभव एव पतन नहीं करना है, उसको विकृत होने से बचाना है, उत्थान की ओर बढाना है तो, आत्मा का पतन एव पराभव करने वाली भावना से स्वात्मा का पतन एव पराभव करने वाली भावना से स्वात्मा का सरक्षण करना आवश्यक है। प्रभु महावीर ने जन हितार्थ जो सकेत दिया उसको समझने की आवश्यकता है। केवल समझकर ही नहीं रहना है उसको जीवन के साथ जोडना होगा, तब कही जाकर सही माने मे आत्मा की मौलिकता हमको प्राप्त हो सकती है।

प्रभु ने इसी बात को समझाने के लिए सकेत दिया है– "असख्य जीविय मा पमायए"। हे भव्य पुरुषो। भव्य साधको। हमारा जीवन असस्कृत है, इसलिए इस जीवन के प्रति जागृत बनो जीवन मे तुम प्रमाद मत करो प्रमत जीवन जीते–जीते अनादि काल बीत गए। जीवन की सफलता एव सार्थकता सिद्ध नहीं हुई अब तुम उस असस्कृत जीवन को सस्कृत बनाने का प्रयत्न एव पुरुषार्थ करो। सस्कृत से तात्पर्य सस्कृति से नहीं, सस्कारित अवस्था से लिया गया है। जीवन की परिष्कृत अवस्था से लिया जाता है। जीवन के असद् सस्कारो भावों को सशोधित परिमार्जित करते हुए जो आगे बढना है। जो परिवर्तन की अवस्था जीवन व्यवहार मे घटित होती है वह जीवन की अवस्था ही, असस्कृत से सस्कृत बनना है। सस्कृत मे एक ही शब्द के कई अर्थ निकाले जाते हैं।

असस्कृत का अर्थ अपरिमार्जित भी होता है। विकार युक्त भी होता है इस दृष्टि से चिन्तन करे तो प्रभु महावीर ने जो कहा है वह बिल्कुल यथार्थ है। उसमें किचित् भी सशय को स्थान नहीं है, हमारी यह आत्मा वैभाविक विकारी अवस्था मे, इस चतुर्गति ससार मे परिभ्रमण कर रही है। जो स्वरूप वास्तविक नहीं है। उसे वास्तविक मान रही है। इस विभ्रम दशा के कारण

ही यह चैतन्य ज्यो-ज्यो प्रयत्न करता है उसका विपरित परिणाम इसको भुगतान करना पडता है। परिणाम भुगतते हुए भी अपनी दूषित वैभाविक वृत्तियो के कारण वह उसका आरोपन दूसरो पर करके अपनी दशा को और मलीन एव मलीनतर बनाता चला जाता है। वह उसकी दिग्विमूढ अवस्था है यह अवस्था जब कुछ कम होती है तब वह अपने स्वरूप के प्रति कुछ जागृत बनती है। आप लोगो मे से कोई कह सकता है कि हम कहा अपावन है मलीन हैं। हमारा बदन और वस्त्र सब कुछ तो पावन है फिर हमारा जीवन अपवित्र किस प्रकार हो सकता है ? इस शरीर को साफ करने के लिए निरन्तर प्रयास करते रहते हैं इसे स्नान करवाते हैं, इसको धोते हैं, साबुन लगाते हैं, तेल लगाते हैं, सेन्ट लगाते हैं, अरे यही इस बात को सूचित करते हैं कि हमारा शरीर अपवित्र है जिसको हम निरन्तर पवित्र करने का प्रयास करते हैं, पर यह शरीर तो पवित्र होता ही नहीं है। सुबह साफ किया शाम को गदा हो गया, शाम को पवित्र किया सुबह पुन अपवित्र बन गया। जिसका स्वभाव ही अपवित्र है वह पवित्र होगा ही कैसे। जिसका जो स्वभाव है वह किसी भी हालत में बदल नहीं सकता, शरीर का स्वभाव ही अपवित्र है, उसकी यही मौलिकता है। आप इसके लिए कितना ही कुछ प्रयास करे यह सही हो ही नहीं सकता है, चाहे कितना ही आप तेल, साबुन, सेंट, पानी से पवित्र बनाने का प्रयास करो, पर यह अपवित्र हुए बिना रहेगा ही नहीं, क्योकि जिसका स्वभाव ही अस्वच्छता है वह स्वच्छता मे आ ही नहीं सकता, शरीर हमारा अपवित्र कैसे है इसे उदाहरण के तौर पर समझिए एक व्यक्ति अपने डाइनिग टेबल पर बैठा हुआ है, हाथ मे दूध का ग्लास है, जिसमे बादाम, पिस्ता, इलायची एव केसर आदि मिलाई हुई है दूध से सुगध प्रस्फुटित हो रही है, डायनिग हॉल उस दूध से निकलने वाली खुशबू से भरा हुआ है। वह दूध को पीने के लिए मुह लगाता है, उसी समय उसका एक रिश्तेदार उस घर में पहुच जाता है और उसे दूध का घूट लेते वह रिश्तेदार देख लेता है, और दूध का घूट लेने वाला आने वाले मेहमान को देख लेता है, दूध का ग्लास वह नीचे दूर टेबल पर रख देता हे उसका सत्कार सम्मान करता हे उसको बिठा कर उससे वह दूध का ग्लास देता हुआ कहता कि लीजिए यह दूध पीजिए। क्या वह आने वाला रिश्तेदार भाई उस दूध को पीएगा ? नहीं पीएगा, क्योकि वह दूध का ग्लास झूठा हो गया, दूध झूठा हो गया, कैसे हो गया, उसने उसको मुह लगा दिया, यह शरीर उस दूध को छू गया, जरा विचार कीजिए कि यदि वह झूठा दूध नहीं देकर दूसरा दूध देता तो वह

कितना खुश होता कि "शाह" जी ने कितना अच्छा बादाम, पिस्ता, इलायची और केसर वाला दूध मेरे को पिलाया, पर मुह लगने से वह दूध अपवित्र हो गया।

बन्धुओ ! सोचो जो दूध अपने आप मे पवित्र है, शरीर को पुष्टि देने वाला है, मेहमानों का आदर और सत्कार करने वाला है। वही दूध शरीर से टच हो गया, मुह ने उसको छू लिया तो वह अपवित्र हो गया तो यह शरीर कितना अपवित्र है, दूध को अपवित्र किसने किया ? इस शरीर ने ही तो अपवित्र किया। इसलिए प्रभु ने कहा कि यह शरीर अस्वच्छ है यह कभी स्वच्छ होने वाला नही है, एक व्यक्ति बाजार से दो हजार की कीमत देकर एक सुन्दर पौशाक लाता है और उसे पहनकर एक दिन वह बाजार मे चला जाता है, बाजार मे घूम फिर कर वह वापस आ गया, दूसरे दिन वह उस पौशाक को बेचने बाजार मे जाएगा तो क्या उसे दो हजार की कीमत मिल जाएगी ? नहीं मिलेगी। तो क्या उसकी कीमत घट जाएगी ? यदि घट जाएगी तो उस पौशाक की कीमत किसने घटाई ? इस पौशाक ने स्वय घटाई, या इस शरीर ने घटाई ? शरीर ने घटाई। अपवित्र शरीर के साथ वह पौशाक जुड गई तो वह भी अपवित्र हो गई, यानि उसकी कीमत घट गई। एक कोई गाडी खरीदता है, पाच दस दिन चलाकर उसको बेचने के लिए जाएगा तो वह सैकड हैण्ड मानी जाएगी, अपवित्र शरीर ने उसे चलाकर सैकड हैण्ड बना दी। अब आप ही सोचिए हमारा शरीर कितना अपवित्र है, इसलिए प्रभु महावीर ने स्पष्ट शब्दो मे यह बात कही है कि तुम्हारा यह शरीर अपवित्र है, तुम उसे कितना ही पवित्र बनाने का प्रयास करो यह पवित्र हो ही नही सकता। अत इस शरीर को पवित्र बनाने के लिए जीवन की शक्ति को खर्च मत करो। इस शरीर के भीतर रहने वाला जो आत्म–तत्त्व है तुम उसे शुद्ध करने की कोशिश करो, उसे पवित्र बनाने का प्रयास करो, यदि वह पवित्र बन गया तो बस सब कुछ पवित्र हो गया, और उसे अपवित्र नहीं बनाया और केवल शरीर को ही पवित्र बनाने का प्रयास किया तो कुछ भी पवित्र नहीं होगा, बल्कि प्रति समय मलीनता गहराती चली जाएगी। आत्मा को पवित्र बनाने के लिए, आत्मा की असस्कृतावस्था को सस्कृत करने के लिए यह पहली बात हुई अब आप दूसरे तथ्य को समझिए, प्रभु ने कहा कि तुम्हारा यह शरीर स्वस्थ नहीं है, यह पूर्णत स्वस्थ कभी हो ही नहीं सकता, बस शरीर में कोई न कोई बीमारी, कोई न कोई रोग तो बना ही रहेगा, सम्पूर्णत इस शरीर को कभी स्वस्थ बनाया ही नहीं जा सकता। इस

आधुनिक युग मे चाहे कितना ही वैज्ञानिक अनुसधान हो चुका हो, परन्तु सम्पूर्णत यह हमारा शरीर कभी स्वस्थ हो ही नहीं सकता है।

किसी वैज्ञानिक लेबोरेट्री में शरीर की जाच करवाई जाए, और उसके तुरन्त बाद पुन उसका परीक्षण किया जाएगा तो उसमे कुछ न कुछ तो परिवर्तन अवश्य ही जाएगा, पूरी तरह से हमारा यह शरीर स्वस्थ ही हो यह कभी नहीं हो सकता। प्रभु ने जो बात कही है, वह किसी भी हालत में असत् नहीं हो सकती, जो कुछ उन्होंने कहा वह शाश्वत है, नित्य है, उन्होने कहा कि यह औदारिक तन अपवित्र है और यह पूर्ण रूपेण पवित्र कभी नहीं बन सकता। इसके साथ ही उन्होंने इस तन को अस्वस्थ बनाया और कह दिया कि सम्पूर्ण यह शरीर कभी स्वस्थ नहीं हो सकता।

शरीर मे रोग प्रवेश करे इसके लिए कितने द्वार हैं ? हमारे शरीर मे ये रोम कितने हैं ? साढे तीन करोड रोगी हैं हमारे शरीर पर ओर एक–एक रोम में पौने दो–दो रोग की अवस्था विद्यमान है। इस अपेक्षा से इस शरीर में सवा पाच करोड रोगों का आस्तित्व रहा हुआ है। वैसी अवस्था मे हमारा यह शरीर पूर्णत स्वस्थ रह पाए ऐसा नही कह सकते हैं, अत हमे इस शरीर की निरोगता की अपेक्षा उसके अतर मे जो पूर्ण स्वस्थ होने वाला, पवित्र होने वाला आत्मा है उसकी और ही हम अपना ध्यान दे। इसके पश्चात भगवान ने एक बात और कह दी कि हमारा यह शरीर अनित्य है, कभी टिक नहीं सकता, इसमें कोई न कोई परिवर्तन अवश्य ही घटित होता रहता है शरीर स्वभाविक तौर पर समाप्ति की ओर गतिशील होने वाला है यह स्थाई रूप से कभी टिक नही सकता। मानव चाहे इसको कितना ही सुरक्षित करने का प्रयास करे पर यह शरीर जाने वाला है, दात टूट जाय तो नकली दात लगाये जा सकते हैं, टाग नकली लगाई जा सकती है, हृदय दूसरा लगा दिया जाएगा, पर एक समय ऐसा आएगा जो इस शरीर को समाप्त कर देगा, काल चक्र के आगे किसी का वश नहीं चल सकता है, शास्त्रीय धरातल पर प्रभु महावीर की वाणी को ही उन्होंने बताया है कि 199 वर्ष से ज्यादा कोई भी इसान आज के युग में जीवित नहीं रह सकता, यही कारण है कि आज आपको इतनी उम्र का कोई भी व्यक्ति नहीं मिल पाएगा। इससे कम उम्र वाले ही मिलेंगे। 150, 160 की उम्र वाले व्यक्ति मिल सकते हैं, पर 199 से ज्यादा उम्र का कोई भी नहीं मिल सकता। प्रभु की वाणी सत्य है शाश्वत है, उसमें किसी प्रकार का परिवर्तन नहीं हो सकता, क्योंकि उन्होंने जो कुछ कहा है वह सब परिपूर्णता प्राप्त करने के पश्चात् ही कहा है। यही कारण

है कि ढाई हजार वर्ष पहले कही गई प्रभु की बात आज भी जैसी की तैसी स्थाई है, दुनिया की कोई ताकत उसे असत् सिद्ध नही कर सकती। परन्तु मानव जो उस ओर ध्यान ही नहीं दे पाता। शरीर अनित्य है, मृत्यु शाश्वत है इसको यदि मानव अच्छी तरह से ठीक से समझ ले तो वह अपनी जिन्दगी को ही सफल बना लेगा, पर मृत्यु की शाश्वत शरीर की अनित्यता को समझे तब ना। आज का इन्सान पर पदार्थो के साथ जुडता जा रहा है। मृत्यु की शाश्वतता को भूलता जा रहा है, शरीर अनित्य ही है, इस बात को आज के वैज्ञानिक लोग भी स्पष्ट कर चुके हैं।

पावलफ नाम के एक वैज्ञानिक ने इस बात की खोज की। इस विषय का अनुसधान किया और जनता के सामने स्पष्ट कर दिया कि शरीर अनित्य है और यह अनित्यता को और बढाता रहेगा, यह कभी नित्यता को प्राप्त कर ही नही सकता है। उन्होने एक प्रयोग किया।

एक व्यक्ति बहुत शराब पीता था, पावलफ के पास उसे लाया गया, पावलफ ने कहा कि मैं इसको शराब छुडाने का प्रयास करूगा, उसे एक कुर्सी पर बिठा दिया और अपने अनुचरों से कह दिया कि यह जब भी शराब मागे तो उसे शराब दे देना और जैसे ही यह शराब पीने लगे तब उसे बिजली का झटका लगा देना, जब उसको दारु पीते समय झटका लगेगा तो हव समझने लगेगा कि शराब पीने से तो बिजली का झटका लगता है। इसलिए मेरे को दारु नहीं पीना चाहिए, यह विचार कर उसने उनके साथियो को वैसी आज्ञा दे दी। उसने आपनी आदत के अनुसार शराब मागा, अनुचरो ने शराब की बोतल हाथ मे दी जैसे ही वह पीने को हुआ बिजली का झटका लगा तो उसके हाथ से वह बोतल गिर गई, पुन होश मे आया तो उसे पुन वही शराब की बोतल दी गई वह शराब पीने लगा तो उसे पुन झटका लगाया गया ऐसे एक दो दिन तो उसके हाथ से बोतल गिरती रही, पर एक समय ऐसा आया कि उसके हाथ से वह बोतल गिरी नहीं बल्कि वह पीने लग गया, पीता रहा, पद्रह दिन बाद पावलफ वहा पर आया उसकी हालत पूछी तो उन्होने बताया कि हालत और भी खराब हो गई है पूछा क्या हुआ तो उन्होंने पावलफ को बताया कि कुछ दिन तो इसके हाथ से बोतल गिरती रही पर धीरे–धीरे स्थिति में परिवर्तन आया। अब तो शराब पीने से पहले बिजली का झटका लगने की इतजार करता है इसमें आनन्द मानने लग गया है, पहले तो हालत बिगड गई पर अब यह इसका अभ्यस्त हो गया, बिजली के झटके का इसको नया नशा लग गया, अब इसकी नयी आदत बन गई शरीर की

पूर्वावस्था बदल गयी। वह शरीर बिजली के झटके का अभ्यस्त बन गया। जब तक बिजली का झटका नहीं लगाया जाता तब तक वह शराब नहीं पीता।

पावलफ ने एक प्रयोग और किया, वह हमेशा सुबह कुत्तों को रोटी खिलाता और एक घटी बजाता, इस तरह पन्द्रह दिन लगातार घटी बजाने के साथ ही उसने उनको रोटिया खिलाई सोलहवे दिन पावलफ ने खाली घटी ही बजाई, तो वहा कुत्ते दौडे आए और एकत्र हो गए दुम हिलाने लग गए, उनके मुह से लार टपकने लगी, पावलफ विचार करने लगा कि इस घटी के बजने पर कुत्ते यहा केसे आ गए ? जब स्कूल की घटी बजती है तो कोई कुत्ता वहा पर नहीं जाता है, पर यहा कैसे आ गए ? पर उन कुत्तो की ऐसी आदत बन गई कि घटी बजने के साथ हमको खाने को मिलता है इस कारण वे वहा पर एकत्र हो जाते। इन आदतो के परिवर्तन की भाति ही इस शरीर मे प्रति समय परिवर्तन होता रहता हे। यह शरीर की अनित्यता है, इसको नित्य मे नही बदला जा सकता, वीतराग वाणी मे किसी प्रकार का परिवर्तन नही किया जा सकता, इसलिए यदि वास्तविक रूप मे जीवन को सार्थक करना है, जिन्दगी को सफल बनाना है तो हमे शरीर मे रहने वाले उस नित्य आत्म तत्त्व का चिन्तन करना होगा, जैसा कि प्रभु ने कहा कि " असख्य जीविय मा पमायए।' तुम्हारा यह जीवन असस्कृत है, अपवित्र है अस्वस्थ है अनित्य है। अत बन्धुओ प्रमाद को त्यागो और सदा-सदा के लिए अप्रमत्त भाव मे रमण करने का प्रयास करो। पर मेरे भाई उस अप्रमतत्ता को कहा समझ पा रहे हैं वे तो राशियो को लेकर चलते हैं। मेरी राशि सही नहीं है। अरे राशि तो राम और रावण, कृष्ण और कस की भी एक ही थी, पर उनके जीवन मे रात और दिन का अतर था, किसी को पूर्व दिशा मे जाना है और कोई कह देता है कि आज तो दिशा शूल है तो जाना गौण हो जाता है। इस प्रकार प्रमाद मे जीवन जीया जा रहा हे, पर मै आपसे पूछता हू कि जिस दिन पूर्व दिशा मे या किसी अन्य दिशा मे दिशा शूल है उस दिन उस दिशा में जाने वाली गाडिया क्या बद हो जाएगी ? प्लेन उडना बद जा जाएगी ? जब उसमे जाने वाले हजारो लोगों को दिशा शूल प्रभावित नही कर सकता तो आपको कैसे करेगा ? उनको दिशाशूल प्रभावित नहीं कर हमको करता है तो, इसका कारण यही है कि हमने वैसी विचारधारा बना ली हमारी सोच वैसी बन गई, राम और रावण की एक ही राशि थी, कृष्ण और कस की एक ही राशि पर कितना अन्तर था रात और दिन का अन्तर था। यह सब जानते

हुए भी हमारे अदर किस प्रकार की भावनाए काम कर रही है। हम असस्कृत जीवन की ओर ही जा रहे हैं। क्या हमारे जीवन की दशा बन रही है ? प्रभु महावीर ने कहा है कि "असख्य जीविय मा पमायए"। जीवन असस्कारित है, प्रमाद मत करो, अप्रमत्त भाव में रमण करते हुए उस पवित्रता को, नित्यता को पाओ। उन कुत्तो की तरह हमारी हालत न बन जाए, वे तो कुत्ते थे पर हम इन्सान हैं, वे नादान थे पर हम नादान नहीं हैं उनकी तरह नासमझ नहीं हैं, समझदार है। रावण की वृत्तियो को लेकर मत चलो राम की वृत्ति को अपनाओ। राम और रावण की एक ही राशि होते हुए भी रावण के अत करण मे मलीनता थी, अपवित्रता थी, उसका जीवन दूषित बन गया था, जीवन मे प्रमाद छाया हुआ था, उसके पास मान भी था, धन भी था, सत्ता शाति सब कुछ था परन्तु अन्त करण मे जो विकारी वासना छायी हुई थी उसने उसके जीवन को किस प्रकार से धूमिल कर दिया कि आज तक उसको बदनामी मिल रही है, उसके पुतले जलाए जा रहे हैं। आज कोई भी माता-पिता अपनी सन्तान का नाम रावण नही रखना चाहते हैं, कहीं पर भी आपको रावण नाम का इन्सान नही मिलेगा, आपको कोई मिला हो तो बात अलग है, पर हमको तो कोई नहीं मिला, गाव-गाव मे हमारा विचरण होता रहता है पर कहीं पर भी हमें रावण नाम का व्यक्ति नहीं मिला। क्यो सिर्फ इसलिए कि उसका जीवन असस्कारित था, आज विजयादशमी है, आज के दिन रावण जलाया जाता है, अभद्र व्यवहार किया जाता है, पर बन्धुओ जरा विचार करे कि कहीं वह रावण विकारो के रूप में, क्रोध के रूप मे, अभिमान के रूप मे हमारे भीतर तो नहीं रह रहा है। जब तक हम हमारे अन्त करण से रावण की वृत्तियों को दूर नहीं भगाएगे। तब तक यह विजयादशमी का पर्व मनाना हमारे लिए सार्थक नही हो सकेगा, अरे उस रावण ने तो मात्र एक सीता का हरण किया था पर आज दुनिया के रावणो का क्या हाल बन रहा है। भारतीय सस्कृति को समझने का प्रयास करें, उससे अपने जीवन को सस्कारित करे, आज अगर दुनिया के लोगो का अन्वेषण किया जाय तो आपको ज्ञात होगा कि दुनिया के लोगो मे कहीं अभिमान के रूप मे, कहीं क्रोध के रूप में और कहीं वासना के रूप मे वह रावण रहा हुआ है, उस रावण को जब तक भीतर से नहीं निकाला जाएगा, आत्मा रूपी सीता की सुरक्षा के लिए राम की वृत्तियो को जब तक अदर मे पैदा नहीं की जाएगी, तब तक बाहर के पुतले जलाने मात्र से कुछ नहीं होगा। हमे हमारी अन्तरग वृत्तियों की खोज करनी है कि हमारे भीतर में क्या कुछ रहा हुआ है, जब तक हम भीतर का सशोधन नहीं

करेगे, अतर मे रही हुई रावण के स्वभाव वाली दानवीय वृत्ति को दूर नहीं करेंगे, अमानवीयता को दूर हटाकर माननीय जीवन नहीं बनाऐगे, अनैतिक जीवन को बदलकर नैतिक जीवन नहीं अपनाएगे, तब तक विजयादशमी मनाना जीवन के लिए लाभप्रद सिद्ध नहीं हो सकता। आज से अपनी आत्मा की समीक्षा करो और अतर मे रही अनैतिकता, अमानवीयता, दानवीयता को दूर भगाए एव नैतिकता, प्रामाणिकता, मानवीयता, मौलिकता, वास्तविकता को प्रतिष्ठापित करने का पुरुषार्थ करे। आपने देखा होगा कि रावण का पुतला बनाने वाले उसके दस मुह बनाते हैं, हकीकत मे उसके कोई दस मुह नहीं थे, मुह एक ही था पर चन्द्र चूड हार मे जब उसने अपना मुह देखा तो उसमे उसको अपने दश मुह दिखाई दिये और उसी के कारण उसके दशमुख की प्रसिद्धि हुई। दशानन नाम पडा। इस प्रकार हार की दिव्य मणियो के प्रभाव से दश मुह हो ऐसा प्रतीत होता था, पर हकीकत में उसके दस मुह नहीं थे, मुह मुख्य रूप से एक ही था, एक के चले जाने पर सारा शरीर चला गया, सारे मुह चले गए शास्त्रकारो ने दस प्रकार के मुडन की बात कही है "दसविहे मुडे पण्णत्ते"। वे दस प्रकार के मुडन ये कहे हैं– श्रोतेन्द्रिय, चक्षुइन्द्रिय, घ्राणेन्द्रिय, रसनेन्द्रिय और स्पर्शेन्द्रिय। क्रोध, मान, माया, लोभ और मन इन दस का आप मुडन कीजिए। मुडन के दश प्रकार बतलाये हैं। इसके लिए अपने जीवन में अप्रत्त भाव को जागृत करें, अप्रमत्त भाव मे रहते हुए दस प्रकार का मुडन का जीवन के भीतर मे रहे हुए रावण का विनाश करे, उसे दूर भगाए तब वही चरित्र रूपी सीता की सुरक्षा के लिए राग जैसी वृत्तिया भीतर में प्रकट होगी, वे कहीं बाजार में नहीं मिलेगी, अतर से अतर की समीक्षा करते हुए राम की वृत्ति को अपनाने एव आत्म रमण रूप सुख के लिए चरित्र रूपी सीता की सुरक्षा करने का प्रयास करेंगे तो हमको वास्तविक शाति प्राप्त होगी, आत्मबोध प्राप्त होगा, परमानद की अवस्था मिल जाएगी। 

12

स्वाध्याय और ध्यान क्यों आवश्यक ?

प्रज्ञा चक्षु (नेत्रहीन) पुरुष, जिसे प्रकाश होते हुए भी कुछ नहीं दिखलाई दे रहा था। उसे अन्धेरे मे इधर–उधर हाथ पैर पटकते देखकर एक दयालु इन्सान ने सहारा दिया और उसे सही दिशा मे ले जाने लगा। जिस स्थान पर जाना था, वहा पहुचाने के बाद उस दयालु इन्सान ने पुन उसे छोड दिया। तब वह प्रज्ञाचक्षु पहले की तरह ही बेसहारा हो गया। उसकी इस दयनीय दशा को देखकर किसी सुज्ञ दयालु पुरुष ने उसके अंधेपन को सदा के लिए दूर करने के लिए उसे अस्पताल ले गया। शल्य–चिकित्सा के माध्यम से उसकी रोशनी पर आए पर्दे को दूर करवा दिया। अब वह प्रज्ञाचक्षु नहीं रहा और आराम से सभी वस्तुए देखने लगा। उसे अब चलने–फिरने मे किसी के सहारे की आवश्यकता नहीं रही।

उस प्रज्ञाचक्षु पर सहारा देने वाले ने भी उपकार किया और नेत्र देने वाले ने भी उपकार किया। पर सहारे की अपेक्षा नेत्रदान ही उसके लिए महत्त्वपूर्ण सिद्ध हुआ, क्योंकि अब वह स्वय ही देखने मे समर्थ हो गया, किसी सहारे की आवश्यकता नहीं।

ठीक उसी प्रकार सासारिक जीवन में अनेकानेक समस्याओ से उलझे इन्सान की समस्याओ का समाधान करना उतना महत्त्वपूर्ण नहीं है जितना कि उस पुरुष की प्रज्ञा मे समस्या के समाधान की ही शक्ति उत्पन्न कर देना महत्त्वपूर्ण है। क्योंकि समस्याओं के समाधान के लिए तो उसे बार–बार समाधनकर्त्ता के पास आना होगा। पर समाधानकर्त्ता गुरु हर समय उपलब्ध नहीं होता। जबकि समस्या कभी भी पैदा हो सकती है। अत समस्याओं का समाधान करके प्रज्ञा पाना ही महत्त्वपूर्ण है। जो व्यक्ति को

स्वावलम्बी बनाती हुई जीवन के प्रत्येक कार्य को व्यवस्थित सचालित करती है।

उस स्वावलम्बी प्रज्ञा–बुद्धि को पाने के लिए भीतरी नेत्र को खोलना होगा। उस भीतरी नेत्र को खोलने का ही महत्त्वूपर्ण उपाय है।

स्वाध्याय एव ध्यान से भव्य मानव अपने आप में समस्याओं का समाधान करने की वह प्रज्ञा उत्पन्न कर लेता है। जो प्रज्ञा उसकी प्रत्येक समस्या को सुलझाती हुई सच्चा मार्गदर्शन करती है। जिस प्रकार अन्धकार भरे हाल में सभी प्रकार की सामग्री विद्यमान होने पर भी दिखलाई नहीं देने से वे वस्तुए विद्यमान होकर भी व्यक्ति के लिये उपयोगी नहीं बन पाती है। पर जब बल्ब का प्रकाश होता है तो विद्यमान सारी वस्तुए यथावत दिखने लगती है और उनका उपयोग भी व्यवस्थित रूप से किया जा सकता है। ठीक इसी प्रकार विश्व के प्रत्येक मानव को सुख प्राप्त करने के सारे साधन प्राप्त हैं। पर उन साधनों का उपयोग एव प्रयोग कैसे किया जाय, यह यथार्थ रूप मे नहीं होने से उन साधनों का दुरुपयोग कर इन्सान अपने ही साधनो से दुखी बनता जा रहा है। इन दुखो से छुटकारा पाने के लिए साधनों का यथार्थ प्रयोग कैसे किया जाय इसके लिए वैसी ही प्रज्ञा का होना आवश्यक है और वह प्रज्ञा, स्वाध्याय एव समीक्षण ध्यान के माध्यम से सहज ही प्राप्त हो जाती है।

स्वाध्याय के महत्त्व को समझ लेने के बाद स्वाध्याय क्या है ? यह भी समझ लेना चाहिये। स्वाध्याय में दो शब्द है। स्व + अध्याय। स्व अर्थात् अपना अध्याय याने बोध। जिस अध्ययन से हमें अपने आपका बोध हो जाय उसे स्वाध्याय कहते हैं।

आज का इन्सान दुनिया भर की बातो का ज्ञान प्राप्त कर रहा है। अमेरिका और रूस मे क्या हो रहा है ? देश का राजनैतिक हालचाल क्या है ? अर्थ तत्र कैसा है ? वैज्ञानिक क्या कर रहे हैं ? आकाश पाताल में क्या हो रहा है ? इन सबको जानने की बडी तमन्ना है उसमे। इसलिए उठते ही अखबार हाथ मे ले लेता है। टीवी पर विविध कार्यक्रम देखने में जिन्दगी का बहुमूल्य टाईम खर्च कर देता है और फिर अभी तो क्रिकेट मैच देखने एव सुनने की ललक के पीछे आदमी सब कुछ भूलता जा रहा है। पर इन बातो ने इन्सान को कभी शाति नहीं दी अपितु अशाति ही अधिक दी है। इसलिए आज के मानव का मानसिक एव शारीरिक टेन्सन अधिक बढा है। यही नहीं

मानव मन मे स्वार्थ, क्रोध, अह, मोह की भावनाए विशेष पनपी है। मानव की इस दु खाक्रान्त स्थिति से यह स्पष्ट है कि उसे सुख पाने के लिए बाहरी वस्तु के अवबोध की अपेक्षा भीतरी बोध प्राप्त करना अधिक आवश्यक हो गया है। भीतरी बोध के लिए महत्त्वपूर्ण कड़ी के रूप मे प्रभु ने स्वाध्याय एव ध्यान को बतलाया है। शास्त्र का अध्ययन, धार्मिक पुस्तकों का अध्ययन भी स्वाध्याय का ही एक अग है। क्योकि उनका अध्ययन करने से स्वय का बोध किया जाता है। जिस काच को देखकर काच को नही, स्वय को देखा जाता है। वैसे ही धार्मिक पुस्तको के अध्ययन से पर का नहीं स्वय का बोध प्राप्त करने मे महत्त्वपूर्ण सहयोग प्राप्त होता है। जिस प्रकार प्रारभ मे बच्चे को चलने के लिए किसी के सहारे की आवश्यक होती है उसी प्रकार भव्य आत्मा को आत्म बोध एव स्वय पर नियत्रण कैसे किया जाय ? इसकी जानकारी के लिए शास्त्र एव धार्मिक पुस्तकों का अध्ययन अत्यन्त आवश्यक है। जिससे हम अपनी आन्तरिक प्रज्ञा को जागृत करने मे सफल बन सकते हैं।

जिस प्रकार बच्चों को यह बोध कराया जाता है कि विष मारक है। बच्चा इस बात को पकड लेता है। उसकी प्रज्ञा मे यह बात जम जाती है। उसके बाद उसके सामने विष आता है तो वह कभी भी उसे खाता नहीं है। क्योंकि उसकी प्रज्ञा मे विष की मारकता का बोध अकित हो गया है। उसी प्रकार स्वाध्याय के माध्यम से हमे क्या करना चाहिये और क्या नहीं करना चाहिये। इस बात का यथार्थ बोध हो जाता है। जो हमे जीवन के हर मोड पर सच्चा मार्गदर्शन कराने वाला होता है।

स्वाध्याय के साथ शारीरिक एव मानसिक समस्याओ का समाधान करने के लिए ध्यान भी उतना ही आवश्यक है। समता विभूति आचार्य श्री नानेश ने ध्यान के लिए समीक्षण ध्यान की अभिनव विधा प्रस्तुत की है।

ध्यान और स्वाध्याय के लिए वैसे ही माहौल, वातावरण की आवश्यकता है। कई लोगों की यह धारणा होती है कि स्वाध्याय ही तो करना है, हम घर पर बैठकर भी कर लेंगे, उसके लिए किसी स्थान विशेष या सामूहिक रूप की क्या आवश्यकता है। उनके विचार किसी दृष्टि से उपयुक्त हो सकते हैं। पर उसमे सशोधन अपेक्षित है। जिस प्रकार बच्चा अकेला रहकर जितना अध्ययन नहीं कर पाता है, उतना वह स्कूल में जाकर सामूहिक रूप में बैठकर कर लेता है। जिस प्रकार महफिल मे मजा लेने वालों के लिए समूह की आवश्यकता है वैसे ही आत्म चिन्तन के लिए, ध्यान एव स्वाध्याय के लिए उस प्रकार की विचारधारा वाले समूह की आवश्यकता रहती है। जिस समूह

से वातावरण वैसा ही बन जाता है। वातावरण का प्रभाव व्यक्ति पर बहुत जल्दी पडता है। आज वैज्ञानिको ने भी इस बात को स्वीकार किया है, व्यक्ति जिस वातावरण में जी रहा होता है, एक दिन वह भी वैसा ही बन जाता है। ऐसे कई उदाहरण उन्होने जनता के सामने पेश किये हैं। अत स्पष्ट है कि घर पर स्वाध्याय ध्यान करने वाला व्यक्ति, घर के वातावरण से प्रभावित हुए बिना नहीं रहेगा। ऐसी स्थिति में उसका ध्यान सही रूप में बन नहीं सकेगा। अत स्वाध्याय ध्यान के लिए वैसा स्थान एव वातावरण की आवश्यकता रहती है। जिस प्रकार नृतकी के पैर तबले की थाप से स्वत ही थिरकने लगते हैं, वैसे ही उस प्रकार के सौम्य स्थान एव वातावरण में जाने पर स्वत ध्यान स्वाध्याय करने की भावना स्फूरित हो उठती है। इसलिए निश्चित स्थान एव वैसे ही वातावरण का अत्यन्त महत्त्व है।

आज के मानव के जीवन का कोई भरोसा नहीं है। न मालूम वह कब किस समय वह इस शरीर को छोडकर चला जाय कहा नहीं जा सकता और वह जिन वस्तुओ को प्राप्त करने के लिए दिन रात दौड रहा हैं—ऐसी वस्तुए धन, दौलत, परिवार उसे कोई भी नहीं रोक सकता है, न शान्ति ही दे सकता है। अत स्पष्ट है कि शान्ति पाना है तो इन सबसे परे हटकर कुछ समय अपने आप को जानने एव अपनी बुरी आदतो को बदलने लिए स्वाध्याय एव ध्यान में देना चाहिये।

ध्यान मे मानसिक एव शारीरिक समस्याओं का भी सहज समाधान किया जा सकता है। विदेशों में तो ध्यान एव सकल्प के बल पर कष्ट साध्य कैंसर जैसी बीमारियों का भी इलाज किया जा रहा है। ध्यान एव स्वाध्याय के लिये प्रात काल का समय निश्चित ही महत्त्वपूर्ण है। जैन आगमों की दृष्टि से वह इसलिए भी महत्त्वपूर्ण है कि उस समय देवताओं को आकाश में अदृश्य रूप से गमनागमन होता है। वे भव्यात्माओं को आशीर्वाद देते हैं। यदि भव्य पुरुष उस समय ध्यान स्वाध्याय आदि शुभ कार्यों में लगा है तो उसकी इस लोक एव पर लोक दोनों प्रकार की भावनाए पूर्ण हो सकती है।

व्यवहारिक दृष्टि से देखा जाय तो प्रात काल में व्यक्ति जब उठता है तो उस समय करीब करीब सभी समस्याओ से मुक्त होता है। बीते हुए कल का कष्ट नींद से दूर हो गया होता है और आने वाला दिन का प्रारभ है। अत उस शान्त वातावरण में स्वाध्याय ध्यान करने से उनके मन रूपी पर्दे पर जो शुद्ध विचार अकित होते हैं वह उसके आने वाले समय को निश्चित रूप से सुन्दर बना देते हैं।

रोगी व्यक्तियो की तरफ ध्यान दिया जाय तब भी ज्ञात होगा कि भले वे रोग से कितने ही दु खी हो पर प्रात काल 3 बजे बाद से करीब आठ बजे तक का समय ऐसा होता है कि उन्हे भी स्वत ही कुछ शान्ति की अनुभूति होने लगती है। वैज्ञानिक दृष्टि से भी देखा जाय तो यह स्पष्ट होता है कि दिन भर मानव कुछ न कुछ बोलता रहता है, सोचता रहता है, करता रहता है, और वह सब करीबन स्वार्थ एव प्रपचों से भरा होता है जिससे वायुमण्डल भी दूषित हो जाता है। यह प्रदूषण व्यक्ति के मानस को भी शात नहीं रख पाता है, पर जब रात्रि व्यतीत होने लगती है तो गत दिन का प्रदूषण शात होने लगता है और आने वाले दिन की हलचल अभी विशेष रूप से प्रारभ नही हुई है, इसलिए वह समय बड़ा शान्त होता है अत प्रातकालीन समय मे किया गया शुभचितन व्यक्ति के जीवन मे परिवर्तन लाने के लिए विशेष रूप से सहयोगी होता है।

सामूहिक चिन्तन और सामूहिक उच्चारण मे बहुत बडी शक्ति होती है, यह बात वैज्ञानिक दृष्टि से भी स्पष्ट है। वैज्ञानिको ने ऐसे सामूहिक अनेक प्रयोग किये हैं। जो बडे चमत्कारिक घटित हुए हैं। सामूहिक रूप से किसी भी एक वस्तु पर मन को केन्द्रित करके कुछ सोचा जाय तो शीघ्र ही कुछ परिवर्तन होने लगता है। कहते हैं अमेरिका मे नौ सैनिको ने एक साथ एकाग्रता का करीब छ महिने तक प्रयोग कर एक दिन उन्होंने गोदरेज जैसी भारी-भरकम आलमारी पर दृष्टि लगाकर मन को एकाग्र कर सोचा- यह आलमारी यहा से खिसककर सामने चली जाय, आश्चर्य की उनके इस चिन्तन से वह आलमारी बिना सहारे निर्देशित जगह चली गई, यह सामूहिक चिन्तन का प्रभाव है। यही नही ध्यान द्वारा दृढ सकल्प के बल पर हम व्यक्तिश भी बडे-बड़े काम कर सकते हैं। आवश्यकता है स्वाध्याय के द्वारा अपने आप को समझते हुए ध्यान करने की।

सामूहिक आवाज के भी बहुत प्रयोग हुए हैं। एक बार करीब दो हजार सैनिक एक पुल को पार कर रहे थे। उनके पैरो की टाप जो एक साथ उठती एव पडती थी। उसकी आवाज से पुल टूट गया। फ्रान्स देश की एक प्रसिद्ध महिला वैज्ञानिक मैडम फिनेलाग ने अपने विचारो के अनुसार उच्चारण करने के अनेक प्रयोग जनता के समक्ष कर बताए हैं। उसने बोर्ड पर बिजली के दो तारो से सयोजित कर एक चाक रख दी और उसके बाद उसने मन मे जिस व्यक्ति के लिए सोच और उच्चारण किया तो चाक के द्वारा बोर्ड पर स्वत ही वैसा चित्र बन गया। ऐसे अनेक प्रयोग फिनेलाग ने फौरेन मे कर

दिये हैं। अत स्पष्ट है कि हम तो सोचते हैं और बोलते हैं। वह वायुमण्डल मे फैलता है और अन्यो को भी निश्चित रूप से प्रभावित करता है। सामूहिक पैरो की आवाज से पुल तक टूट सकता है तो वैसे ही हम मन को अहिसक भावना से भरकर सामूहिक रूप से जिन शब्दो का उच्चारण करते हैं, उससे भी बहुत बडा चमत्कार घटित हो सकता है। जिसे हम जान भी नहीं सकते हैं। ऐसी अहिसक भावना के साथ किया गया शुद्ध चिन्तन उच्चारण विश्व युद्ध जैसी समस्याओ का भी हल कर सकता है। इन सबसे पहले हमारी आत्मा तो पवित्र होती ही है। प्रात कालीन स्वाध्याय एव ध्यान से आत्मा मे पवित्र ऊर्जा शक्ति, एकत्रित होती है जो उसके समूचे जीवन को पवित्र एव शान्त बनाए रखती है।

अत प्रत्येक व्यक्ति को चाहिये कि वह अपने दैनिक कार्यो मे से कुछ समय स्वाध्याय एव ध्यान के लिए अवश्य निकाले जिस प्रकार घडी मे भरी गई चाबी से घडी चौबीस घटे तक चलती है, वैसे ही आत्मा को निश्चित समय पर दी गई स्वाध्याय एव ध्यान साधना रूपी खुराक समूचे जीवन को सचालित करती है। निश्चित स्थान पर निश्चित समय पर पहुचकर अपने मन को शुद्ध करने का प्रयास करे। हमारी पढी हुई सोची हुई कोई भी बात निरर्थक नहीं जाती। वह अचेतन मस्तिष्क मे चली जाती है और समय पर वह हमारा सहयोग करती है। जिस प्रकार वर्षो पूर्व बीती घटना, हमे समय पर याद आती है। वैसे ही वर्तमान मे किया गया स्वाध्याय ध्यान वर्तमान को सुधारने के साथ ही भविष्य को भी निश्चित रूप से सुधारता है। अत आलस्य और प्रमाद को छोडकर नवीन जागृति के साथ आगे बढे, स्वाध्याय और समीक्षण ध्यान जैसे कार्यो मे सक्रिय बनकर अपनी आत्मा को जागृत करने का प्रयास करे। यह प्रयास निश्चित रूप से हमे सही बोध देता हुआ मानसिक समस्याओ को समाप्त कर शान्ति देने वाला है। इसमे कोई सन्देह नहीं है। आपका यह कार्य निश्चित रूप से आपकी सन्तान को भी प्रेरित करेगा और उनमें भी सत्य पथ की और बढने की तमन्ना पैदा होगी। अन्यथा आज के युग के विलासी वातावरण एव आधुनिक साधनो का प्रचार घर-घर में दिख रहा है। टी वी पता नहीं आने वाली पीढी को कहा ले जाएगा, कुछ कहा नहीं जा सकता। जिस बच्चे को आज चौबीस तीर्थंकरों के नाम याद नहीं है, नमस्कार मत्र बोलना नहीं आता, उसे पचासो फिल्मी एक्टरो के नाम याद होगे जिसे हाथ जोडना नहीं आता है, वह बच्चा बडी स्टाइल से एक्टरों की एक्टिग कर लेता है। पता नहीं कैसे भद्दे-भद्दे फिल्मी गाने गाते रहता है।

अगर यही स्थिति बनी रही तो मानवीय सस्कृति का निकट भविष्य मे कितना भयानक रूप होगा, कुछ कहा नहीं जा सकता। अत अभी से जग जाइये स्वय के साथ ही परिवार मे विनय, नैतिकता, चारित्रिकता, सदाचार बढाने के लिये स्वाध्याय और ध्यान मे लग जाईये।



13

समीक्षण ध्यान साधना : प्रारम्भिक प्रयोग विधि

प्रारम्भिक पद्धति

मानसिक तनाव के बढने से लोगो का ध्यान के प्रति काफी आकर्षण बढा है क्योकि ध्यान, मानसिक तनाव को समाप्त करने का सशक्त साधन है। समता विभूति गुरुदेव आचार्य प्रवर श्री नानालाल जी म सा ने आगम की गहराई मे उतर कर समीक्षण ध्यान का अनुपम मोती हमारे सामने रखा था। जो कि भव्यात्माओ के लिए तनाव मुक्ति ही नहीं अपितु कर्म मुक्ति कराकर आत्म समाधि देने वाला है। आचार्य प्रवर द्वारा उस समीक्षण ध्यान को पाकर रतलाम, ब्यावर, जयपुर, दिल्ली, जालन्धर, बीकानेर, गगाशहर, देशनोक आदि विभिन्न स्थानो पर ध्यान शिविर लगाए गए। लोगो ने रुचि से भाग लिया। यद्यपि ध्यान, थ्योरी का विषय न होकर प्रेक्टिकल ही अनुभूति का विषय बन सकता है। तथापि समीक्षण ध्यान की प्रारम्भिक प्रयोग विधि मात्र जानकारी के लिए आपके सामने प्रस्तुत है। आन्तरिक अनुभव तो समीक्षण ध्यान करने पर ही हो सकता है। इस समीक्षण ध्यान का मूल उद्‌गम स्रोत भगवान महावीर की वाणी है। जिसका प्रवर्तन आचार्य प्रवर ने किया है। उसकी यहा प्रस्तुति की जा रही है। मुख्य आयाम तीन हैं–

1 मन को केन्द्रित करना।

2. वृत्तियों का सशोधन करना।

3 आत्म–जागरण परमात्म अभिव्यक्ति।

1 दीर्घ श्वास निश्वास

सर्वप्रथम रीढ की हड्डी को सीधा करके हम किसी भी सुखासन से पालकी लगाकर बैठ जाये और ध्यान के आरम्भ से अन्त तक अपनी आखे बन्द रखे क्योकि नेत्र खुले रहने पर ध्यान जल्दी विकेन्द्रित हो जाता है। श्वास को अधिक गहराई से अधिकाधिक रूप मे भीतर ग्रहण करे, उस समय अपने मन को इस तरह से विचारो मे केन्द्रित करे मेरे श्वास ग्रहण करने के साथ ही वायुमण्डल में व्याप्त शुद्ध मेटर मेरे शरीर में प्रवेश कर रहा है। जो शुद्ध मेटर मुझे विश्व के अनेक महापुरुषो के गुणो से प्रभावित कर सकता है। क्योकि मनोवर्गणा, वचनवर्गणा आदि रूप मेटर वायुमण्डल मे घूमता है यह बात आगम और विज्ञान सम्मत है। आवश्यकता है इसको पकडने की। श्वास के ग्रहण के समय हमारे मन मे यह भी भाव होने चाहिए कि सभी सद्गुण, अहिसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य, करुणा, दया, दान आदि आक्सीजन के साथ मेरे शरीर मे प्रवेश कर पूरे अन्तरमन मे व्याप्त हो रहे हैं। इस ग्रहण किये श्वास को पुन बाहर निकालिये। श्वास को निकालते समय मन के भावों को इस तरह का बनाये कि मेरे अन्दर व्याप्त दुर्गुण, क्रोध, अहकार, कपट, लोभ, ईर्ष्या, राग, द्वेष, मद, मोह बाहर निकल रहे हैं। मैं निश्वास के साथ इन्हे भीतर से बाहर निकाल रहा हू। यह क्रिया कम से कम पाच बार अधिक अपनी सुविधानुसार की जा सकती है।

2. पूरक-कुंभक-रेचक

इस प्रक्रिया मे सबसे पहले श्वास भीतर ग्रहण करे, पर यह ध्यान रखे जितने समय मे श्वास को भीतर ग्रहण किया जाय उतने समय तक भीतर मे रखे। यदि इतने समय तक भीतर मे रखने में दुविधा हो तो ग्रहण के समय से आधे समय तक भीतर रखे और ग्रहण जितने समय मे किया है उतने ही समय में श्वास को बाहर निकालें। सर्वप्रथम पाच बार दाये नाक से श्वास ग्रहण कर बाये नाक से निकाले और फिर पाच बार बायें नाक से ग्रहण एव निस्सरण दाये नाक से हो, जिस नाक से श्वास ग्रहण करे उस वक्त पास वाले नथुने को अगुली से दबा ले। इस प्रक्रिया मे हमें इस बात का बराबर ध्यान रखना है कि हमारा मन श्वास के साथ भीतर यात्रा करे हम ध्यान रखे कि हमारा श्वास भीतर मे कहा कहा जा रहा है।

अधिकाश व्यक्तियो को यही ध्यान है कि हमारा श्वास फेंकडे और उदर तक ही जाता है, जबकि वस्तु सत्य यह है कि श्वास की गति पूरे शरीर

मे होती है। पर सूक्ष्म-सूक्ष्मतर-सूक्ष्मतम होती चली जाती है। अत इस गति को पहचानने के लिये मन को समीक्षण प्रज्ञा से अनुरजित करिये श्वास से होने वाले सवेदन की और हमारा पूरा ध्यान होना चाहिये। मन को पूरी तरह श्वास पर केन्द्रित रखा जाये। श्वास से सम्बन्धित यह प्रारभिक प्रक्रिया है। जिससे भी हम अपने चित्त को स्थिर कर सकते हैं। यह प्रक्रिया भी अन्तरग मे प्रवेश करने में सहायक है।

3 भ्रामरी गुंजार ·

नेत्र तो ध्यान में आरम्भ से ही बन्द कर रखे हैं। अब दोनों कानो में भी अगुली डालकर उन्हें बन्द करना है। जिससे बाहर की आवाज हमें सुनाई नहीं देनी चाहिये अब अधिक से अधिक श्वास ग्रहण कर लें। अर्थात् जितनी श्वास खींच सके खींच लें। उसके बाद कान आख तो बन्द है ही, नाक का भी नीचे का हिस्सा बद कर ले, केवल ऊपरी हिस्सा खुला रहे, उस हिस्से मे श्वास को तेजी से निकालने का प्रयास किया जाय। पर नाक के छिद्र सकुचित होने से श्वास जल्दी से बाहर निकल नहीं सकता। ठीक उसी समय श्वास को निकालते समय गले से भ्रमर की गुजार की तरह गुज पैदा करनी है और उस गुज के समय हमारे अगो में प्रकम्पन कहा-कहा होता है, इस पर हम ध्यान केन्द्रित करे। यह गूज जितनी लयबद्ध होगी, उतना सुखद प्रकम्पन हमारे शरीर में होगा, दूसरी बार पुन श्वास खींचकर अब नाक का ऊपरी हिस्सा बन्द करके उसी प्रकार की गूज के साथ मन को प्रकम्पन पर केन्द्रित करते हुए श्वास बाहर निकालें, तीसरी बार भी इसी प्रकार करें पर नाक का मध्य भाग बन्द रखें। ऊपर और नीच के हिस्से से श्वास निकालें। यह प्रक्रिया भी अपनी सुविधानुसार चाहे जितनी बार की जा सकती है। इस प्रक्रिया से पूरे शरीर में एक विशिष्ट प्रकार का प्रकम्पन पैदा होता है। जिस प्रकम्पन से शारीरिक मानसिक टेन्सन से मुक्ति के साथ शुषुप्त शक्तिया भी जागृत होने लगती है। ब्लड सर्कुलेशन बराबर होने लगता है। मन के केन्द्रीयकरण के साथ आरोग्य लाम भी मिलता है।

4 केन्द्रों पर मन को स्थिर करना

हमारे शरीर में अनेक केन्द्र हैं, उन सबकी यथावत् जानकारी और उन्हे जागृत करने के प्रयास अभ्यास हेतु बहुत समय चाहिये। समयाल्प होने से एव समीक्षण ध्यान साधना का प्रारम्भिक चरण होने से अभी हमे दो तीन केन्द्रो पर ही हमारा ध्यान केन्द्रित करना है। सबसे पहले ज्ञान केन्द्र जो

शिखर चौटी भाग पर है, जागृत करने के लिए श्वास ग्रहण करने के साथ ही अपने मन को ज्ञान केन्द्र पर केन्द्रित करते हुए यह समीक्षण करने का प्रयास कीजिये कि कहा क्या सघटित हो रहा है। इसके बाद ज्ञान केन्द्र से चार अगुल आगे तालवे के भाग में शाति केन्द्र है वहा पर अपना मन केन्द्रित करिये और समीक्षण करिये। तदनन्तर ज्योति केन्द्र जो ललाट के मध्य भाग मे स्थिर है, वहा मन को स्थिर करें। श्वास को ग्रहण कर जब तक श्वास बाहर नहीं निकले तब तक मन को केन्द्रो पर केन्द्रित करे।

प्रत्येक केन्द्र पर कम से कम तीन बार प्रक्रिया सघटित करे। बार–बार के इस प्रयोग से हमारे सोये हुए केन्द्र जागृत होने लगते हैं, जिससे हममे अनेक लाभ होते हैं। मन को केन्द्रित करने की प्रक्रिया श्वास प्रक्रिया से अलग हटकर स्वतत्र रूप से यथानुकूल समय तक भी की जा सकती है।

ज्ञान केन्द्र पर मन को स्थिर करते वक्त यह भी ध्यान रखे कि हमारे पूरे अन्तरग मे ज्ञान की किरणे व्याप्त हो रही हैं। शान्ति केन्द्र पर केन्द्रित करते समय यह ध्यान रखे कि पूरे अन्तरग मे शान्ति का सचार हो रहा है और ज्योति केन्द्र पर मन को स्थिर करते समय यह ध्यान रखे कि पूरे अन्तरग मे ज्योति पुज प्रसर रहा है। अन्तरग विलक्षण ज्योति से जगमगा उठा है।

5 तृतीय नेत्र जागरण

दोनो आख के ठीक बीच मे भृकुटी मे ध्यान को केन्द्रित करिये और देखने का प्रयास करिये। बार–बार मन को वहा दृष्टा भाव से लगाने पर एक दिन आपको विशिष्ट अनुभूतिया होने लगेगी। तृतीय नेत्र का सामान्य जागरण भी भूतभावी स्थितियो को स्पष्ट करता हुआ आपके वर्तमान जीवन को भी सुधारने वाला बनेगा।

6 रीढ की हड्डी मे मन को गुजारना

अब एक बार फिर से आप रीढ की हड्डी सीधी करलें और श्वास को भीतर खींचकर रीढ की हड्डी में मन को इस ढग से सचारित करें कि एक श्वास में कम से कम पाच बार हमारा मन रीढ की हड्डी में ऊपर से नीचे घूम जाये, यह प्रक्रिया कम से कम तीन बार हो, इसके बाद समभाव के साथ कुछ समय तक मन ,को रीढ की हड्डी में केन्द्रित करते हुए समीक्षण करने का प्रयास करें। इससे रीढ की हड्डी की स्वस्थता के साथ ही हमे अनेक लाभ हैं वैसे मन को केन्द्रित करने की अनेक प्रक्रियाये है, उपर्युक्त प्रक्रियाओ की भी अनेक विधाए हैं। फिलहाल सक्षिप्त मे यह दो चार विधाए ही यहा पर करवाई जा रही है।

7 अर्हम की ध्वनि

आख, कान को बन्द करके मुह से अर्हम् शब्द के अक्षरो का एक श्वास प्रश्वास में "अ र ह म के रूप मे उच्चारण किया जाये।"अ" के उच्चारण के साथ विशुद्धि केन्द्र "र" के उच्चारण के साथ दर्शन केन्द्र "ह" के उच्चारण के साथ विशुद्धि केन्द्र "म" के उच्चारण के ब्रह्म केन्द्र पर ध्यान होना चाहिये। यह प्रक्रिया कम से कम तीन बार करे। तदन्तर एक श्वास प्रश्वास मे दो बार अर्हम शब्द का उच्चारण हो। तत्पश्चात् अर्हम शब्द की लयबद्धता जगाई जाये। लयबद्धता के साथ इच्छानुसार इसका उच्चारण किया जा सकता है और अन्त में धीरे-धीरे विलिनीकरण हो। अर्हम् शब्द की लयबद्धता के साथ उच्चारण करते वक्त भावो को केन्द्रित करे कि हमारे पूरे अतरग मे अर्हम् की ध्वनि व्याप्त हो रही है। अर्हम् का बडी तेजी से प्रकम्पन हो रहा है। वस्तुत हमारा मौलिक रूप अर्हम् स्वरूप ही है उसे जगाने के लिये अर्हम् को मन के केन्द्रीयकरण के साथ उच्चारित करना है। तीतर की आवाज से तीतर आते है। वैसे ही अर्हम् का मनोयोग पूर्वक उच्चारण करके हमारे अर्हन्त स्वरूप को प्रकट करना है। अर्हम् शब्दोच्चारण के भी अनेक आयाम हैं तथा अन्य भी अनेक ध्वनियों के उच्चारण का प्रावधान भी है पर फिलहाल प्रारम्भिक साधना मे मन लगाना है।

अर्हम् की ध्वनि के अतिरिक्त नित्योह, बुद्धोह, सिद्धोह, मुक्तोह, निरजनोह, निराकारोह, निरूजोह, अवर्णोह, अगघोह, अरसोह, अफासोह इत्यादि भी ध्वनित किये जा सकते हैं।

8 वृति संशोधन

अब हमे अपनी वृत्तियो का सशोधन करना है। समता विभूति अनन्त-अनन्त आराध्य गुरुदेव (आचार्य श्री नानेश) ने योग की परिभाषा देते हुए बतलाया है कि-

योगश्चित वृत्ति सशोध योग से तात्पर्य चित्तवृत्तियो का सशोधन करना है। हमे अपनी दूषित वृत्तियो को दूर करने के लिये सबसे पहले गत 24 घटे में हमने क्या किया ? किसको क्या कहा ? करना और कहना, हमारा उचित था या नहीं ? नहीं कहने से क्या काम नहीं चल सकता था ? यदि चल सकता था तो फिर ऐसा क्यों बोला और किया। अब आगे से ऐसा नहीं करूगा और न ही बोलूगा। इस प्रकार एकावधानता के साथ आत्मसाक्षी से गत 24 घटे मे घटित जीवन घटनाओं का प्रतिदिन चितन करे और भविष्य

के लिये निर्णय ले। जब हमें अपनी गलती ध्यान मे आने लगेगी और हम उसे रोज-रोज निकालने का प्रयत्न करेंगे तो एक दिन उसका सशोधन हो जायेगा। क्योकि हमारी ऐसी स्थिति बन गई है कि हम ऐसे ऐसे काम कर डालते हैं जिनकी ओर हमारा ध्यान तक नहीं जाता। अत प्रतिदिन वृत्ति सशोधन के लिये हम यह चितन बराबर करे, करने और कहने के चितन के साथ ही जब हमारी प्रज्ञा प्रखर होने लगती है। 24 घटे मे मन ने क्या-क्या सोचा यह जो ज्ञान नहीं हो पाता है पर बराबर अभ्यास से यह भी सध सकता है। हमें अभी विस्तार में नहीं जाना है। अभी तो वृत्ति सशोधन की गहराईयो में उंतरते जाइये और अपने जीवन को परिमार्जित परिष्कृत बनाते जाइये। प्रतिदिन इस तरह वृत्ति सशोधन की क्रिया और मन चितन से बुरे कार्यों के प्रति स्वत अरूचि और अच्छे कार्यों के प्रति लगाव होने लगेगा और धीरे धीरे हमारा व्यवहारिक जीवन भी बदलने लगेगा। सच्चा ध्यान वही बनता है जिस ध्यान से हमारा अतरग और व्यवहार बदल जाये। लोगों को हमारा व्यवहार सात्विक, नैतिक एव अध्यात्म से परिपूरित लगे।

9 दुर्गुण मेरा सबसे बडा .

गत चौबीस घटे मे सघटित घटनाओ के समीक्षण के बाद यह चितन करे कि मेरे अन्दर सबसे बडा दुर्गुण कौन सा है सबसे बडी कमजोरी क्या है। आज इन्सान में कोई न कोई दुर्गुण तो होता ही है। किसी को क्रोध ज्यादा आता है तो किसी को अहकार तो कोई छल-छद्म करता है तो किसी को लोभ ज्यादा है तो किसी को असहिष्णुता ज्यादा है। हमारे मे सबसे बडी कमजोरी क्या है चिन्तन कर उस कमजोरी को पकडे और फिर उसे दूर करने के लिए चिन्तन करे। क्रोध है तो क्षमा का सभी प्रकार से चिन्तन हो और क्षमासागर महापुरुष के जीवन के विषय में सोचें, इसी प्रकार मान को हटाने के लिए विनय, कपट को दूर करने के लिये सरलता, लोभ को हटाने के लिए सतोष, मोह को मिटाने के लिये निरासक्ति भावना का चिन्तन करें। और इनके आदर्शो का भी चिन्तन करे। इस प्रकार जब हम स्वय अपनी गलती को पकडकर उसे दूर करने की कोशिश करेगे तब एक न एक दिन हम उसमें सफलता प्राप्त कर ही लेगे। वैसे वृत्ति सशोधन भी बहुत विस्तृत है अभी तो यह प्रारम्भिक चरण ही है।

10 समर्पण सर्वतोभावेन ˙

अब हम आत्मस्वरूप को जागृत करने के लिए सबसे पहले जो आत्मस्वरूप को जागृत कर चुके हैं और जो निरन्तर प्रयत्नशील हैं, उनके प्रति

अपना पूर्ण समर्पण करे। अपने अस्तित्व को भूलकर जागृत आत्मा के अस्तित्व मे स्वय को विलीन करने का प्रयास करे। पानी भी दूध मे मिलने पर अपना अस्तित्व छोड देता है तब दूध की सज्ञा पा जाता है। हमे अपने अस्तित्व को अरिहन्त आदि के सानिध्य मे विलीन करना है। इसके लिए एक लयबद्धता के साथ उच्चारण करे और उसके साथ मन मे अरिहतादि के प्रति पूर्ण समर्पणा की भावना पैदा करें।

अरिहन्ते शरण पवज्जामि
सिद्धे शरण पवज्जामि।
साहू शरण पवज्जामि।
केवलीपण्णत धम्म शरण पवज्जामि।

अरिहन्त की शरण को प्रकर्ष रूप से स्वीकार करता हू, सिद्ध की शरण को प्रकर्ष रूप से स्वीकार करता हू, साधु की शरण को प्रकर्ष रूप में स्वीकार करता हू। केवली भाषित धर्म को प्रकर्ष रूप से स्वीकार करता हू। इस प्रकार से भावनाओ का उभार हमारी चेतना को जागृत करने वाला बनता है। मन का शुभ चिन्तन आध्यात्म भावना के साथ तन–मन को भी स्वस्थ बनाता है। आज तो मनोवैज्ञानिक केसर जैसी असाध्य बीमारियों को भी ध्यान से ठीक कर रहे हैं।

11 अरिहंत ध्यान योग

मन को स्थिर करिये और ध्यान लगाइये कि आपके सामने पद्मासन में अरिहत देव विराजमान है। उनके पवित्र मुखमण्डल का दर्शन करिये और ध्यान लगाइये कि वे मुझे देख रहे हैं, मैं उन्हें देख रहा हू। उनके नेत्रों से तेजस्वी किरणे निकल रही है। जो मेरे भीतर मे प्रवेश कर मेरे अग अग को शक्ति सम्पन्न तेजस्वी बना रही है। इतने में आशीर्वाद के रूप में उनका हाथ उठा है। जिसकी हथेली से धाराए निकल रही है। जो मुझे ऊपर से नीचे तक आप्लावित कर रही है, मेरा भावुक मन उत्कठित हुआ और मैंने उनके अगुष्ठ को सिर से स्पर्श किया तो करते ही एक अनूठी शक्ति मेरे भीतर में आ रही है। मेरे अन्दर और बाहर मे एक पवित्र शाति का सचार होने लगा है। मैं अनूठी शाति को पा गया हू। फिर धीरे–धीरे स्वस्थ अवस्था में आ जाइये।

12. क्रोध समीक्षण

क्रोध मेरा स्वभाव नहीं है। यह ज्यादातर बाहरी निमित्तों से आता है। मैं उनका परित्याग करता हू। क्रोध मेरी आत्मा के लिए हानिकारक है। मैं

दृढ सकल्प के साथ छोडता हू। धन्य है क्षमाशील मेतार्य मुनि को, स्कधक अणगार को, गजसुकुमाल अणगार को। मैं भी क्षमाशील बन रहा हू। इस चिन्तन से मेरे क्रोध के लाल परमाणु स्कध हिलने लगे हैं और वे कपाल में शान्ति केन्द्र में आए हैं पर शान्ति केन्द्र सक्रिय होने से वे उसका कुछ नहीं बिगाड सके और मुख से बाहर जा रहे हैं। मेरा क्रोध बाहर निकल चुका है।

13 मान समीक्षण .

जब दुनिया की कोई भी वस्तु मेरी है ही नही तो अहकार किस बात का है। सब यही रह जाने वाले हैं। जिस पर भी अहकार किया, उस स्थिति से मैं गिर जाऊगा। अत अहकार का परित्याग करता हू। धन्य है गौतम स्वामी को जो लब्धियो के भण्डार होकर भी पूर्ण विनीत थे। त्रिखडाधिपति कृष्ण भी माता–पिता आदि का विनय करते थे। विनय से ही उपलब्धि होती है मेरे मे विनय आ रहा है जिससे अहकार के हरे रग के परमाणु स्कध पूरे शरीर म एकत्रित होकर गले में आ गए हैं वहा से वे आगे बढकर नाक से निकल रहे हैं। मेरी आत्मा से मान निकल रहा है।

14 माया समीक्षण :

छल कपट करके किसी को धोखा देना, अपनी आत्मा को ही धोखा देना है। माया की वक्रता आत्मा के सहज रूप को दबा देती है। मैं माया को छोड़ता हू सरल भाव अपनाता हू। मल्लिनाथ प्रभु को सामान्य सी माया के पीछे स्त्रीलिग मे आना पडा। मैं उसे त्यागता हू। माया के आसमानी जामुनी रग के परमाणु स्कध पूरे शरीर से हिलते हुए घुमते हुए कमर के पृष्ठ भाग मे एकत्रित हो गए हैं। वहा से रीढ़ की हड्डी में से ऊपर की ओर आगे बढते हुए कान से बाहर निकल रहे हैं। मैं माया रहित हो चुका हू।

15 लोभ समीक्षण :

जब मेरे जीवन का ही भरोसा नहीं तो लोभ–तृष्णा किस पर करू। इच्छाए आकाश के समान अनन्त हैं। वे कभी पूरी नहीं होती। अत मैं लोभ से हटकर सतोष को अपनाता हू। जिस प्रकार कपिल केवली ने सतोष अपना कर सिद्धि पाई थी। वैसे ही मैं भी सतोष भाव में आता हू। सतोष के प्रसार से लोभ के कत्थई रग के परमाणु स्कध हिलने लगे हैं, और वे पेट मे एकत्रित होकर नाभि मण्डल से बडी तेजी से बाहर जा रहे हैं। मेरी आत्मा लोभ से खाली हो चुकी है। सभी घाती अघाती कर्म हट चुके हैं। अब मेरी आमा

अनन्त लोक की यात्रा करने के लिए ऊपर उठ चुकी है। अनन्त आनन्द मे निमग्न हो रही है।

16 **चिन्तन कैसा हो :**

सत्वेषु मैत्री गुणिषु प्रमोद, क्लिष्टेषु जीवेषु–कृषा परत्वम।
मध्यस्थ भाव, विपरीत वृत्तौ, सदा ममात्मा, विद्धातु देव।।
मध्यस्थ भाव, विपरीत वृत्तौ, सदा ममात्मा, विद्धातु देव।।

ससार की सभी आत्मा पर मेरी मैत्री भाव रहे। दु खी जीवों पर करुणा भाव रहे। विपरीत वृत्ति वालों पर मध्यस्थ भाव रहे। हे प्रमो ! मेरी आत्मा मे सदा ऐसी अवस्था बनी रहे।

17 **कोऽहं -**

मैं कौन हू, कहा से आया हू, कहा जाऊगा। इसका भी शास्त्रीय धरातल पर चिन्तन हो।

18 **नवकार ध्यान योग**

नवकार मत्र की ध्वनियो से आमा मण्डल को सशक्त एव अन्तरग को विशुद्ध करने के लिए उनका उच्चारण आवश्यक है। आखें बद करके कानों मे अगुली डाल ले, ताकि बाहर की आवाज सुनाई न दे। अब नवकार के एक–एक अक्षर को एक श्वास के साथ धीमे उच्चारण करते हुए लम्बा ले और भीतर मे ध्यान लगाए कि उसमे कहा–कहा प्रकपन हो रहा है। यथा–

ण मो अ रि ह ता ण।

ण मो सि द्धा ण।

ण मो आ य रि या ण।

ण मो उ व ज्झा या ण।

ण मो लो ए स व्व सा हू ण।

इस प्रकार से सारे अक्षरो का उच्चारण कम से कम 3 बार किया जाय। उसके बाद एक एक श्वास में एक पद का उच्चारण किया जाय। यह भी तीन बार हो। इसके बाद एक एक श्वास मे एक पद का उच्चारण करती वक्त कान, आख, नाक, मुख एव त्वचा के भीतर हिस्से मे उपयोग लगाया जाय। ताकि वे ध्वनिया वहा पहुचकर उसे शक्तिवान बना सके। फिर नवकार का अर्थ चिन्तन किया जाय।

नवकार मत्र मे सारे विशुद्ध आत्मा महात्मा एव परमात्माओ का समावेश है। जिनके विशुद्ध परमाणु पूरे ब्रह्माण्ड मे फैले हुए हैं। जिन्हें भीतर मे लेने के लिए स्विच-ऑन करना है और वह नवकार है। जिस प्रकार कि लन्दन की ब्राड कास्टिग सुनने के लिए रेडियो का वही से बटन दबाते ही रेडियो तरगें केच करके सुनाता है। वैसे ही नवकार के ये पद विशुद्ध परमाणुओं को केच करके अपने भीतर मे लाते हैं।

19 आत्मा से परमात्मा की ओर :

आत्मा का परम स्वरूप उजागर करने के लिये हम अतरग मे प्रवेश कर रहे हैं। शरीर मे कही भी दर्द हो गया हो तो स्वस्थ कर ले और पुन सुखासन मे बैठ जाये। सामान्य रूप से चल रहे श्वास पर मन को केन्द्रित कर अपने मन को शात बना ले। अब यह दृढ सकल्प करे कि इस समय मेरा किसी से कोई सम्बन्ध नही है। धन, दौलत, परिवार, मकान आदि सभी से मैं सम्बन्ध तोड़ता हू यहा तक कि अपने शरीर से भी परे हटता हू। ऐसा दृढ सकल्प मन मे जमा ले। अब चिन्तन करिये कि मेरे दुर्गुण, क्रोध, मान, माया, लोभ, राग, द्वेष, विषय, कषाय, ईर्ष्या, मोह, आदि जो विभाव हैं। वस्तुत मेरे नही हैं। फिर भी मैं चिपका हुआ हू। मैं उन सबसे अलग हट रहा हू। मेरी आत्मा उन दुर्गुणो से हटकर हल्की हो रही है। आत्मा का मौलिक स्वभाव ऊपर उठना है। आत्मा ऊपर उठ रही है, कर्म टूट रहे हैं। वायु प्रेरित रजकरण की तरह ध्यान समीक्षण से कर्म रजकण आत्मा के प्रदेशो से निकलकर अलग हट रहे हैं। मेरी आत्मा बिल्कुल हल्की हो रही है। ऊर्ध्व मे उड़ान भरने के लिये तैयार हो रही है। मेरा अन्तरग विशिष्ट ज्ञान से भर रहा है। पूरा जीवन ज्ञान की ज्योति से जगमगा रहा है। दर्शन चारित्र से भर रहा है। आत्म शक्ति का पूरे अतरग में तेजी से सचरण हो रहा है। निरन्तर हो रहा है। मन मे तेजी से उभार लाइये। मेरी आत्मा समत्व से भर रही है, क्षमा से भर रही है। भरती जा रही है। भरती ही जा रही है। भरती ही जा रही है। मेरा सिद्ध स्वरूप प्रकट हो रहा है। आत्मा से परमात्मा की अभिव्यक्ति हो रही है। मैं शाश्वत भाति में निमग्न हो रहा हू। इस प्रकार के विचार से मन मे उभार लाइये। कुछ समय तक अगम लोग की यात्रा करिये। अब धीरे-धीरे मन को पुन शात बनाइये। विचारों के उतार-चढाव को श्वास समीक्षा के साथ समीकरण में ले आइये।

20 प्रतिदिन प्रतिज्ञा करे

परिवार समाज के बीच रहकर यह समव नहीं कि दिन भर ध्यान ही करते रहें वैसे ध्यान तो हर समय चलता ही रहता है कभी शुभ तो कभी अशुभ। हमारे ध्यान को अशुभ से हटाकर शुभ मे लाने के लिये तथा व्यावहारिक जीवन मे ध्यान की प्रविष्टि हो इसके लिये प्रतिदिन कोई भी एक प्रतिज्ञा करे।

आज हम क्रोध नहीं करेगे। आज हम अहकार नहीं करेगे। आज हम कपट नहीं करेगे। आज हम अधिक लोभ नहीं करेगे। आज हम मोह नही करेगे। आज हम ईर्ष्या नहीं करेगे। आज हम अपशब्द नहीं बोलेगे। आज हम हिसा को कम करेगे। आज हम झूठ नही बोलेगे। आज हम ब्रह्मचर्य का पालन करेगे। हमारी गुणग्राही वृत्ति रहेगी आदि। अनेक प्रतिज्ञाओ मे से प्रतिदिन एक-एक प्रतिज्ञा के पालन का अभ्यास किया जाय। इस प्रकार जो जो बुराइया हमारे मे विशेष रूप से हो उनमे से एक-एक के बारे मे एक-एक दिन उन्हे दूर करने की प्रतिज्ञा करें। और पूरे चौबीस घटे सतर्क रहें। इस क्रिया से हम हमारी साधना का दैनिक जीवन मे और व्यवहार मे प्रयोग करना सीखेगे। जिससे हमारा जीवन निर्मल बनेगा।

21 डायरी हो

एक डायरी रखिये जिसमें प्रतिदिन नोट करे कि हमारा मन ध्यान मे लगा कि नहीं। वृत्तियो मे सशोधन हुआ या नहीं। हुआ तो कितना हुआ ? प्रतिदिन नोट करके जरा अपने जीवन की इस खाताबही को मिलाकर देखिये कि महीने पहले मेरे ध्यान की क्या स्थिति थी ? और अब क्या है ? इस चिन्तन से हमे महीने भर की क्रिया का परिणाम ध्यान आ जायेगा। यह समीक्षण ध्यान पद्धति का प्रारम्भिक प्रयोग है। अभी तो समीक्षण ध्यान के अनेक आयाम हैं। हमें उन सभी की चर्चा में नहीं उतरना है। पहले जब उपर्युक्त पद्धति का पूरा अभ्यास हो जायेगा तभी आगे चर्चा की जा सकेगी।

22. शरण प्रवेश .

परमात्मा की शरण मे जाने वाला व्यक्ति सभी ओर से सुरक्षित हो जाता है। यह सशक्त कवच है। अत शरण प्रवेश के अक्षरो को भी एक-एक करके उच्चारण करे। आख कान बद करलें-

1 अ रि ह ते श र ण प व ज्जा मि

2. सि द्धे श र ण प व ज्जा मि

3 सा हू श र ण प व ज्जा मि

4 के व लि प ण्ण त ध म्म श र ण प व ज्जा मि

इस प्रकार एक–एक श्वास मे अक्षरों को उच्चारण के बाद एक–एक श्वास पूरे–पूरे एक पद शरण का उच्चारण करो। फिर लयबद्ध उच्चारण करे। उसके बाद यह सोचकर उच्चारण करे कि अब मैं अरिहत, सिद्ध, साधु, धर्म की शरण को स्वीकार कर चुका हू। एक मेल हो चुका हू। जिस दिन यह सोच, मजबूत बनेगी। उस दिन भीतर से अचिन्त्य शक्तिया फूट पडेगी।



14

ज्वलंत प्रश्न : समाधान

(पत्रकार कान्फ्रेन्स में दिये समाधान)

प्रश्न – भारत मे ऋषि, महर्षि, त्यागियो का प्राबल्य होते हुए भी नैतिकता एव चरित्र का पतन निरन्तर क्यो हो रहा है ?

उत्तर – यह सत्य है कि भारत मे ऋषि –त्यागी सत बहुत हैं और वे भारतीयो को नैतिक बनाने का प्रयत्न भी करते हैं। आज से 100 वर्ष पहले भारत मे नैतिकता का विकास था ही किन्तु इस समय त्यागियों के निरूतर प्रचार करने के बावजूद भी नैतिकता तथा चरित्र के निरूतर पतन का कारण है–अश्लील साहित्य, सिनेमा, नाटक आदि का अत्यधिक प्रचार। अब तो घर–घर मे टी वी पहुच चुका है और वीडियो से जो चाहे फिल्म देखी जा सकती है। आज भारत में जहा देखो वहा अनैतिकता चरित्रहीनता का वातावरण अधिक दिखलाई देता है। आज छोटे बच्चो को सिनेमा के एक्टरों के नाम याद हैं पर राम, बुद्ध, महावीर आदि के नहीं। ऐसी स्थिति मे त्यागियों के द्वारा नैतिकता एव चरित्र का बराबर प्रचार करने के बावजूद भी भारत मे अनैतिकता अधिक पनप रही है। दूसरी बात कुछ अच्छे साधुओं की भी कमी रही है। चरित्रहीन साधुओं के कारण भी युवाओ का मानस विशेषकर दूषित होने से वे अच्छे साधुओं के सानिध्य का भी लाभ नहीं उठा पाते। वैसे भी साधुओं के सानिध्य मे जाने वालों की सख्या नगण्य है। नैतिकता के आचरण के लिए सरकार की ओर से भी कठोर अनुशासन की आवश्यकता है। इतना सब कुछ होते हुए भी भारत में अन्य देशों की अपेक्षा दया अनुकपा सहयोग, समन्वय, पति–पत्नी में स्थायित्व भाव, माता–पिता की सेवा, शाकाहार आदि ऐसे कई विशिष्ट गुण हैं जो अन्य देशो मे कम ही दिखलाई देते हैं।

प्रश्न – क्या कोई उपाय है ऐसा, जिससे भारत में नैतिकता एव चरित्र का विकास किया जा सके, उसे पतन से रोका जा सके ?

उत्तर – हा उसके अनेक उपाय हैं। प्रथम जो भारत में अश्लील साहित्य, अश्लील सिनेमा, नाटक आदि एकदम बद होना चाहिये। सभी धर्म प्रवर्तको की ओर से जनता के नैतिक विकास के लिये सभी का एक ही स्टेटमेन्ट निकलना चाहिये। और उसी का प्रचार हो। दूसरा पत्र–पत्रिकाओं को भी चाहिये कि वे अपने पत्रो मे नैतिक एवं चरित्र विकास के मेटर को अधिक स्थान दें। ऐसे आदर्श व्यक्तियों का परिचय हो ताकि जनता भी वैसा अनुसरण कर सके। आज के पत्रकारो का ध्यान इस ओर नहीं वत् है। हर पत्रिका मे प्राय राष्ट्र सम्बन्धी, नेताओ विषयक या देगे, मारकाट एक्सीडेण्ट विषयक समाचार ही पढने को मिलते हैं। अत पत्रकारो का भी इस ओर ध्यान जाना आवश्यक है। क्योकि पत्र–पत्रिका, दूर–दर्शन आदि के माध्यम से जनता का मानस बहुत जल्दी बनाया जा सकता है।

प्रश्न – कोई ऐसा उदाहरण है कि किसी जैन साधु ने लोगो को सस्कार मुक्त नैतिक बनाया हो ?

उत्तर – बहुत उदाहरण हैं। आपके मध्य प्रदेश मे ही ले लो। आज से लगभग 35 वर्ष पहले जैनाचार्य श्री नानालाल जी म सा ने रतलाम, उज्जैन के समीपस्थ ग्रामीण अचलो मे पैदल यात्रा कर बलाई आदि निम्न जाति के लोगों को कुव्यसन मुक्त किया था। आज उनकी सख्या 1 लाख तक पहुच गई हैं। जैन समाज के बडे–बडे श्रेष्ठी वर्य कई दिनो तक उनके ग्रामो में पद यात्रा करके उन्हें सत्सस्कारित करने का प्रयत्न करते है। कई बार उन क्षेत्रो मे पैदल यात्रा हुई है।

प्रश्न – विश्व मे विश्व युद्ध का खतरा मडरा रहा है, क्या उसे दूर किया जा सकता है ?

उत्तर – अवश्य दूर हो सकता है पर इसके लिये सभी राष्ट्रो को अपना हटाग्रह छोडना होगा। भले निर्गुट सम्मेलनो मे नि शस्त्रीकरण की आवाज उठाई जा रही है, पर विश्व का प्राय राष्ट्र शस्त्रो की होड मे अधिक लगा है। प्राय सभी के मन में एक ही विचार उठता है कि मेरी शक्ति सर्वाधिक हो, मेरा ही अधिकार क्षेत्र बढे। जब तक यह भावना रहेगी, तब तक प्रत्येक राष्ट्र को खतरा रहेगा। रूस और अमेरिका चीन आदि जिसे महाशक्ति समझा जाता है, सही देखा जाय तो उन्हे अन्य राष्ट्रों से ज्यादा भय है, रूस अमेरिका

की और अमेरिका रूस की हर गतिविधि की और आखे जमाए हुए हैं। एक दूसरे को परस्पर पूरा भय है। अत यह सुनिश्चित है कि शस्त्रो की होड से कोई भी सुखी नही बन सकता है। अगर विश्व युद्ध का खतरा टालना है तो सभी राष्ट्र यह निर्णय ले ले कि हम हमारा विकास करेगे। पर दूसरे को कभी हानि नही पहुचायेगे। तब तो विश्वयुद्ध का खतरा टल सकता है। एक पड़ोसी भी ज़ब दूसरे पडोसी के साथ समन्वय लेकर चलता है। हर व्यक्ति परस्पर विश्वास से चलते हैं तभी गाव और नगर की व्यवस्था सही चलती है तो फिर राष्ट्रो की व्यवस्था बनाए रखने के लिए विश्वयुद्ध को टालने के लिए प्रत्येक राष्ट्र को यह समन्वय एक न एक दिन करना ही होगा। ऐसा समन्वय होने पर पूरे विश्व को अनेक लाभ हो सकेगे।

प्रश्न – वे क्या लाभ हो सकते हैं ?

उत्तर– प्रथम तो सभी निर्भय हो जायेगे। आज जो आदमी ही आदमी को खत्म करने के लिये अणु बम आदि बना रहा है उनके निर्माण में जो प्रतिदिन अरबो रुपये व्यय हो रहे हैं वे बच जाएगे और जो बडे–बडे वैज्ञानिको का दिमाग सहारक शस्त्रों के अविष्कार मे लगा है, वे सर्जन मे लगेगे। जब व्यक्ति को मारने के लिए बम बना सकते हैं तो व्यक्ति को स्वस्थ निरोग बनाने के लिये भी ऐसे बम बन सकते हैं जिससे सौ दो सौ कि मी मे फैले हेजे का प्रकोप आदि बीमारिया उस बम के डालने से समाप्त हो जाय। दूषित वायुमण्डल नष्ट हो जाय। आज डॉक्टर व्यक्ति–व्यक्ति का इलाज कर सकता है पर वायुमण्डल का नहीं। इसके लिये वैसे ही अणु बम की आवश्यकता है। यह कोई अनहोनी बात भी नहीं है क्योकि भगवान महावीर ने परमाणु मे अचिन्त्य शक्ति बतलाई है। जब वह विनाश कर सकता है तो ऐसा सर्जनात्मक कार्य क्यो नहीं कर सकता। बस आवश्यकता है वैज्ञानिको द्वारा प्रयोगात्मक खोज की। यदि इस प्रकार से सर्जनात्मक काम होने लगेगे तो धरती पर मानो स्वर्ग उतर आएगा। जब हर राष्ट्र परस्पर समन्वय के साथ काम करता है तो विश्वयुद्ध का खतरा सदा के लिये समाप्त हो जाता है। जनता को सुखी बनाने के लिये प्रत्येक राष्ट्र को इस विषय मे सोचना जरूरी है।

प्रश्न – जैनियों में फिजूल खर्च ज्यादा देखा जाता है ऐसी स्थिति मे उन्हे जन–कल्याण की ओर कैसे प्रेरित किया जाय ?

उत्तर– ऐसी बात नहीं है कि जैनियों के द्वारा जन–कल्याण का काम होता ही है। आज भारत मे जैनियो के द्वारा करोडो अरबों रुपये खर्च करके

स्थान-स्थान पर कॉलेज, स्कूल, धर्मशाला, हॉस्पिटल आदि अनेक जन कल्याणकारी कार्य हो रहे हैं। उन सबकी लिस्ट ली जाय तो बहुत लम्बी हो जाएगी। जैनी ही नहीं, हर समाज में जन कल्याणकारी कार्य तो होते ही हैं, किन्तु उसमे कुछ सशोधन की आवश्यकता है।

प्रश्न – वह सशोधन क्या हो ?

उत्तर – वह यह कि जो भी ऐसे जन कल्याणकारी कार्य करना चाहते हो, वे सभी मिल जाय और फिर मिलकर निर्णय लें कि यहा किस कार्य की आवश्यकता है। जहा धर्मशाला, हॉस्पिटल, स्कूल तीनों की आवश्यकता हो तो एक-एक कार्य एक-एक वर्ग अपने हाथ मे लें ले तो तीनों कार्य हो सकते हैं। अन्यथा होता क्या है कि अलग-अलग सर्जनात्मक कार्य होते हैं तो सभी आवश्यक वस्तुओ का निर्माण तो नहीं हो पाता और कभी-कभी तो सारी ही शक्ति एक ही कार्य में लग जाती है। सभी के द्वारा मिलकर कार्य करने पर कार्य का सर्वेक्षण भी सही ढग से किया जा सकता है।

